“এক এব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমং নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥”

৩ য় ভাগ। ৩৪ সংখ্যা। | শকাব্দা ১৮০২। শ্রাবণ পূর্ণিমা।

রাম গীতা।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

বিবিক্ত আসীন উপারতেন্দ্রিয়ো
বিনির্জ্জিতাত্মা বিমলান্তরাশয়ঃ।
বিভাবয়েদেক মনন্যসাধনো
বিজ্ঞান দৃক্ কেবল আত্ম সংস্থিতঃ ॥ ৪৬ ॥

এক্ষণে তত্ত্বজ্ঞান সাধনের উপায় কথিত হইতেছে। জন সমাগম শূন্য স্থানে পদ্ম বা সিদ্ধাসনাদি উৎকৃষ্ট আসন বিশেষে উপবেশনপূর্ব্বক চক্ষুরাদি জ্ঞানেন্দ্রিয় ও বাক্ পাণ্যাদি কর্ম্মেন্দ্রিয় সমূহকে বিষয় বৃত্তি হইতে নিবৃত্ত ও প্রাণায়াম সাধনাদি দ্বারা প্রাণ বায়ুকে বশীভূত করিয়া নির্ম্মলান্তঃকরণ হইতে হইবে। তদনন্তর অন্যান্য সাধন বিধি পরিত্যাগ পূর্ব্বক অনুভবাত্মক জ্ঞান বিশিষ্ট পুরুষ কেবল সর্ব্বব্যাপি একমাত্র আত্মাতে অবস্থিতি করিয়া সেই আত্ম সত্বারই পরিচিন্তন করিতে থাকিবেন।

“एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति”

३य भाग। २४ म सख्या | शकाब्दा १८०२। श्रावण पूर्णिमा।

राम गीता।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

विविक्त आसीन उपरतेन्द्रियो
विनिर्ज्जितात्मा विमलान्तराशय:।
विभावयेदेक मनन्यो साधनो।
विज्ञानदृक् केवल आत्म संस्थित: । ४६ ॥

अव तत्त्वज्ञान साधनका उपाय वताते हैं। जनसमागम से रहित स्थानमें कमल या सिद्धासनादि कोइ उत्तम आसन करके उपवेशन पूर्व्वक चक्षु आदि ज्ञानेन्द्रिय औ वाक पाणि आदि कर्म्मेन्द्रियों को विषयव्यापार से निवृत्त औ प्राणायाम साधनादिके द्वारा प्राणवायुको वशीभूत कर निर्म्मल अन्तःकरण होना चाहिये। इसके अनन्तर अन्यान्य साधन विधि परित्याग पूर्व्वक अनुभावात्मक ज्ञान विशिष्ट पुरुष केवल सर्व्वव्यापि एकमात्र आत्मा में विराज कर वही आत्म सत्ताहीको परिचिन्तन करते रहेंगे।

কোলাহল পূর্ণ লোক সমাজ ত্যাগ করিয়া সাধক যদি একান্তে বসিয়া লোক সমাজ সম্বন্ধীয় ব্যাপার সমস্ত মনোমধ্যে আন্দোলন করিতে থাকেন, তবে তাঁহার নির্জ্জন ভূমিও সজন হইয়া পড়ে। বিষয় চিন্তা বর্জ্জিত চিত্তই উৎকৃষ্ট নির্জ্জন ক্ষেত্র। নির্ম্মল হৃদ্ কমলাসনই প্রকৃত "পদ্মাসন;" "মনোবৃত্তি-নিরোধই" প্রকৃত প্রাণায়ামের কার্য্য সাধন করিয়া থাকে, এতাবদ্ব্যবস্থা যোগীগণের নিতান্ত অনুকূল।

> বিশ্বং যদেতৎ পরমাত্ম দর্শনং
> বিলাপয়েদাত্মনি সর্ব্ব কারণে।
> পূর্ণশ্চিদানন্দ ময়োবতিষ্ঠতে
> নবেদ বাহ্যং নচ কিঞ্চিদন্তরং ॥ ৪৭ ॥

পরমাত্মা প্রকাশিত এই পরিদৃশ্যমান বিশ্বকে সমস্ত প্রপঞ্চের বিবর্ত্তোপাদান কারন স্বরূপ আত্মাতে লয় করিতে হইবে। স্বরূপের অপরিত্যাগে যদ্দ্বারা কার্য্যোৎপন্ন হয় তাহার নাম বিবর্ত্তোপাদান; যেরূপ রজ্জু রজ্জুই থাকে অথচ ভ্রম বশাৎ তাহা সর্প দর্শনের কার্য্য ভয়াদি উৎপন্ন করে। তদ্রূপ পরমাত্মা হইতে এই বিশ্ব কার্য্যের উৎপত্তি। তদনন্তর দ্বৈত বস্তুর অভাব নিবন্ধন যখন তিনি চিদানন্দ স্বরূপে বিরাজ করিবেন তখন আর তাঁহার বাহ্যাভ্যন্তর বলিয়া কিছুমাত্র অনুভূত হইবে না।

> পূর্ব্বং সমাধে রখিলং বিচিন্তয়ে
> দোঁকার মাত্রং সচরাচরং জগৎ।
> তদেব বাচ্যং প্রণবো হি বাচকো
> বিভাব্যতেঽজ্ঞান বশান্ন বোধতঃ ॥ ৪৮ ॥

এক্ষণে পরমাত্ম-চিন্তনের পথ প্রদর্শিত হইতেছে। যে পর্য্যন্ত সমাধি সিদ্ধি না হয়, তাবৎকাল এই চরাচরাত্মক জগৎকে ওঁকাররূপে ভাবনা করিবে, (জগৎকে ওঁকার রূপে চিন্তার পদ্ধতি কিরূপ তাহা সদ্‌গুরু কর্ত্তৃক উপদিষ্ট না হইলে সাধক বুঝিতে পারিবেন না) যাবৎকাল তত্ত্ব জ্ঞান উদয় না হয় তাবৎকাল অজ্ঞান বশতঃ এই চরাচর জগৎ বাচ্য ও প্রণব তাহার বাচ্য বলিয়া প্রতীতি হয়; জ্ঞানোদয় হইলে বাচ্য, বাচক ভাব বিনষ্ট হইয়া যায়।

ক্রমশঃ।

कोलाहलपूर्ण लोकसमाजको त्याग करके साधक यदि एकान्त स्थान पर बैठे हुए लोक समाज सम्बन्धी व्यापारें मनमें आन्दोलन करते रहें, तो उनकी निर्ज्जन भूमि भी सजन हो जाती है। विषय चिन्तासे रहित चित्तहीको उत्तम निर्ज्जन क्षेत्र जानना चाहिये। निर्म्मल हृदय-कमलासनहीको प्रकृत "पद्मासन" मानना, और "मनोवृत्तिका निरोधही प्राणायाम का कार्य्य साधन करता है, इतनी व्यवस्था योगीयों के नितान्त अनुकूल है।

> विश्वं यदेतत परमात्म दर्शनं
> विलापयेदात्मनि सर्व्व कारणे।
> पूर्णश्चिदानन्दमयोवतिष्ठते
> नवेद बाह्यं नच किञ्चिदन्तरं ॥ ४७ ॥

परमात्मासे प्रकाशित यह परिदृश्यमान विश्वको वह आत्ममलमें लय करना होगा, जोकि समस्त प्रपंच के विवर्त्त-उपादान कारण स्वरूप हैं। (स्वरूप को त्याग किये बिना जिससे कोई कार्य्य कि उत्पत्ति होती है, उसही का नाम विवर्त्तोपादान, जैसा रज्जु अपना रूप बदले बिना भ्रमवश मनुष्योंको सर्पदर्शन का फल या भय आदि उत्पन्न करदेताहै, वैसाही परमात्मा से यह विश्वरूप कार्य्य की उत्पत्ति है। तदनन्तर द्वैत वस्तु का अभाव होनेसे जब वे चिदानन्द स्वरूप में विराजकरें तब उनके लिये भितर बाहर आदि कुछ भी भेद न रहेगा।

> पूर्ब्बं समाधेरखिलं विचिन्तये-
> दोंकार मात्रं सचराचरं जगत।
> तदेव वाच्यं प्रणवो हि वाचको
> विभाव्यतेऽज्ञान वशान्न बोधत: ॥ ४८ ॥

अब परमात्म-चिन्तन का पथ दिखायी जाती हैं। जबतक समाधि सिद्ध नहो, तबतक यह चराचरात्मक जगत को ओंकार रूप से भावना करना (किस रीति से जगत को ओंकार रूप चिंतन करने होगा, सद्‌गुरुके उपदेश विना साधक यह नहीं समझ सकेंगे) यावत काल तत्वज्ञान उदय नहो, तावत काल अज्ञान करके यह चराचर जगत वाच्य वो प्रणव तिसके वाचक यह प्रतीति होती हैं। ज्ञानोदय होने पर वाच्य वाचक भाव विनष्ट हो जाता है।

शेष आगे।

আর্য্য শাস্ত্র।

(বৈজ্ঞানিক রহস্য)

মানবগণ কোন একটী কার্য্যফলাভিলাষী হইলে, যেং উপাদানে উহা নিষ্পন্ন হইবে, যদি তাহা পরিজ্ঞাত থাকেন তবে অনায়াসেই তত্তৎ কারণ সংগ্রহ পূর্ব্বক অভীষ্ট সাধন করেন; আর উপাদান অনবগত হইলে সাতিশয় যত্ন সহকারে বিবিধ বস্তুর শক্তি বা প্রকৃতির পর্য্যালোচনা ও পরীক্ষা করিতেং অভিলষিত কার্য্য ফল সাধন-ক্ষম যে সকল বস্তু নিরূপণ করিয়া থাকেন, তত্ত-বংকে যথোচিত প্রক্রিয়া দ্বারা সমাহার করতঃ সাতিশয় হর্ষ ও যত্নের সহিত কার্য্য ফল লাভ করেন এবং সাধারণকে ঐ কার্য্যপরিণাম বা ফল, প্রক্রিয়া ও প্রণালী প্রদর্শন করিয়া থাকেন। উক্ত প্রকার প্রাকৃতিক তত্ত্ববিজিজ্ঞাসু বহুল গবেষণার ফল যাহাদিগকে উপদেশ ও প্রদর্শন করেন, তাহাদিগের আর ঐ কার্য্যোপাদান বস্তু সমূহের মধ্যে কাহার কি গুণ ও শক্তি তত্তাবদ্বিষয় বিদিত হওয়া বিশেষ প্রয়োজন হয় না সুতরাং ঐ উপদেশের কারণ বিজ্ঞানাংশ * "সকল নীরস বোধে অনাদৃত হইয়া পুরুষ পরম্পরায় ক্রমশঃ অনালোচিত ও বিস্মৃতি সাগরের গভীর গর্ভে লুক্কায়িত হইয়া থাকে। কেবলমাত্র উহার "প্রক্রিয়া বিজ্ঞান" ও "ফল-বিজ্ঞানাংশই আলোচিত হইয়া থাকে এবং তদ্দ্বারাই আবশ্যক মতে কার্য্য ফল সকল নিষ্পন্ন হয় মাত্র। এই রূপে সকল বিষয়েরই

* বিজ্ঞান তিন প্রকার, ১ম, "ফল বিজ্ঞান," ২য়, "প্রক্রিয়া-বিজ্ঞান, ৩য়, "হেতু বিজ্ঞান।" যাহার দ্বারা কার্য্যের অবস্থা ও প্রয়োজন জানা যায় তাহার নাম "ফল বিজ্ঞান" যাহার দ্বারা কারণ সমূহের সংযোগক্রম জানা যায়, তাহা "প্রক্রিয়া বিজ্ঞান' বলিয়া প্রসিদ্ধ এবং যাহা দ্বারা কারণের স্বভাব ও শক্তি জানা যায় তাহা "হেতু বিজ্ঞান" নামে অভিহিত। যথা।—অন্ন [illegible] ফল। ইহা শুভ্র বর্ণ, মৃদু, অন্তঃপ্রবিষ্ট জল যুক্ত, ঈষৎ মধুর ও মাদক এবং ইহা দ্বারা আশু শরীরোচয় হয়, ইত্যাদি নির্দ্দেশকে "ফল বিজ্ঞান" বলা যায়। উক্ত কার্য্যের কারণ, কাষ্ঠ, অগ্নি, স্থালী এবং জলাদি সংযোগের সময় ও ক্রম নির্দ্দেশকে "প্রক্রিয়া বিজ্ঞান" বলা যায়। অগ্নির সঞ্চারকতা ও দ্রাবকতা, বস্তু মাত্রেরই সচ্ছিদ্রতা, দ্রবের লঘুতা ও ঊর্দ্ধগমন শীলতা, ঊর্দ্ধবায়ুর ক্রমশঃ তরলতা ও অল্প চাপকতা এবং নিম্নে ক্রমশঃ গাঢ়তা ও অধিক চাপকতা, ইত্যাদি হেতু স্বভাব নির্দ্দেশকে "হেতু বিজ্ঞান" বলা যায়। এইরূপ সর্ব্বত্র।

आर्य्यशास्त्र।

(वैज्ञानिक रहस्य)

मनुष्यलोग जिस किसीकार्य्यके फलाभिलाषी होतेहैं तत्कार्य्य जिस उपादानसे निष्पन्नहोगा सोभी यदि जानेरहैं तो सहजमें कारणोंका संग्रह करके अपने मनोरथको पुरा करैं; और उपादानोंकोविन जाने बडेयत्नसे विविध वस्तुओंकी शक्ति वा प्रकृतिकी पर्य्यालोचना औ परीक्षा करते करते अपने अभिलषित [illegible] साधनकरने योग्य जिन वस्तुओं को ठहराया करते हैं उन्होंकी यथोचित प्रक्रियासे समाहार करके सातिशय हर्ष औ यत्नके साथ कार्य्य फल पाते हैं, औ साधारणको कार्य्यपरिणाम अर्थात् कार्य्य फल प्रक्रिया औ [illegible] की प्रदर्शन कराया करैं। उक्त प्रकार प्राकृतिक [illegible] जिज्ञासु लोग बहुल गवेषणाके फल जिन्होंको [illegible] औ प्रदर्शन करतेहैं उन लोगोंको [illegible] कार्य्योपादानकी वस्तुओं में किसका क्या गुण औ [illegible] यह सब जाननेका विशेष प्रयोजन नहीहै इसीलिये उपदेशका "कारण विज्ञानांश * सकल नीरस बुझपड़नेसे निरादृत होके पुरुषपरम्परासे क्रमश अविचार औ विस्मृति सागरके गभीर गर्भमें लुक्कायित हुआ-जाताहैं। केवल उसके "प्रक्रिया विज्ञान" औ

* विज्ञान तीन प्रकार हैं। पहला "फलविज्ञान," दूसरा "प्रक्रिया विज्ञान," तीसरा "हेतुविज्ञान" हैं। जिसमें कार्य्यकी अवस्था औ प्रयोजन जाना जाता है उसे "फलविज्ञान" कहते हैं।—जिससे कारणों का संयोग क्रम जाना जाता हैं उसे प्रक्रिया विज्ञान कहते हैं। ऐसेही जिससे कारण का स्वभाव औ शक्ति जानी जाती है उसे हेतुविज्ञान कहा जाता हैं। यथा अन्न एक कार्य्यका फल है।— यह श्वेतवर्ण, मृदु, अन्तर्गत जलयुक्त, थोड़ा मधुर औ मादक: औ इससे शीघ्र शीघ्र शरीर का उपचय होता हैं। इत्यादि निर्देशको "फलविज्ञान" कहते हैं—उक्त कार्य्यका कारण काष्ठ, अग्नि, स्थाली एवं जलादि संयोगके समय क्रमके निर्देश का "प्रक्रिया विज्ञान" कहा जाता है। अग्निका सञ्चारकत्व, द्रावकत्व, वस्तु मात्रकी सच्छिद्रता, द्रवकी लघुता और ऊपर उठनेका स्वभाव, ऊर्द्ध वायुका क्रमें क्रम से तरलता और थोड़ी थोड़ी चापकता, औ नीचे क्रम क्रमसे गाढ़ता औ अधिक चापकता इत्यादि हेतु स्वभावके निर्देशको "हेतु विज्ञान" कहते हैं। ऐसे ही सर्व्वत्र बूझना।

উন্নতির চরমাবস্থার পর "হেতু বিজ্ঞানাংশ" সকল বিলুপ্ত হইয়া কাল ক্রমে উক্ত কার্য্য সকল যে সহেতুক এবং উহা আবিষ্কার করিতে যে অগাধ চিন্তা ও আয়াস লাগিয়াছিল এরূপ বিশ্বাসও থাকে না। কার্য্য গুলিও ক্রমশঃ অপুষ্টাঙ্গ হইতে থাকে, কতক গুলি বা সম্পূর্ণ বিপরীত হইয়া বিপরীত ফলদায়ক হইয়া উঠে। তখন আর পুনঃ২ পরীক্ষা ও অতি সূক্ষ্ম চিন্তা করিলেও কোন্ হেতু দ্বারা কেন কার্য্যের নিষ্পত্তি হয়, ইহা নিশ্চয় করা দুষ্কর হইয়া পড়ে

আমাদিগের প্রচলিত অনেক কার্য্যের প্রতি লক্ষ্য করিলেই, উহা সুস্পষ্ট প্রতীত হইবে। উক্ত নিয়মেই আমাদিগেয় আর্য্য শাস্ত্র সকল ঘোরতর সংশয় বিপ্লবে পতিত হইয়াছে। আর্য্য শাস্ত্রের "হেতু বিজ্ঞানাংশ" সকল বিলুপ্ত-প্রায় হইয়া উঠিয়াছে। অনেক বিষয়ের "প্রক্রিয়া বিজ্ঞানও" লক্ষিত হয় না, কেবল মাত্র "ফল বিজ্ঞানাংশ"ই সমাজের অবলম্বন হইয়া পড়িয়াছে। এজন্য আমরা সাধারণের মতে আর্য্য শাস্ত্রাবলম্বী হইয়া অন্ধ নির্দ্দিষ্ট পথানুসারী অন্ধের ন্যায় ভীষণ অরণ্যে বা কণ্টক মধ্যে নিপতিত হইতে চাহি না। এতদ্দ্বারা বিফল-প্রযত্ন ও কেবলমাত্র দুঃখ ভাগী হইয়া অনুতপ্ত ও বিদেশীয় পণ্ডিতদিগের নিকট হাস্যাস্পদ হইতেছি। জগৎ প্রসূতি প্রকৃতিই যে আর্য্য শাস্ত্রের মূল বা জননী তাহাই কাল ক্রমে অমূলক বলিয়া পরিগণিত হইতে চলিল। ত্রিকাল প্রসিদ্ধ প্রকৃতিই যাহার আত্মা, তাহাই ইদানিং মিথ্যাত্মক বা কল্পনাত্মক হইয়া উঠিল। বিজ্ঞানই যাহার সুপ্রসন্ন নেত্র, সেই আর্য্য শাস্ত্র সম্প্রতি অন্ধ হইয়া বিদেশীয় শাস্ত্রের নিকট পথ জিজ্ঞাসা করিতে লাগিল। বিশদ তর্কজালই যাহার পাদাগ্র, কাল মাহাত্ম্যে তাহাই অধুনা আধুনিক তর্ক বাদীগণের কুতর্ক যষ্টি দ্বারা ভগ্নপদ হইয়া পঙ্গু হইয়াছে।

আর্য্য শাস্ত্রের কোনটীই প্রাকৃত স্বভাবকে উল্লঙ্ঘন করিয়া কল্পনার অনুগমন করে নাই। প্রাকৃত স্বভাবের অনুগামী হইয়া তাহার প্রতিপাদন করাই আর্য্য শাস্ত্রের মুখ্য উদ্দেশ্য। প্রাকৃত স্বভাব হইতেই আর্য্য শাস্ত্রের অভ্যুদয়, আর্য্য শা- ২ প্রাকৃত স্বভাবের সৌগন্ধ বিনির্গত প্রাকৃত স্বভাবই আর্য্য শাস্ত্রের জীবন

फल विज्ञानांशही की आलोचना हुआ करती हैं और उसी से आवश्यक भर कार्य्यफल सकल निष्पन्न कि भर हो जाता हैं। इसी भांति विषय मात्र के चरमावस्था के उपरान्त "हेतु विज्ञानांश" सकल लोप पाकर उक्त कार्य्य सब जो सहेतुक थे औ उनके आविष्कार करने में जो अगाध चिन्ता औ परिश्रम लगे थे सो काल क्रमसे ऐसा हो जाता है कि प्रतीति भी नहीं होती हैं। कार्य्य सकल भी क्रमशः अपुष्टाङ्ग हुए जाते। यहांतक कि सम्पूर्ण उलटे हो कर उलटाफल भी देने लगते हैं।— तब और फिर परीक्षाओ सूक्ष्म चिन्ता करके भी यह निश्चय करना कठिन हो पड़ता है कि इन् कार्य्यों का निष्पत्ति किसी हेतु से हुइ है।

हम लोगों के प्रचलित कार्य्यों के ऊपर दृष्टि करने ही यह अच्छी भांति बूझ पड़ेगा। इसी नियम से हम लोग के आर्य्यशास्त्र सकल घोरतर संशय विप्लव में गिरा जाता है, आर्य्यशास्त्रका हेतु विज्ञानांश एकबार विलुप्त प्राय हुआ जाता है। बहुतेरों को "प्रक्रिया विज्ञान" भी लक्षित नहीं होता हैं। केवल "फलविज्ञानांश" ही समाजका अवलम्बन हो रहा हैं। इस लिये हमलोग साधारणों के बीच आर्य्यशास्त्रावलम्बी हो कर अन्धों के चलाये पथ में चलते अन्धों की नाईं भयानक जङ्गल या कांटे कूपमें गिरने नहीं चाहते हैं। इससे सब प्रयत्न व्यर्थ होते, केवल दुःख मात्र के भागी हो कर पछताने पड़ता, जिस पर विदेशीय पण्डितों के निकट हास्यास्पद भी होते। जो प्रकृति जगत की प्रसूति औ आर्य्यशास्त्रकी जननी अर्थात् मूल स्वरूप, सो ही काल क्रमसे अमूलक कहलाने लगी; त्रिकाल प्रसिद्ध प्रकृति ही जिसकी आत्मा, सो ही आज कल मिथ्यात्मक औ कल्पना होता चला। विज्ञान ही जिसके सुप्रसन्न नयन, सोई आर्य्यशास्त्र सम्प्रति अन्धा हो कर विदेशीय शास्त्रके निकट बाट पूछने लगा। विशद तर्क, बादही जिसका पादाग्र, सोई अभी कालके प्रसाद आधुनिक तर्क वादियों की कुतर्क रूप यष्टि से भग्नपाद हो कर पङ्गु हो गया।

आर्य्यशास्त्रने किसी प्राकृत स्वभाव का उल्लङ्घन करके कल्पना का अनुगमन नहीं किया। प्राकृत स्वभावों के अनुगामी होकर उन्हों का प्रतिपादन करना ही आर्य्यशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है। प्राकृत स्वभावोंहीं से आर्य्यशास्त्रका अभ्युदय, आर्य्यशास्त्र के वर्ण वर्ण से प्राकृत स्वभाव का सुगन्ध निकसता है।— प्राकृत स्वभाव ही आर्य्य शास्त्रका जीवन

অতএব তদ্বিরহে আর্য্য শাস্ত্র জীবিত থাকিতে পারে না। আমরা ইহার প্রমাণ স্বরূপ শিক্ষাদি অষ্টাদশ শাস্ত্রেরই স্থূল উদ্দেশ্য ও দুই একটী সন্দর্ভ অতি সংক্ষেপে নির্দ্দেশ করিতেছি, এতদ্দ্বারাই পাঠকগণ আর্য্যদিগের মহত্ত্ব হৃদয়ঙ্গম করিয়া আর্য্য শাস্ত্রের বহু মূল্যতার পরিচয় পাইবেন।

বর্ণ বিজ্ঞান।

১ শিক্ষা, ২ কল্প, ৩ ব্যাকরণ, ৪ নিরুক্ত, ৫ ছন্দ, ৬ জ্যোতিষ, ৭ ঋগ্বেদ, ৮ যজুর্ব্বেদ, ৯ সাম বেদ, ১০ অথর্ব্ব বেদ, ১১ মীমাংসা, ১২ ন্যায়, ১৩ ধর্ম্ম সংহিতা, ১৪ পুরাণ, ১৫ আয়ুর্ব্বেদ, ১৬ ধনুর্ব্বেদ, ১৭ গান্ধর্ব্ববেদ ও ১৮ অর্থ, শাস্ত্র, এই অষ্টাদশ আর্য্য শাস্ত্রের মধ্যে প্রথম শিক্ষা শাস্ত্রীয় বর্ণ বিজ্ঞান অদ্য আলোচনা করা যাউক। কোন্ কারণে "অ" কারাদি বর্ণাত্মক শব্দের উৎপত্তি ও কোন্ স্থান হইতে কোন্ বর্ণের নির্গম হয় এবং উহাদের পূর্ব্ব-পরতা ক্রম নিরূপণ এতাবৎ শিক্ষা শাস্ত্রে নির্ণীত হইয়াছে। এই তিনটী বিষয়ের ১ম ও ২য়টী যে বিজ্ঞান ঘটিত তাহা সহজেই বোধ হইতে পারে, অতএব কল্পনার সন্দেহ স্থল তৃতীয়টীই সংক্ষেপে বর্ণন করিতেছি, ফলতঃ প্রসঙ্গ ক্রমে ১ম ও ২য় বিষয়ও অনালোচিত থাকিবে না।

শিক্ষা শাস্ত্রে "অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ঋ, ৠ, ঌ, ৡ, এ, ঐ, ও, ঔ, ং, ঃ, ক খ গ ঘ ঙ, চ ছ জ ঝ ঞ, ট ঠ ড ঢ ণ, ত থ দ ধ ন, প ফ ব ভ ম, য র ল ব, শ ষ স হ ক্ষ," এই প্রকার বর্ণমালা পাঠের ক্রম অবধারিত আছে। এই বর্ণ গুলির পূর্ব্ব-পরতা ক্রম স্বেচ্ছাধীন কল্পিত নহে, ইহা শারীর প্রকৃতির স্বভাবানুসারে শব্দ পরিস্ফোটক যন্ত্র-ক্রিয়ার পূর্ব্ব পরতানুযায়ী নির্ণীত হইয়াছে, শব্দ মাত্রেরই স্বধর্ম্ম এই যে দুইটী বস্তুর ক্রিয়া দ্বারা উৎপন্ন হইয়া থাকে। এই ধর্ম্ম প্রযুক্তই উক্ত পঞ্চাশৎ বর্ণ দুই ভাগে বিভক্ত হইয়াছে।

১ম, "সঙ্কোচ সম্বর্ষজ" বা স্বর, "* ২য়,

* "স্বোরায়তে" এই যোগার্থ দ্বারা "স্বর" শব্দে "যাহা অনায়াসে উচ্চারিত হয়" এই অর্থ বুঝায়। আধুনিক বৈয়াকরণেরা বলেন যে "স্বয়ং রাজতে ইতি স্বরঃ"

स्वरूप है। अतएव उसके विरह से भी यह आर्य्यशास्त्र जी नहीं सकता। हम लोग इसके प्रमाण स्वरूप शिक्षा आदि अष्टादश शास्त्रों के स्थूल उद्देश्य औ दो एक सन्दर्भ अति संक्षेप से देखाते हैं। इसी से पाठकगण आर्य्यों के महत्वको हृदयङ्गम करके आर्य्यशास्त्रका बहु मूल्यताकी परिचय पावेंगे।

वर्णविज्ञान।

१ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ छन्द, ६ ज्योतिष, ७ ऋग्वेद, ८ यजुर्वेद, ९ सामवेद, १० अथर्व्व वेद, ११ मीमांसा, १२ न्याय, १३ धर्म्मसंहिता, १४ पुराण, १५ आयुर्वेद, १६ धनुर्वेद, १७ गान्धर्व वेद, १८ अर्थशास्त्र, इन अष्टादश आर्य्यशास्त्रों में [illegible] आज पहले शिक्षा शास्त्रीय वर्णविज्ञान की आलोचना की जाय। किस किस कारण से "अ" कारादि वर्णात्मक शब्दों की उत्पत्ति [illegible] किस किस स्थानों से कौन वर्णोंका निर्गम [illegible] होता है और उन्होंका पूर्व परता क्रम [illegible] निर्णय। [illegible] पहिला औ दूसरा जो [illegible] सहज [illegible] जाना जा सकता है। [illegible] तीसरा है [illegible] फलतः [illegible] अनालोचित रहने न पावेगा।

[illegible] "अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, ं, ः। क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, क्ष," इसी प्रकार वर्णमाला का पाठ क्रम अवधारित है। इन वर्णोंकी पूर्व परता क्रम स्वेच्छाधीन वा कल्पित नहीं है। यह शारीर प्रकृति के स्वभाव के अनुसार शब्द परिस्फोटक यन्त्र क्रिया का पूर्व्व परतानुयायी है। [illegible] निर्णय किया गया है।—शब्दमात्र का स्वधर्म्म यही है कि दो वस्तुकी क्रिया में उत्पन्न हुआ करता है। इसी धर्म्म के कारण ऊपरके कहे ५० पंचास अक्षर दो भागों में विभक्त हैं। १ पहला "सङ्कोच संवर्षज," * वा 'स्वर' २य, "सम्पुट

* "स्वोरायते" इसी योगार्थ से, "स्वर शब्द उसका" जो आप उच्चारित हो" इसी अर्थको प्रकाश करता" "आजकलके वैयाकरण लोग कहते हैं। स्वयं राजते इति स्वरः।

"সম্পুট সম্ভেদজ" বা "ব্যঞ্জন" *। যাহারা বায়ুর সম্বেগ জনিত সম্বেগ দ্বারা আকুঞ্চিত স্বর উৎপত্তি স্থানের (নির্গম্যমান আভ্যন্তরিক বায়ু কর্ত্তৃক) সঙ্ঘর্ষণ মাত্রেই উৎপন্ন হয়, তাহাদিগকে "সঙ্কোচ সঙ্ঘর্ষজ" আর যাহারা উক্ত ক্রমে অপরিচ্ছিন্ন রূপে সম্মিলিত স্বর উৎপত্তি স্থানের (নির্গমনশীল আভ্যন্তরিক বায়ু কর্ত্তৃক) সম্ভেদ দ্বারা উৎপন্ন হয় তাহাদিগকে "সম্পুট সম্ভেদজ" বলা যায়। উল্লিখিত পঞ্চাশৎ বর্ণ মধ্যে "অ" কারাদি ষোড়শটী মাত্র বর্ণ প্রথমোক্ত রীতিতে উৎপন্ন আর "ক" হইতে "ক্ষ পর্য্যন্ত চৌত্রিশটী বর্ণ দ্বিতীয় রীতিক্রমে নিষ্পন্ন হইয়া থাকে, এই নিমিত্ত প্রথম ১৬ টী "সংকোচ সংঘর্ষজ এবং দ্বিতীয় ৩৪ টী সম্পুট সম্ভেদজ"। এই ক্রিয়াদ্বয়ের মধ্যে আদৌ (রসনিকাদির দ্রাঢ্যতা ও সম্পূর্ণ রূপ ক্রিয়াশক্তি না হইতে হইতেই) প্রথমটীতে অধিকার ও তৎপরে (ক্রমশঃ রসনিকাদির দ্রাঢ্যতা ও সম্পূর্ণ ক্রিয়া শক্তি জন্মিলে) দ্বিতীয়টীতে সামর্থ্য জন্মে এবং প্রথম ক্রিয়ার সামর্থ্য না হইলে দ্বিতীয় ক্রিয়ার সক্ষমতা হয় না। কারণ "সঙ্কোচের"ই চরমাবস্থা সম্মিলন সুতরাং 'সঙ্কোচ' না হইলে 'সম্পুট' (মিলন) হইতে পারে না এবং 'সম্পুট সম্ভেদ' অপেক্ষা সংকোচ সংঘর্ষ 'অল্পায়াস সাধ্য ইহা স্বাভাবিক বা স্বতঃসিদ্ধ, এ জন্য দেখা যায় যে বালকেরা ব্যঞ্জন বর্ণ পরিস্ফোটের অসামর্থ্যাবস্থায় প্রথম 'অ! আ' আদি স্বর বর্ণের উচ্চারণ করিয়া ক্রন্দনাদি করে। অতএব বালকদিগকে প্রথমতঃ 'সঙ্কোচ সংঘর্ষজ' বর্ণের ও তৎপরে 'সম্পুট সম্ভেদজ' বর্ণের উপদেশ দিবার নিয়ম হইয়াছে।

স্বর বর্ণ সকলও পরস্পর উৎপত্তি স্থানের বিভিন্নতা হেতু কণ্ঠ্য, তালব্য, মূর্দ্ধন্য, দন্ত্য, ওষ্ঠ্য, কণ্ঠ তালব্য ও কণ্ঠৌষ্ঠ্য এই সাত প্রকারে, এবং এতাবৎ আবার মুখ্য, গৌণ ও সন্ধ্যক্ষর ভেদে তিন প্রকারে বিভক্ত হইয়াছে। কণ্ঠ্য, উক্ত প্রকারে আকুঞ্চিত কণ্ঠ ও রসনিকা বা আল জি-

* "ব্যজ্যন্তে" এই যোগার্থ দ্বারা ব্যঞ্জন শব্দে "যাহারা পরস্পরের ভঞ্জন বা সম্মিলন দ্বারা উৎপন্ন হয়" এই অর্থ বুঝায়। আধুনিক বৈয়াকরণেরা বলেন, "ব্যঞ্জনান্যনুযায়ীনি।"

सम्भेदज," वा "व्यञ्जन"।* जो वायुके सम्वेग जनित सम्वेगसे आकुञ्चित स्वर उत्पत्तिस्थानके (निर्गम्यमान आभ्यन्तरिक वायु कर्त्तृक) सङ्घर्षण होनेही से उत्पन्न होते उन्हें "सङ्कोच सङ्घर्षज" और जो उक्त क्रमसे अपरिच्छिन्न रूप सम्मिलित स्व स्व उत्पत्तिस्थानों (निर्गमनशील आभ्यन्तरिक वायु कर्त्तृक) सम्भेद से उत्पन्न होते हैं। जिन्हें "सम्पुट सम्भेदज" कहा जाता है। ऊपर के लिखे हुए पंचाश वर्णों के बीच "अ" कारादि सोलह वर्णोंको पहली रीति से उत्पन्न और "क" से क्ष पर्य्यन्त चौत्तीस अक्षरों को दूसरी रीति से उत्पन्न हुए कहते हैं। इसी लिये पहले १६ सोलहोंको "सङ्कोच-सङ्घर्षज" औ दूसरे चौतीसों को "सम्पुटसम्भेदज" बोला करते हैं। इसी दोनो क्रियाके बीच (रसनिका आदिकी दृढ़ता औ सम्पूर्ण भांत क्रिया शक्तिके होनेके पहले ही) पहलेमें अधिकार और तब (क्रम क्रमसे दृढ़ता औ पूर्ण क्रिया शक्ति उत्पन्न होने पर) दूसरेमें सामर्थ्य होता है, ऐसेही पहली क्रियाकी सामर्थ्य न होनेसे दूसरी क्रियाकी सक्षमता नहीं होता है। कारण यह है कि "सङ्कोच" ही की चरमावस्था सम्मिलन, सुतरां सङ्कोच न होनेसे "सम्पुट" (मिलन) होने नहीं सकता है। एवं "सम्पुटसम्भेदज" से सङ्कोच सङ्घर्ष" अल्प आयाम से साध्य है यह स्वाभाविक अर्थात् स्वतःसिद्ध जानना। इसी लिये देखा जाता है कि लड़के लोग व्यञ्जन वर्णों के फटने "के पहले ही अ आ" आदि स्वर वर्णोंका उच्चारण करके क्रन्दनादि कर्म्म करते हैं। इसी कारण बालकों को पहले सङ्कोच सङ्घर्षज (स्वर) वर्णोंका उपदेश दिया जाता है, तब कहीं "सम्पुट सम्भेदज (व्यञ्जन) वर्णोंका उपदेश दिया जाता है। ऐसही नियम है। स्वरवर्ण औ व्यञ्जनवर्णोंकी उत्पत्तिके स्थानोंमें विभिन्नता होने के कारण कण्ठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, कण्ठ तालव्य, औ कण्ठौष्ठ्य लगाके सात प्रकार हुए। फिर मुख्य, गौण औ सन्ध्यक्षरके भेदसे तीन प्रकार विभक्त हैं।—कण्ठ्य वर्ण उक्त रीति से कण्ठके आकुञ्चित होने पर रस-

* व्यञ्ज्यन्ते ईसी योगार्थ से व्यञ्जन शब्द हुआ "जो परस्पर मिलनेसे उत्पन्न हो"—यही अर्थ होता है, आज कलके वैयाकरण कहते हैं, "व्यञ्जनान्यनुयायीनि"।

হ্বার সংঘর্ষণ জাত অ, আ, ং, ঃ, তালব্য, উক্ত রূপে আকুঞ্চিত তালু ও রসনাভ্যন্তরের সংঘর্ষণ জাত ই, ঈ; মূর্দ্ধন্য উক্ত রীতিতে আকুঞ্চিত রসনোপান্ত বা মূর্দ্ধাদেশের সংঘর্ষণে উৎপন্ন ঋ, ঋৃ; দন্ত্য উক্ত প্রণালীতে আকুঞ্চিত দন্ত ও রসনাগ্রের সংঘর্ষণে নিষ্পন্ন ঌ, ৡ; ওষ্ঠ্য উক্ত নিয়মে আকুঞ্চিত ওষ্ঠদ্বয়ের সংঘর্ষণে জাত উ, ঊ; কণ্ঠ তালব্য এ, ঐ; কণ্ঠৌষ্ঠ্য ও, ঔ। অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ইহারা মুখ্যস্বর; ঋ, ৠ, ঌ, ৡ, ং, ঃ, এ, ঐ, ও, ঔ; ইহাদের আংশিক ব্যঞ্জনতা নিবন্ধন ইহারা গৌণ স্বর; ইহারা নিতান্ত সন্নিহিতে উচ্চারিত ২ বা ৩ বর্ণের সমষ্টী স্বরূপ এই জন্য ইহাদিগকে সন্ধ্যক্ষর কহা যায়। দেখা যায় যে অ, আ, ইহাদের একতর এবং ই, ঈ, ইহাদের একতরের নিতান্ত সন্নিধান উচ্চারণে "এ" আর অ, আ, ইহাদের একতরের এবং "এ"র নিতান্ত সন্নিহিতোচ্চারণে ঐ, এই রূপ 'অ,' 'আর' অন্যতর সন্নিহিত উ, ঊর একতরের উচ্চারণে "ও" এবং "ও"র উচ্চারণে "ঔ" এইরূপ হইয়া থাকে। কথিত প্রকারে সপ্তধা বিভক্ত স্বর বর্ণ মধ্যে কণ্ঠ্যাদি ক্রমে উত্তরোত্তর উচ্চারণ ক্ষমতা হইয়া থাকে, কেন না যে সমস্ত মাংস পেশীর ক্রিয়া দ্বারা আভ্যন্তরিক নিশ্বাস বায়ু বেগবান হয়, সেই পেশী হইতে কণ্ঠাদি স্থান সমূহের উত্তরোত্তরই দূরবর্ত্তিতা হেতু উত্তরোত্তর স্থানেই নিশ্বাস বায়ু ক্রমশঃ দুর্ব্বল, এজন্য ঐ বায়ুর কণ্ঠ ও তালু বা তালু ও মূর্দ্ধাতে একটী সমান ক্রিয়া করিতে হইলে উত্তরোত্তর অধিক বেগে নিঃসৃত হওয়া আবশ্যক; অতএব উত্তরোত্তর স্থানের কার্য্য অপেক্ষাকৃত আয়াসসাধ্য এবং রসনিকাদির মধ্যেও শরীরোপচয়ের নিয়মানুসারে রসনিকা হইতেই ক্রমে পরপর দৃঢ়তাদি হওয়ায় উত্তরোত্তরই উক্ত কার্য্যক্ষমতা হইয়া থাকে, অতএব কণ্ঠাদি ক্রমেই স্বরবর্ণের সন্নিবেশ হইয়াছে। এতন্মধ্যে আবার গৌণ স্বর আংশিক সম্পুট সম্ভেদজতা নিবন্ধন মুখ্য স্বর অপেক্ষা দুরুচ্চার্য্য এবং সন্ধ্যক্ষর দ্বিত্রিবর্ণাত্মকতা হেতু গৌণ স্বর অপেক্ষাও দুরুচ্চার্য্য, এই নিমিত্ত মূর্দ্ধ-জিহ্বোপান্ত্য ও দন্ত-জিহ্বাগ্র স্থানীয় "ঋ" ও "ঌ" বর্ণের পূর্ব্বেই ওষ্ঠ স্থানীয় মুখ্য

निका अर्थात् जीभके संघर्षणसे उत्पन्न हुआ करते है। यथा अ, आ, ० अनुस्वार, : विसर्ग। तालव्य वर्ण उक्त रीति तालुके सङ्कोच होनेपर रसनाभ्यन्तर के सङ्घर्षणसे होते हैं यथा इ, ई। मूर्द्धन्य भी वे सभी रसनोपान्त के आकुञ्चित होने से या मूर्द्धा देश-के सङ्घर्षणसे उत्पन्न होते हैं, यथा, ऋ ॠ। दन्त्यवर्ण उक्त नियम से दन्त के आकुञ्चित होने पर रसनाग्रके सङ्घर्षणसे निष्पन्न होते हैं, यथा ऌ, ॡ। ओष्ठ्यवर्ण उक्त रीतिसे आकुञ्चित ओष्ठद्वयके सङ्घर्षण से होते हैं यथा उ, ऊ;। कण्ठतालव्य ए, ऐ; कण्ठौष्ठ्य ओ औ। अ, आ, इ ई, उ, ऊ ये मुख्य स्वर हैं। ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ ० अनुस्वार, विसर्ग इनमें आंशिक व्यञ्जनता है, ये गौण स्वर हैं नितान्त सन्निहित उच्चारित कईक वर्णोंके समष्टि स्वरूप हैं। इसी कारण इन्हें सन्ध्यक्षर कहा जाता है देखा जाता है कि अ अथवा आ, इ अथवा ई का नितान्त सन्निधान हो कर उच्चारण होने से 'ए' हो जाता है। फिर अ अथवा आ "ए" का नितान्त सन्निहित होकर उच्चारित होनेसे "ऐ" हो जाता है। ऐसे ही अ, आ में से एकतर उ, ऊ, इनमें से एकतर का सन्निहित हो कर उच्चारित होने से 'ओ'; तथा ओ के उच्चारण से औ की उत्पत्ति है। उक्त रीतिसे सप्तधा विभक्त स्वरवर्णों के बीच कण्ठ्यादि क्रमसे उत्तरोत्तर उच्चारणकी क्षमता हुआ करती है। क्योंकि जिस मांसपेशी की क्रियासे आन्तरिक निःश्वास वायु वेगवान होता है, उससे कंठादि स्थानों का उत्तरोत्तर दूरवर्तिता होनेके कारण उत्तरोत्तर स्थानमें निःश्वास वायु क्रमशः दुर्व्वल, और इसी लिये उस वायुका कण्ठ, तालु, और मूर्द्धामें एक समान क्रिया करने पड़नेसे उत्तरोत्तर अधिक वेग से निकलना आवश्यक होता है। अब उत्तरोत्तर कार्य्य अपेक्षाकृत आयास साध्य एवं रसनिका आदिके भी बीच शरीरोपचय के नियमानुसार रसनिकाही से क्रमसे दृढ़ता आदिके होनेसे उत्तरोत्तर ही उक्त कार्य्य क्षमता हुआ करती है। इसी लिये कण्ठ आदि के क्रमसे स्वरवर्णोंका सन्निवेश हुआ है। गौण स्वर का आंशिक सम्पुट सम्भेदता निबन्धन मुख्यस्वर की अपेक्षा दुरुच्चार्य्य एवं सन्ध्यक्षर दो तीन वर्णों के हैं इस हेतु गौण स्वर सभी दुरुच्चार्य्य हैं। इसी निमित्त मूर्द्ध जिह्वोपान्त्य और दन्तजिह्वाग्रस्थानीय 'ऋ' और "ऌ" पहले ही

স্বর "উ" বর্ণের এবং সন্ধ্যক্ষরের পূর্ব্বে গৌণ স্বরের সন্নিবেশ হইয়াছে। "অনুস্বার" ও বিসর্গ গৌণ স্বর হইলেও সন্ধ্যক্ষরাপেক্ষা দুরুচ্চার্য্যতা নিবন্ধন সর্ব্বশেষে উহার সন্নিবেশ হইয়াছে।

স্বর বর্ণের ন্যায় ব্যঞ্জন বর্ণও কণ্ঠ রসনিকাদি পঞ্চ স্থান জাত। যথা ক, খ, গ, ঘ, ঙ, হ, কণ্ঠ ও রসনা স্থানীয়; চ, ছ, জ, ঝ, ঞ, য শ তালু ও রসনার মধ্য স্থানীয়; ট, ঠ, ড, ঢ, ণ, র, ষ, মূর্দ্ধা ও জিহ্বোপান্ত স্থানীয়; প, ফ, ব, ভ, ম, ব, ওষ্ঠ স্থানীয়। কিন্তু যদিও ইহারা ৬।৭টী করিয়া একং স্থান ভাগী বটে তথাপি তন্মধ্যেও স্থান বিভাগ আছে অর্থাৎ যে প্রকার একটী বেণুর কতক গুলি রন্ধ্র থাকে এবং উহার একং রন্ধ্র হইতে ষড়জাদি একং স্বর উত্থিত হয় অথচ উহার মূল, মধ্য ও অগ্রভেদে বিভাগ করা যাইতে পারে, তদ্রূপ মুখ নাসিকারও মূল হইতে অগ্র পর্য্যন্ত পৃথকং স্থান হইতে একং বর্ণ উদ্ভেদ হইলেও স্বর বিস্তারানুসারে কণ্ঠাদি পাঁচ প্রকার বিভাগ দ্বারা বর্ণ সকলের জাতি বিভাগ করা হইয়াছে। ফলতঃ কণ্ঠের প্রথম ভাগ আর রসনিকার প্রথম ভাগের মিলন দ্বারা মুখ নাসিকা অবরুদ্ধ হইয়া নির্গম্যমান আভ্যন্তর বায়ু কর্ত্তৃক ঐ মিলনের সম্ভেদ হইতে "ক" বর্ণ উৎপন্ন হয়, এই কণ্ঠ রসনিকার দ্বিতীয় ভাগের মিলন সম্ভেদ দ্বারা "খ" তৃতীয় ভাগের মিলন সম্ভেদ দ্বারা "গ" চতুর্থ ভাগের মিলন সম্ভেদ দ্বারা "ঘ" এবং পঞ্চম বা শেষ অবয়বের মিলন সম্ভেদ দ্বারা "ঙ" উচ্চারিত হয়। এই প্রকার তালু ও রসনা মধ্যাদির অবয়ব ভেদে "চ" বর্ণাদির পরিস্ফোটন হইয়া থাকে অতএব স্থান ভেদানুসারে স্বর বর্ণের ন্যায় ব্যঞ্জন বর্ণেরও যথাবৎ সন্নিবেশ হইয়াছে। কণ্ঠ্যাদি শ্রেণীস্থ পাঁচং বর্ণের ঈদৃশ পূর্ব্বাপরতার কারণান্তরও কথিত হইতেছে। ক, খ, গ, ঘ, ঙ, এই পাঁচটী বর্ণ ক্রমশঃ মৃদু, তীব্র ও মৃদু সম্বেগজ বলিয়া নির্দ্দিষ্ট হইয়াছে অর্থাৎ "ক" মৃদু সম্বেগজ, "খ" তীব্র সম্বেগজ, গ মৃদু সম্বেগজ, ঘ তীব্র সম্বেগজ, ঙ মৃদু সম্বেগজ। (যদি পাঠক মহোদয়গণের ইহাতে সন্দেহ উপস্থিত হয় তবে অনায়াসে পরীক্ষা করিয়া দেখিতে পারেন। এক মিনিট সময়ে

और, स्थानीय मध्य स्वर "उ" वर्णका सन्निवेश और सन्ध्यक्षरोंकी पहले गौण स्वरोंका सन्निवेश हुआ है। अनुस्वार औ विसर्ग गौण स्वर है, तथापि सन्ध्यक्षरोंसे उनकी दुरुच्चार्य्यता होनेके कारण सबके शेषमें सन्निवेशित हुए हैं।

स्वरवर्णोंकी नाईं व्यञ्जनवर्णोंकी कण्ठ रसनिका आदि पाँच स्थानोंसे उच्चारित होते हैं। यथा क, ख, ग, घ, ङ, ह ये कण्ठ औ रसनास्थानीय; च, छ, ज, झ, ञ, य, श, तालु औ रसनाके मध्यस्थानीय; ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष, मूर्द्धा औ जिह्वोपान्त स्थानीय; प, फ, ब, भ, म, व औष्ठस्थानीय; परन्तु यद्यपि इनमें छ सात करके; एक एक स्थानीय हैं सो ठीक, तथापि उसमें भी स्थान विभाग है अर्थात जिस प्रकार एक वेणुमें कितने एक छिद्र रहते हैं। और उसके एक एक रन्ध्रसे षड्ज आदि एक एक स्वर निकसते हैं अथच उसके मूल, मध्य, औ अग्रके भेदसे विभाग भी किया जा सकता तैसाही मुख, नासिका का भी मूल से अग्र पर्य्यन्त पृथक पृथक स्थान एक एक वर्णोंका उद्भेद होता है। तब पर भी अपने अपने विस्तारके अनुसार पाँच प्रकार विभागके उपर जाति विभाग किया गया है।

फलतः कण्ठके प्रथम भाग औ रसनिकाके प्रथम भागके मिलनसे मुख नासिका अवरुद्ध हो जाती फिर तिससे निर्गम्यमान आभ्यन्तर वायु कर्त्तृक इस मिलनका सम्भेद होनेसे "क" वर्ण उत्पन्न होता है। इसी कण्ठ औ रसनिकाके दूसरे भागके मिलनके सम्भेदसे "ख" तृतीय भागके मिलनके सम्भेदसे "ग" चतुर्थ भागके मिलनके सम्भेदसे "घ" और पञ्चम अर्थात् शेष अवयवके मिलनेके सम्भेद "ङ" उच्चारित होते हैं। इसी भाँत तालु और रसना मध्य आदि अवयवोंके भेदसे च वर्ग आदिका परिस्फोट होता है। अतएव स्थान भेदानुसार स्वर वर्णोंकी नाईं व्यञ्जन वर्णोंका भी यथावत् सन्निवेश हुआ है। कण्ठ आदि श्रेणीके पाँच पाँच वर्णोंकी जो ऐसी पूर्व्वापरता है, तिसका और भी कारण है। क, ख, ग, घ, ङ, क्रमशः मृदु, तीव्र, मृदु, तीव्र औ मृदु सम्वेगज कहलाते हैं। यथा, "क" मृदु सम्वेगज, "ख" तीव्र सम्वेगज, "ग" मृदु सम्वेगज, "घ" तीव्र सम्वेगज "ङ" मृदु सम्वेगज है। यदि पाठक महाशयों इसमें सन्देह उपस्थित हो तो सहज में परीक्षा करके देख सकते हैं। एक

"ক" কতবার ও "খ" কতবার উচ্চারিত হয়। যদি "ক" অপেক্ষা "খ" উচ্চারণ সংখ্যা অল্প হয় তাহা হইলেই "খ" অপেক্ষা "ক" যে মৃদু সম্বেগজ ইহা বুঝিবার বিলম্ব হইবে না।

প্রকৃতি মাত্রেরই স্বভাব এই যে, ইহার যখন যে কোন ক্রিয়া হইতে থাকে, উহা পূর্ব্বতন ক্রিয়ান্তরের প্রতিক্রিয়া স্বরূপে স্ফুরিত হইতেহ অন্য প্রতিক্রিয়া দ্বারা অভিভূত হইয়া পড়ে এবং তৎপরে নিজ প্রতিক্রিয়াকে প্রতিকার পূর্ব্বক স্ফুরিত হইয়া উঠে। (প্রতিক্রিয়াকে ক্রিয়ার বিশ্রামও বলা যাইতে পারে) এবং ইহাও স্থির সিদ্ধান্ত যে ক্রিয়া ও প্রতিক্রিয়ার পরস্পর ন্যূনাধিক্যানুসারে পরস্পরের ন্যূনাধিক্য হইয়া থাকে। * এই স্বভাব বশতঃ "লঘু সম্বেগজ" "ক"র উচ্চারণের "লঘু প্রতি সম্বেগ" কালীন "তীব্র সম্বেগ" অনায়াস সাধ্য, অতএব "ক"র পর তীব্র সম্বেগজ "খ" নিয়মিত হইয়াছে; তীব্র সম্বেগজ "খ"র উচ্চারণের "তীব্র প্রতি সম্বেগ" কালীন পুনস্তীব্র সম্বেগজ বর্ণোচ্চারণ অধিকতর আয়াস কর, এজন্য 'খ'র পর অল্পায়াস মধ্যে 'লঘু সম্বেগজ 'গ' এবং 'গ' উচ্চারণের লঘু "প্রতি সম্বেগ" কালীন অনায়াস সাধ্য "তীব্র সম্বেগজ" ঘ" উচ্চারণের পর আবার "লঘু" সম্বেগজ "ঙ" নিয়মিত হইয়াছে। এইরূপ তালু আদি স্থানীয় চবর্গাদিও উক্ত নিয়মের অধীন নির্দ্দিষ্ট হইয়াছে। এইরূপ ক হইতে ম পর্য্যন্ত শিক্ষিত হইলে বহুস্থান জাত এবং দুরুচ্চারণীয় "য" হইতে "হ" পর্য্যন্ত আটটী বর্ণের ও তদনন্তর সংযুক্ত বর্ণ 'ক্ষ' সন্নিবেশিত হইয়াছে।

পাঠক মহোদয়! বোধ করি এক্ষণে বুঝিতে পারিলেন যে আর্য্যগণ ক, খ, আদি শিক্ষা দান সময়েও প্রকৃতির স্বভাব রসে মত্ত হইয়া বাল প্রকৃতির আস্বাদন পূর্ব্বক বর্ণমালা সন্নিবেশ ক

* প্রকৃতির এই প্রকার স্বভাব না থাকিলে আমরা একটা লোষ্ট্র উৎক্ষেপ করিয়া আর তাহাকে ভূমিষ্ট দর্শন করিতাম না। প্রত্যুত অন্যথা উহার গতি নিবৃত্তিরই কারণ লক্ষিত হয় না। পৃথিবীর মাধ্যাকর্ষণ ও বায়বীয় ক্রিয়াই উৎক্ষেপের প্রতিক্রিয়া, তদ্দারা লোষ্ট্রের উদ্গতি শক্তি অভিভূত হইলে, উক্ত প্রতিক্রিয়া দ্বারাই ভূমি সংযুক্ত হয়। এই স্বভাব দ্বারাই আমাদের জাগরণানন্তর নিদ্রা ও নিদ্রানন্তর জাগরণ হইতেছে। জগতের

मिनिट भर समयमें "क" कैवार और "ख" कै बार बोला जा सकता है। यदि "क" से "ख" की संख्या न्यून हो तब यह समझने में कुछ विलम्ब नहीं होगा "ख" के आगा "क" मृदु सम्वेगज है।

प्रकृति मात्र ही का स्वभाव यह हैं कि उसका जब जो क्रिया हुआ करती सो पूर्व्वतन क्रियाकी प्रतिक्रिया रूपसे स्फुरित होती होती दूसरी प्रतिक्रियामे 'अ' भिभूत हो जाती हैं। एवं अपनी प्रतिक्रियाका प्रतिकार करके स्फुरित हो उठती हैं। (प्रतिक्रियाको क्रियाका विश्राम भी कहा जा सकता!) और यह भी स्थिर सिद्धान्त है कि क्रिया औ प्रतिक्रियाके परस्पर न्यूनाधिक्य हुआ करता है*। इसी स्वभावके कारण लघु सम्वेगज "क" के उच्चारके 'लघुसम्वेग" कालीन "तीव्रसम्वेग" अनायास साध्य हैं। इसी लिये "क" के बाद तीव्र सम्वेगज "ख" नियमित किया गया हैं; तीव्रसम्वेगज "ख" के उच्चारण का "तीव्रसम्वेग" कालीन फिर तीव्रसम्वेगज वर्णका उच्चारण अधिकतर आयास कर होता इस लिये "ख" के पर अल्प आयास साध्य "लघुसम्वेगज" "ग" और "ग" उच्चारण का 'लघुप्रतिसम्वेग" कालीन अनायास साध्य तीव्रसम्वेगज "घ" के उच्चारणके बाद फिर लघुसम्वेगज "ङ" नियमित हुए हैं। इसी प्रकार तालु आदि स्थानीय चवर्ग आदि भी उक्त नियमके अधीन निर्दिष्ट हुए हैं। ऐसही क से म पर्य्यन्त सिखाया जानेसे उपरान्त बहुस्थानजात तथा दुरुच्चारणीय "य" "ह" पर्य्यन्त आठों अक्षर औ तदुत्तर संयुक्तवर्ण "क्ष" सन्निवेशित हुए हैं। पाठक महोदयगण! बोध होता हैं अभी समझसकें गे कि आर्य्यगण क, ख आदिके शिक्षा देनेके समय भी प्रकृति स्वभाव रसमें मत्त होकर बालप्रकृतिका

* प्रकृतिका ऐसा स्वभाव न रहता तो हमलोग एक ढेलेको फेंकके फिर उसे धरतीपर गिरने नहीं देखते। बल्कि अन्यथा उसकीगति औ निवृत्तीकी कारण लक्षित नहीं होता हैं। पृथिवीका माध्याकर्षण औ वायुकी क्रिया हो उत्क्षेप की प्रतिक्रिया है। तिससे ढेले की उद्गमन शक्ति जब अभिभूत हो जाता है तब उक्त प्रतिक्रियासे भूमि संयोग होता है। इसी स्वभावसे हमलोगोंका जागनेके अनन्तर निद्रा औ निद्राके अनन्तर जागरण होता है। जगत् मे जितनी वस्तु हैं सो सर्व्वथा इसी स्वभाव की अधीन हैं।

য়াছেন এবং প্রকৃতির প্রতি প্রগাঢ় প্রেমের পরিচয় দিয়াছেন। তাঁহারা বৃহৎ২ শাস্ত্র প্রণয়ন কালে কখনই প্রকৃতিকে বিস্মৃত হইয়া কল্পনার অনুবর্ত্তী বা অনুরাগী হয়েন নাই। পাণ্ডিত্যাভিমানী কতক গুলি জন্মান্ধ কর্ত্তৃকই আর্য্য শাস্ত্রের বর্ত্তমান বিষম দুর্দ্দশা ও দুর্নাম হইয়াছে।

ভগবান শ্রীরামচন্দ্রের অশ্বমেধ যজ্ঞ। *

মহোদয়গণ! ভগবান শ্রীরামচন্দ্র কনক লঙ্কার দুর্দ্ধর্ষ বীর দশাননকে সবংশে বিনিপাতিত করিয়া রাবণাপহৃতা নিজ বনিতা সীতাকে উদ্ধার করিলেন। বিশ্ববিজয়ী বীর অযোধ্যা পুরীতে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া অপ্রতিহত প্রভাবে রাজ্য করিতেং রাজনৈতিক নিয়মের বশবর্ত্তীতা প্রযুক্ত গর্ভবতী জনক-তনয়াকে বনবাসিনী করিতে বাধ্য হইলেন। রাজশ্রী ক্ষত্রিয় ধর্ম্ম, তেজস্বীতা, বীরপ্রতাপ, বিপুল বিক্রম প্রভৃতি গুণরাশি তাঁহাকে 'অশ্বমেধ' মহা যজ্ঞে ব্রতী করিল। যজ্ঞানুষ্ঠানের অবশ্যাবশ্যকীয় দ্রব্য সম্ভার আদি তাবদ্বিষয়েরই আহরণ হইল। যজ্ঞীয় অশ্বকে ধনুর্ব্বাণ, ধ্বজা আদি দিগ্বিজয় চিহ্নে চিহ্নিত ও তাহার ললাট ফলকে 'বিজয় পত্র' আবদ্ধ করিয়া দেওয়া হইল। অশ্ব স্বাধীন ভাবে দিগ্দেশ পর্য্যটনে গমন করিল এবং দুর্জ্জয় বীর সুমিত্রাকুমার তাহার রক্ষক হইয়া সঙ্গে২ চলিলেন।

সুলক্ষণাক্রান্ত অশ্ব গ্রহণ করিবার জন্য দর্শক মাত্রেরই স্পৃহা জন্মিতে লাগিল কিন্তু যখন অশ্বের ললাট ফলকে আবদ্ধ বিজয় লিপি পাঠে বিদিত হইলেন যে, যদি কেহ এই যজ্ঞীয় তুরঙ্গ ধারণ কর অথবা ইহার গতি রোধ কর তবে রাজাধিরাজ চক্রবর্ত্তী শ্রীরামচন্দ্র সহ তাঁহাকে সম্মুখ সমর সমুদ্রে অবগাহন করিতে হইবে। যাঁহারা নিজ২ ক্ষুদ্র বল বিক্রম বিদিত আছেন ও অপ্রমত্ত হৃদয় তাঁহারা এই দুঃসাহসিক কার্য্যে প্রবৃত্ত হইলেন না। অশ্ব অনিবার্য্য বেগে নানা দেশ, প্রদেশ, বন, প্রান্তর অতিক্রম করিয়া অবশেষে বাল্মীকির তপোবনে আসিয়া প্রবেশ ক-

* আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সহযোগী সম্পাদক কর্ত্তৃক ব্যাখ্যাত উপদেশের সারাংশ।

च्छादन करते वर्णमालाका सन्निवेशन कर गये हैं। औ प्रकृतिमें प्रगाढ़ प्रेमका परिचय दे गये हैं। वो बड़े बड़े शास्त्रोंके प्रणयन कालमें प्रकृतिको भूलकर कल्पनाके अनुवर्त्ती वा अनुरागी नहीं हुए थे। पाण्डित्याभिमानी कितने एक जन्मान्धको करनी केवल आर्य्यशास्त्रोंका वर्त्तमान विषम दुर्द्दशा औ दुर्नाम हुआ है।

श्रीरामचन्द्र भगवान्का अश्वमेधयज्ञ।*

महोदयगण! श्रीरामचन्द्र भगवानने स्वर्णमय लङ्काधिप दुर्धर्षवीर रावणको सवंश विध्वंस कर रावणापहृता निज वनिता सीताका उद्धार किया। यह विश्वविजयी वीर अयोध्यापुरीमें आकर अप्रतिहत प्रभावसे राज्य करते करते राजनैतिक नियमोंके वशवर्त्तिता प्रयुक्त गर्भवती सीताको वनवास देने को बाध्य हुए। राज्यश्री, क्षत्रियधर्म्म, तेजस्विता, वीरप्रताप, विपुलविक्रम प्रभृति गुणराशिने सहायता "अश्वमेधमें व्रती किया। यज्ञानुष्ठानके अवश्य आवश्यकीय द्रव्यसम्भार आदि समस्त विषयका आहरण हुआ। अश्वको धनुर्व्वाण, ध्वजादि दिग्विजयके चिह्नोंसे अङ्कित करके उसके ललाट फलकमें "विजय पत्र" बांध दिया गया। अश्व स्वाधीन भावसे दिग्देशके पर्य्यटनके निमित्त चला—और उसके रक्षक हो कर साथ साथ दुर्ज्जय वीर चन्द्रकेतु भी चले।

अनन्तर सुलक्षण अश्वको लेने को दर्शकमात्र ही को इच्छा हुई। परन्तु जब अश्वके ललाट फलकमें बांधे विजयपत्रको पढ़ कर अवगत हुए कि "जो कोई इस यज्ञ तुरङ्गको पकड़ेगा या इसकी गति को रोध करेगा तो उसे राजाधिराज चक्रवर्त्ती श्रीरामचन्द्रके सम्मुख समर समुद्रमें डूब देने पड़ेगा। जो लोग अपने अपने क्षुद्र बलविक्रमसे अवगत औ अप्रमत्त हृदय थे वे इस दुःसाहसिक कार्य्यमें प्रवृत्त न हुए। अश्व अनिवार्य्य वेगमें नाना देश, प्रदेश, वन, प्रान्तर का अतिक्रम करके अन्तमें वाल्मीकि केतपोवनमें आ पड़ा। लव, कुशने बालस्वभाव प्रयुक्त अश्वको सुन्दर देखकर पकड़ लिया; अपने भुजबलसे

* आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके सहयोगी सम्पादकके व्याख्यात उपदेशका सार अंश।

রিল। লব কুশ বাল স্বভাব প্রযুক্ত সুন্দর অশ্ব ধারণ করিলেন; নিজ ভুজবীর্য্যে ত্রিভুবন পরাজয় করিতে পারি এই রূপ স্থির জ্ঞানে অশ্বারোহণে ক্রীড়া করিতে লাগিলেন। শ্রীরাম সেনাসহ মহা-সমর আরম্ভ হইল। ক্রমে২ সসৈন্য রামানুজত্রয় সমর সায়ী হইলেন। শ্রীরামচন্দ্র স্বয়ং নিজ পুত্র-বোধে অনেক বুঝাইয়াও তাহাদিগকে নিবৃত্ত করিতে পারিলেন না। অবশেষে তাঁহার মরণ মূর্চ্ছায় মহারণের অবসান হইল। লব কুশ রক্তাক্ত গাত্রে প্রফুল্ল চিত্তে অশ্ব ও সমরাঙ্গনে নিহত রামাজ্ঞাকারী হনুমানকে লইয়া জননী সমীপে গমন করিলেন। সীতা তদ্দর্শনে কপালে করাঘাত করিয়া রোদন করিতে২ লব কুশকে পিতৃহন্তা আদি বলিয়া তিরস্কার করিতে লাগিলেন। ইত্যবসরে বাল্মীকি আসিয়া সসৈন্য শ্রীরাম আদির চৈতন্য সঞ্চার করিলেন। লব কুশ পিতৃ পরিচয় পাইয়া ভক্তিসহ তৎপদে প্রণাম করিলেন। যজ্ঞীয় তুরঙ্গ সহ রামচন্দ্র অযোধ্যার প্রতি নিবৃত্ত হইয়া অশ্বের মেধ দ্বারা যথাবিধ যজ্ঞ সমাপন করিলেন।

আর্য্য ধর্ম্মাবলম্বিগণ। আদি কবি বাল্মীকির লিপি নৈপুন্য, রস মাধুর্য্য ও কবিত্ব-কুসুম-শৌরভ বিষয়ী, মুমুক্ষু ও মুক্ত এতত্ত্রিবিধ শ্রেণীর লোককেই বহু দিন হইতে বিমোহিত করিয়া আসিতেছে। বাল্মীকি মহারামায়ণ গ্রন্থ কেবল বিষয়ী দিগের চিত্ত বিনোদনের জন্যই লৌকিক রাম চরিত্র লিখিয়াই পরিতৃপ্ত হন নাই। মুমুক্ষু ও মুক্ত মণ্ডলীর গ্রহণোপযোগী উপচারেরও ইহাতে অভাব নাই। ইহা দ্বারা অস্মাদৃশ মূঢ় এবং অন্যান্য তত্ত্বানুসন্দিৎসু মহাত্মাগণকে জ্ঞানোপদেশ দেওয়াই তাঁহার অভিপ্রায়। অদ্য এই রামায়ণোক্ত বিবরণটীর লোকসাধারণের ভার বহির্ভূত নিগূঢ় রহস্য ভেদে প্রবৃত্ত হইলাম।

যিনি সর্ব্বভূতে সর্ব্বদা অভিরমণ করিয়া থাকেন তিনিই রামচন্দ্র; যুদ্ধ বিগ্রহ শূন্য অথবা নির্দ্দন্দ্ব পুরী বা আনন্দ ধামই তাঁহার রাজধানী অযোধ্যা। ভগবান স্বীয় শুদ্ধ সত্ত্বায় অধিষ্ঠিত হইয়া এই ব্রহ্মাণ্ডের সৃষ্টি, স্থিতি ও নাশ রূপ এক মহা অশ্বমেধ যজ্ঞ আরম্ভ করিলেন। অশ্ব এই যজ্ঞের প্রাণ। অহংকারই অশ্ব বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে অহংকারেই জগতের সৃষ্টি এবং অহং

त्रिभुवनको जीत सकेंगे, ऐसही समझ करके अश्वपर चढ़कर क्रीड़ा करने लगी। श्रीरामचन्द्र जीके सैन्य के साथ महा संग्राम आरम्भ हुआ। क्रम क्रम श्रीरामचन्द्र जीके तीनों भाई समरशायी हुए।

श्रीरामचन्द्र अपना पुत्र समझके बहुत प्रकार बुझा कर भी उन्होंको निवृत्त कर न सके। अन्तमें उनको मूर्च्छा आदि होनेसे महारण का अवसान हुआ। रक्ताक्त गात्र लवकुश प्रफुल्लचित्तसे अश्व औ समराङ्गणमें निहत रामाज्ञाकारी हनूमानको लेकर माताके निकट गये। यह देखते ही सीता माथा पीटकर रोदन करी औ लवकुशको पितृ हन्ता आदि कहकर तिरस्कार करने लगी। इतनेमें बाल्मीकि आकर ससैन्य श्रीराम आदिको सचेतन किया। लव कुश भी पिताका परिचय पा कर भक्तिपूर्व्वक उनके चरणों पर गिरे। श्रीरामचन्द्र महाराज यज्ञके अश्वको लिये हुए अयोध्यामें पहुंचकर अश्वके मेधसे यथाविधि यज्ञको समाप्त किया।

आर्य्यधर्म्मावलम्बिगण। आदि कवि बाल्मीकी जी की लिपि की निपुणता इसकी मधुरता औ कवित्व कुसुम की सुरभिता मुक्त, मुमुक्षु विषयी एन त्रिविध श्रेणीके लोगोंको बहुत दिनोंसे विमोहित करी आती है। बाल्मीकि जी इस महा "रामायण" को केवल विषयिजनके चित्त रञ्जन करने अर्थ लौकिक रामचरित्र का स्वरूप रचित करके परितृप्त नहीं हुए। मुक्त मुमुक्षु लोगोंके भी लेने योग्य उपचारोंकी कमती नहीं है। यह मेरेसे मूढ़ औ अन्यान्य तत्त्वानुसंधित्सु, महात्माओंको ज्ञानोपदेश देनेका उनका अभिप्राय था। आज इसी रामायणोक्त विवरणका लोकसाधारणोंके भाव बहिर्भूत निगूढ़ रहस्यके भेदमें प्रवृत्त होता हैं।

जो सर्व्वदा सर्व्वभूतमें अभिरमण करते हैं वही रामचन्द्र। युद्धविग्रह वर्जित वा निर्द्वन्द्व जो पुरी वही अयोध्या कहाती है। वा आनन्द ही को राम कहते हैं, जिनकी पुरीका नाम अयोध्या।

भगवानने अपनी सत्तामें अधिष्ठित हो कर इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि, स्थिति, प्रलय रूप महायज्ञ आरम्भ किया। प्राण वा अहङ्कार ही इस यज्ञका अश्व ठहराया गया है। अहंकार ही से जगत् की

বিনষ্ট হইলেই তাহার মেধ বা তৎসারভূত আত্ম জ্ঞান উদয় হয় এবং তদ্দ্বারাই যজ্ঞ পূর্ণ বা সৃষ্টি প্রলয় হইয়া থাকে। অর্থাৎ জন্ম, মৃত্যুরূপ সংসার নিবৃত্ত হইয়া যায়। অহংকার বিজয়পত্র ললাটে ধারণ করিয়া ভ্রমণ করিতেছে অথবা অহংকারী লোকে আপনাকে সর্ব্বাপেক্ষা প্রধান বলিয়া বিশ্বাস করে। জ্ঞান, বৈরাগ্য, বিবেক আদি কেহই অহংকারকে স্পর্শ করিল না। "আমি আত্মা নহি" এই ভ্রম জ্ঞানকে লব বলা হইয়াছে। (লব আপনাকে শ্রীরামাত্মজ বলিয়া বিশ্বাস করিলেন না,) এবং "দেহাত্ম-জ্ঞান" কুশ রূপে ব্যাখ্যাত হইল, লব ও কুশে যেমন সৌসাদৃশ্য আছে, "অনাত্ম-জ্ঞান" ও "দেহাত্ম জ্ঞানে" তাদৃশ একাবয়বিকত্ব আছে। ইহারা দুই যমজ ভ্রাতা; এই দুইটীই জীবের পরিচারক; অর্থাৎ মূঢ় জীব, অহংকারকে হৃদয়ে রক্ষা করিল। যে অশ্ব ধারণ করিল তাহাকে শ্রীরাম সহ সমরে প্রবৃত্ত হইতে হইল পক্ষান্তরে অহংকার বশতঃ জীব ঈশ্বরবিরোধী বা অধর্ম্মাচারী মহা পাষণ্ড হইয়া উঠিল। রামের দুর্নিবার সৈন্যগণ বিপক্ষ পক্ষ দলন করিতে লাগিল অর্থাৎ ভগবৎ পরাঙমুখ জীবকে শোক, রোগ, তাপ, বেদনা, ক্লেশ, বিঘ্ন, বিপত্তি, আদি সদাই পীড়ন করিতে লাগিল কিন্তু প্রকৃতির নিয়মে (সীতার আশীর্ব্বাদে) লব কুশ (জীব) বিজয় লাভ করিল অর্থাৎ "ঈশ্বর নাই" অহংকারী জীবের এইরূপ দৃঢ় বিশ্বাস জন্মিল। অতঃপর জীব, প্রকৃতি জাত প্রত্যক্ষ পরিদৃশ্যমান জড় জগতে (জগৎ প্রসূতি সীতার কুটীরে) অশ্ব (অহংকার) ও হনুমান (আত্মানাত্ম বিচার) লইয়া গমন করিলেন। প্রকৃতি নিজ পুত্র জীবকে ঈশ্বরের অস্তিত্বে অস্বীকার করিতে দেখিয়া কাতর স্বরে সৃষ্টি, স্থিতি, লয়, কার্য্য, কারণ ঘটনা আদি এক২ অশ্রু বিন্দু বিসর্জ্জন করিয়া মৃদুস্বরে কহিতে লাগিলেন, রে জীব! তুই অবোধ শিশু, না জানিয়া না বুঝিয়া আজ পিতৃ বধ করিলি, তোর এই [illegible] বিজয় জীবনের এক মহাকলঙ্ক হইয়া উঠিল, তুই যে মাতৃ বরের বলে বিজয়ী হইলি আজ তোর সেই মাতাও পাতিব্রত্য নিবন্ধন ভর্ত্তৃচিতানলে প্রাণ ত্যাগ করিবে, অর্থাৎ ঈশ্বরের সত্বা না থাকিলে জগতের সত্বা থাকিতে পারে না, প্রকৃতি কাঁদিতে২ কাতর

सृष्टि की अहंकार के विनष्ट होते उसका सारभूत आत्म ज्ञानका उदय होता है। एवं सो यज्ञ पूर्ण अर्थात् सृष्टि लय हुआ करते हैं भाव यह है कि जन्म मृत्यु रूप संसार निवृत्त हो जाता है। अहंकार ही विजयपत्र ललाटमें धारणकर भ्रमण करता है। अथवा अहंकारी लोकही सर्व्वापेक्षा अपनेको प्रधान जान मान रखते हैं। ज्ञान वैराग्य, विवेक आदि के किसीने अहंकारका स्पर्शन किया। मैं आत्मा नहीं हूं इसी भ्रामिक ज्ञानको लव कहा गया है। (लवने अपनेको रामात्मज न कर विश्वास न किया।) ऐसही देहात्मज्ञान कुशरूप विख्यात किया गया है। लव और कुशमें जैसा [illegible] "अनात्म ज्ञान" "देहात्म ज्ञान" में एकावयव [illegible] यमज भ्राता [illegible] ये दोनों जीवोंके परिचारक हैं। अर्थात् मूढ जीव अहंकारको हृदयमें रखते हैं। जिसने अश्वको धारण [illegible] श्रीरामके साथ [illegible] अहंकार वशतः जीव ईश्वर विरोधी वा अधर्म्माचारी महा पाषण्ड हो गया। श्रीरामका दुर्निवार सैन्यगण विपक्ष पक्षको दलन करने लगा अर्थात् भगवत् पराङ्मुख जीवको शोक, रोग, ताप, [illegible] क्लेश, विघ्न, विपत्ति आदि सदा ही पीड़ित [illegible] परन्तु प्रकृतिके नियमसे। (सीताके आशीर्व्वादसे) लव कुशने (जीव) विजय लाभ किया। अर्थात् "ईश्वर नहीं है," अहंकारी जीवको ऐसाही दृढ विश्वास जन्मा। इसके अनन्तर जीव, प्रकृति जात प्रत्यक्ष दृश्यमान जड़ जगतमें (जगत प्रसूति सीताकी कुटीमें, अश्व (अहंकार) और हनुमान (आत्मानात्मविचार) को लेता हुआ गया। अब प्रकृति अपने पुत्र जीवको ईश्वरको अस्तित्व न मानते देखकर कातर स्वरसे सृष्टि, स्थिति, लय, कार्य्य, कारण घटना आदि रूप एक एक अश्रु विन्दु विसर्जन करके मृदु स्वरमें कहने लगी, रे जीव! तू अबोध बालक है, आज तूने विन जाने विन बूझे पितृवध किया, तेरा यह रणविजय जीवनका एक महा कलंक स्वरूप हुआ। तू जिस माताके वरके प्रसाद विजयी हुआ वही तेरी मा आज पातिव्रत्य हेतु स्वामीके चितानिमें पड़कर प्राण त्याग करेगी अर्थात् ईश्वरका सत्तान न रहने से जगत कभी नहीं ठहर सकता, यों प्रकृतिने रोदन करती हुई जीवको बुझा दिया, अर्थात् जड़ जगतकी अस्तित्व ही ईश्वरकी

স্বরে জীবকে এইরূপ বুঝাইয়া দিলেন। অথবা জড় জগতের অস্তিত্বই ঈশ্বরের অস্তিত্ব বুঝাইয়া দেয়। এইরূপে জীব প্রকৃতি কর্ত্তৃক প্রবুদ্ধ হইয়া পশ্চাত্তাপগ্রস্ত হইলে সদ্‌গুরু (বাল্মিকি) জ্ঞানোপদেশ (অমৃতাভিষেক) দ্বারা জীবের সমক্ষে ঈশ্বরের পূর্ণ সত্ত্বা দেখাইয়া দেন তখন জীবও ঈশ্বরের পদে ভক্তি বিনম্র চিত্তে প্রণাম করিয়া অহংকার (যজ্ঞীয় অশ্ব) পরিহার করিয়া থাকে। ভগবান অহংকারকে সংহার করিলেই এই সংসার প্রলয় সাগরে ডুবিয়া যায় এবং অশ্বের মেধ বা অহংকারের সার ভূত আত্ম সত্ত্বা দ্বারা যজ্ঞের পূর্ণাহুতি বা সংসারের পরি সমাপ্ত হইয়া থাকে।

বন্ধুগণ! আমরা সকলেই লব কুশের ন্যায় না বুঝিয়া যজ্ঞীয় অশ্ব ধারণ করিয়াছি, এই জন্যই শোক রোগ তাপাদি ভগবানের তীব্র বাণে হৃদয় ক্ষত বিক্ষত হইতেছে। যতক্ষণ না অশ্ব ছাড়িয়া দিব তৎক্ষণ এই দুর্ব্বিপত্তি হইতে পরিত্রাণ নাই। যদি কেহ নিজ গৃহে অশ্ব বাঁধিয়া রাখিয়া থাকেন (যদি গৃহাদি আমার বলিয়া বোধ থাকে) তবে এখনই উহা পরিত্যাগ করুন যদি কেহ উদ্যানে তুরঙ্গ বাঁধিয়া থাকেন (যদি উদ্যানাদি সম্পত্তিতে মমতা থাকে) তবে এখনই উহা পরিত্যাগ করুন; যদি অন্তঃপুর মধ্যে কেহ উক্ত তুরঙ্গ লুকাইয়া রাখিয়া থাকেন (যদি স্ত্রী পুত্রাদিতে মমতা থাকে) তবে এখনই উহা পরিত্যাগ করুন; যদি কেহ হস্তে উহার রশ্মিও ধারণ করিয়া থাকেন (যদি শরীরাদিতে অহংবুদ্ধি থাকে) তবে উহা এখনই পরিত্যাগ করুন; যদি কেহ মনে মনেও উহাকে স্থান দিয়া থাকেন (যদি অভিমানাদি থাকে) তবে এই মুহূর্ত্তেই উহা পরিত্যাগ করুন। উহাকে স্পর্শ করিবেন না, উহার নিকটে যাইবেন না, উহার সংকল্পও করিবেন না। রামসহ মহারণে প্রবৃত্ত হইয়া স্ব২ জীবনকে কলঙ্কিত ও দুরাগ্রহ যুক্ত করিবেন না। ভগবানের মহাযজ্ঞ নির্ব্বিঘ্নে ও সুচারুরূপে পরিসমাপ্ত হউক।

হিন্দু ও ব্রাহ্মগণের সম্মিলন।

(৪৩২ পৃষ্ঠার পর)

আমি ব্রহ্ম সমাজের বক্তৃতা শুনিতে চা-

अस्तिको बुझा देती है। जब इस भांति जीवप्रकृति कर्त्तृक प्रबुद्ध हो कर पश्चात्तापग्रस्त हुए तब सद्गुरु (वाल्मीक) ज्ञानोपदेश रूप अमृताभिषेक करके जीवके साम्हने ईश्वरकी पूर्ण सत्वा देखा दिया करते हैं। जीवभी ईश्वरके चरणारविन्दमें भक्ति विनम्र चित्त हो प्रणामकर अहङ्काररूप यज्ञके अश्वको छोड़ दिया करता है। भगवान अहङ्कार का संहार करते हो यह संसार प्रलयसमुद्र में डूब जाता है, एवं अश्वके मेध या अहङ्कारके सारभूत आत्मसत्ताके द्वारा यज्ञकी पूर्णाहुति वा संसारकी परिसमाप्ति हो जाता है।

भाइयों! हमलोग सबही लवकुशकी नांई यज्ञको अश्वको पकड़ा है इसी लिये शोक रोग ताप आदि भगवानके तीव्र बाणोंसे हृदय क्षत विक्षत होता है। जबतक घोड़ेको छोड़ न देंगे तबतक इस दुर्व्विपत्तिसे परित्राण नहीं होगा। जो किन्होंने अश्वको घरमें बांध रखा हो (जो गृह आदि मेराहै ऐसा समझ किसीका हो) तो अभी तुरंत छोड़ दें। यदि किन्हीनें उद्यानमें अश्व बांध रखा हो। (यदि माइ उद्यान आदि सम्पत्तिमें ममता रखते हो) तो अभी उसे छोड़ दें। यदि किन्होंने उक्त अश्वको अन्तःपुर में लुका रखा हो (यदि स्त्री पुत्र आदिमें ममता रहै तो अभी छोड़ दें। यदि किन्हीनें उसका लगाम हाथमें धरा हो यदि शरीर आदिमें अहम्बुद्धि रहै) तो अभी इसका परित्याग कर दें। यदि किन्हीनें मन मन रखा हो यदि अभिमान आदि रहै) तो इसी मुहूर्त्त छोड़ दें। उसका स्पर्श मत कीजिये, उसके निकट मत जाइये, उसका सङ्कल्प भी मत कीजिये। रामके साथ युद्धमें प्रवृत्त हो कर जीवनको कलंकित औ दुराग्रह युक्त मत कीजिये, भगवानका महायज्ञ को अच्छी भांति निर्विघ्न परिसमाप्ति हो।

(हिन्दुओं औ ब्राह्मों का मेल)

(४३२ पृष्ठा के आगे।)

मैं ब्राह्मसमाज की वक्तता सुनने नहीं चाहता

হিনা, হরি সভার কেবল মহিম্ন স্তব শুনিয়াই বা আমার কি হইবে। আমাদিগের আর্য্য শাস্ত্রের যথার্থ মর্ম্ম যাহাতে সাধারণে হৃদয়ঙ্গম করিতে পারেন তাহারই উপায় করা আদৌ কর্ত্তব্য। ব্রাহ্মগণ যে ভাবে ধর্ম্ম প্রচার করিয়াছেন সে ভাব পরিত্যাগ করিয়া দেশীয় ভাব অবলম্বন করুন, প্রচারকের পরিবর্ত্তে এক২ জন শাস্ত্রবেত্তা নিযুক্ত করুন। তাঁহারা আড়ম্বর পূর্ণ বক্তৃতা ত্যাগ করিয়া যদি সাধারণকে শাস্ত্রজ্ঞান শিক্ষা দেন তাহা হইলেই তাঁহারা ভারতের যথার্থ উপকারী। যাহাতে লোকের মন ধর্ম্মভাবে আর্দ্র হয় তাহাই করিতে হইবে। মত প্রচার অপেক্ষা ধর্ম্ম প্রচারই ভারতের কল্যাণকর। কঠোর নিরাকার ব্রহ্মের উপাসনায় আপামর সাধারণের মন আর্দ্র হইতে পারে না, এ সম্বন্ধে ইতিপূর্ব্বে আর একটী প্রবন্ধে আমার মন্তব্য প্রকাশ করিয়াছি সুতরাং সে বিষয়ে একণে আর কিছু বলিতে চাহি না। অধিকার ভেদে সকলকে উপদেশ দেওয়া উচিত। একথা সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজ অনুমোদন করিতে পারেন; যেহেতু "তত্ত্ব কৌমুদী" পত্রিকার ২য় ভাগ তৃতীয় সংখ্যায় "উদারতা" শীর্ষক প্রবন্ধে এরূপ উদারতার পরিচয় পাইয়াছি এবং এরূপ কার্য্য উন্নতমনা হিন্দুগণেরও অনুমোদিত। আমাদের প্রকৃতি দোষে আমরা সনাতন ধর্ম্মকে বিকৃত ভাবে দর্শন করিতেছি, সেই ভাব সংস্কৃত করিয়া লওয়া প্রত্যেকের কর্ত্তব্য। ব্রাহ্মগণের প্রতিমা পূজাকে ঘৃণা করা উচিত নহে কেন না যত দিন না তত্ত্বজ্ঞানোদয় হয় তত দিন স্ব২ প্রকৃতি ভেদে সাধকের মনোরঞ্জনকর ভগবন্মূর্ত্তি আরাধনা করা মনুষ্যের অবশ্যম্ভাবী। স্বীয় উপাস্য দেবতার প্রতি ভক্তি ও শ্রদ্ধাই ক্রমে২ নৈসর্গিক নিয়মে সাধককে নির্ম্মল সত্বাভিমুখে আকর্ষণ করিতে থাকে অবশেষে সাধকের মনোবাঞ্ছা পূর্ণ হয়। আবার সাধক যখন নির্ম্মলচিত্ত, তত্ত্বজ্ঞ, ও আত্ম দর্শী হইয়া কর্ম্ম কাণ্ডাদি পরিত্যাগ পূর্ব্বক পরমাত্মার ধ্যান করেন তখন তাঁহাকে বিষয়ী লোকের মান্য না করিয়া নাস্তিক বলিয়া অবজ্ঞা করা অতীব অকর্ত্তব্য। শাস্ত্রের প্রকৃত মর্ম্মানুভিজ্ঞতাই ইহার বিশেষ কারণ। উপসংহার কালে এই বলিয়া বিদায় লইতেছি, যে কি ব্রাহ্ম

है या हरिसभाका केवल महिम्नस्तव सुन कर क्या होगा! हमलोगों के आर्य्यशास्त्रोंका यथार्थ धर्म्म जिससे सकलसाधारणका हृदयङ्गम हो सोही पहले कर्त्तव्य है। ब्राह्मगण! जिस भावसे आप लोग धर्म्मप्रचार करते हैं, उसको छोड़कर देशीय भाव का अवलम्बन कीजिये, प्रचारकके परिवर्त्तमें एक शास्त्रवेत्ताको नियुक्त कीजिये। यदि वे इस आडम्बर पूर्ण वक्तृताको छोड़कर साधारणोंको शास्त्रज्ञानकी शिक्षा दें तब ही वे भारतके यथार्थ उपकारी होंगे। जिससे लोगोंका मन धर्म्म भावसे आर्द्र हो सो ही करना पड़ेगा। मत प्रचारके अपेक्षा धर्म्मप्रचार ही भारतका कल्याणकर है। कठिन निराकार ब्रह्मकी उपासना से आपामरसाधारणों का मन आर्द्र नहीं हो सकेगा। इस सम्बन्धमें आगे और एक प्रबन्धके द्वारा अपने मन्तव्य को प्रकाश कर चुका हैं। सुतरां उस विषयमें अभी और कुछ कहनो नहीं चाहता है। अधिकार भेदसे सबको उपदेश देना उचित है। इस बातको साधारण ब्राह्म समाज अनुमोदन कर सकते हैं। क्योंकि तत्वकौमुदी' पत्रिका द्वितीय भाग तृतीय संख्याके उदारता शीर्षक प्रबन्धमें इस प्रकारकी उदारता स परिचय हुआ है। एवं ऐसा कार्य्य उन्नतमाना हिन्दुओं का भी अनुमोदित है। हमलोग अपनी प्रकृतिके दोषसे सनातन धर्म्मको भी विकृत भाव करके देखते हैं। उसी भावको संस्कृत करलेना सब कोई को उचित है। ब्राह्मोंका उचित नहीं है, कि प्रतिमा पूजाको घृणा करें। क्योंकि जबतक तत्त्वज्ञानका उदय न हुआ है, तबतक साधकोंकी प्रकृति अनुसार मनोरञ्जन करी भगवान्की मूर्त्ति आराधना करना मानुषों को अवश्य है। अपनी अपनी उपास्य देवता परभक्ति औ श्रद्धाही क्रम क्रम स्वाभाविक नियमसे साधकको निर्म्मलसत्त्वा की ओर खींचकर ले जाती है, औ अवशेषमें साधक की मनोवाञ्छा पूर्ण होती है। फिर जब साधक निर्म्मल चित्त, तत्वज्ञ, औ आत्मदर्शी हो कर कर्म्म काण्डादि परित्याग करके परमात्मा का ध्यान करते हैं। तब उन्हें मान्य के बदले नास्तिक कह कर अपमान करना लोगों को उचित नहीं है। शास्त्रों का यथार्थ धर्म्म नहीं जानना हो इसके विरोध का कारण है। अब उपसंहारके यही कर बिदा होता हैं कि

কি হিন্দু আমাদের শাস্ত্রের যথার্থ মর্ম্ম যাহাতে আপামর সাধারণের হৃদয়ঙ্গম হয় তৎ সাধনে সকলেই দৃঢ়ব্রত হউন।

শ্রীদীননাথ গঙ্গোপাধ্যায়।

২য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত বাবু	বিপিন মোহন সেন	কলিকাতা	৩৵
ঐ	হরপ্রসন্ন ঘোষ	মিরাট	৩৵
ঐ	ঈশানচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	আলিগড়	৩৵

৩য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত বাবু	মহেশচন্দ্র চৌধুরী	কলিকাতা	৩৵
ঐ	নারাণচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়	ঐ	৩৵
ঐ	শ্যামাচরণ ভট্টাচার্য্য	বহরম্পুর	৩৵
ঐ	চিরঞ্জীবী সর্ব্বাধিকারী	ভগলপুর	৩৵
ঐ	গঙ্গাধর বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ	৩৵
ঐ	হরপ্রসন্ন ঘোষ	মিরাট	৩৵
ঐ	প্রিয়ব্রতনারায়ণ সিংহ	ভাগলপুর	৩৵
ঐ	গোলোকচন্দ্র ধর	শ্রীহট্ট	৩৵
ঐ	গঙ্গাপ্রসাদ মহাজন	মুঙ্গের	৩
ঐ	বুলাকীলাল ঐ	ঐ	৩
ঐ	রাম সহায় লাল	ঐ	৩
ঐ	মহেন্দ্রনাথ রায়	ঐ	৩
ঐ	গণপতি প্রসাদ	ভগলপুর	২৷৵
ঐ	সূর্য্যকুমার গঙ্গোপাধ্যায়	ঐ	১৷৵
ঐ	কালীদাস রায়	দামুকদিয়া	১৷৵
ঐ	কালীপতি মুখোপাধ্যায়	ভগলপুর	১৷৵
ঐ	হরিনাথ ঘোষ	খঞ্জনপুর	১৷৵
ঐ	বংশীলাল	ভগলপুর	১৷৵
ঐ	পার্ব্বতীচরণ রায়	রায়নগর (শ্রীহট্ট)	১৷৵
ঐ	রামচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায়	পাটকেবাড়ী	১৷৵
ঐ	মহেন্দ্রনাথ ঘোষ	ডুবরাজপুর	১৷৵
ঐ	তারাপ্রসাদ রায় চৌধুরী	ঐ	১৷৵
ঐ	মাধবচরণ চৌধুরী	প্রতাপগড় শ্রীহট্ট	১৷৵
ঐ	গোপালগোবিন্দ চৌধুরী	ইন্দুনগর শ্রীহট্ট	১৷৵
ঐ	প্রতাপচন্দ্র রক্ষিত	কলিকাতা	১৷৵
ঐ	দীননাথ প্রামাণিক	ভদ্রেশ্বর	১৷৵
ঐ	শশধর বসু	ভগলপুর	১৷৵
ঐ	রঘুনাথ সহায়		১৷৵
ঐ	ফিরিঙ্গীলাল দোবে	কাহাল গাঁ ভবানীপুর	১৷৵

लोगोंके शास्त्रों का यथार्थ मर्म्म जिस्मे आपामर साधारणोंका हृदयङ्गम हो उसीके साधनमें सब कोई दृढ़व्रत होंय।

श्रीदीननाथ गङ्गोपाध्याय।

२य बर्षका मौल प्राप्ति स्वीकार

श्रीयुक्त बाबु	विपिनमोहन सेन	कलिकाता	३ =
,,	हरप्रसन्न घोष	मिराट	३। =

३य बर्षका मौल प्राप्ति स्वीकार।

३य बर्षक मौल प्राप्ति स्वीकार।

श्रीयुक्त बाबु	महेशचन्द्र चौधुरी	कलिकाता	३। =
,,	नारायणचन्द्र चट्टोपाध्यात	,,	३। =
,,	श्यामाचरण भट्टाचार्य्य	बहरमपुर	३। =
,,	चिरञ्जीवी सर्व्वाधिकारी	भगलपुर	३। =
,,	गङ्गाधर बन्द्योपाध्याय	,,	३। =
,,	हरप्रसन्न घोष	मिराट	३। =
,,	प्रियव्रतनारायण सिंह	भगलपुर	३। =
,,	गोलोकचन्द्र धर	श्रीहट्ट	३। =
,,	गङ्गाप्रसाद महाजन,	मुङ्गेर	३। =
,,	बुलाकीलाल ,,	,,	३।)
,,	रामसहायलाल	,,	३)
,,	महेन्द्रनाथ राय	,,	३)
,,	गणपतिप्रसाद	भगलपुर	२ =
,,	सूर्य्यकुमार गङ्गोपाध्याय	,,	१। =
,,	कालीदास राय	दामुकदिया	१। =
,,	कालीपति मुखोपाध्याय	भगलपुर	२। =
,,	हरिनाथ घोष	खञ्जनपुर	१। =
,,	वंशीलाल	भगलपुर	१। =
,,	पार्व्वतीचरण राय	रायनगड़ (श्रीहट्ट)	१। =
,,	रामचन्द्र गङ्गोपाध्याय	पाटकेबाड़ी	१। =
,,	महेन्द्रनाथ घोष	दुबराजपुर	१। =
,,	ताराप्रसाद रायचौधुरी	,,	१। =
,,	माधवचरण चौधुरी	प्रतापगड़ (श्रीहट्ट)	१। =
,,	गोपालगोविन्द चौधुरी	इन्दुनगर (श्रीहट्ट)	१। =
,,	प्रतापचन्द्र रक्षित	कलिकाता	१। =
,,	दीननाथ प्रामाणिक	भद्रेश्वर	१। =
,,	शशधर बसु	भगलपुर	१। =
,,	रघुनाथ सहाय	,,	१। =
,,	फिरङ्गीलाल दोवे	कांहालगां भवानीपुर	१। =
,,	हरिप्रसाद मिश्र	भगलपुर	१। =
,,	किशोरलाल मिश्र	,,	१। =

হরিভক্তি প্রদায়িনী সভা” প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। কলিকাতায় ও বাঙ্গালা দেশের স্থানে স্থানে এইরূপ হরিসভা অনেক স্থাপিত হইয়াছে, তাহাদের মধ্যে অধিকাংশেরই কার্য্যপ্রণালী বৈষ্ণব সম্প্রদায়ানুগত। কোন সম্প্রদায় বিশেষের অনুষ্ঠান প্রণালী অবলম্বন পূর্ব্বক কার্য্য করিলে বর্ত্তমান ভয়ঙ্কর বিপ্লবরাশিপূর্ণ ভারতীয় ধর্ম্মসমাজের কোন উপকার হইবে এরূপ বোধ হয় না। আমরা আশা করি উক্ত সভা যখন কাশীধামে স্থাপিত হইয়াছে, তখন সদাশিবের ন্যায় উদার প্রকৃতিই তাহার অনুকরণীয় হইবে। উক্ত সভা সংকীর্ণ ভাব পরিহার পূর্ব্বক বেদ, বেদান্ত, যোগ ও ভক্তি শাস্ত্রাদির বহুল আন্দোলন করিয়া সকল সম্প্রদায়কেই মিত্রভাবে সমাদর করিবেন ও সকলকে ভক্তি, বিশ্বাস, জ্ঞান, যোগ আদি শিক্ষা দিয়া উপকৃত করিবেন। ৺ বিশ্বেশ্বর ও অন্নপূর্ণার কৃপায় সভাটী স্থায়ী হইয়া সাধারণের মনে ধর্ম্মভাব উত্তেজিত করে ইহাই আমাদের একান্ত প্রার্থনীয়। অনুরুদ্ধ হইয়া নিম্নে তত্রসভায় শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত পণ্ডিত নবীনচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় কর্ত্তৃক ব্যাখ্যাত একটী উপদেশ প্রকটন করিলাম।

নমঃ শিবায় শান্তায় কারণত্রয় হেতবে।
নিবেদয়ামিচাত্মানং গতিস্তং পরমেশ্বর॥

যিনি শান্তি-নিকেতন, অনাদি, সর্ব্বব্যাপী, সৃষ্টি স্থিতি সংহার-কারণের কারণ স্বরূপ, যিনি অভীষ্ট ফলদাতা, সেই আশুতোষ দেবাদিদেব মহাদেবকে নমস্কার। আমরা এই বিশ্বেশ্বর ধামে “হরিহর” একাত্মা ইহাই বিশ্বাস করিয়া এখানে “হরিভক্তি প্রদায়িনী সভা” সংস্থাপন করিয়াছি; সেই জগদ্গুরুই এই সভার একমাত্র অধিনায়ক। তিনি আমাদিগকে ভক্তি ও জ্ঞান প্রদান করুন।

শ্রীমদ্ভাগবতের একাদশ স্কন্ধে মিথিলাধিপতি বিদেহ নিমি রাজা নব যোগেন্দ্রের (১) প্রতি প্রশ্ন করিতেছেন।

অথ ভাগবতং ব্রুত যদ্ধর্ম্মো যাদৃশো নৃণাং।
যথাচরতি, যদ্ব্রূতে, যৈর্লিঙ্গৈ ভগবৎ প্রিয়ঃ॥

রাজা জিজ্ঞাসা করিলেন, হে মহাভাগ! ভাগবতগণের ধর্ম্ম কিরূপ, তাঁহারা কি প্রকার আচরণ

(১) হরি, কবি, অন্তরীক্ষ, প্রবুদ্ধ, পিপ্পলায়ন, আবির্হোত্র, দ্রমিল, চমস, ও কর ভাজন।

में ऐसी हरिसभा अनेक स्थापित हुईं उन्होंमें अधिकांशही की कार्य्य प्रणाली वैष्णव सम्प्रदाय का अनुसार है। किसी सम्प्रदाय की अनुष्ठान प्रणाली अवलम्बन पूर्व्वक कार्य्य करनेसे वर्त्तमान भारतीय धर्म्मसमाज का जो ने भयंकर विप्लवराशि से पूर्ण है, कुछ उपकार होगा ऐसा बोध न होता है। हम आशा करते हैं कि उक्त सभाने जब काशीधाम में स्थापित हुआ तब सदाशिवका न्याई उदार प्रकृतिही को वह अनुकरण करेगी। उक्त सभाने संकीर्ण भाव परिहार पूर्व्वक वेद, वेदान्त, योग वो भक्ति शास्त्रादि का बहुल आन्दोलन कर सब सम्प्रदायही को मित्र भावसे समादर वो भक्ति विश्वास, ज्ञान, योग आदि का उपदेश कर सबको उपकृत करेंगे। विश्वेश्वर वो, अन्नपूर्णाजी की कृपासे यह सभाने स्थायी होकर साधारण जनोंके मनमें धर्म्म भाव उत्तेजित किया करें यही हमारे एकान्त प्रार्थनीय है। उस सभामे श्रद्धास्पद श्रीयुक्त पण्डित नवीनचन्द्र बन्द्योपाध्याय महाशय का व्याख्यात किया हुआ एक उपदेश नीचे प्रकट किया गया।

नम शिवाय शान्ताय कारणत्रय हेतवे।
निवेदयामिचात्मानं गतिस्तं परमेश्वर॥

जो ने शान्तिका निकेतन है, अनादि, सर्व्वव्यापी सृष्टि स्थिति संहार कारणके भी कारण हैं, वही आशुतोष देवादिदेव को मैं नमस्कार करता हूं। हमने यह विश्वेश्वर धाममें “हरि वो हर” की एकात्मा समझकर यहां हरिभक्ति प्रदायिनीसभा संस्थापित करी है। वही जगद्गुरुही इस सभाके एक मात्र अधिनायक हैं। वे हमको भक्ति वो ज्ञान प्रदान करें।

श्रीमद्भागवतका एकादश स्कन्ध में यह उपदेश है कि मिथिलाधिपति विदेह निमि राजा नव योगेन्द्र (१) के प्रति प्रश्न करते हैं।

अथ भागवतं ब्रूत यद्धर्म्मो यादृशो नृणां।
यथाचरति यद्ब्रूते यैर्लिङ्गै भगवत प्रिय:॥

राजाने पुछा, हे महाभाग! भागवतोंके धर्म्म कैसा है; वे किस प्रकार आचरण किय करते है; उन्हे

(१) हरि, कवि, अन्तरीक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस वो करभाजन।

করিয়া থাকেন ও তাঁহাদের লক্ষণাদিই বা কিরূপ অনুগ্রহ পূর্ব্বক এতাবৎ উপদেশ করুন।

সর্ব্বভূতেষু যঃ পশ্যেদ্ভগবদ্ভাবমাত্মনঃ।
ভূতানি ভগবত্যাত্মন্যেষ ভাগবতোত্তমঃ॥

হরি কহিলেন, হে রাজন্! যিনি সর্ব্বভূতের অন্তরাত্মার মধ্যে ভগবান্কে দর্শন করেন এবং ভগবৎ সত্তার মধ্যে সর্ব্বভূত স্থিতি করিতেছে অর্থাৎ সমস্ত বস্তুতেই ভগবান্কে ওতঃপ্রোতভাবে অবলোকন করেন, তিনিই ভাগবতোত্তম।

ঈশ্বরে তদধীনেষু বালিশেষু দ্বিষৎসু চ।
প্রেম মৈত্রী কৃপোপেক্ষা যঃ করোতি স মধ্যমঃ॥

যিনি ঈশ্বরের প্রতি প্রেম, ভক্তগণের প্রতি মিত্রভাব, মূঢ় বিষয়ীবর্গের প্রতি কৃপা এবং দ্বেষ্টাগণের প্রতি উপেক্ষা প্রকাশ করিয়া থাকেন তিনি মধ্যম শ্রেণীর ভাগবত বলিতে হইবে।

অর্চ্চায়ামেব হরয়ে পূজাং যঃ শ্রদ্ধয়েহতে।
নতদ্ভক্তেষু চান্যেষু সভক্তঃ প্রাকৃতঃ স্মৃতঃ॥

যিনি ভগবানের প্রতিমূর্ত্তি স্থাপন পূর্ব্বক শ্রদ্ধা সহ পূজা করেন এবং ভগবদ্ভক্তগণের মধ্যে ভেদ বুদ্ধি পোষণ করিয়া থাকেন, তিনি "প্রাকৃত ভক্ত" বলিয়া কথিত হয়েন।

গৃহীত্বাপীন্দ্রিয়ৈরর্থান্ যোনদ্বেষ্টি ন হৃষ্যতি।
বিষ্ণোর্মায়ামিদং পশ্যন্ স বৈ ভাগবতোত্তম॥

যিনি ইন্দ্রিয় ভোগ্য বিষয় সমস্ত প্রাপ্ত হইয়াও তাহাতে লাভালাভ বুদ্ধি বা হর্ষ খেদাদি প্রকাশ করেন না অর্থাৎ ইন্দ্রিয় বিকার ও বিষয় স্পৃহা যাঁহাকে উত্তেজিত করিতে পারে না এবং যিনি সমস্ত বস্তুই বৈষ্ণবী মায়া কল্পিত জানিয়া মিথ্যাবোধে তাহাতে আসক্ত হয়েন না তিনিই ভক্তশ্রেষ্ঠ।

দেহেন্দ্রিয় প্রাণমনো ধিয়াং যো
জন্মাপ্যয়ক্ষুদ্ভয়তর্ষ কৃচ্ছ্রৈঃ।
সংসার ধর্ম্মৈরবিমুহ্যমান
স্মৃত্যা হরে ভাগবত প্রধানঃ॥

যিনি ভগবানের শরণাগত হইয়া দেহ, ইন্দ্রিয়, প্রাণ মন, বুদ্ধি, জন্ম, মৃত্যু, ক্ষুধা, তৃষ্ণা ভয়াদি ক্লেশে বিমুগ্ধ হন না অর্থাৎ যিনি তাবদ্বিকার বর্জ্জিত তিনিই পরম ভগবদ্ভক্ত।

পরিশেষে হরিনামের এইরূপ মহিমা কীর্ত্তন পূর্ব্বক উপসংহার করিলেন।

হে ভ্রাতৃগণ! হরিই সকলের একমাত্র গতি,

के लक्षणादि कैसा है, अनुग्रह पूर्व्वक इतना मुझको उपदेश कीजिये।

सर्व्व भूतेषु यः पश्येद्भगवद्भावमात्मनः।
भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः॥

हरिने बोला, हे राजन! जो पुरुषने भगवान को सर्व्वभूतके अन्तरात्माके मध्यमें दर्शन करता है औ भगवत् सत्ताका मध्यमें जो सब भूत स्थिति करते है अर्थात् समस्त वस्तुही में भगवानको ओतः प्रोत करके अवलोकन किया करते है वही भागवतोत्तम हैं।

ईश्वरे तदधीनेषु बालिशेषु द्विषतसुच।
प्रेम मैत्री कृपोपेक्षा य करोति स मध्यमः॥

जो ने ईश्वरके प्रति प्रेम, भक्तोंके प्रति मित्रभाव, मूढ़ विषयीयोंके प्रति कृपा औ द्वेष करनेवालोंके प्रति उपेक्षा प्रकाश करता है उनको मध्यम श्रेणीके भागवत करके जानना।

अर्च्चायामेवहरये पूजां यः श्रद्धये हते।
न तद्भक्तेषु चान्येषु सभक्तः प्राकृतः स्मृतः॥

जो ने भगवानकी मूर्त्ति स्थापनकर श्रद्धापूर्व्वक पूजा की करती है औ भगवद्भक्त जनोंके मध्यमें भेद बुद्धि रक्खी करती है, वह प्राकृत भक्त करके प्रसिद्ध है।

गृहीत्वापीन्द्रियैरर्थान् योन द्वेष्टि न हृष्यति।
विष्णोर्मायामिदं पश्यन् सवै भागवतोत्तम॥

जो ने इन्द्रियोंके भोग प्रिय विषय सब प्राप्त होकर भी उन में लाभालाभकी बुद्धि वा हर्ष खेदादि प्रकाश न करते है अर्थात इन्द्रियोंके विकार वो विषयकी स्पृहा जिसको उत्तेजित न कर सका है औ जोने समस्त वस्तुही को वैष्णवी मायासे रचित मिथ्या समझकर उनमें आसक्त न होता है सोही भक्तोंके मध्यमें श्रेष्ठ हैं।

देहेन्द्रिय प्राण मनो धियां यो
जन्माप्ययक्षुद्भयतर्ष कृच्छ्रैः।
संसार धर्म्मैरविमुह्यमान
स्मृत्या हरे भागवत प्रधानः॥

जोने भगवतके शरणागत होकर देह, इन्द्रिय, प्राण, मन, बुद्धि, जन्म, मृत्यु, क्षुधा, तृष्णा, भयादि क्लेशोंसे विमोहित न होता अर्थात् जिनका किसही प्रकार का विकार न रहता है उनहीको परम भगवद्भक्त करके मानना।

परिशेष में उनोंने हरिनामकी महिमा कीर्त्तन करके वक्तृताका उपसंहार करी।

हे भाईयो! हरिही सब जनोंकी एकमात्र गति

হরিনামই ভয়ানক ভবার্ণব পারের এক মাত্র মহা তরণী। মৃত্যুকালে জীব "হরি" এই দেবদুর্ল্লভ নাম উচ্চারণ করিলে মোক্ষধাম প্রাপ্ত হয়। হরিনামের গুণে শমন শঙ্কা দূর হয়, হরিনামের মহিমায় সর্ব্বত্র বিজয় লাভ হইয়া থাকে। দেখ কয়াধুকুমার হরিনামের গুণে মৃত্যুকে পরাজয় করিলেন। অস্ত্র তাঁহার শরীর ছেদে সমর্থ হইল না, পর্ব্বত হইতে পতিত হইয়াও তাঁহার আঘাত লাগিল না, বিষপানেও মৃত্যু তাঁহাকে স্পর্শ করিতে সাহস করিল না, সমুদ্রজল তাঁহার পাষাণবদ্ধ দেহকে মগ্ন করিতে অক্ষম হইল, এই হরিনামের গুণেই নৃসিংহ রূপধারী ভগবান প্রহ্লাদকে দর্শন দিয়া ভক্তের সম্মাননা পূর্ব্বক রাজসিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করিলেন। পঞ্চানন হরি গুণ গানে উন্মত্ত, হরিনামই সারাৎসার। অতএব সকলে আনন্দ পূর্ব্বক হরি হরি ধ্বনি কর।

স্ত্রী স্বাধীনতা ও শিক্ষা।

(সৈয়দপুর উন্নতি বিধায়িনী সভা হইতে প্রাপ্ত)

আমরা সম্প্রতি জনৈক বিজ্ঞ ব্যক্তির প্রমুখাৎ এই দুইটী ভাব শ্রবণ করিয়া কিছু বিস্মীত হইয়াছি। তদ্যথা—

১ম। ইউরোপ বাসীদিগের স্ত্রীগণ স্বাধীন ভাবে নিজ নিজ স্বামীর সহিত গমন করিতে পারে বলিয়া পুরুষগণ তাহাদের অজ্ঞাতসারে ব্যভিচার করিতে পারেন না। সুতরাং রমণীগণকে স্বাধীনতা দেওয়া উচিত।

২য়। এতদ্দেশীয় রমণীগণ অশিক্ষিতা বলিয়া তাঁহাদের স্বামীদিগের বিদ্যা, বুদ্ধি, স্ফূর্ত্তি পায় না। বিদ্যালয়ে থাকিতে যে জ্ঞানলাভ করেন, তাহা ক্রমে হীনপ্রভ হইয়া যায়।

স্ত্রী স্বাধীনতা ইংরাজদিগের মধ্যে কতদূর পর্য্যন্ত অনিষ্ট সাধন করিতেছে তাহা প্রথমে প্রতিপন্ন করিতে চেষ্টা পাইব, পরে আমাদের মধ্যে ইহা বাঞ্ছনীয় কি না তৎপক্ষে কিঞ্চিৎ আলোচনা করিব।

ইউরোপীয় যোষিদ্বর্গ পুরুষের বশ্যতা স্বীকারে অসম্মত, স্বামী স্ত্রীকে নিজের অবস্থানুগত করিয়া রাখিতে পারেন না। রমণীর প্রকৃতির অ-

है, हरिनामही इस भयानक भवार्णव पारकी एक मात्र महातरणी है। मरणके समय यदि जीव "हरि" यह देवदुर्ल्लभ नाम उच्चारण करें तो मोक्षधामको प्राप्त होता है। हरिनामका प्रताप से शमन शङ्का छुट जाती है, हरिनामकी महिमा करके सर्व्वत्र विजयलाभ होता है। देखिये कयाधुकुमार (प्रह्लाद) हरिनामही का प्रतापसे मृत्युको पराजय किये। अस्त्रने उनका शरीर छेद करनेमें समर्थ न हुआ, पर्व्वत परसे गिराय गया तब भी चोट न लगा, विष पिलाय गया तब भी मृत्यु उनको स्पर्श न कर सका, पात्थर बंधकर समुद्र जलमें बहाय गया तबभी न डुबा। यह हरि नामहीका प्रतापसे भगवानने नृसिंहमूर्त्ति धारण कर प्रह्लादको दर्शन दिया औ भक्तकी मर्य्यादा रख कर राजसिंहासन पर बैठाया। पंचानन हरिगुण गानसे मत्त रहैं, हरिनामही सारात्सार है। अतएव सब जनने आनन्दपूर्व्वक हरि हरि ध्वनि करते रहो।

स्त्री स्वाधीनता औ स्त्री शिक्षा।

(सैयदपूर उन्नति विधायिनी सभासे प्राप्त हुआ)

हम सम्प्रति एक विज्ञ पुरुषका मुहसे यह दोबातें सुन कर बड़े आश्चर्य्य हुए। तद्यथा—

१म। युरोपवासियोंके स्त्रीगण स्वाधीनभाव से निज निज पतिके सहित जहां तहां जा सकती, इस लिये पुरुषगण उन्होंके अज्ञानसार कोइ व्यभिचार कर नहीं सकता है। सुतरां रमणीयोंको स्वाधीनता देनी चाहिये।

२य। यहांके रमणीगण सुशिक्षिता नहीं, तन्निमित्त उन्होंके पतियोंकी बिद्या बुद्धि कुछ स्फूर्त्ती नहीं पाती है। विद्यालयमें सीखकर जो कुछ ज्ञान पाये थे सो भी मलीन हो जाता है।

युरोपके मध्यमें स्त्री स्वाधीनता जो कहांतक अनिष्ट साधन कर रही है पहिले सोही प्रतिपन्न करनेकी चेष्टा पाउंगा, अनन्तर हमारे मध्यमें यह बाञ्छनीय है या नहीं तिस पर भी थोड़ी आलोचना करूंगा।

युरोपके औरतोंने पुरुषकी अधीनता स्वीकार करने नहीं चाहती है। स्वामीने अपनी स्त्रीको निज अवस्थाके अनुगत न रख सकता है। रमणी की

নুগত হইয়া তাঁহাকে তৎসহ যথাযথ ব্যবহার করিতে হইবে। স্বাধীনতার প্রভাবে নারীগণ এত বিলাস প্রিয় হইয়াছে যে, তাহাদের ব্যয়ভার বহন করিতে অক্ষম হইয়া কত পুরুষ বিবাহ করিতে অগ্রসর হয়েন না। স্ত্রী সমাগম বাসনা পূর্ণ করিবার জন্য অনেকে কিছু দিনের জন্য (অর্থাৎ যতদিন না তাঁহারা ধন সম্পন্ন হয়েন) অবিবাহিতা যুবতীর সহিত জুগুপ্সীত প্রণয়ে আবদ্ধ থাকেন, এবং পাছে এ কার্য্য জনসমাজ নিন্দিত বলিয়া লোকে অপযশ কীর্ত্তন করে, এজন্য ইহাকে আইন বদ্ধ করিবারও প্রস্তাব হইয়াছিল। ইহাকেই বলে "Temporary Marriage Bill"। যে সমাজ এতদূর পর্য্যন্ত কদাচার কলুষিত হইয়াছে, সে সমাজকে আদর্শ করিয়া ভারতবর্ষে স্ত্রী স্বাধীনতা প্রবর্ত্তিত করিবার প্রয়াস পাওয়া সামান্য বিস্ময় কর নহে। স্বামীগণের সহিত একত্রে ভ্রমণ করিতে পারে বলিয়া যে পুরুষগণের ব্যভিচার নিবারণ হয়, এবড় আশ্চর্য্য কথা। যে ব্যক্তি অত্যাচারী সে নিজ নিকৃষ্ট বাসনা চরিতার্থ করিবার জন্য কত উপায় উদ্ভাবন করে তাহা বলা যায় না। পুরুষগণ নানা বিষয় কার্য্যে ব্যস্ত, কোথায় কখন থাকেন তাহা কে নির্ণয় করিতে পারে? এবং সকল সময়ে রমণীর স্বামীর সহিত থাকা কখনই সম্ভব পর হইতে পারে না। অপর দিকে দেখিলে একেবারে চমকিয়া উঠিতে হয়। রমণীগণ অনায়াসে পরপুরুষের সহিত ভ্রমণ করিয়া থাকেন। ইহা হইতে কি কখন সুফল ফলিতে পারে! কয় জন পুরুষ রমণীর সহিত কথোপকথনকালে চিরদিন নিজ ভাবও দৃষ্টিকে বিশুদ্ধ রাখিতে পারেন?

কোন শাস্ত্রপ্রণেতা লিখিয়া গিয়াছেন—"ঘৃত কুম্ভ সমানারী, তপ্তাঙ্গার সমপুমান্। তস্মাৎ ঘৃতঞ্চ বহ্নিঞ্চ মেকত্র স্থাপয়েদ্বুধ," এই উপদেশটী কি সারবান! নারী ঘৃতপূর্ণ কুম্ভ সদৃশ পুরুষ তপ্তাঙ্গারবৎ অর্থাৎ উভয়ে একত্র হইলেই রমণীর মন বিগলিত হইতে পারে এবং নারী যদি পুরুষে সঙ্গতা হয় তবে ঘৃতাহুতিতে পুরুষের চিত্ত চতুর্গুণ প্রজ্বলিত ও উত্তেজিত হইতে পারে. এই জন্য বুধগণ এতদ্বয় কদাপি একত্র রাখিবেন না। রাজা রামমোহন রায় ইংলণ্ডে অবস্থিতিকালে যখন তত্রস্থ মহিলাগণের সহিত কথোপকথন, করিতেন,

प्रकृतिके अनुगत होकर स्वामीको स्त्रीके साथ यथा यथ व्यवहार करने पड़ता। स्वाधीनताके प्रतापसे औरतों एतना बिलास प्रिय हो उठी है, जो उन्हो के व्ययभार वहन करनेमें असमर्थ हो कर कितना पुरुष बिवाह करनेमें अगृआ नहीं होते हैं। स्त्री समागम की बासना पुरानेके लिये बहुतेरे लोग थोड़े दिनके निमित्त (अर्थात् जब तक ना वह्व धनाढ्य हो) अबिवाहिता युवतीके सहित निन्दित गुप्त प्रणय करने लगते और जनसमाजमें इस कार्य्य के निमित्त कुयश न विस्तार हो इसका उपाय बिधानार्थ एक कानून भी चलानेका प्रस्ताव छेंड़ा था। इसीको कहता हैं, "Temporary Marriage Bill"। जो समाज ने यहांतक कदाचारसे कलुषित हो चुकी, उस समाजका दृष्टान्त देखकर भारतवर्षमें स्त्री स्वाधीनता प्रचलित करनेकी प्रयास करन; कुछ सामान्य आश्चर्य्यका विषय नहीं हैं। स्वामीके साथ एकट्ठे होकर औरतों जो जहां तहां फिरी करती है इस हेतु करके जो पुरुषोंका व्यभिचार बन्ध होता है यह बड़ी आश्चर्य्य बात है, जो व्यक्ति दुश्चरित्र होता वह निज निकृष्ट वासना चरितार्थ करणार्थ कितना उपाय निकालता है सो कहनेके योग्य नहीं। पुरुषगण बिबिध विषय कार्य्यमें व्यस्त रहते हैं, किस वकत कहां रहते हैं, की तिसका निर्णय कर सकें? और सर्ब्बदा स्वामीके साथ रमणीकी रहना कभी सम्भव नहीं। दुसरे ओर देखनेसे एक बारही चमक मालूम देता। रमणीयोंने अनायास परपुरुषों के साथ जहां तहां फिरा करते हैं। इस रीतिसे कभी क्या सुफल फल सकता हैं। कितना पुरुष रमणीके साथ बात चीतके समय चिरदिन निज भाव वो दृष्टिको पवित्र रख सकता है?

कोइ शास्त्रकारने लिखा है। "घृतकुम्भ समा-नारी तप्तांगार समपुमान्। तस्मात् घृतंच वह्निञ्च-मेकत्र स्थापयेद्बुध:।" यह उपदेश कैसा सारवान है। नारीने घृतपूर्ण कुम्भके समान है, पुरुषको अग्निके न्याइ जानना अर्थात् इन दोनों एकत्र होनेही से रमणी का मन बिगलित हो जा सकता है और यदि नारी पुरुषसे संगता होय तो घृतके आहुतीके न्याई पुरुष काचित्त चार गुण प्रज्ज्वलित वो उत्तेजित हो सकता है, इस निमित्त बुधगण इन दोनोंको कदापि एकट्ठे नहीं रखते हैं। राजा राममोहन रायने इंगलण्डमें रहते समय जब व-

তিনি ঈশ্বরের নিকট ত্রুটীর জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করিতেন। ইংলণ্ডের রমণীগণ তাঁহাকে অসাধারণ ব্যক্তি বলিয়া জানিতেন। তাঁহার অন্তঃকরণে যে পাপস্পর্শ করিতে পারে, তাঁহাদের ইহা বিশ্বাস ছিল না। সুতরাং তাঁহারা একদা বিস্ময়ের সহিত জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন, মহাত্মন! আপনার সর্ব্বদা এপ্রকার ঈশ্বর সমীপে ক্ষমা প্রার্থনা করিবার কারণ কি? রাজা উত্তর করিলেন মনে কুচিন্তার উদয় হয় বলিয়া ঈশ্বরের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিয়া থাকি। রমণীগণ প্রশ্ন করিলেন আপনার ন্যায় মহাত্মার মনে কি কুচিন্তার উদয় হইতে পারে? রাজা উত্তর করিলেন কুচিন্তা সকলের মনেই উদিত হইতে পারে। অতএব স্ত্রী পুরুষের একত্রে অবস্থিতি কল্যাণপ্রদ নহে। মহাত্মা চৈতন্যের স্ত্রীলোক সম্বন্ধে কিরূপ ভাব ছিল তাহা হৃদয়ঙ্গম করিলে এ কথাটী আরও বিশদ রূপে প্রতীয়মান হইবে। তিনি কোন মতেই যুবতী স্ত্রীলোকের সংশ্রবে থাকিতেন না। অজ্ঞাতসারে কোন স্ত্রীলোকের সমক্ষে উপস্থিত হইলে তাহাতে দেখিবামাত্র অতি বেগে পলায়ন করিতেন। কথিত আছে জৈমিনী তাঁহার প্রণীত ধর্ম্মগ্রন্থে লিখিয়াছিলেন যে সাধু ব্যক্তি যে কোন অবস্থায় থাকুন না কেন, তাঁহার ধর্ম্মবল প্রভাবে রমণীর প্রলোভনকে অতিক্রম করিতে পারেন। মানব প্রকৃতিতত্ত্বজ্ঞ শ্রীমদ্‌গুরু বেদব্যাস দেখিলেন যে মহর্ষির অন্তঃকরণে মোহ ও অহঙ্কারের সঞ্চার হইয়াছে, ইহা অপনোদন করা উচিত বিবেচনায় যোগ বলে স্বয়ং সুঠাম সম্পন্ন রমণীদেহ পরিগ্রহ পূর্ব্বক দিবাবসানে অনাথিনীর ন্যায় জৈমিনীর কুঠিরে উপস্থিত হইলেন। মহর্ষি তাঁহাকে সমাদর পূর্ব্বক আশ্রমে আশ্রয় দান করিলেন। কথোপকথন করিতে করিতে ঋষির মন বিচলিত হইল। ইহা দেখিয়া বেদব্যাস নিজ স্বাভাবিক মূর্ত্তি ধারণ করিয়া তাঁহার রচিত শাস্ত্রের তিরস্কার করিতে লাগিলেন। ঋষি লজ্জিত হইলেন ও ক্ষমা প্রার্থনা করিলেন। ইহা দ্বারা স্পষ্ট প্রমাণ হইতেছে যে, নারীগণের সহিত পবিত্রভাবে আলাপ করিতে পারেন এরূপ পুরুষ অতি বিরল। পুরুষদিগের চরিত্র সর্ব্বাগ্রে বিশুদ্ধ হওয়া উচিত, তবেত তাহারা রমণী সমাজে অবস্থিতি করিবার যো[illegible]হইবে। বলিতে কি—কি পুরুষ কি স্ত্রী সকল-

होंकी महिलागणके साथ कथोपकथन किया करता था, वेने ईश्वरके निकट त्रुटीके निमित्त सर्व्वदा क्षमा प्रार्थनाकी करती थी इंगलेण्डकी रमणियोंने उनको असाधारण पुरुष करके जानता था। उनके अन्तःकरणमें जो पाप स्पर्श कर सकता है यह भी उन्होंका बिश्वास न था। सुतरां वे ने एक दिन आश्चर्य्य होये पूछा कि हे महात्मन्! आपने जो सर्व्वदा ईश्वरके समीप क्षमा प्रार्थना की करती है इसका कारण क्या? राजाने उत्तर किया जो मन में बुरी चिन्ता उठती है, तन्निमित्त मैंने ईश्वरके निकट क्षमा चाहा करती हैं। रमणीगणने पूछा आपके सदृश महात्माके मनमें क्या बुरी चिन्ता उठ सकती है? राजाने उत्तर किया कुचिन्ता सबहीके मनमें उदय हो सकती है। अतएव स्त्री पुरुष इन दोनोंके एकत्रे रहनेसे कल्याण नहीं। महात्मा चैतन्य स्त्रीयोंको किस भावसे देखते थे सोभी यदि समझा जाय तो उस बातकी प्रतीति और भी दृढ़ हो जायगी। वे किसी तरहसे युवती स्त्रीके संग संश्रवमें ना रहो थे। अकस्मात् यदि कोइ स्त्रीके सामने उपस्थित होते तो उसको देखतेही झट भाग जाते थे। कथित है कि जैमिनीने निज रचित धर्म्मग्रन्थमें लिखा था, जो साधुपुरुष जिस किसी अवस्थामें न रहें उनका धर्म्मबलका प्रभाव करके रमणीका प्रलोभनको तुच्छ समझ सकेंगे। मानवप्रकृति तत्त्वज्ञ श्रीमद्गुरु वेदव्यासने देखा महर्षिके अन्तःकरणमें मोह और अहंकारका संचार हुआ। इतना मिटा देना उचित विचारकर योग बलसे सन्ध्याके समय अनाथिनीकी तरह होती हुई जैमिनीके कुटिरमें पहुंचीं। महर्षि उनको समादर पूर्व्वक आश्रममें आश्रय दान किये। कथोपकथन करते करते ऋषिका मन चंचल हो आया। एतना देखकर बेदव्यासजीने निज स्वाभाविक मूर्त्ति धारण करके उन्होंके रचित शास्त्रको बहुत तिरस्कार करने लगें। ऋषिने लज्जित हुआ और क्षमा प्रार्थना करी। इससे स्पष्ट प्रमाण होता है जो नारीयोंके साथ पवित्र भाव से आलाप कर सकें वैसा पुरुष अति विरल है। पुरुषोंके चरित्र सब से पहले विशुद्ध होना चाहिये, तब तो वे रमणी समाजमें रह सकेंगे। चाहे पुरुष हो चाहे स्त्री हो सबही को शासनके अधीन रखना उचित है। बहुतेरे लोग यह कहा करते हैं जो किसही की स्वाधीनता पर हस्तक्षेप करना न चाहिये। वर्त्त-

কে শাসনে রাখা উচিত। অনেকে কহিয়া থাকেন যে, কাহারও স্বাধীনতাতে হস্তক্ষেপ করা উচিত নহে। বর্ত্তমান শতাব্দীর এই উপদেশটীই ত সর্ব্বনাশ করিতে বসিয়াছে। অবশ্য যাঁহারা প্রকৃত মনুষ্য পদবীর যোগ্য তাঁহাদের স্বাধীন ভাবের উপর হস্তক্ষেপ করা উচিত নহে। তাই বলিয়া অজ্ঞ ও বালকগণকে শাসন করা কি অন্যায়? আমাদের বালকের অপেক্ষা জ্ঞান কোথায়? সুতরাং আমাদিগকে শাসনে রাখিতে হইবে। পুরুষগণ স্বাধীন হইয়া কি পর্য্যন্তই না অত্যাচার করিতেছে! তাহারা অকুতোভয়ে ও অসঙ্কুচিত চিত্তে পরস্ত্রী সমাগমে প্রবৃত্ত হইতেছে। সমাজ তাহাদের জঘন্য কার্য্য দেখিয়াও দেখিতেছেন না। প্রত্যুত যদি তাঁহারা ধনাঢ্য বা পুস্তক রাশি পাঠে পণ্ডিত অথবা কোন উচ্চ পদারূঢ় হয়েন, তবে তাঁহাদিগকে স্পর্শমণির স্বরূপ সমাদর করিয়া থাকেন। ইহা অপেক্ষা স্বাধীনতার ব্যভিচার আর কি হইতে পারে? বড় বড় বৈজ্ঞানিক দেখিলাম, বড় বড় কবি দেখিলাম, বড় বড় শাস্ত্রবেত্তা দেখিলাম, কিন্তু তাঁহাদের মধ্যে কয় জন জিতেন্দ্রিয় ব্যক্তি দেখিতে পাইলাম? এক জনকে দেখিতে পাইলে ও আপনাকে কৃতার্থ জ্ঞান করিতাম। যখন স্বাধীনতা পুরুষগণকেই স্বেচ্ছাচারে প্রবর্ত্তিত করিল, তখন আর রমণীগণকে স্বাধীনতা দিবার জন্য এত ব্যগ্র হইবার প্রয়োজন কি!

আমার সামান্য বিবেচনায় পুরুষগণের স্বাধীনতাকে খর্ব্ব করা উচিত। তাহাদিগকে শাসন করা কর্ত্তব্য। দুশ্চরিত্রা রমণীর পক্ষে যেমন দণ্ড বিধান আছে, পরদারগামী পুরুষের প্রতি সেই প্রকার নিয়ম নির্দ্ধারিত হওয়া উচিত। পুরুষগন প্রথমে বিশুদ্ধ চরিত্র হউন, তবে তাঁহারা রমণীগণকে স্বাধীনতা দিবার জন্য প্রয়াস পাইবেন। স্ত্রীগণ যে পরিমাণে স্বাধীনতা পাইয়াছেন তাহাই তাঁহাদের পক্ষে কল্যাণপ্রদ। পল্লির মধ্যে এক গৃহ হইতে গৃহান্তরে যাইবার পক্ষে তাঁহাদের কোন বাধা নাই। আত্মীয় স্বজনের সহিত স্নান বা তীর্থাদি দর্শন করিতে তাঁহারা অতি দূরদেশ পর্য্যন্ত গমন করিতে পারেন। পুরুষগণের সহিত সমবেত না হইলে কি স্বাধীনতা হয় না? ইহাকে আমরা স্বাধীনতা বলি না;

मान शताब्दीका यह उपदेश ही तो सर्व्वनाश करने लगा। जो लोग प्रकृत मनुष्य पदवीके योग्य हैं अवश्य उन्होंके स्वाधीन भाव के ऊपर हस्तक्षेप करना उचित नहीं। तन्निमित्त अज्ञ और बालकोंको शासन करना भी क्या अन्याय है? बालकों से अधिक ज्ञान हमारा कहां है? सुतरां हमकोभी शासनमें रखने होगा। पुरुषगण स्वाधीन बन कर कहां तक न अत्याचार कर रहे हैं। वे नि डर हुये औ असंकुचित चित्तसे पराई स्त्रीका संग करने में प्रवृत्त हो रहा है। समाज ने उन्होंका जघन्य कार्य्य देख कर भी नहीं देखती है। सचमुच यदि वे लोग धनाढ्य अथवा पुस्तक पढ़ पण्डित किंवा कोई उच्च पदस्थ होय तब उन्होंका स्पर्श मणिके समान समादर कि करती है। इससे स्वाधीनता का और अधिक क्या। व्यभिचार हो सक्ता है? बड़े बड़े विज्ञान शास्त्रवालोंको देखा, बड़े बड़े कवियों को देखा, बड़े बड़े शास्त्र जानेहारोंकी देखा किन्तु उन्होंके मध्यमें कितने पुरुष जितेन्द्रिय देखनेमें आया? एक जन को भी यदि पाते तो अपने को कृतार्थ मानते। जब स्वाधीनता पुरुषगण ही को स्वेच्छाचारमें प्रवर्त्तित करी, तब रमणियों को फिर स्वाधीनता देनेके निमित्त इतनी व्यग्रता का प्रयोजन क्या है!

मेरी सामान्य बुद्धिमें तो यह आती है जो पुरुषगणकी स्वाधीनता को खर्व्व करना चाहिये। उन्हों को शासन करना कर्त्तव्य है। दुष्टा नारीयों को जैसा दण्ड दिया जाता है वैसाही परदार में आसक्त पुरुषके प्रति नियम होना चाहिये। पुरुषगण तो पहले स्वयं विशुद्ध चरित्र होंय तिसके अनन्तर वे ने रमणियों की स्वाधीनता देने के निमित्त प्रयास पावें। स्त्रीयोंने जिस परिमाण स्वाधीनता पाई, उतना ही उन्होंके कल्याण कर है। अपने महल्लेके भीतर एक गृह से गृहान्तर में जाना उन्होंको मना नहीं है। अपने जनों के साथ गङ्गास्नान वा तीर्थादि दर्शन करनेको वे ने अनायास अति दूरदेश पर्य्यन्त जा सक्ते हैं, पुरुषोंके साथ बिन मिले क्या स्वाधीनता नहीं होती है? इसको हम स्वाधीनता नहीं कहते हैं; हमारी समाज की वर्त्तमान अवस्था में इसको

আমাদের সমাজের বর্ত্তমান অবস্থাতে ইহাকে স্বেচ্ছাচারিতা বলা যায়। ভাল, রমনীগণই কি এ প্রকার স্বাধীনতা প্রার্থনা করেন? কখনই না। তবে, অনুরোধ উপরোধ দ্বারা তাঁহাদের তৎপক্ষে প্রবৃত্তি দিবার প্রয়োজন কি? এ প্রকার স্বাধীনতা না পাওয়া তাহাদের পক্ষে মঙ্গলের হেতু। এই জন্যই তাঁহারা অনেক পরিমাণে বিশুদ্ধ ভাবে আছেন, এই জন্য তাঁহাদের মধ্যে সতী পাওয়া যায়। পুরুষ গণ অনেক পরিমাণে জ্ঞানী ও কৃতবিদ্য, তথাপি তাঁহারা স্বাধীনতা পাইয়াছেন বলিয়া অত্যাচারের একশেষ করিতেছেন। যখন পুরুষগণের মধ্যে স্বাধীনতার পরিণাম এই হইল, তখন কোমল প্রকৃতি রমণীগণ তাহার প্রভাবে কি পর্য্যন্তই না অত্যাচার করিবে?

ক্রমশঃ

আমাদিগের ইউরোপীয় ভাবাপ্রিয় শিক্ষিত যুবকবৃন্দ স্ত্রী দিগকে স্বাধীনতা দিবার জন্য অতিশয় ব্যগ্র। তাঁহারা যে কিরূপ স্বাধীনতা চাহেন, তাহা আমরা এখনও বুঝিতে পারিতেছি না। ইউরোপীয় ললনা বর্গের ন্যায় ভারতীয় স্ত্রীদিগকে যথেচ্ছাগামিনী করাই কি তাঁহাদের অভিপ্রেত? অন্তঃপুরবাসিনী কামিনীগণকে স্বেচ্ছাক্রমে যথায় তথায় যাইতে দিয়া, যার তার সঙ্গে আলাপ করিবার অধিকার দিয়া এই অল্পদিনের মধ্যেই স্থানে স্থানে যে যে ঘৃণাকর ব্যাপার সংঘটন হইয়া গিয়াছে, তাহা কি কেহ জানেন না। দময়ন্তির ন্যায় কি কোন কুলাঙ্গনার মনের তেজ জন্মিয়াছে যে অকস্মাৎ পুরুষ পিশাচের ঘৃণিত আক্রমণ হইতে আত্মরক্ষা করিতে পারে! স্ত্রী প্রকৃতি কি এত ভয় শূন্য হইয়াছে যে তাঁহারা অন্তঃপুর পরিহার পূর্ব্বক একাকিনী সকলের সহিত বিশুদ্ধ ও অবিকৃত চিত্তে সদালাপ করিতে পারিবেন! মুসলমান রাজ্যের পর এমন কি সামাজিক ও ধর্ম্মভাব সম্বন্ধীয় পরিবর্ত্তন ও উন্নতি হইয়াছে যে আর্য্যনারীগণ এখনই রাজরথ্যায় বিচরণে সাহস করিতেছেন! সহসা এমন কি সময়ের গতি ফিরিল যে যুবকগণ লজ্জাশীলা

"स्वेच्छाचारिता" कही जाती है। भला, रमणीगण ही क्या इस प्रकार की स्वाधीनता चाहती है? कभी नहीं। तब अनुरोध उपरोध करके उन्हों को इस विषय की प्रवृति देने में क्या प्रयोजन है? इस प्रकार की स्वाधीनता न मिलना उन्होंके लिये मंगल है। इसही हेतु करके वे ने अनेक परिमाण विशुद्ध भावसे रहा है, इसी लिये उन्होंके मध्यमें सती पायी जाती है। पुरुषगण अनेक परिमाण ग्यानी और विद्यावान भी है, तथापि उन्होंने स्वाधीनता पा कर अत्याचार का एक शेष कर रहे है। जब पुरुषोंके मध्यमें स्वाधीनता का परिणाम यही हुआ, तब कोमल प्रकृति रमणीयोंने उसका प्रभावसे कहांतक न अत्याचार करेंगे?

शेष आगे।

हमारे शिक्षित युवकगण जो ने युरोपिय भावको बड़े प्यारे समझते है, स्त्रीयों को स्वाधीनता दानार्थ अत्यन्त व्यग्र है। वे ने जो किस भांति स्वाधीनता चाहती है सो अवतक हम समझ नहीं सकें। युरोप की ललनायें के न्याइ भारतीय स्त्रीयोंको यथेच्छागामिनी करनाही क्या उन्हों का अभिप्राय है? अन्तःपुरवासिनी कामिनीयों को स्वेच्छा अनुसार जहां तहां जाने दे कर, जिसका तिसका संग में बात चीत करने का अधिकार देके इतना अल्प दिनही के मध्यमें जगह जगह में जो जो घृणित घटनायें हो गये सो क्या किसी का विदित नहीं! दमयन्ती की न्याई क्या कोइ कुलकामिनीका मनका तेज जन्मा जो अकस्मात् कोई पिशाचरूप पुरुष का घृणित आक्रमणसे आत्म रक्षा कर सकी है! स्त्री-प्रकृति क्या इतना वेडर हुई जो वे लोग अन्तःपुर परित्याग पूर्वक अकेला सबके सङ्गमें विशुद्ध औ अविकृत चित्त से सदालाप कर सकेंगी! मुसलमानों के राज्य के आगे समाज और धर्म्म भाव सम्बन्धी ऐसी कौन परिवर्त्तन और उन्नति हुई है जो आर्य्य नारीगण अभी सड़क पर विचारने का साहस करती है! अकस्मात् समाजकी गति ऐसी किस भांति बदली जो युवकगण लज्जाशीला रमणीगण को सभा मंडप वा नाट्यशालामें जहां बड़े तेरे पुरुष मंडली उपस्थित

রমণীগণকে বহুবিধ পুরুষমণ্ডলী পূর্ণ সভামণ্ডপে বা নাট্যশালায় লইয়া গিয়া স্ত্রীকে পবিত্রভাবে গৃহে আনিতে পারিবেন। স্ত্রী শিক্ষিতা হইতে পারেন, তিনি অন্যকে পবিত্র চক্ষে দেখিলেও দেখিতে পারেন, কিন্তু পুরুষসমাজের দৃষ্টি এখনও পরিষ্কার হয় নাই। মুসলমানগণের রাজ্যে বাস করিয়া কোন প্রকারে স্ত্রীদিগের সতীত্ব রক্ষা হইয়াছে বটে, কিন্তু বিলাসপ্রিয় যবনগণের সঙ্গে থাকিয়া স্ত্রীগণ অপেক্ষা আমাদের দৃষ্টি অধিকতর দূষিত হইয়া গিয়াছে। আমরা শিক্ষিত হইয়াও প্রবলতর জাতির সহবাসে তাঁহাদের রীতি নীতি সমস্ত অনুকরণ না করিয়াও অনেক কুৎসিতভাব শিক্ষা করিয়াছি। প্রতাপশালী ইন্দ্রিয়পরায়ণ জাতির সঙ্গ ও দাসত্ব, এবং নীতি ও ধর্ম্মশিক্ষার অভাব দোষাদি বশতঃ সাধারণ লোকে এখনও স্ত্রীদিগকে পবিত্র চক্ষে দেখিতে শিক্ষা করে নাই। তাই বলি শত শত কলুষিত চক্ষুর কুদৃষ্টি যে কমনীয় কামিনীর অঙ্গে পতিত হইবে তাহার পবিত্র থাকিবার আশা কোথায়? বর্ত্তমান সময়ে অনেকে আবার ধর্ম্মচর্চ্চায় মনোভিনিবেশ করিতেছেন সত্য, কিন্তু এখনও তাঁহারা ঋষিতুল্য ইন্দ্রিয় সংযম উত্তমরূপ শিক্ষা করিতে পারেন নাই। তাঁহাদের এমন দুর্ব্বল অবস্থায় যদি সর্ব্বদা পরনারী সন্দর্শন সংঘটন হয়, তবে আবার দুর্ব্বল মন শিথিল হইয়া পড়িবে। শাস্ত্রপাঠে বিদিত হওয়া যায় যে, অনেক ধ্যানশীল তপস্তপ্ত মুনিগণেরও স্ত্রী দর্শনে তপোবিঘ্ন হইত; অতএব ভদ্রগণের কল্যাণের জন্যও অন্ততঃ স্ত্রী স্বাধীনতা আপাততঃ বন্ধ রাখিতে হইয়াছে। বিড়ালের সম্মুখে পোষা পাখীর পিঞ্জরমুক্ত করিও না। নীতি ও ধর্ম্মশিক্ষাদ্বারা যখন সাধারণের দৃষ্টি বিশুদ্ধ হইবে, স্ত্রীগণও যখন প্রাচীনা আর্য্যনারী-বর্গের প্রকৃতি লাভ করিবেন, যখন পর স্ত্রীপুরুষ মাতা ও পুত্র, কন্যা ও পিতা, ভ্রাতা ও ভগিনী, ইদৃশ কোন ভাবে পরস্পর দৃষ্টি করিতে শিখিবেন; যখন শাসন কর্ত্তৃবর্গ আমাদিগকে পশ্বাদি মনে না করিয়া স্বসমভাবে সদ্ব্যবহার করিতে থাকিবেন; তখন স্ত্রী স্বাধীনতার কথা উত্থাপন করিও। এক্ষণে আমাদিগের গৃহলক্ষ্মী অন্তঃপুর উজ্জ্বল করিয়া সতীত্ব-মুকুট শিরে ধারণ পূর্ব্বক দেবলোক পর্য্যন্ত আন-

रहते हैं ले जाकर स्त्रीको पवित्र भावसे गृहमें ला सकेंगे? स्त्री विद्यावती हो सक्ती है, वह दूसरे को पवित्र दृष्टिसे देख भी सक्ती हैं, किन्तु पुरुष समाज की दृष्टि अवतक परिष्कार न हुई। मुसलमानोंके राज्यमें रह कर किसी तरह से स्त्रीयोकी सतीत्व रक्षा हुई थी किन्तु यवनगण के, जो लोग बड़ा बिलासके प्यारे थे, संग में रहकर स्त्रीगणकी अपेक्षा हमारी दृष्टि अधिकतर दूषित हो गई। हमलोग शिक्षित हुये भी प्रबलतर जातिके संग करके उन्होंके रीति नीति यद्यपि सब अनुकरण न किया तथापि अनेक दूषित भाव सीख चुके। प्रतापशाली इन्द्रिय परायण जाति के संग औ दासत्व और नीति औ धर्म्म शिक्षाका अभाव आदि दोष करके साधारण जनोंने अवतक स्त्रियों को पवित्र दृष्टिसे देखने न सिखा। मोह कहते हैं कि शत शत कलुषित चक्षुकी कुदृष्टि जिस कमनीय कामिनी के अंग पर पड़ेगी उसकी पवित्र रहनेकी आशा कहां! वर्त्तमान समय में बहुतेरे जन धर्म्म चर्च्चा में मन लगाये, यह सत्य है, किन्तु अवतक भी वे लोग ऋषियोंके समान इन्द्रिय संयम करना उत्तम रूप से न शिख सकें उन्होंकी ऐसी दुर्बल अवस्थामें यदि सर्व्वदा परनारी दर्शन हो तब फिर दुर्व्वल मन शिथिल हो पड़ेगा। शास्त्र पढ़कर जाना जाता है जो अनेक ध्यानशील तपस्त्रियों को भी स्त्री दर्शन मे तपस्या का विघ्न हुआ था; अतएव भद्रगणके कल्याणके निमित्त भी स्त्री स्वाधीनता अब बन्ध रखने होगा। बिड़ालके सामने पाली हुई बिहंगी की पिंजरा मत खोलो। नीति औ धर्म्मशिक्षा करके जब साधारण जनो की दृष्टि विशुद्ध होगी, स्त्रीगण भी जब पुरानी आर्य्य नारीयों की प्रकृति लाभ करेंगी, जब पराई स्त्री औ पुरुष माता औ पुत्र, कन्या औ पिता, भ्राता औ भगनी इस भांति कोइ भाव से परस्पर देखने शिखेंगे, जब हमारे वर्त्तमान देश शासन करनेहारोंने हमको पशु आदि ना समझ कर अपना समान जातिय भावने सद्व्यवहार करते रहेंगे; तब स्त्री स्वाधीनता की बात कहियो। अब हमारी गृह लक्ष्मीने अन्तःपुर को उज्ज्वल करके सतीत्वका मुकुट शिरपर धारण पूर्व्वक देवलोक पर्य्यन्त आनन्दित करते रहैं! भारत! अब कुलनारीयोंको घरका बाहर आनेकी इच्छा मत करो। इसका विषमय फलसे तुमको अन्तमें पश्चाताप करने पड़ेगा। क्या तुम नहीं जानते हो

ন্দিত করিতে থাকুন। ভারত! এক্ষণে কুলাঙ্গনা বর্গকে গৃহের বাহিরে আসিতে ইঙ্গিত করিও না; ইহার বিষময় ফল পরিণামে তোমাকে পশ্চাত্তাপগ্রস্ত করিবে। তুমি কি জান না যে পুরুষ জাতির কলুষিত ব্যবহারও অত্যাচারই অন্তঃপুর বিধানের এক প্রধান কারণ? সাধারণ পুরুষজাতি সৎপ্রকৃতিস্থ না হইলে তুমি অন্তঃপুর দ্বার উন্মুক্ত করিয়া বিপন্ন হইও না যাহাতে সমাজের সর্ব্বসাধারণে ধর্ম্মনীতি ও জ্ঞান লাভ করিতে পারে, তাহার যত্নকর। তুমি স্বয়ং নীতি, ধর্ম্ম জ্ঞান শিক্ষা কর, ও অন্তঃপুরে যোষিদ্বর্গকেও ধর্ম্মনীতি বিশুদ্ধাচার আদি শিক্ষা দান কর।

ধঃ প্রঃ সং।

ধর্ম্মার্থ বিচার।

ব্রাহ্মধর্ম্ম প্রচারক মান্যবর শ্রীযুক্ত শিবনাথ শাস্ত্রীর মতিহারীতে অবস্থান কালে শ্রদ্ধাস্পদ যতি ফণীন্দ্র স্বামী প্রমুখ তত্রস্থ আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সভ্যগণের সহিত তাঁহার অনেক তর্ক বিতর্ক হইয়াছিল, এতাবৎ সংবাদ গত ১৬ই শ্রাবণের "তত্ত্বকৌমুদী" নামক একখানি ব্রাহ্মসমাজ পত্রিকায় প্রকাশিত হয়, তৎপাঠে আমাদিগের মতিহারীস্থ মান্যবর শ্রীযুক্ত বাবু দরবারিলাল মহাশয় "তত্ত্বকৌমুদীর" অযথোচিত বিবরণ প্রকাশে দুঃখিত হইয়া ধর্ম্মপ্রচারকে প্রকাশার্থে আমাদিগকে একখানি পত্র পাঠাইয়াছেন, তাহার সার মর্ম্ম এই যে, "বাবু শিবনাথ শাস্ত্রী মতিহারীতে উপস্থিত হইলে আমাদিগের সহিত যে সকল তর্ক বিতর্ক হইয়াছিল তাহার যেখানে যেখানে তিনি উত্তর দিতে সমর্থ হন নাই, অথবা বিচারের প্রকৃত বিবরণ গোপন করিয়া নিজ মতানুকূল বৃত্তান্ত তত্ত্বকৌমুদীতে প্রকাশ করিয়াছেন, তিনি স্বীকার করুন আর নাই করুন কিন্তু বিচারে তাঁহার পরাভব অত্রস্থ হিন্দু মুসলমান, খৃষ্টান ও ব্রাহ্ম- (যিনি অপক্ষপাতী) আদি সকলেই বিদিত আছেন।

১ম দিন। বার্ত্তালাপছলে শাস্ত্রী মহাশয় বলিলেন যে "ধর্ম্মসমাজের খুব উন্নতি, শুনিলাম দুই একজন ব্রাহ্ম ও উক্ত সমাজভুক্ত হইয়াছেন।" আমি বলিলাম যে অন্য ধর্ম্মাবলম্বীগণকে লইয়া সমাজের বৃদ্ধি করা আমাদের বিধি নহে। সমস্ত

कि पुरुषोंके कलुषित व्यवहार औ अत्याचार ही अन्तःपुरमें व्यवस्था का एक प्रधान कारण है? जबतक साधारण पुरुषगण सत्प्रकृति न लाभ करेंगे तब तक तुम अन्तःपुरका द्वार खुलकर विपद्ग्रस्त नहो। जिस रीतिसे समाजके सर्व्वसाधारण लोग धर्म्मनीति वो ज्ञान लाभ कर सकें, तिसका यत्न करो। तुम स्वयं नीति, धर्म्म, ज्ञान शिखो औ अन्तःपुरकी स्त्रीयों को भी धर्म्म नीति वो बिशुद्ध आचार आदि शिखाते रहो।

ध. प्र. सं

धर्म्मार्थ विचार।

ब्राह्मधर्म्म प्रचारक मान्यवर श्रीयुक्त शिवनाथ शास्त्रीजी की मतिहारीमें स्थिति कालमें श्रद्धास्पद यति फणीन्द्र स्वामी औ वहांके आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभाके सभ्यमण्डली सह जो अनेक तर्क बितर्क शास्त्रार्थ हुआ था वह सब समाचार १६ श्रावण की "तत्वकौमुदी" नाम जो पत्रिका ब्राह्मसमाज से प्रकाशित होती है उसमें छप गया उस पत्रको पाठ कर हमारे मतिहारीस्थ मान्यवर श्रीयुत बाबू दरबारीलाल महाशयने तत्वकौमुदीमें प्रकाशित हुई अयथोचित बिबरणसे दुःखित होते हुए धर्म्मप्रचारकमें प्रकाशार्थ हमको एक पत्र भेजें उसका सारार्थ नीचे प्रगट किया जाता है।

बाबू शिवनाथ शास्त्री मतिहारीमें उपस्थित होने पर हमारे साथ जेतना तर्क बितर्क हुआ था उसमें जहां जहां उनसे उत्तर न बना अथवा बिचार की प्रकृत बिवरण छिपा कर निज मतानुकुल वृत्तान्त "तत्वकौमुदीमें प्रकाश किया है। वे स्वीकार करें और न करें किन्तु वे जो बिचारमें परास्त हुये सो यहां के हिन्दु मुसलमान, कृष्टान और ब्राह्म (जो पक्षपात न करते हैं) आदि सबको बिदित है।

१म दिन। बार्त्तालापके रीतिपर शास्त्री महाशयने बोला कि यहांके धर्म्मसमाजकी खूब उन्नति है, सुना कि उसमें दो एक ब्राह्म भी मिल गया। मैं ने बोला हमारे समाजकी यह विधि नहीं है जो अन्य धर्म्मवालेको ले कर समाजकी बृद्धि करें। ब्राह्मसमाज तो इसी कारण स्थापित हुई जो समस्त

মনুষ্যকে সম্মিলিত করিবার জন্য যে ব্রাহ্মসমাজ স্থাপিত হইল, তাঁহারা ভিন্ন ভিন্ন মতাবলম্বীকে একত্র করা দূরে থাকুক, অতি অল্প দিনে এক মতাবলম্বীই ত্রিধা বিভক্ত হইয়া গেল! সমস্ত লোক একমত কখনই হইবে না। ভবাদৃশ পুরুষগণ যদি এখনও আর্য্যশাস্ত্রানুসারে ধর্ম্মপ্রচার করেন তবে ভারতের কল্যাণ হইতে পারে। কেবল নিজ নিজ সামান্য বুদ্ধি ও যুক্তি দ্বারা ধর্ম্ম প্রচারিত হইয়া দেশের অতীব ক্ষতি হইতেছে। এতৎ শ্রবণে শাস্ত্রীজী বলিলেন যে আমরা কোন মতের বিশেষ পক্ষপাতী নহি। যাহা ভাল তাহাই গ্রহণ ও যাহা মন্দ তাহা পরিত্যাগ করিয়া থাকি। তাহাতে আমি বলিলাম যে, আমি অপূর্ণ বুদ্ধি, আমি বুঝিতে না পারিয়া সমতল ভূমি জ্ঞানে তৃণাচ্ছাদিত অন্ধকূপে পতিত হইতেও পারি। স্বাভাবিক ভ্রম কলুষিত বুদ্ধি কখনই প্রকৃত সত্য নিরূপণে সমর্থ নহে। শাস্ত্রী মহাশয় ইহাতে কোন উত্তর দিতে না পারিয়া বঙ্গবাসীগণের সহিত বাঙ্গালায় কথাবার্ত্তা কহিতে লাগিলেন, এবং তাঁহার ভোজন সময় উপস্থিত হওয়ায় আমরা পরস্পর বিদায় সম্ভাষণ করিয়া চলিয়া আসি।

২য় দিন। ব্রাহ্মসমাজ সম্পাদকের ভবনে হিন্দু, মুসলমান, খৃষ্টান ও ব্রাহ্ম অনেক গুলি লোকের বিচারার্থ সমাগম হইল। সেই দিন নেপাল হইতে সমাগত শ্রীমৎ স্বামী ফণীন্দ্র যতি সন্ন্যাসীও তথায় উপস্থিত থাকেন। শাস্ত্রী ও স্বামী উভয়ে তর্ক আরম্ভ করিলেন। শাস্ত্রীজী বলিলেন যুক্তি ও বুদ্ধি ভিন্ন তো বেদার্থও স্থির হয় না। এখানে বেদ অপেক্ষা যুক্তি ও বুদ্ধির গৌরব অধিক। তাহাতে স্বামীজী বলিলেন "বেদ অভ্রান্ত ও ত্রিকাণ্ড বিশিষ্ট (কর্ম্ম, উপাসনা ও জ্ঞান?) বেদবিহিত কর্ম্মানুষ্ঠান না করিলে বেদের সূক্ষ্মার্থ ও গম্ভীরতার ব্যাখ্যা করিবার বা বুঝিবার দিব্য বুদ্ধি উদয় হয় না। কর্ম্ম বর্জ্জিত লোকের বেদার্থে ভ্রম হইয়া থাকে। একজন চিকিৎসক ঔষধের একখানি ব্যবস্থা পত্র লিখিয়া দেন, তাহাতে "শুণ্ঠী পিপ্পলি মরিচ" এই কএকটী ঔষধের নাম লিখিত ছিল; দ্রব্যনামানভিজ্ঞ পাঠক পণ্যশালায় "শুণ্ঠীপি পালিম ও রীচ" এই রূপ পড়িয়া কয়েকটী দ্রব্য অনেক অনুসন্ধান করিয়াও পাইল না; অবশেষে চিকিৎসকের লিপি করণেরই দোষ স্থির

मनुष्यको मिला लेगी परन्तु भिन्न भिन्न धर्म्मवालेको एकट्ठे करना तो दूर रहा, थोड़ेही दिन बीतते होते न होते एक मतवाले भीं त्रिधा विभक्त हो गये! समस्त लोग कभी एकमत होनेवाले नहीं। भवादृश पुरुषगण यदि अब भी आर्य्यशास्त्रके अनुसार धर्म्मप्रचार किया करें तो भारतका कल्याण हो सकता है। केवल निज निज सामान्य बुद्धि और युक्तिके द्वारा जो धर्म्मप्रचार किया करते हैं इससे देशकी अत्यन्त हानि हो रही है। एतना सुनकर शास्त्री जीने बोला जो हम कोइ मत विशेषका पक्षपात न करते है, जो कुछ उत्तम है सब ग्रहण करते और जो कुछ बुरा सो परित्याग कर देते हैं। उसपर मैंने बोला कि मैं अपूर्ण बुद्धि हूं, मैं तृणाच्छादित अन्ध कूपको समतल भूमि बोधकरके उसमें वे समझ गिरनी जा सकता हूं। स्वाभाविक भ्रम कलुषित बुद्धीने प्रकृत सत्य निरूपण करनेमें कभी समर्थ नहीं होता है। शास्त्री महाशयने इसपर कुछ उत्तर न दे सका और बंगदेशियोंके सहित बंग भाषामें बातचीत करने लगा और उनका भोजनके समय उपस्थित होनेसे हम परस्पर विदाय संभाषण कर चले आये।

द्वितीय दिन। हिन्दू, मुसलमान ख्रीष्टियान औ ब्राह्म आदि बहुतेरे लोग धर्म्मार्थ विचार करनेके निमित्त ब्राह्मसमाजके सम्पादकका भवन में एकट्ठे हुये। उसी दिन नेपालसे आये हुये श्रीमत स्वामी फणीन्द्र यति सन्न्यासी भी वहां उपस्थित थे। शास्त्री और स्वामी इन दोनोंमें तर्क आरम्भ हुआ। शास्त्री जिने बोला विना युक्ति वो बुद्धिसे तो वेदार्थ भी स्थिर ना होता है। यहां देखने युक्ति वो बुद्धिका गौरव अधिक हुआ। उसपर स्वामी जिने बोला वेद अभ्रान्त और त्रिकाण्ड (कर्म्म, उपासना और ज्ञान) विशिष्ट है। वेदविहित कर्म्मानुष्ठान किये विना वेद मंत्रका सूक्ष्मार्थ और गम्भीरता की व्याख्या करनेकी वा समझाने को निर्म्मला बुद्धि उदय न होती है। कर्म्म वर्जित लोगोंका वेदार्थमें भ्रम हुआ करता है। कोई एक वैद्यने किसिको एक औषध का व्यवस्था पत्र (नुसका) लिख दिया था, उसमें "शुण्ठी पिप्पलि मरीच" इनका औषधका नाम लिखा रहा; मूर्ख पाठक बेनका दोकानमें जा जाकर शुण्ठीपि, पलिम और रिच औषधका नाम इस रीति पढके

করিয়া রাখিল। তদ্রূপ বেদে যাহা লিখিত আছে, বৈদিক ক্রিয়ানুষ্ঠান বিহীন স্বল্প বুদ্ধিগণ অর্থের ব্যভিচার করিয়া বেদের দোষ প্রদর্শন করিতেছে; কি মূঢ়তা! বৈদিক কর্ম্ম, ব্রহ্মচর্য্য, গুরুসেবা ও ভগবদুপাসনাদি ভিন্ন বৈদিক অর্থ হৃদগত হইবার অন্য সহজ উপায় নাই। অতঃপর শাস্ত্রী বলিলেন যে "ব্রহ্ম নির্গুণ কিন্তু বেদে ব্রহ্মকে সগুণ ও বলেন। নির্গুণ পদার্থই নিত্য, জীব ইহাকে মন ও বুদ্ধিও বলে। স্বামীজী বলিলেন "সুষুপ্তিকালে মন বুদ্ধি বিলয় প্রাপ্ত হয়, উহারা নিত্য নির্গুণ পদার্থ কি রূপে হইবে বুঝাইয়া দিন" শাস্ত্রীজী নিরুত্তর হইলেন এবং উপাসনার সময় হইয়াছে বলিয়া সভা ভঙ্গ করিলেন।

৩য় দিন। শাস্ত্রীজী বুদ্ধিকে সহকারী শাস্ত্র বলিয়া স্বীকার করিলেন এবং শাস্ত্র মধ্যে পরস্পর বিরোধ প্রদর্শন দ্বারা বুদ্ধিকে শ্রেষ্ঠ প্রমাণ করিবার জন্য "বেদা বিভিন্না স্মৃতয়ো বিভিন্না" ইত্যারব্ধ শ্লোকের প্রথম তিন চরণ বলিলেন। স্বামীজী বলিলেন চতুর্থ চরণে (মহাজনো যেন গতা স পন্থা) উহার উত্তর বা সমাধান রহিয়াছে। বেদ ও স্মৃতি ভিন্ন ভিন্ন হইলেও পরস্পর বিরুদ্ধ নহে। শাস্ত্রীজী তাহা স্বীকার করিয়া লজ্জিত হইলেন। অতঃপর শাস্ত্রীজী বেদোক্ত "মাহিংসাৎ সর্ব্বভূতানি" আদির একটী বিরোধ তুলিলেন। কিন্তু স্বামীজী বিচারার্থী হইলে তাহাতে অগ্রসর হইলেন না। শাস্ত্রীজী তৎপূর্ব্ব দিন একটী শ্রুতির বিপরীত অর্থ করায় স্বামীজী তাহা খণ্ডন করিয়া প্রকৃতার্থ ব্যাখ্যা করিয়াছিলেন; অদ্য বোধ করি সেই ভয়ে শাস্ত্রী বিচারার্থী হইলেন না। অবশেষে বলিলেন আজ থাকুক কাল ঋগ্বেদ আনয়ন করিবেন আমি বিরোধ দেখাইব। এই সময়ে বাবু পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় স্বামীজীকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন যে, "যে ব্যক্তি উভয় শাস্ত্রজ্ঞ সে ব্যক্তি ভিন্ন একাঙ্গদর্শী কখনও বিরোধ দেখাইতে পারে না। একজন মল্ল যুদ্ধকালে যখন দেখিল যে আর জয়াশা নাই তখন বলিল যে আচ্ছা কাল আসিও আমি তোমায় পরাভূত করিব; শাস্ত্রীজীরও সেই অবস্থা। এই কথাটী বলা হইয়াছিল বলিয়া তত্ত্বকৌমুদীতে লিখিত হইয়াছে যে, "আর্য্যসমাজের কোন কোন সভ্য ক্রোধে অধীর

अनेक अनुसन्धान किया किंतु औषध कहीं न मिला; अंतमें इतना स्थिर किया की वैद्यका लिखनेहि में भूल है। तद्रूप वैदिक क्रिया वर्ज्जित स्वल्प बुद्धि जनोंने वेद में लिखि हुई वाणीयोंका उलटा पुलटा अर्थ कर वेद पर दोष लगा रहे है; कैसी मूढ़ता? वैदिक कर्म्म, ब्रह्मचर्य्य, गुरुकी सेवा और भगवतको उपासनादि क्रिया विना वेदका अर्थ समझने का दुसरा सहज उपाय नहीं है। इसका अनन्तर शास्त्रीने बोला जो "ब्रह्म निर्गुण है, किन्तु वेदमें ब्रह्मको सगुण करके भी बताया। निर्गुण पदार्थहि नित्य है, जीव इसको मन औ बुद्धि करके भि, मान लेता है।" स्वामी जिने बोला "कि मन बुद्धिने तो सुषुप्ति कालमें लय प्राप्त होता, वह सब नित्य निर्गुण पदार्थ कैसे होंगे सो आप समझा दिजिये।" शास्त्रीजि निरुत्तर हुये और उपासना का समय हुआ, इतना कह कर सभा विसर्ज्जन किया।

तृतीय दिन। शास्त्री जिने बुद्धिको सहकारी शास्त्र करके स्वीकार किया और शास्त्रमें जो परस्पर विरोध है सो देखा कर बुद्धिकी बड़ाइ प्रमाणार्थ "वेदा विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना" इत्यादि श्लोकका प्रथम तीन चरण का उच्चारण किया स्वामी जीने बोला इस श्लोकका चतुर्थ चरणमें (महाजनो येन गता स पन्था) इसका उत्तर वा समाधान रहा है। वेद औ स्मृति भिन्न भिन्न होने पर भि परस्पर विरुद्ध नहीं। शास्त्रीजिने इतना स्वीकारकर सरमा गये। अनन्तर शास्त्रीजी वेदोक्त "मा-हिंसात् सर्व्व भूतानि" आदि पर एक विरोध उठाया किन्तु स्वामीजि विचारार्थी होने पर वेनेआगुया ना हुया। उसका पूर्व दिन शास्त्री जिने एक श्रुति वचनका उलटा अर्थ करनेसे स्वामी जिने उसका खण्डन कर प्रकृतार्थ व्याख्या कारथी; बोध होता है आज उसि भयसे शास्त्री विचारार्थी नहीं हुये। अन्तमें बोले आज रह दीजिये, काल ऋग्वेद मांगाइयेगा, मैं विरोध देखाउंगा। इसि समय बाबु पूर्णचन्द्र बन्धोपाध्यायने स्वामीजिको सम्बोधन कर बोला कि जो पुरुष तीनो शास्त्रज्ञ हो वह छोड़के एकांग दर्शि कभी विरोध न देखा सकेगा। एक मल्लने युद्ध कालमें जब देखा जो और मेरा जय कि आशा नहीं है तब बोला कि, आच्छा काल आवना मैं तुझको हारा दुंगा; शास्त्री जीको भि अब वैसी अवस्था है। इतनि बातेपर "तत्त्वकौमुदीमें लिखा गया

হইয়া চীৎকার ও অঙ্গ চালনাদি আরম্ভ করিলেন"। কি সত্যের ব্যভিচার!!

শাস্ত্রী মহাশয় বলিলেন "ধর্ম্মাধর্ম্ম বিচার মনুষ্যের স্বাভাবিক" ইহাতে স্বামীজী জিজ্ঞাসা করিলেন যে, যদি একটী মনুষ্য শৈশব হইতে ৫০ বর্ষ বয়ক্রম পর্য্যন্ত কোন মানব সমাগম শূন্য স্থানে আবদ্ধ থাকে, তবে সে পশুবৎ হইয়া যায়; আপনি ধর্ম্মাধর্ম্ম বিচার কি রূপ স্বাভাবিক মানেন? যেমন জল স্বাভাবিক দ্রবীভূত ও শীতল কিম্বা বৃক্ষের শাখা পল্লব যে রূপ-স্বাভাবিক উদ্ভিন্ন হয় অথবা যেমন সময় উপস্থিত হইলে শ্মশ্রু আদি নির্গত হয়, সেই রূপ? এই প্রশ্নের চর্চ্চা শেষ হইল না; ভোজনের নিমন্ত্রণ আছে, বিলম্ব হইয়া যাইবে" বলিয়া শাস্ত্রী স্বদল সহ উঠিয়া গেলেন। আর্য্যধর্ম্মাবলম্বীগণ অমনি "জয় আর্য্যধর্ম্মকি জয়, জয় স্বামীজীকি জয়" বলিয়া আনন্দ ধ্বনী করিতে লাগিলেন। এই স্থলে তত্ত্বকৌমুদী বলিয়াছেন "তৎপরে অপর এক বিষয়ের কিয়ৎকাল বিচার হইয়া বিচার বিফল বোধে সকলে উঠিতে চাহিলেন। দুঃখের বিষয় ব্রাহ্মসমাজের কোন কোন সভ্য তাহাতে অসহিষ্ণুতা প্রকাশ করিলেন।" কেবল অসহিষ্ণুতা প্রকাশ নহে ইংরাজিতেও বলিলেন "Let the dogs bark" উঃ! ব্রাহ্মভ্রাতাগণের কি অহঙ্কার।—কি অভিমান!! ভ্রাতৃগণ! ধর্ম্মসাধন করিতে হইলে শীতল মস্তিষ্ক হওয়া চাই—মনঃসংযম ও বাক্‌সংযম প্রথমেই প্রয়োজন। কেবল "ব্রহ্ম নিরাকার" বলিয়া বেড়াইলে কি হইবে! শাস্ত্রীজী উক্ত কটূক্তিগুলি একমাত্র "অসহিষ্ণুতা" শব্দের অন্তরালে লুকাইয়া স্বপক্ষ সমর্থন করিয়াছেন।

শেষ দিন শাস্ত্রীজীর বর্ণভেদ ও পৌত্তলিকতার বিরুদ্ধে বক্তৃতা হইয়াছিল। এই বক্তৃতা যে হিন্দুগণের অবশ্যই শ্রুতি কটু ও হৃদ্বেদনাদায়ক হইবে তাহা আর কাহাকেও বুঝাইবার প্রয়োজন নাই। বক্তৃতা স্থলে ইহার প্রতিবাদ জন্য যখন আর্য্যধর্ম্মাবলম্বী শ্রীযুক্ত বাবু যুগোল কিশোর দণ্ডায়মান হইলেন, তখন তাঁহাকে এই বলিয়া মানা করা হইল যে, "আজ খণ্ডন করিতে পাইবে

जो "आर्य्यसभाके कोइ कोइ सभ्य ने क्रोधवे अधीर हो कर चित्कार औ अंग चालनादि आरम्भ किया।" क्या सत्यका व्यभिचार है!

शास्त्री महाशयने बोला "धर्म्माधर्म्मके विचार मनुष्यमें स्वाभाविक है" इस पर स्वामी जिने पुछा जो कोइ मनुष्यको बालकपनसे पंचास बरस उमेर तक कोई एक स्थानमें बन्ध रखा जाय, जहां मनुष्य का गमनागमन नहीं, तब वह पशुके समान हो जाता है; आपने जो धर्म्माधर्म्म विचार करना भी किस प्रकार स्वाभाविक मानते हैं, सो बताइये। जैसा कि जल स्वाभाविक द्रवीभूत औ शीतल है अथवा वृक्षके शाखा पल्लव जैसा स्वाभाविक निकल आता है किंवा जथा समय पाकर मनुष्यके दाढ़ी मोच निकालता है, क्या उसी प्रकार स्वाभाविक है? इस प्रश्नकी चर्चाका शेष ना हुया; "भोजनका निमन्त्रन है, विलम्ब हो जागा" इतना कहकर शास्त्रीजी आपने साथीयोंके संग उठ चल दिये। आर्य्यधर्म्म वाले उसी समय "जय आर्य्यधर्म्मकी जय," "जय स्वामीजिकी जय" इस रीतिसे आनन्द ध्वनि करने लगे। इसि जगहका हाल तत्त्वकौमुदीमें इस भांति लिखा है "अनन्तर और एक विषय पर थोड़ा देर विचार चला किन्तु विचार निष्फल समझके सब कोई उठने चहा। दुःखका विषय यह है जो ब्राह्म समाजके कोई कोई सभ्यने इसमें असहन शीलता प्रकाश करि थि।" केवल "असहन शीलता" प्रकाश नहीं, अंगरेजीमें भि बोला "Let the dogs bark" ओः ब्राह्म भाईयोंका क्या अहंकार! क्या अभिमान!! भाइयों! यदि धर्म्म साधन करना चाहो तो शीतल मस्तिष्क होना चाहिये, मन संयम औ वाक संयम प्रयोजन हैं। "ब्रह्म निराकार" केवल इतनाकह फिरनेसे क्या होगा! शास्त्री जिने उक्त कटु वचनों को एक मात्र "असहन शीलता शब्दके आड़में छिपा कर अपना पक्ष समर्थन किया।

शेष दिन। वर्ण भेद और मूर्त्ति पूजाके विरुद्ध शास्त्री जीने एक वक्तृता करी। ऐसी वक्तृता जो आर्य्यधर्म्म वालेको अवश्यही सुनेमें बुरी और दुखदायी होगी सो और किसीको समझा देनेको प्रयोजन नहीं। वक्तृताका स्थानउर इसका प्रतिवाद करणार्थ जब आर्य्यधर्म्मावलम्बी श्रीयुत बाबु युगलकिशोर खड़े हुए तब उनको इतना कहके मना किया जो आज खण्डन न करना, केवल सुन

না, কেবল শুনিয়া যাও"। ইহাতে আমরা বলিলাম যে যদি কেবল আমাদের ধর্ম্মেরই নিন্দা করিবে ও আমাদের প্রতিবাদ শুনিবেনা স্থির ছিল তবে আমাদিগকে না আহ্বান করিলেই হইত। কেন না ধর্ম্ম নিন্দা শুনিলে ছুরী তরবারি চলাও লোকের পক্ষে কিছু আশ্চর্য্য নহে। এই বিষয়টী অন্য প্রকার করিয়া তত্ত্বকৌমুদীতে প্রকাশিত হইয়াছে। যথা "হিন্দুস্থানীরা বলিতে লাগিল আমাদের বিশ্বাসের বিরুদ্ধে কথা বলা আরগলে ছুরী দেওয়া সমান। আজ তলয়ার চলিবে না হয় লাঠী চলিবে না হয় আদালত চলিবে।" অবশেষে সত্যের অনুরোধে এই মাত্র লিখিয়াছেন "মতিহারীতে আর্য্যসমাজটী (উক্ত সমাজের নাম "মতিহারী আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভা") স্থাপিত হইয়া উপকার হইয়াছে, এতদ্দ্বারা উক্ত সহরে ধর্ম্ম চর্চ্চা প্রবল হইয়াছে কিন্তু দুঃখের বিষয় ব্রাহ্মসমাজটীর নিতান্ত দুর্ব্বল অবস্থা"!

"সত্যমেবজয়তে নানৃতম্"!

ধর্ম্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্য ধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে আনন্দ ও উৎসাহ সহকারে ধর্ম্মপ্রচারকে প্রকাশ করিব।

২। ধর্ম্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মুঙ্গের "আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভায়," আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টেল মণিঅর্ডারে পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩শ সংখ্যা হইতে ডাকমাশুল সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে।

উত্তম কাগজে,	বার্ষিক	৩।৵০	প্রতিখণ্ড	।৵০
মধ্যম ঐ	,,	২।৵০	,,	।০
সাধারণ ঐ	,,	১।৵০	,,	৵০

মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম-প্রচারিণী সভা। } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন। সম্পাদক।

जओ। इसपर हमने बोला कि यदि केवल हमारे धर्म्मकी निन्दा करना और इसको खण्डन ना सुना अभिप्राय थी, तो हमको ना बोलाना उत्तम था क्योंकि धर्म्मकी निन्दा सुनकर छोरी, तलवार चलानाभी मनुष्यके लिये कुछ आश्चर्य्य नहीं है। इस विषयको "तत्त्वकौमुदी" में दुसरी रीतिसे प्रकाश किया गया। यथा "हिन्दुस्थानी लोग कहने लगे कि हमारे बिश्वासके विरुद्ध बातें बोलना और गलेमें छुरी देना दोनो बराबर है। आज तलवार चलेगा नहीं तो लाठी चलेगा नहीं तो "अदालत होगा।" अन्तमें सत्यके अनुरोधसे एतनाही लिखा "मतिहारी की आर्य्यसमाज (इस समाजका नाम" मतिहारी आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभा') स्थापित होनेसे उपकार हुआ, इससे उक्त शहरमें धर्म्मकी चर्च्चा प्रबल हुइ किन्तु दुःखका बिषय यह है कि ब्राह्मसमाजकी बड़ी दुर्ब्बल दशा देख पड़ती है"!

"सत्यमेव जयते नानृतम्"।

धर्म्मप्रचारकसम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोइ धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्मकी प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करनेके निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोइ प्रस्ताव लिख की भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होय तो आनन्द औ उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश करूंगा।

२। धर्म्मप्रचारक पत्रका मौल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मुंगेर आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभा के ठिकाने से मेरे पास भेजने होगा। पत्र बैरिङ्ग होतो नहीं लिया जायगा।

३। मौल साधारणत: पोष्टाल मनिअर्डार करके भेजियेगा। डाक टिकिट में मोल भेजें तो आध आने का टिकिट भेजियेगा।

च प ४। १म भाग १२ संख्या से धर्म्मप्रचार का डाकमहसूल सहित अग्रिम वार्षिक मूल्य का नियम तीन प्रकार का हुआ।

उत्तम कागजमें	वार्षिक	३।=०	प्रतिसंख्या	।=
मध्यम ,,	,,	२।=०	,,	।०
साधारण,,	,,	१॥=०	,,	८=

मुङ्गेर आर्य्यधर्म्म-प्रचारिणी सभा। } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन। सम्पादक।

এই পত্র প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেনকর্ত্তৃক প্রকাশিত হইয়া থাকে।

"এক এব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমং নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৩য় ভাগ। শকাব্দা ১৮০২।
৩৬ সংখ্যা। আশ্বিন পূর্ণিমা।

রামগীতা।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।)

এবং পরিজ্ঞাত পরাত্ম-ভাবনঃ
স্বানন্দ তুষ্টঃ পরিবিস্মৃতোখিলঃ।
আস্তে স নিত্যাত্মসুখ প্রকাশকঃ
সাক্ষাদ্বিমুক্তোঽচলবারি সিন্ধুবৎ ॥ ৫২ ॥

যিনি এইরূপে আত্ম চিন্তা করিয়া থাকেন, তিনি এই প্রপঞ্চ মায়া পরিভাসিত পদার্থ পুঞ্জ বিস্মৃত হইয়া স্বাত্মানন্দোপভোগে নিরন্তর পরিতৃপ্ত থাকেন। অতঃপর তিনি সাক্ষাৎ সত্য, স্বয়ং প্রকাশ আত্ম সুখস্বরূপ হয়েন এবং চতুর্ব্বিধ বিঘ্ন (লয়, বিক্ষেপ, কষায় ও রসাস্বাদ) বিমুক্ত হইয়া প্রশান্ত পয়োধির ন্যায় অক্ষুব্ধ ভাবে অবস্থিত করিতে থাকেন।

ধীমান পাঠক বর্গের বোধ সুগমার্থ বিঘ্ন চতুষ্টয়ের বিশেষ লক্ষণ কথিত হইতেছে। অখণ্ড

"एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥"

३ य भाग शकाब्दा १८०२।
३६ श सख्या भाद्र पूर्णिमा।

राम गीता।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

एवं परिज्ञात परात्म भावनः।
स्वानन्दतुष्टः परिविस्मृताखिलः।
आस्ते स नित्यात्मसुख प्रकाशकः
साक्षाद्विमुक्तोऽचल वारिसिन्धुवत ॥ ५२ ॥

जोने इस भांति आत्मचिन्ता की करती, उन्होंने इस प्रपञ्च मायासे भासित चैतन्य पदार्थ पुञ्जको विस्मृत होकर स्वात्मानन्दोपभोगमे निरन्तर परितृप्त रहताहै। अनन्तर साक्षात् सत्य, स्वयं प्रकाश, आत्म-सुखस्वरूप होतेहै वो चार प्रकारके विघ्न (लय, विक्षेप, कषाय वा रसास्वाद) से विमुक्त होकर प्रशान्त पयोधिके समान अक्षुब्ध, भावसे विराज किये करते हैं।

धीमान पाठकोंके बोधसुगमार्थ चारप्रकार विघ्नका विशेष लक्षण लिखा जाताहै। अखण्ड

যে অন্তঃকরণের নিদ্রাবস্থা উপস্থিত হইয়া থাকে তাহাকে "লয়" কহে। অখণ্ড ব্রহ্মকে অবলম্বন করিতে অপারগ হইয়া সূর্য্য, চন্দ্র, গ্রহ, নক্ষত্রাদি অন্যতর পদার্থকে অবলম্বন পূর্ব্বক লোকে যে উপাসনা করে তাহার নাম "বিক্ষেপ"। লয় ও বিক্ষেপের অভাবে অন্তঃকরণ-বৃত্তি যদি স্বাভাবিক স্তব্ধ থাকিয়া অগত্যা ব্রহ্মাবলম্বনে ধাবিত হয় তাহাকে "কষায়" কহে। প্রকৃত যোগ সাধনে অসমর্থতা প্রযুক্ত অখণ্ডানন্দস্বরূপ ব্রহ্মকে অবলম্বন করিতে অপারগ হইয়া বুদ্ধি বৃত্তির কল্পিত সুখস্বরূপ সবিকল্পানন্দকে ব্রহ্মানন্দ ভ্রমে আস্বাদন করাকে "রসাস্বাদ" বলা যায়।

এবং সদাভ্যস্তসমাধি যোগিনো
নিবৃত্ত সর্ব্বেন্দ্রিয় গোচরস্য হি।
বিনির্জ্জিতা শেষরিপোরহং সদা
দৃশ্যো ভবেয়ং জিতষড়্গুণাত্মনঃ ॥ ৫৩ ॥

এই প্রকারে যে যোগী নিরন্তর সমাধি অভ্যাস করেন সেই বিষয়বিনিবৃত্ত-চিত্ত ব্যক্তির নিকট আমি (রামচন্দ্র) কাম ক্রোধাদি বৈরীবর্গ বিজয়ী ও ক্ষুধা, তৃষ্ণা, শোক, মোহ, জরা, মরণ এই ষড়ূর্ম্মী বারণ ও সচ্চিদানন্দ স্বরূপ আত্মরূপে সর্ব্বদা অনুভূত হই।

ধ্যাত্বৈবমাত্মানমহর্নিশং মুনি
স্তিষ্ঠেৎ সদামুক্ত সমস্ত বন্ধনঃ।
প্রারব্ধমশ্নন্নভিমান বর্জ্জিতো
ময্যেবসাক্ষাৎ প্রবিলীয়তে ততঃ ॥ ৫৪ ॥

মননশীল পুরুষ উক্ত প্রকারে অপরোক্ষানুভূত আত্মাকে অহর্নিশি ধ্যান করত কাম, ক্রোধ, শোক, সংশয়, আত্মপরভেদ বুদ্ধি আদি হৃদয় গ্রন্থি ছেদন পূর্ব্বক জীবন্মুক্ত হইয়া অবস্থিতি করেন। তদনন্তর সেই দেহাত্মাভিমান বর্জ্জিত ব্যক্তি প্রারব্ধ কর্ম্ম ভোগ করিয়া অবশেষে ব্রহ্ম স্বরূপ আমাতেই বিলীন হইয়া যায়।

জীব পূর্ব্বজন্মকৃত পাপ ও পুণ্য ফলানুরূপ পশু, কীট, মনুষ্যাদি দেহ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। যে পর্য্যন্ত প্রাপ্ত দেহোপভোগ্য কর্ম্ম ফল রাশির শেষ না হয়, তাবৎ জীবের দেহপাত হয় না। কর্ম্মাবসান হইলে ব্যাধি, বিগ্রহাদি কোন একটী হেতু [illegible]ম্বন করিয়া কাল জীবকে সংহার

अन्तःकरण की-जो निद्रावस्था आ जाती है उसहीको "लय" कहा जाताहै। अखण्ड ब्रह्मको अवलम्बन करनेमें असमर्थ होकर सूर्य्य चन्द्र ग्रहनक्षत्रादि कोई पदार्थको अवलम्बन पूर्वक मनुष्योंने जो उपासनाकी करतेहै उसका नाम "विक्षेप" करके जानना। लय वो विक्षेपका अभावसे अन्तःकरणकी वृत्ति यदि स्वतःही स्तब्ध रहकर अगत्या ब्रह्मको अवलम्बन करने पर धावे तब उसहीको "कषाय" करके जानना। प्रकृत योगसाधनकी असमर्थताके हेतु अखण्डानन्द स्वरूप ब्रह्मको अवलम्बन करनेमें अपारग होकर सविकल्पानन्दको जोकि बुद्धिवृत्तिका कल्पित सुखहै, ब्रह्मानन्द समझके आस्वादन करनेको "रसास्वाद" कहा जाता है।

एवं सदाभ्यस्त समाधि योगीनो
निवृत्त सर्व्वेन्द्रिय गोचरस्य हि।
विनिर्जिता शेष रिपोरहं सदा
दृश्योभवेयं जित षड्गुणात्मनः ॥ ५३ ॥

इस रीतिसे जो योगी निरन्तर समाधि अभ्यास करतेहैं, उसही विषय-विनिवृत्त-चित्त पुरुषके निकट मैं (रामचन्द्र) कामक्रोधादि वैरीयोंके जितनेवाले वो क्षुधा, तृष्णा, शोक, मोह, जरा, मरण, यही षड़ूर्मी-निवारण वो सच्चिदानन्दस्वरूप आत्माकरके प्रतीत पड़ताहूँ।

ध्यात्वैवमात्मानमहर्निशं मुनि
स्तिष्ठेत सदामुक्त समस्तबन्धनः।
प्रारब्धमश्नन्नभिमान वर्जितो
मय्येवसाक्षात प्रविलीयते ततः ॥ ५४ ॥

मननशील पुरुष उक्त प्रकारसे आत्माको, जोकि अपरोक्ष अनुभव करके जानि जाते हैं, दिवा निशि ध्यानकर काम, क्रोध, शोक, संशय, आत्म, पर भेद बुद्धि आदि हृदय ग्रन्थियोंको छेदन पूर्वक जीवन्मुक्त रूप विराज करतेहैं। तदनन्तर वह देहाभिमान शून्य पुरुषने प्रारब्ध कर्म्मफल भोग करके अन्तमें ब्रह्मस्वरूप मुझहीमें विलीन होजाताहै।

जीव पूर्व्वजन्मकृत पाप वो पुण्यफलका अनुरूप पशु, कीट, मनुष्यादि देह प्राप्त होताहै। जबतक पाया हुआ देहका भोगके योग्य कर्म्मफल राशिका शेष न होता, तत्कालतक जीवका देह पतन नहीं होताहै। कर्म्मका अवसान होनेसे व्याधि, विग्रह आदि कोई एक हेतु अवलम्बन करके काल जीवको

বিচার করে না, ধনী, দরিদ্র, মূঢ়, পণ্ডিত, বলবান বা দুর্ব্বলের তারতম্য দৃষ্টি করে না। কর্ম্ম-ফল-ভোগ সত্ত্বে কালের প্রবেশাধিকার নাই। কঠোর তপস্যা করিলেও পূর্ব্বকৃত কর্ম্মের ফল বিনাভোগে শেষ হয় না। আত্ম জ্ঞানলাভ পূর্ব্বক ক্রিয়া বর্জ্জিত হইলে পুনরাবৃত্তির আশঙ্কা থাকে না বটে কিন্তু উক্ত তত্ত্ব জ্ঞান পূর্ব্বকৃত কর্ম্মকে বিনষ্ট করিতে পারে না। ভোগের দ্বারাই কর্ম্মক্ষয় হইয়া থাকে। এইজন্য শান্ত স্বভাব মহর্ষিগণও সময়ে সময়ে নানাপ্রকার উপদ্রবগ্রস্ত হইয়াছেন। কিন্তু তত্তাবৎ পূর্ব্বকৃত কর্ম্মফল স্থির করিয়া অক্ষুণ্ণচিত্তে সহ্য করিয়াছেন। মাণ্ডব্যাদি মুনীর জীবন চরিত ইহার সাক্ষ্য প্রদান করিতেছে। শুভকর্ম্ম সুখভোগ ও অশুভ কর্ম্ম দুঃখভোগ দ্বারা ক্ষয় হইয়া থাকে। শুভাশুভ কর্ম্মত্যাগী পুরুষের পুনর্জ্জন্মের পথ রুদ্ধ হইয়া যায় এবং তাঁহার পরম পবিত্রাত্মা ব্রহ্মসত্তায় বিলয় প্রাপ্ত হয়।

ক্রমশঃ

তরুলতা।

তরুলতে! আমি তোমাকে বড় ভাল বাসি? তোমার ললিত অঙ্গের প্রতি অধিকক্ষণ দৃষ্টি করিয়া থাকিলে নয়ন শীতল হয়। তোমার এই কোমল ও কমনীয় শোভা অনেক বিশাল বৃক্ষ-শোভাকেও পরাজয় করিয়াছে। তোমার গঠন প্রণালী যে নির্ম্মাতার সূচীকণ শিল্প নৈপুণ্যের পরিচয় দিতেছে আমি তাঁহাকে সর্ব্বান্তঃকরণের সহিত নমস্কার করি। তোমাকে দেখিলে অনেক ভাবের উদয় হয়। সে সকল যদি মানবকে বলি তবে তাহারা আমাকে নির্যাতন করিবে। তোমাকে একান্ত স্থানে পাইয়াছি, তোমার সহিত দুই একটী কথা কহিয়া প্রাণ শীতল করিব।

তরুলতে! তুমি কি জন্য জন্ম লইলে? জন্মিয়া তুমি সুখী হইলে কৈ? তুমি জগতে না আসিলেই তোমার পুণ্যের পরিচয় হইত। তুমি কীট পতঙ্গ পশু পক্ষী আদির পদ বিদলিত তৃণ সগুলী মধ্যে জন্মগ্রহণ করিয়াছ? তুমি নিজ প্রকৃতি গুণে তাহাদের শীর্ষ সীমা অতিক্রম

आदि विचार न करताहै; दरिद्र, धनी, मूढ़, पण्डित बलवान, दुर्वल आदिका तारतम्य कालको दृष्टिमें न आतीहै। कर्म्मफल भोगनेका समय वीतने विना कालका प्रवेशाधिकार नहींहै। कठोर तपस्या करने परभी विना भोगे पूर्व्वकृत कर्म्मफलका शेष नहीं होता। आत्मज्ञानलाभ पूर्व्वक क्रिया वर्ज्जित होनेसे यद्दिच पुनरावृत्तिकी आशङ्का न रहती है, किन्तु उक्त तत्त्वज्ञान पूर्व्वजन्मकृत कर्म्मको विनाश नहीं करसक्ताहै। भोगहीके द्वारा कर्म्मक्षय हो जाता है। इस निमित्त शान्त स्वभाव महर्षिगणभी समय समयमें नानाप्रकारसे उपद्रव ग्रस्त हुएहैं, किन्तु तत्समस्त पूर्व्वकृत कर्म्मफल, इतना विचारके अक्षुण्ण चित्तसे सह्य किये। माण्डव्यादि मुनियोंके जीवन-चरित इस विषयका साक्ष्य दे रहाहैं। सुख भोगसे शुभकर्म्म वो दुःखभोगसे अशुभ कर्म्मक्षय हो जाताहै शुभाशुभ कर्म्मत्यागी पुरुषके पुनर्जन्मका पथ रुद्ध हो जाताहै औ उनका आत्मा जो परम पवित्र रहा सो ब्रह्म सत्तामें विलय प्राप्त हो जाताहै।

शेष आगे।

तरुलता। (सरूपेचा)

तरुलते! मैं तुझको वड़ा प्यार करताहुं। तेरे मनोहर अङ्गोंपर कुछ कालतक दृष्टि किये रहता हुं तो नयन शीतल होताहैं। तेरी यह कोमल औ कमनीया शोभामें वहुतसे विशाल विशाल वृक्षोंकी भी शोभाका जीत लिया हैं। तेरी गठन प्रणाली जो निर्म्मताकी सूचिकणा शिल्प-निपुणताका परिचय देतीहै मैं उसे सर्व्वान्तःकरण नमस्कार करता हुं। तुझको देखने वहुतसे भावोंका उदय होताहैं, मा सव जो मनुष्यसे कहुं वे मुझको निर्य्यातन करेंगे। तुझको एकान्त स्थानमें पायाहुं, तेरे साथ दो एक वात कहकर प्राणको शीतल करूङ्गा।

तरुलते! तूने किसलिये जन्म लिया है, तू जन्म ले सुखिनो कहां हुई; तु जो जगत्में नहीं आते, तभीं तेरे पुण्यका परिचय होता। तू कीट, पतङ्ग, पशु पक्षी आदिके पदसे विदलित तृणसमूहलोंके बीच जन्मीं, तू अपनी प्रकृतिके वलसे उनकी मस्तकसीमाका

কিন্তু তাহাতে তোমার গৌরব কি? তুমি তো স্বয়ং দণ্ডায়মান থাকিতে পার না, একটী অবলম্বন না পাইলে তোমার কল্যাণ নাই; আশ্রয়দাতার চরণ ধারণ করিয়া ক্রমে তাঁহার কক্ষ বক্ষ অতিক্রম করিয়া উঠিতে থাক; যদি প্রবল বায়ু বিতাড়নে অবলম্বনটী ভূমিসাৎ হয়, তবে তৎসহ তোমার সেই দশা হইয়া থাকে; অথবা বাত্যাঘাতে তুমি একাই ছিন্ন ভিন্ন হইয়া পড়িলে কিম্বা আশ্রয় না পাইলেও ভূমিতে লুটাইলে; শৃগাল, কুক্কুর, গো ও গর্দ্দভের পদাঘাত সহ্য করিতে লাগিলে; তাই বলি তোমার জন্মিয়া ফল কি, ? বাঁচিয়া সুখ কি? মধ্যে মধ্যে তোমার এক একটী সুন্দর ফুল ফুটে সত্য কিন্তু কৈ তাহার সেই গন্ধ তো শুভ্রবর্ণ রজনীগন্ধ, যুথি আদির ন্যায় দিঙ্মণ্ডল আমোদিত করিতে পারে না? তাহার সৌন্দর্য্য তোমারই কমনীয় দেহ সুশোভিত করিয়া পরিসমাপ্ত হয় মাত্র। অলাবু, কুস্মাণ্ড, আদির ন্যায় কোনও ফলও প্রসব করিতে পার না। মেঘমালা যতদিন আকাশকে শীতল করিয়া তোমার অঙ্গে বারি বর্ষণ করিবে, তুমি সেই কয়েকদিন মাত্র আপনার দুর্ব্বল অঙ্গভার অন্যের স্কন্ধে রক্ষা করিয়া জীবিত থাক মাত্র; অবশেষে হিমকর স্পর্শে মলিন হইয়া তনুত্যাগ কর। তাই বলি এ জীবনে তোমার প্রয়োজন কি? যদি তুমি স্বয়ংই স্বাধীনভাবে থাকিতে পারিলে না, তবে নলিনীর মৃণাল ও কুমুদ বৃন্তের ন্যায় সরসীর জলে ডুবিয়া মরিলে না কেন? তোমার আকার প্রকার ভাব ভঙ্গিতে ভাল না বাসিয়া থাকিতে পারি না, তাই তোমাকে ভাল বাসি; কিন্তু তোমার অবস্থা দেখিয়া নয়ন বাষ্পাকুল হয়। তোমার ক্ষীণ দেহ, স্বল্প পরমায়ু, পরাধীন জীবন দর্শনে হৃদয়ে নির্ব্বেদ উপস্থিত হয়। যদি বল "ভগবান আমাকে এইরূপ সৃষ্টি করিয়াছেন, আমি কি করিব" তবে তুমি পুষ্পোদ্যানের পুরোদ্বারে আপনার দুর্ব্বল দেহ দোলাইয়া কি সুখে নৃত্য করিতেছ, তোমার হাসিতে, খেলিতে বা নৃত্য করিতে লজ্জা বোধ হয় না? তোমাকে যদি একটী শিশু টানিয়া ছিঁড়িয়া ফেলে; তুমি আত্মরক্ষা করিতে পার না, একটী ছাগে কবলিত করিলে তুমি তাহা রোধ করিতে পার না; তবে সকলের

सही, जिसमे तेरी क्या बड़ाई ऊई? तू आपतो खड़ी भी न हो सकती—कुछ अवलम्ब बिन मिले तेरा कल्याण हो नहीं। आश्रय देने हारेका पांवधरके क्रमसे उसके कक्ष, वक्षका अतिक्रम कर उठा करती है। यदि कभी प्रबल वायु वेगसे वह अवलम्ब टूट गिरातो उसके साथ तेरीभी वही दशा होजाती है; अथवा वायुके आघातसे तू अपनीभी गिर पड़ती औ छिन्न भिन्न हो जाती है, किम्वा आश्रय न मिलनेसे भी तू भूमिपर लोटती है। शृगाल, कुक्कुर, गौ, गर्द्दभोंके पदाघातोंको सह्य करतीहै; इसीलिये कहता ऊं कि तुझे जन्मका क्या फल! जीनेसे क्या सुख! बीच बीचमे तेरा एक एकक सुन्दर फुलता भरहै—पर उसका गन्धसे शुभ्रवर्ण रजनी गन्ध (गुलसबो) यूथिका आदि की नाई दिङ्मण्डलको आमोदित तो नही कर सकती है। उसकी सुन्दरता केवल तेरे कमनीय देहको सुशोभित कर परिसमाप्त होती है। अलावु, कुष्माण्डकी नाई किसी फलका प्रसव तो कर नही सकती हैं। जबतक मेघमाला आकाशको शीतल कर तेरे अङ्गोपर जल बरसाता सोही कयेक दिनोंतक अपने दुर्ब्बल अङ्गोंके भारको आनके स्कन्धपर रखकर जीती मर रहतीहै, फिर अब शेषमें हिम किरणके स्पर्शसे शरीर त्याग करतीहैं। इसीलिये कहता ऊं तेरा इस जीवनमे क्या प्रयोजनहैं? जों तू आप स्वाधीन होकर रह नहीं सकती तो नलिनीके मृणाल औ कुमुद वृन्तकी भांति सरसीके जलमें डूब क्यों न मरती? तेरे आकार प्रकारको भाव भङ्गीसे प्यार बिन किये नही रह सकताहै, इसीलिये तुझको प्यार किया तरफा ऊं पर तेरी अवस्था देखकर आंखेंमे आंशु भर आती हैं! तेरी क्षीण शरीर, पराधीन जीवन देखकर हृदय फटताहै। यदि तू ऐसा कहे कि भगवानने मुझे ऐसीही बनाई है मैं क्या करूंगी, तब तू पुष्पोद्यानका द्वार द्वार अपने दुर्ब्बल अङ्गको डोलाती ऊई किस सुखसे नृत्य करती है। तुझको क्या हसने, खेलने वा नाचते लाज नहीं लगता है? तुझको एक लड़काभी नोच उजाड़ डालता है तु बचा नही सकती; तुझको एक बकरी भांगभी कवलित कर जाता हैं-तू उसका रोध तो नहीं कर सकती हैं,-तब सबके सम्मुख क्यों जाती है—जहां कोई जन लोककी गतिविधि न हो नहीं वही जा-जाके बन-

গতিবিধি নাই তথায় চলিয়া যাও, যেখানে নববল্লী সকল নিভৃত স্থানে এক একটী বৃক্ষকে আশ্রয় করিয়া মনের সুখে কালহরণ করিতেছ, সেই গভীর বনে চলিয়া যাও; তথায় ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বিহঙ্গ-বালার সহিত ক্রীড়া করিতে থাক। তুমি জন-পদে থাকিবার নিতান্ত অনুপযোগী। গহনবনে তেজস্বী তপস্বীগণ বাস করেন, আশ্রম মণ্ডপ রচনা করিয়া তাঁহাদের সেবা কর; যদি কখন তাঁহাদের দয়া লাভ করিতে পার, তবে জনপদে জন্মগ্রহণ করিও; তাঁহারা তরুলতাকে "তড়ি-ল্লতা" করিতে পারেন; বিদ্যুল্লতার অঙ্গ স্পর্শ করে কাহার সাধ্য, তখন তোমার ক্ষণ-বিকাশে জগৎ চমকিয়া উঠিবে; দিগ্দশ দীপ্তি মালায় মোহিত হইবে, আবশ্যক বোধে অট্ট-হাস্যসহ গম্ভীর নিনাদে পর্ব্বত চূড়া চূর্ণ করিতে পারিবে। অতএব তরুলতে! আর বিলম্ব করিও না, আমার কথিত মত আপনার জীবনের উন্নতি সাধন কর। এক্ষণে বিদায় লইলাম।

मनके सुखसे कालयापन करती है, उसी गभीर वनमें चली जा; और वहां छोटी विहङ्ग बालाओं के संग खेलना, तू जनपदमें रहनेकी नितान्त अयोग्य, गहन वनमें तेजस्वी तपस्वी लोग रहते हैं जिन्होंका आश्रम मण्डप बनाकर सेवा करनी-और यदि उन्होंकी कृपा पा सकेगी, तो फिर जनपदमें जन्म लेना, वे तरुलताको तड़िल्लता (बीजली) बना सकते; सब विद्युल्लताको छूनेका किसका साध्य है-तेरे क्षणविकाससे जगत् चमक उठेगा-दशोदिश दीप्तिमालासे मोहित हो जावेगी, आवश्यक होनेसे अट्टहास शब्द कर्त्तृक पर्वतचूड़ाको चूर्ण कर सकेगी। अतएव हे तरुलते! अब विलम्ब मत करना, मेरे कहे अनुसार जीवनकी उन्नति साधन कर। अभि विदा लेता हूं?

স্ত্রী স্বাধীনতা ও শিক্ষা।

(সৈয়দপুর উন্নতি বিধায়িনী সভা হইতে প্রাপ্ত)

পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।

২য়। "এতদ্দেশীয় রমণীগণ অশিক্ষিতা বলিয়া তাঁহাদের স্বামীগণের বিদ্যা বুদ্ধি স্ফূর্ত্তি পায় না। বিদ্যালয়ে তাঁহারা যে জ্ঞান লাভ করেন তাহা ক্রমে হীনপ্রভ হইয়া যায়"।

আমাদিগের মধ্যে কৃতবিদ্য ব্যক্তিগণ ইউ-রোপীয়দিগের কার্য্যপ্রণালী দেখিয়া সকল বিষ-য়ের মিমাংসা করেন। ভাল, দেখা যাউক, রমণীগণের বিদ্যার প্রভাবে ইংরেজেরা কতদূর পর্য্যন্ত উন্নতি করিয়াছেন। ইউরোপীয় মহিলা-গণের লেখা পড়ার সীমা কি? উপন্যাস পাঠ করিয়াই ত তাঁহারা সময় অতিবাহিত করিয়া থাকেন। তাঁহাদের মধ্যে কয়জন রমণী উচ্চ-ভাবের গ্রন্থ পাঠ ও তাহার ভাব সংগ্রহ করিয়া আলোচনা করেন? যাঁহারা বিদ্যার বিশেষ পারদর্শিতা লাভ করিয়াছেন, তাঁহারা হয় কোন উপন্যাস অথবা কবিতা রচনা করিয়া বিদ্যার পরিচয় দিয়াছেন। এবম্প্রকার বিদ্যার প্রভাবে, উচ্চমনা জ্ঞানী স্বামীর কি উপকার দর্শিয়া থাকে?

स्त्री स्वाधीनता औ शिक्षा।

(सैयदपुर उन्नति विधायिनी सभासे प्राप्त हुआ)

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

२य। "यहांके रमणीयोंने अशिक्षिता होने का कारण उन्होंके स्वामीयोंकी विद्या, बुद्धि, स्फूर्त्ति न पाती है। उन्होंने विद्यालयमेंभी जो ज्ञानलाभ किया करता है सोभी प्रभाशून्य हो जाता है।"

हमारे कृतविद्य व्यक्तिगण युरोपियोंकी कार्य्य-प्रणाली देखकर हरबातकी मिमांसा कर लेते हैं। आच्छा, अब देखा चाहिये, रमणीगणकी विद्याका प्रभावसे अंरेज लोगोंने कितना दुरतक उन्नति करी है। युरोपीय महिलागणकी विद्याशिक्षाकी सीमा कहांतक है? उपन्यास आदिकी पाठ करके समय व्यतीत की करती है। उन्हींके मध्यमे कितनी स्त्रीय उच्च भावपूर्ण ग्रन्थ पाठ वो उसका भाव संग्रह कर आलोचनाकी करतीं हैं। जितनी स्त्रीयोंने विद्याकी विशेष रूप पटुता लाभ करी है, उन्होंमें कोई२ उपन्यास अथवा कविता रचकर विद्याका परिचय दिया होगा। इस प्रकारकी विद्याका प्रभावसे उन्नत मना ज्ञानी स्वामीका क्या उप कार होता है? बेकान, निउटन, ह्युम, वो प्लेटन आदिके न्याय असाधारण पुरुषोंने क्या

অসামান্য ব্যক্তিগণ কি তাঁহাদের রমণীর উৎসাহে উৎসাহান্বিত হইয়া এতদূর প্রতিভা সম্পন্ন হইয়াছিলেন? ভারতবর্ষেরদিকে দৃষ্টিপাত করিলে আমরা কি দেখিতে পাই? হয়ত এমন দৃশ্য নয়ন-গোচর হয় যে, যে রমণী, ক খ পর্য্যন্ত জানেন না, তাঁহার স্বামী একজন প্রভূত প্রতিভাশালী গ্রন্থকার। আমাদের মধ্যে যে কয়জন কৃতবিদ্য আছেন, তাঁহারা কি তাঁহাদের স্ত্রীগণের উৎসাহে এত উন্নত হইয়াছেন? ডাক্তর রাজেন্দ্র লাল মিত্র, রেভরেণ্ড কে, এম্ বন্দ্যোপাধ্যায়, বাবু কেশবচন্দ্র সেন, রেভরেণ্ড লালবিহারি দে, অনারেবল্ কৃষ্ণদাস পাল প্রভৃতি কৃতবিদ্য ব্যক্তিগণ কি শিক্ষিতা রমণীর প্রভাবে এতদূর পর্য্যন্ত বিদ্যা ও জ্ঞান সম্পন্ন হইয়াছেন? আমরা স্ত্রী শিক্ষার বিরোধী নহি, প্রকৃত শিক্ষা সর্ব্বমতে বাঞ্ছনীয়। যেরূপ শিক্ষা প্রভাবে রমণীগণ বিলাসবতী হইবে, যেরূপ শিক্ষা প্রভাবে তাহারা স্বামীকে ও অন্যান্য গুরুজনকে তুচ্ছ তাচ্ছিল্য করিবে, যেরূপ শিক্ষা প্রভাবে তাহারা পর পুরুষের সহিত যথা তথা ভ্রমণ করিবে, যে শিক্ষা প্রভাবে তাহারা লজ্জায় জলাঞ্জলি দিয়া ব্যাপিকা হইয়া উঠিবে, এবং যে শিক্ষা প্রভাবে তাহারা গৃহকার্য্য অবহেলা করিয়া হাস্য পরিহাসে, ক্রীড়া কৌতুকে সময় অতিবাহন করিবে, আমরা সে বিদ্যা শিক্ষার পক্ষপাতী নহি। কিন্তু প্রকৃত শিক্ষা বাঞ্ছনীয় হইলেও তাহা কি আমাদের বর্ত্তমান অবস্থায় প্রদান করা সম্ভব? পুরুষগণই ত রমণীগণকে শিক্ষা প্রদান করিবেন! কিন্তু তাঁহারা আপনারা শিক্ষকের উপযুক্ত হইলে তবে ত অবলাগণকে শিক্ষা দিতে পারিবেন!!

আমাদের মধ্যে অনেক কৃতবিদ্য ব্যক্তি আছেন সত্য, কিন্তু তাঁহারা কি যথার্থ শিক্ষালাভ করিয়াছেন? তাঁহারা বিদ্যাভিমানে পরিপূর্ণ হইয়া একথাও বলিয়া থাকেন যে, সুবর্ণে আর কর্দ্দমে কি কখন মিলন হইতে পারে? অর্থাৎ তাঁহারা সুবর্ণ হইয়া কি কর্দ্দম স্বরূপ মূর্খা রমণীর সহবাসে কালযাপন করিতে পারেন? মনে করুন এক কৃতবিদ্য পুরুষ অমিত ব্যয়ী, অত্যাচারী, ব্যভিচার দোষাসক্ত, ঘোর পাষণ্ড ও নাস্তিক হইয়া উঠিলেন আর অশিক্ষিতা স্ত্রী লজ্জাশীলা, শান্তপ্রকৃতি, গৃহকার্য্য-পারদর্শিনী, দয়াবতী, পরহিতৈষিনী,

निज निज रमणीका उत्साहसे उत्साहित होकर ऐसे प्रतिभा-सम्पन्न हुए थे? भारतवर्षके ओर दृष्टि करनेसेभी यही देखनेमें आता है, जो रमणी क, ख तक् न जानती है, उसकें स्वामी एकजन प्रभूत प्रतिभाशाली ग्रन्थकार हुए। हमारे मध्यमें जितना कृतविद्य पुरुष हैं, वह सब क्या अपनी अपनी स्त्रीका उत्साहसे इतना उन्नत हुए? डाक्तार राजेन्द्रलाल मित्र, रेभारेण्ड के, एम, बंद्योपाध्याय, बाबु केशवचन्द्र सेन, रेभारेण्ड लालविहारी दे, अनरेवल कृष्णदास पाल, आदि कृतविद्य व्यक्तिगण क्या शिक्षित रमणीका प्रभाव करके इसभांति विद्या औ ज्ञान-सम्पन्न हुए? हम स्त्री शिक्षाका विरोधी नही हैं, किन्तु प्रकृत रीतिकी शिक्षा सब प्रकारसे वाञ्छनीय है। जिसभांति शिक्षाका प्रभावसे रमणीगण विलासवती होगी, जिसभांति शिक्षाका प्रभावसे उन्होंने स्वामी औ अन्यान्य गुरुजनको तुच्छ समझेगी, जिसभांति शिक्षाका प्रभावसे उन्होंने अन्यान्य पुरुषोंके साथ जहां तहां फिरा करेगा, जिसभांति शिक्षा का प्रभावसे वे लज्जा विसर्ज्जन कर व्यापिका हो उठेङ्गी औ जिसभांति शिक्षाका प्रभावसे वे गृहकार्य्यमें अवहेला कर हास्य परिहासमें, क्रीड़ा कौतुकमें समय अतिवाहन करेङ्गी, हम उसभांतिकी विद्याशिक्षाका पक्षपाती नहीं हैं, किन्तु प्रकृत शिक्षा यदिच वाञ्छनीय है तोभी वह क्या हमारी वर्त्तमान अवस्थामें देना सम्भव है? पुरुषगणही तो रमणीयोंको शिक्षादान करेंगे!! किन्तु उन्हें तो पहले स्वयं शिक्षकके योग्य बने तब तो नारीयोंको शिक्षा दे सकेंगे!!

मैं मानलेता हूं हम लोगोंके मध्यमें अनेक कृतविद्य पुरुष हैं, सोही किन्तु उन्होंने क्या यथार्थ शिक्षालाभ किया है? उन्होंने विद्याभिमानसे परिपूर्ण होकर यहबातभी कही करती है जो सुवर्ण औ मिट्टी इन दोनोंमें क्या कभी मेल होता। अर्थात् उन्होंने सुवर्ण होकर मट्टीरूपा मूर्खा रमणीका सहबासमे काल अतीत कर सक्ता हैं? विचारिये कि एक कृतविद्य पुरुष जो अमितव्ययी, अयथाचारी, व्यभिचार दोषासक्त, घोर पाषण्ड, वो नास्तिक हो उठा और अशिक्षिता लज्जाशीला शान्तप्रकृति, गृहकार्य्यपारदर्शिनी, दयावती, परहितैषिणी धर्म्म

দস্যগণ এখন আপনাদের জিজ্ঞাসা করি, এরূপ রমণী-রত্নের স্বামী হওয়া কি প্রার্থনীয় নহে? তবে, যে পুরুষের চিত্র আমরা চিত্রিত করিলাম, সে পুরুষ কখনই এপ্রকার রমণীর স্বামী হইতে চাহিবেন না। যে রমণী লেখা পড়া শিখিয়া উপন্যাস কি নায়ক নায়িকার প্রেমালাপ ও রসালাপ হৃদয়ঙ্গম করিয়া রজনীতে স্বামীর সহিত তৎপ্রসঙ্গে কথোপকথন করিতে পারিবে, যে রমণী যানারোহণে স্বামীর সহিত বায়ু সেবন করিতে কুণ্ঠিতা হইবে না, যে রমণী তাঁহার স্বামীর বন্ধুগণের সহিত একত্রে বসিয়া আলাপ ও ক্রীড়া করিতে পারিবে, সেই রমণীই পূর্ব্ববর্ণিত কৃতবিদ্য ব্যক্তির কণ্ঠের হার বলিয়া আদরণীয়া হইবে। তাই বলি প্রথমে পুরুষগণ প্রকৃত শিক্ষালাভ করুন, তবে তাঁহারা স্ত্রী শিক্ষার কথা লইয়া আন্দোলন করিবেন। পুস্তকগত বিদ্যাকে আমরা প্রকৃত-বিদ্যা বলিয়া গণ্য করি না। যখন বিদ্যা দ্বারা পুরুষগণের চরিত্র বিশুদ্ধ হইবে, যখন ইহার প্রভাবে সমাজ সংস্কৃত হইয়া উঠিবে, যখন তাঁহারা সচ্চরিত্রা রমণীকে সমাদর করিতে প্রস্তুত হইবেন; তখন যদি তাঁহারা রমণীগণের বিদ্যা-শিক্ষার কথা উত্থাপন করেন, আমরা তাঁহাদিগকে তদ্বিষয়ে উৎসাহ প্রদান করিব এবং বদ্ধপরিকর হইয়া স্ত্রী শিক্ষার উন্নতির জন্য যত্নবান হইব।

বর্ত্তমান সময়ে স্ত্রী শিক্ষা, স্ত্রী স্বাধীনতা, ইত্যাকার শব্দ গগন ভেদ করিয়া উঠিতেছে। যে ব্যক্তির নিকটে গমন করি, তাঁহার নিকটেই ইহার প্রতিপোষক বাক্য শ্রবণ করি, যে সভায় গমন করি সেখানেই ইহার আন্দোলন। এ সকল দেখিয়া শুনিয়া আমরা জ্বালাতন হই। কিন্তু কি করিব! বড় বড় লোকের মুখে বড় বড় কথা শুনিয়া লোকে আর দ্বিরুক্তি করিতে সক্ষম নহে। আমাদের কথায় কে বা কর্ণপাত করে? তথাপি দেখা যাউক কিয়ৎ পরিমাণে যে স্ত্রী শিক্ষা প্রচলিত হইয়াছে, তাহার দ্বারা কি ফল উৎপন্ন হইতেছে। বিদ্যার প্রভাবে এ কালের রমণীরা গর্ব্বিতা হইয়াছে। তাহারা গুরুজনকে অবজ্ঞা করিয়া থাকে। লজ্জাশীলতা ও বিনম্রভাব তাহাদের প্রায় দেখা যায় না। স্বার্থপরতা তাহাদের মধ্যে বিশেষরূপে দেখা দিয়াছে। স্বামীও পুত্র কন্যা ব্যতীত অপর কাহাকে পরিবার ভুক্ত বলিয়া

गणको अब मैं पूछताहूं कि ऐसी रमणी-रत्नका स्वामी होना क्या प्रार्थनीय नहीं? तब जो पुरुषका चित्र किया गया, वह पुरुष कभीभी ऐसी रमणीका स्वामी होने नहीं चाहता होगा। जो रमणीने लिखन पठन सिखकर उपन्यास वा नायक नायिका प्रेमालाप वो रसालाप हृदयङ्गम कर रजनीकाल स्वामीके सहित तत्प्रसङ्गमें कथोपकथन कर सकेगी जो रमणी शकटपर सवार हुए स्वामीका साथ जहां तहां वायुसेवनार्थ जानेमें सङ्कोच न मानेगी, जो रमणी स्वामीके मित्र-मण्डलीके साथ एकट्ठे बैठे आलाप वो क्रीड़ा कर सकेगी, वही रमणी पूर्व-वर्णित कृतविद्य पुरुषका कण्ठहारके समान आदरणीया होगी। तन्निमित्त हम कहते हैं कि प्रथममें पुरुषगण तो प्रकृत शिक्षालाभ कर लें तब स्त्री-शिक्षाकी बात उठावें। पुस्तकगत विद्याको हम प्रकृत विद्या करके न मानते हैं। जब विद्या करके पुरुषोंके चरित्र विशुद्ध होगा, जब इसका प्रभावसे समाज संस्कृत हो उठेगी, जब पुरुषोंने सच्चरित्रा रमणीको समादर करने लगेगा, उस समय यदि उन्होंने रमणीयोंकी विद्याशिक्षाकी बातें उठावें हम उन्होंको तद्विषयमें उत्साह देके औ बद्धपरिकर होकर स्त्री-शिक्षाकी उन्नतिके निमित्त यत्नवान् होंगे।

वर्त्तमान कालमें "स्त्री-शिक्षा" वो "स्त्री-स्वाधीनता" इत्याकार शब्द गगण भेद कर उठ रहा है। जिस किसहीके निकट गमन करूं उन्हीके पास इस विषयकी पोषक वाक्यों श्रवण करता हूं, जिस सभामें गमन करूं वहां हो इसकी चर्चा देखी जाती है। इतना देख सुनकर हमने दिक हुआ। किन्तु क्या करें! बड़े बड़े लोगोंकी बड़ी बड़ी बाते सुनकर दुसरा किसहीकी द्विरुक्ति करनेकी शक्ति न रहती है। हमारी बातोंपर कौन कर्ण पात करे? तथापि देखना चाहिये, किञ्चिदपि जो स्त्री-शिक्षा चली है, उससे क्या फल होता है। विद्याका प्रभावसे आजकलकी रमणीयोंने गर्व्विता होती हैं। उन्होंने गुरुजनोंको अवज्ञा की करती हैं। लज्जाशीलता वो विनम्रभाव उन्होंमें प्राय देखा नहीं जाता है। स्वार्थपरता उनके मध्यमे विशेषरूप देख पड़ती है। स्वामी औ पुत्र कन्या छोड़के और किसहीको परिवारमें नहीं गिनने चाहता है।

গণ্য করিতে প্রস্তুত নহে। স্বামী পুত্রকে অন্ন ব্যঞ্জনাদি রন্ধন করিয়া দেওয়া তাঁহারা ভারবহ বিবেচনা করেন। সৌখীন ভাবের দুই একটী বেশ বিন্যাসের কার্য্য করিলেন, অথবা স্ত্রী পুরুষের প্রণয় ঘটিত কোন উপন্যাস বা কাব্যগ্রন্থ পাঠ করিলেন; স্বামী দেখিয়া আহ্লাদে পরিপ্লুত হইলেন। আপনা আপনি ধন্য বিবেচনা করিলেন। এখন কাহার সাধ্য এ প্রকার বিদ্যাবতী রমণীকে কোন কথা বলে। যদি স্বামী পুত্রের নিত্য ব্যবহারোপযোগী সামগ্রী প্রস্তুত করিতে শিখিতেন, তাহা হইলেও কিয়ৎ পরিমাণে উপকার দর্শিত। আমরা দেখিতেছি যে, এমন দিন আগত প্রায়, যে দিনে পুরুষগণকে হয় স্বয়ং রন্ধন করিয়া খাইতে ও লক্ষ্মীকে খাওয়াইতে হইবে। অথবা যদি কোন উদ্যমশীল পুরুষ অন্ন ব্যঞ্জনের দোকান খোলেন, তথা হইতে ক্রয় করিয়া উদর পূর্ণ করিতে হইবে। যাহাঁরা প্রচুর অর্থ উপার্জ্জন করেন, তাঁহারা সৌখীন স্ত্রীকে লইয়া পুতুল খেলা দেখিতে পারেন। কারণ তাঁহারা পাচিকা নিযুক্ত করিতে সক্ষম। কিন্তু মধ্যবিৎ গৃহস্থগণ অনন্যগতি হইয়া পড়িয়াছেন। সুতরাং তাঁহাদের বিবেচনা করিয়া চলিলে প্রাচীন ধারা অবলম্বন করিতে হইবে।

হয়ত কেহ জিজ্ঞাসা করিবেন, তবে কি স্ত্রী শিক্ষা রহিত করা উচিত? আমার বিবেচনায় আমাদের বর্ত্তমান অবস্থায়, করা উচিত। পুরুষগণ যখন বিশুদ্ধ চরিত্র হইবে, সমাজ যখন সংস্কৃত হইবে, তখন স্ত্রী শিক্ষা প্রয়োজনীয় বলিয়া প্রতীত জন্মিবে। আমরা দেখিলাম যে অল্প শিক্ষার ফল বিষময়, এখন যাহাতে তাঁহারা প্রকৃত শিক্ষা-লাভ করিতে পারেন তৎপক্ষে প্রয়াস পাওয়া কর্ত্তব্য। কিন্তু সে আশা কোথায়? পুরুষগণ নিজে সুশিক্ষিত হইলে তবেত সম্ভব হইতে পারে। প্রকৃত শিক্ষালাভ না করিলে, তাঁহাদের মনোপ্রকৃতি পরিবর্ত্তিত হইবে না। যতদিন জ্ঞানের সহিত ধর্ম্ম সম্মিলিত না হইবে, যতদিন জ্ঞানের উন্নতি অপেক্ষা আত্মার উন্নতি অধিক বাঞ্ছনীয় বলিয়া প্রতীয়মান না হইবে, ততদিন পুরুষগণ রমণীকে ক্রীড়ার বস্তু বলিতে কুণ্ঠিত হইবেন না। আপনারা যেমন সুশিক্ষা প্রভাবে বিশুদ্ধ চরিত্র ও ঈশ্বর পরায়ণ হইবেন, তাঁহাদের সহধর্ম্মিণীকেও

स्वामी पुत्र आदिके निमित्त रसुइ बनानाभी उन्होने बड़ा भारी समझता हैं, वेश विन्यासके दो एक रंगिलि काम किया अथवा स्त्री पुरुषका प्रणय सूचक कोइ उपन्यास वा काव्य पढ़ा, स्वामी इतना देखके बड़ा आनन्दित हुआ वो आपनेको धन्य माना। अब किसका सामर्थ हैं जो ऐसी विद्यावती रमणीको कुछ कहे। यदि स्वामी पुत्र आदिकी सदा व्यवहार योग्य सामग्री बनाने शिखता तौभी कुछ उपकारमें आता। हम देखते हैं जो ऐसा दिन आनेवाला है जिन दिनोंमे पुरुषोंको स्वयं रसुइ बना लेना औ स्त्रीयोंको खिलाने पड़ेगा अथवा यदि कोइ उद्यमशील पुरुष पकाए हुए अन्न व्यञ्जनोंकी दोकान खुले तो वहांसें मोल लेकर उदर पूर्ण करने होगा। जो लोग प्रचुर अर्थ उपार्ज्जन कर रहे हैं, उन्होने स्त्री लेकर पुत्तलिका खेल कर सक्ता हैं, क्योंकी पाचिका नियुक्त करनेमें उनका सामर्थ है, किन्तु मध्यवित्त गृहस्थने अनन्यगति हो पड़ी हैं, सुतरां वह यदि सोच विचारके चले तब उन्होंको प्राचीन रीति अवलम्बन करनाही उचित समझ पड़ेगा।

यहभी कोइ पुछ वैठेंगे कि स्त्री-शिक्षा रहित करना ह क्या उचित है? उत्तर, हमारी वर्त्तमान दशामें इसको उचित समझ पड़ता है। पुरुषमण्डली जब विशुद्ध चरित होंगे, समाज जब संस्कृत होगी, तब स्त्री-शिक्षा प्रयोजनीय करके समझी जागी। हम देख लिया जो अल्प शिक्षा का फल विषमय है। अब जिस रीतिसे उन्होने प्रकृत शिक्षा लाभ करसकें उसकी चेष्टा करना चाहिये, किन्तु यह आशाभी अब कहां हैं। पुरुषगण स्वयं तो सुशिक्षित हुवे, तब ना यह सम्भव होगा। प्रकृत शिक्षा लाभ विना उन्होंकी मनोप्रकृति न वदलेगी। जबतक ज्ञानिके साथ धर्म्म बुद्धि न उपजेगी, जबतक ज्ञान की उन्नति की अपेक्षा आत्माकी उन्नति अधिक वाञ्छनीय करके प्रतीति न होगी, तबतक पुरुषोंने रमणीयोंको क्रीड़ाकी सामग्री कहनेमें संकुचित न होगा, अब जो जो सुशिक्षाका प्रभावसे, विशुद्ध चरित्र औ भगवत परायण होते जावेंगे त्यों त्यों सहधर्म्मिणीयोंकोभी तदानुगामिनी करनेकी विशेष

আমরা ইতিপূর্ব্বে প্রমাণ করিয়াছি যে, স্ত্রীগণ মূর্খা হউন অথবা লেখা পড়া জানুন, তাহাতে পুরুষগণের বিদ্যার উন্নতি সম্বন্ধে কোন অন্তরায় বা বিশেষ আনুকূল্য হইতে পারে না। কিন্তু ইহা অবশ্য স্বীকার করিতে হইবে যে, স্ত্রীগণের ধর্ম্মভাব পুরুষগণের হৃদয়কে অনুরঞ্জিত করিতে পারে। তাহাদিগের আধ্যাত্মিক উন্নতি বিধান করিতে পারে। প্রাচীনকালে আর্য্য ঋষিগণের কি চমৎকার ভাব ছিল! তাঁহাদের মধ্যে স্ত্রী পুরুষ আধ্যাত্মিক প্রেমে বদ্ধ থাকিতেন। একত্রে ঈশ্বরোপাসনা, একত্রে পরোপকার ব্রত ও যাগ যজ্ঞাদি ধর্ম্মকার্য্য সম্পাদন করিতেন। এইজন্যই স্ত্রীর নাম সহধর্ম্মিনী রাখিয়াছিলেন। তৎকালে রমণীগণ কতদূর পর্য্যন্তই না উন্নতি লাভ করিয়াছিলেন! তাহা একবার হৃদয়ঙ্গম করিলে মন আনন্দে নৃত্য করিতে থাকে। সে উচ্চভাব কোন কালে যে আমাদের মধ্যে পুনর্ব্বার দেখা দিবে এমন আশা করা যায় না। কোন কোন আর্য্য-রমণী বেদ জানিতেন, এবং শিষ্যগণকে তাহা পড়াইতেন। তাঁহারা আপনাপন স্বামীর সহিত ধর্ম্মের গূঢ়-তত্ত্ব সকল লইয়া আলোচনা করিতেন। সুলভা নামে একজন রমণী দর্শন শাস্ত্র উত্তম রূপে জানিতেন। ঋগ্বেদীয় স্তোত্র মালায় অত্রিবংশীয় দুইজন আর্য্য নারীর নাম দেখিতে পাওয়া যায়। গার্গী নাম্নী একজন রমণীও জনক রাজার সভায় উপস্থিত হইয়া যাজ্ঞবল্ক্য ঋষির সহিত তর্ক বিতর্ক করিয়াছিলেন। কেনা বলিবেন যে, এমন রমণীরত্ন লাভ পুরুষের পক্ষে সৌভাগ্যের বিষয়। তাই বলি, আমাদের মধ্যে প্রকৃত শিক্ষা প্রণালী প্রবর্ত্তিত হউক। কি স্ত্রী, কি পুরুষ, জ্ঞান শিক্ষার সহিত তাহাদিগকে ধর্ম্ম শিক্ষা প্রদান করিতে হইবে। তাহা হইলে আর কৃতবিদ্য যুবকগণকে পশুর ন্যায় আচরণ করিতে দেখিব না। শিক্ষিতা রমণীকেও বিলাস-প্রিয়া দেখিতে হইবে না। ধর্ম্মজ্ঞানের সহিত যে শিক্ষা তাহাই প্রকৃত শিক্ষা। সেই শিক্ষার অভাবেই আমাদের মধ্যে এত অবনতির কারণ লক্ষিত হইতেছে। যাহাতে সেই শিক্ষা প্রণালী প্রবর্ত্তিত হয়, তৎপক্ষে বিশেষ রূপে যত্নবান হওয়া ভারতের হিতচিকীর্ষু ব্যক্তি মাত্রেরই উচিত। যতদিন পর্য্যন্ত এ প্রকার শিক্ষা প্রণালী প্রবর্ত্তিত না হইতেছে, ততদিন স্ত্রী শিক্ষা রহিত করা

हमने इसका पूर्व्वही प्रमाण कर चुका जो स्त्रीगण मूर्खा हों अथवा विद्यावतीहों उससे पुरुषोंकी विद्योन्नतिके विषयमें कोई बाधा वा विशेष आनुकुल्य न हो सका है। किन्तु यह अवश्यही अंगीकार करने पड़ेगा। कि स्त्रीयोंका धर्म्मभाव पुरुषगणके हृदयको अनुरंञ्जित और उन्होंकी आध्यात्मिक उन्नति विधान कर सक्ती है। प्राचीन कालमें आर्य्य ऋषियोंको कैसा चमत्कारी भाव था! उस समय स्त्री पुरुष आध्यात्मिक प्रेमसे बद्ध रहतेथे, एकट्ठे हुए ईश्वरोपासना, एकट्ठेमें परोपकार व्रत वो याग यज्ञादि धर्म्मकार्य्य किये करते थे। इसही निमित्त स्त्रीका नाम सहधर्म्मिणी रखा गया था! तत्कालमें रमणीगण कहांतक न उन्नतिलाभ करी थी! उस बातोंको एकबार सुमरनेभी मन आनन्दसे नृत्य करता है। वैसा उच्चभाव किसही कालमें जो फिर हमारे मध्यमें आया जायगा, ऐसी आशाही न की जाती है। कोइ कोई आर्य्यरमणी वेद भी जानती थी और शिष्योंको पढ़ाती थी। उन लोगोंने अपना अपना स्वामीके सहित धर्म्मका गूढ़ तत्व आदि विषयोंमें चर्चा की करतीं थी। सुलभा नाम करके एक रमणी दर्शनशास्त्र उत्तम जानती थी। ऋगवेदीय स्तोत्रमालाके मध्यमें दो आर्य्यनारियेका नाम, जोने अत्रि वंशीयथी, देखा जाता हैं। गार्गी नाम्नी रमणीने जनक राजाकी सभामें उपस्थित हो कर याज्ञवल्क्य ऋषिके साथ तर्क वितर्क किताथा। कौन कहेगा जो ऐसी रमणी रत्न लाभ करना पुरुषके भाग्य है। सोई मैं कहता हूं कि हमारे मध्यमे इसभांति प्रकृत शिक्षाप्रणाली प्रवर्त्तित हों। स्त्री होय अथवा पुरुष होय सभीको ज्ञान शिक्षाके सहित धर्म्मनीति सिखाना चाहिये। ऐसा होनेपर हम फिर कृतविद्य युवक गणको पशुके समान आचरण करने न देखेंगे। शिक्षिता रमणीकोभी विलासप्रिय न देखने पड़ेगा। जो शिक्षाके सहित धर्म्मज्ञान मिला रहता हैं उसहीको प्रकृत शिक्षा कही जाती। वही शिक्षाका अभावहीमे हमारे मध्यमे इतनी अवनतिके कारण लक्षित होते हैं! अब भारतके हित चाहनेवारे हरकिसीके यह उचित हैं कि जिस रीतिसे उस भांति शिक्षाप्रणाली प्रवर्त्तित होय तत्पक्षमें विशेष यत्न किया करें। जबतक इस प्रकारकी शिक्षाप्रणाली प्रचलित न

সম্পাদকের ভ্রমণাবশেষ।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

আলীগড় হইতে বরাবর বাড়ষ্টেশনে পৌঁছিয়াছিলাম। তৎপরদিন বাষ্পীয়জলযানে গঙ্গা পার হইয়া ত্রিহুৎ রাজকীয় লৌহবর্ত্মীয়শকটে আরোহণ পূর্ব্বক মোজাফারপুরে উপস্থিত হইলাম। মতিহারী হইতে কোন প্রকার যান আসিয়া ষ্টেশনে থাকিবার সম্ভাবনা ছিল, কিন্তু তাহা দেখিতে পাইলাম না। অগত্যা তথায় স্নানাহারাদি সমাপন পূর্ব্বক একখানি এক্কা ভাড়া করিয়া মতিহারী যাত্রা করিলাম। তথা হইতে মতিহারী ৫২ মাইল পথ। দুই পার্শ্বেই অতীব বিস্তৃত হরিতক্ষেত্র। নীলকরদিগের প্রতাপে তাহাতে অন্য শস্য হইবার প্রায় অবসর নাই। ভূম্যধিকারীগণও অর্থলোভে প্রজাদিগকে শস্যোৎপাদনে বঞ্চিত করিয়াছেন। সহস্র সহস্র বিঘা ভূমি এইরূপে শস্যোৎপাদন বিহীন থাকিলে প্রজাপুঞ্জ দুঃখী হইবে না কেন? এরূপ হতভাগ্য দেশকে পরিত্যাগ করিয়া দুর্ভিক্ষ আর কোন্ প্রদেশকে আশ্রয় করিবে!। মতিহারীর পথ অতীব দুর্গম; মধ্যে মধ্যে দুরাত্মাগণের হস্তে প্রাণ নাশের আশঙ্কা আছে। স্থানে স্থানে নীলকুটী ও সামান্য সামান্য জনপদ দৃষ্টি হয়। আহার সামগ্রী ভদ্র ভোজনোপযোগী কিছুই পাওয়া যায় না। সাধারণ পথিকবর্গের গোযান বা অশ্বযান রাজপথের উপর দিয়া যাইতে পায় না। সর্ব্বদা পথ নষ্ট হইয়া যাইবার আশঙ্কায়, তথায় এইরূপ রাজকীয় আদেশ প্রচারিত আছে। রাজকর্ম্মচারীবর্গের শকটগুলির কেবল রাজপথ দিয়া যাইবার অধিকার আছে। একস্থানে একজন রাজকীয় পথ প্রহরী আমাকে এই আদেশ শুনাইয়া আমাকে নিম্নপথ অবলম্বন পূর্ব্বক যাইতে বলিল, আমি বলিলাম যে আমি রাজ রাজেশ্বরের একজন কর্ম্মচারী, রাজকীয় কার্য্যে (ধর্ম্ম প্রচারার্থ) মতিহারী যাইব তাহাতে সে আর কিছু বলিল না, আমি চলিয়া গেলাম। তৎপরদিন দিবা তৃতীয় প্রহরাবশনে মতিহারীতে পৌঁছিলাম। এই পথটুকু যাইতে আমার যেরূপ ক্লেশ হইয়াছিল, বোধ করি আমার জীবনে কখন সেরূপ হয় নাই মতি-

सम्पादकका भ्रमणावशेष।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

आलीगड़से बराबर बाड़ ष्टेसनमें आ पहुंचा। पर दिन वाष्पीययान (ष्टीमार) पर गङ्गाजीके पार उतरकर त्रिहुत राजकीय लौहमार्ग (रेलवे) की गाड़ी पर आरोहण पूर्व्वक मजाफर पुरमें उपस्थित हुआ। मतिहारीकी सवारी आकर ष्टेसनमें खड़ी रहनेकी सम्भावना थी, परन्तु सो देखनेमें न आयी, सुतरां वहां स्नानाहारादि सम्पादन पूर्व्वक एक्कापर सवार होकर मैं मतिहारीको यात्रा किया। मतिहारी वहांसे ५२ मैल दुर है। दो किनारे अतीव विस्तृत शस्य भूमिसे सुशोभित है। नीलवालेका प्रतापसे वहां दुसरी भांति अनाज उपजनेका अवसर नहीं! भूम्याधिकारीयोंभी धनलोभसे प्रजाओंको शस्योत्पादन करनेमेंसे वञ्चित किये। सहस्र २ बिघा भूमि विन अनाज उपजायी रहने पर प्रजाओं ने दुखी क्यों न होगा? दुर्भिक्ष ऐसा हतभाग्य देशको परित्याग पूर्व्वक फिर कौन देशको आश्रय करेगा, मतिहारी जानेकी मार्ग अतीव दुर्गम है। वीच वीचमें दुरात्माओंके हात प्राण विनाशकी आशङ्का रहती हैं। जगह जगहमें नीलकुठी औ साधारण गावें देखनेमें आती है। आहार सामग्री भद्र-भोजनोपोयोगी कुछ नहीं मीलती। साधारण राहीयोंकी गो-यान वो अश्व-यान राजमार्ग परसे चल नहीं सकी। सर्व्वदा पथ नष्ट होनेका डरसे वहां इसभांति राजकीय आदेश प्रचारित है। केवल राजकर्म्मचारीयोंकी उत्तम उत्तम शकट चलाने की अधिकार दिया गया। एक जगहमें कोई एक राजकीय मार्ग रक्षक मुझको यही आदेश सुनाकर किनारे किनारे जाने कहा, मैंने बोला जो "मैं राजराजेश्वरका कर्म्मचारी हुं, सरकारी काममें (धर्म्म प्रचारार्थ) मैं मतिहारी जाउंगा" इतना सुनकर वह फिर कुछ न बोला, मैं चला गया। अपराह्नमें मतिहारी पहुंचा। इतनी दुर एक्कापर जानेसे मेरा जैसा क्लेश हुआया, जन्म भरमें कभी ऐसा क्लेश न पाया। मतिहारीमें अनेक ब्राह्मप्रकृति

শরচ্চন্দ্র মুখোপাধ্যায় মহাশয় কর্তৃক সাদরে গৃহীত হইয়া তথায় তিন দিবস বাস করিয়াছিলাম। তথায় গিয়া শুনিলাম যে আমার জন্য মজাফরপুরে স্থানীয় উত্তম যান (সাম্পনী) প্রেরিত হইয়াছে অথচ আমার সহিত সাক্ষাৎ হয় নাই দেখিলাম আমার সুখে আগমনের জন্য মানবের ব্যবস্থা কার্য্যকারী হইলনা ঐশী ব্যবস্থার বশবর্ত্তী হইয়া দুঃখকে সুখজ্ঞানে আসিয়া পৌঁছিলাম। জানিলাম, "হরেরিচ্ছা গরিয়সী"।

শ্রীযুক্ত বাবু দরবারিলাল প্রভৃতি তথাকার সম্ভ্রান্ত ব্যক্তিগণ ক্রমে সৎকার ও অভ্যর্থনা করিতে আসিলেন। তথাকার ধর্ম্মোৎসাহিবর্গের অনুরোধে তৎপরদিন "সনাতন আর্য্যধর্ম্মের কলঙ্কমোচন" বিষয়িনী একটী হিন্দী ভাষায় বক্তৃতা করিলাম। এই বক্তৃতায় খৃষ্টীয় ও ব্রাহ্ম সমাজ আর্য্যধর্ম্মের গূঢ় মর্ম্মার্থানবগতিজন্য যে যে কথা ও বিজ্ঞগণের হাস্যোদ্দীপক দোষারোপ করিয়া থাকেন তত্ত্বাবৎযুক্তি, প্রমাণাদিসহ খণ্ডন করা হইল। এই বক্তৃতা শ্রোতৃবৃন্দকে দ্বিতীয় বক্তৃতা শ্রবণার্থ উৎসুক ও উৎসাহযুক্ত করিয়া তুলিল। আমিও স্বীকৃত হইলাম। তৎপর দিন তিন ক্রোশ দূরবর্ত্তী "তুরকুলিয়া" নামক স্থান দর্শনার্থ গমন করিয়াছিলাম। এখানে পল্লীগ্রামের দৃশ্যাতিরিক্ত কিছুই নাই। তথাকার নীলকুঠীর দেওয়ান মান্যবর শ্রীযুক্ত বাবু শ্যামাচরণ ঘোষ মহাশয়ের মিত্রোচিত সৎকারে অনুগৃহীত হইলাম। তিনি অতি উদার, সরলচিত্ত ও জনরঞ্জন। তাঁহার আশ্রয়ে অনেকগুলি লোক আছে। সকলের অনুরোধে তথায় একটী আর্য্যভাবোদ্দীপনী বক্তৃতা করিলাম। শ্যামাচরণ বাবুর ব্যয়ে, যত্নে ও উৎসাহে তথায় একটী নাট্যশালা নির্ম্মিত হইয়াছে। তিনি এই দুঃখ দুর্দ্দিনে ভারতের কল্যাণার্থ সংস্কৃত ভাষার উৎকর্ষ সাধন ও আর্য্যধর্ম্মের পুনরুদ্দীপনা দ্বারা আর্য্যভাব প্রতিষ্ঠা করিবার উদ্দেশে আমাদের প্রস্তাবিত মূলধন এক লক্ষ টাকা সংগ্রহে যত্নবান হইয়াছেন, এজন্য সমস্ত ভারত সমস্বরে তাঁহাকে ধন্যবাদ দান করিবেন তাহাতে সন্দেহ নাই। তৎপর দিন মতিহারীতে প্রত্যাগত হইয়া অপরাহ্নকালে "ভারতের উন্নতি" বিষয়িনী একটী বক্তৃতা করিলাম। বক্তৃতাবসানে শ্রোত-

पाध्याय कर्तृक समादर पूर्ब्बक गृहीत हुए वहां तिन दिवस रहा। वहां यह सुननेमें आया, जा वहांसे मेरे लिये मजाफरपुरमें सम्पनी गाड़ी भेजी गयीथी, परन्तु मुझसे भेट न हुआ। देखा कि मेरा आरामसे आनेके लिये मानव की करी हुई व्यवस्था नकाम हो गयी, ईश्वरकी व्यवस्था वश होते हुए दुःखको सुख मानकर आ पहुंचा। विचार लिया कि "हरेरिच्छागरीयसी"।

श्रीयुक्त बाबु दरबारीलाल साहब आदि वहांके प्रधान प्रधान पुरुषोंने क्रम क्रम करके सत्कार औ सम्बर्द्धना करने आये। वहांके धर्म्मोत्साहीयोंके अनुरोधसे तत् परदिन मैंने भाषामें एक वक्तृता करी जिस्का आशय यह था कि "सनातन आर्य्य धर्म्मका कलङ्क मोचन"। ख्रीष्टीयान औ ब्राह्मसमाजवाले आर्य्यधर्म्मका गूढ़ मर्म्मार्थ बिना जाने तथा औ बिज्ञ जनोंके हास्योद्दीपक जितना दोष लगाते रहते हैं, वह सब युक्ति औ प्रमाणादि सहित इस व्याख्यान करके खण्डन किया गया। यह वक्तृता सुनकर श्रोताओंके इतना उत्साह हुआ कि दुसरी औरभी वक्तृता सुनें। मैंभी स्वीकार किया। तत् परदिन वहांसे तिन कोस "तुरकुलिया" नाम स्थान देखनेको गये। यहां पल्लीग्रामका दृश्यसे अधिक कोइ नवीन पदार्थ नहीं देखा। वहांकी नीलकुठीके देवान मान्यवर श्रीयुक्त बाबु श्यामाचरण घोष महाशयका मित्रोचित सत्कारसे अनुगृहीत हुआ। उनका चरित्र अति उदार, सरल औ जनरञ्जन है। बहुतेरे लोग उनका आश्रयमें रहते हैं। सबके अनुरोधसे मैंने वहां एक आर्य्यभावोद्दीपनी वक्तृता करी। श्यामाचरण बाबुके व्यय, यत्न औ उत्साहसे वहां एक नाट्यशाला बनी। इस दुःख दुर्द्दिनमें भारतभूमिका कल्याणार्थ संस्कृत भाषाका उत्कर्ष साधन औ आर्य्यधर्म्मकी पुनरुद्दीपना करके आर्य्यभावकी प्रतिष्ठा करनेके लिये जो हम एक प्रस्ताव छेड़ा हैं यदर्थ एक लक्ष रुपये संग्रह होना चाहिये, उक्त बाबु अब तन्निमित्त अर्थ संग्रहमें यत्न कर रहे हैं; इस हेतु सारे भारतभूमि उनको उच्चो स्वरसे निःसन्देह धन्यवाद देते रहेंगे। तत् परदिन फिर मतिहारीमें लौटकर अपराह्न समय "भारतकी उन्नति" इस आशयपर मैंने एक वक्तृता करी। वक्तृताकी अन्तमें श्रोताओंने अत्यन्त सन्तोष प्रकाश किया औ बाबु दरबारीलालने वक्तृताकी पोषकता

বারিলাল বাবু বক্তৃতার পোষকতা করিয়া ধন্যবাদাদি দিলেন। তাঁহারা আমাদিগের কার্য্যের বিশেষ সহানুভূতি প্রকাশ করিয়া অনেকেই সেই স্থানেই "ধর্ম্মপ্রচারকের" গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হইলেন ও "ধর্ম্মপ্রচারার্থ" ধনদানে স্বীকার করিলেন। অবশেষে দরবারিলাল বাবু অর্থ ও নূতন বস্ত্রাদি দ্বারা আমার সৎকার করিলেন। এই উত্তেজনার পর তথায় "মতিহারী, আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী" নাম্নী একটী সভা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। পাঠকগণ শুনিয়া অবশ্যই সন্তুষ্ট হইবেন, যে উক্ত সভার কার্য্য এ পর্য্যন্ত উত্তমরূপে নির্ব্বাহ হইতেছে, ও সভার যত্নে কতকগুলি বালক সংস্কৃত শিক্ষা করিতেছে। তথা হইতে প্রত্যাগমনকালে বারা, মতিপুর ও কাঁটী হইয়া মজাফারপুরে উপস্থিত হইলাম। মজাফারপুরে মুন্সেফ সাধুহৃদয় শ্রীযুক্ত বাবু দ্বারকানাথ ভট্টাচার্য্য মহাশয়ের অনুরোধে তথায় একদিন অবস্থিতি করিয়া ভগবৎ কৃপায় নির্ব্বিঘ্নে মুঙ্গের আসিয়া পৌঁছিলাম।

"ভগলপুর হইতে আমাদিগের কএকজন বন্ধু লিখিয়াছেন"—ঊনবিংশ শতাব্দীর শেষাবস্থায় প্রাচীন আর্য্যধর্ম্ম পুনঃ প্রচার হইতে আরম্ভ হইয়াছে দেখিয়া আমাদের আহ্লাদের আর পরিসীমা নাই। ভারতের পশ্চিম প্রান্ত হইতে পূর্ব্ব প্রান্ত পর্য্যন্ত ভারতীয় প্রাচীন ধর্ম্মগান এক তন্ত্রে গীত হইতেছে। বোধ হইতেছে যে, ভারতের সুপ্রভাত সন্নিকট। আর্য্যধর্ম্মের মাসিক পত্র নিয়মিত বাহির হইতেছে; স্থানে স্থানে ধর্ম্মসভা সংস্থাপিত হইতেছে, পশ্চিম দেশবাসী, বেহারবাসী, বাঙ্গালী আজি এক তন্ত্রে ও উৎসাহে পরস্পরে মিলিত হইতেছে। সনাতন আর্য্যধর্ম্ম প্রচার জন্য অর্থ সংগ্রহ হইতেছে। ধর্ম্ম একতা বন্ধনের মুখ্য উপায় বলিয়া যাঁহাদের বিশ্বাস, না জানি তাঁহাদের মনে কতই সুখের আশা বলবতী হইতেছে।

সম্পাদক মহাশয়! বিগত গ্রীষ্মকালে আপনি এখানে আগমন করিয়া এখানকার রাজকীয় ইংরাজি বিদ্যালয়ে হিন্দী ভাষায় ভারতের ধর্ম্ম রক্ষা বিষয়িনী একটী বক্তৃতা করেন তাহা বোধ হয় আপনার স্মরণ থাকিবে। বক্তৃতা শ্রবনান্তে অত্যন্ত আনন্দিত ও উৎসাহিত হইয়া বেহারবাসী শ্রোতৃবর্গ [illegible] ভাগলপুরে একটা ধর্ম্মসভা সংস্থাপন করিবার ইচ্ছা করেন। অতঃপর এ বিদ্যালয়ের

विशेष सहानुभूति देखाकर बहुतेरे महाशय उसही स्थानमें "धर्म्म प्रचारक" के ग्राहक हुए औ "धर्म्म प्रचारार्थ" अर्थ दान करनेमें स्वीकृत हुए। अन्तमें दरवारीलाल बाबूने अर्थ औ नवीन वस्त्रादिसे मेरा विदाय-सत्कार किया। इसकी उत्तेजनाके आगे वहां "मतिहारी आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा" नाम एक धर्म्मसभा स्थापित हुई है। पाठकगण इतना सुनकर अवश्यही सन्तुष्ट होंगे कि उक्त सभाका कार्य्य अवतक उत्तम रीतिसे निर्व्वाह होता जाता है औ सभाका प्रयत्न करके कितने विद्यार्थी संस्कृत भाषा सिख रहे हैं। मतिहारीसे लौटते समय बारा, मतिपुर औ कांठी होते हुए मजाफारपुरमें आ पहुंचा। वहांके मुन्सेफ साधुहृदय श्रीयुक्त बाबु द्वारकानाथ भट्टाचार्य्य महाशयका अनुरोधसे वहां एक दिन विश्राम कर भगवत्कृपासे आनन्द पूर्व्वक मुङ्गेरमें आ पहुंचा।

भगलपुरसे हमारे एक मित्रने लिखा है "शताब्दी उनवीसकी अन्त अवस्थामें आर्य्यधर्म्मका पुनः प्रचार होना आरम्भ हुआ देखके हमारी आनन्दकी कुछ सीमा न रही। भारतवर्षकी पश्चिम प्रान्तसे लेकर पूर्ब्बप्रान्ततकमें भारतीय प्राचीन धर्म्म गाथा समान स्वर मिलाये गाई जाती है। ऐसा बोध होता है कि भारतकी सुप्रभात अति निकट हुआ है। आर्य्यधर्म्मका मासिक पत्र नियमित प्रकाश हो रहा है। स्थान स्थानमें धर्म्मसभा बनती जाती है, पश्चिमोत्तर देशवासी, बेहारी औ बङ्गदेशी आज एक तन्त्र वो उत्साहसे परस्पर मिल रहे हैं; सनातन आर्य्यधर्म्म पुनः प्रचारार्थ धन एकट्ठा हो रहा है जिन्होंके यह विश्वास हैं कि धर्म्मही मनुष्योंकी एकता बन्धनका प्रधान उपाय है, न जाने उन्होंके मनमें कितना सुखकी आशा बलवती होती होगी!

सम्पादक महाशय! आपने जो विगत ग्रीष्मकाल में यहां आ कर यहांके राजकीय अंग्रेजी विद्यालयमें एक वक्तृता करीथी, जिसका आशय यह था कि "भारतवर्षीय धर्म्मरक्षा" सो आपका स्मरण रहा होगा। आपकी वक्तृता सुनकर यहांके बेहारी श्रोताओंने अत्यन्त आनन्दित औ उत्साहित हुए धर्म्मसभा स्थापनकी इच्छा करी। जिसके बाद उक्त विद्यालयके द्वितीय शिक्षक [illegible]

শুয়ের প্রযত্নে ছটকটী তলাও নামক স্থানে একটী সভা হইয়াছে। প্রথমতঃ বৃক্ষতলেই সভার (১) সংস্থাপন হয়। পরে সভ্যগণের উৎসাহে ও যত্নে একটী সভাগৃহ নির্ম্মিত হইয়াছে। উহার নাম আপনাদিগের মুঙ্গেরের সভার নামানুসারে "ভাগলপুর আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভা" রক্ষিত হইয়াছে। প্রতি রবিবার অপরাহ্নে ভক্তি শাস্ত্রাদি পাঠ হইয়া থাকে। অবকাশাভাবে আমি সকল সভায় উপস্থিত হইতে পারিনা। মধ্যে একদিন গিয়া সভার কার্য্য বিবরণ দেখিয়া যার পর নাই প্রীতি লাভ করিয়াছি আমি যেদিন তথায় গমন করিয়াছিলাম, দেখিলাম সভার কার্য্য শেষ হইবার পর সভারই ব্যয়ে কতকগুলি সন্ন্যাসীকে পরিতোষ পূর্ব্বক আহার করান হইল। উপরোক্ত পণ্ডিত মহাশয় ও সভার অপরাপর কতকগুলি সভ্যদিগের সহিত আমার কথোপকথন হইল। তাঁহাদের নিতান্ত ইচ্ছা যে মহাশয় মধ্যে মধ্যে এখানে আগমন করিয়া বক্তৃতাদি করেন। আপনার প্রতি ইহাঁদের বিশেষ শ্রদ্ধা ও বিশ্বাস দেখিলাম সুতরাং সময়ে সময়ে আপনার আগমন (২) হইলে উক্ত সভার বিশেষ উপকার হইবার সম্ভাবনা তাহা লেখা বাহুল্য মাত্র।"

ভারতীয় গ্রন্থাবলী। ১ম খণ্ড।

(সমালোচনা)

অনেক দিন হইল এই পুস্তক খানি সমালোচনার্থ আমাদের হস্তগত হইয়াছে। যথা সময়ে সমালোচনা করিতে না পারিয়া গ্রন্থকারের নিকটে লজ্জিত আছি। গ্রন্থখানি শ্রীযুক্ত বাবু রাজেন্দ্র নাথ দত্ত প্রণীত কলিকাতা সোমপ্রকাশ যন্ত্রে উত্তম কাগজে ও উত্তম অক্ষরে মুদ্রিত, মূল্য ১, টাকা মাত্র। ইহাতে প্রাচীন ভারতবর্ষের গ্রন্থাবলীর

(১) আর্য্য ঋষিদিগের ধর্ম্ম প্রথমতঃ গিরিগুহা, নদীতট, ও বৃক্ষতল হইতেই বাখ্যাত ও বিস্তৃত হইয়াছিল।

ধঃ প্রঃ সং

(২) মধ্যে মধ্যে বিদেশীয় আর্য্যধর্ম্মোৎসাহী মহাত্মাগণের সমাগম লাভ করা আমার একান্ত ইচ্ছা। অন্যান্য অনেক দূরদেশ হইতে ও এইরূপ আজ্ঞা পত্রাদি প্রাপ্ত হই। ঈশ্বর কৃপায় ধর্ম্মপ্রচার কার্য্য আরম্ভ হইলেই আমরা মহাত্মা গণের অনুরোধ সম্যক রক্ষা করিতে পারিব।

लाव" पर एक सभा स्थापित हुई है। सभाका कार्य्य प्रथम प्रथम एक वृक्षकी छायामें हुआ करता था(१)।

इसका अनन्तर सभ्योंके उत्साह औ यत्न करते यह एक सभागृह बनी है। मुंगेरमें जो आपलोगोंकी सभा है उसहीका नामानुसार इस सभाका नाम "भागलपुर आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा" रक्खा गया। हर रविवार अपराह्णमें यहां भक्ति शास्त्रादिका व्याख्यान हुआ करता है। अवकाश कम रहने पर मैं हर रविवार सभामें उपस्थित न हो सका हूं। थोड़े ही दिन बीता मैं एक दिन सभाका कार्य्य विवरण देखके परम प्रीत हो आया। जिस दिन मैं वहां गयाथा, देखा कि सभा विसर्ज्जन होनेपर सभाका व्ययसे कितने साधु सन्यासीको भरपेट मिष्टान्न भोजन कराया गया। उपरोक्त पण्डित महाशय औ कितने सभ्योंके साथ मेरी बहुत बातचित हुई। उन्होंकी एकान्त इच्छा यह है जो आप बीच बीचमें यहां आगमन पूर्वक व्याख्यानादि दिया करें। मैं देखा कि वह लोग आपपर बड़ाही विश्वास वो श्रद्धा रखते हैं। सुतरां बीच बीचमें आपका शुभागमनसे (२) उक्त सभाका विशेष उपकार होनेको सम्भावना है, सो लिखनाही बाहुल्य मात्र।

प्राप्त पुस्तककी समालोचना।

भारतीय ग्रन्थावली। १म खण्ड।

बहुत दिनोंसे यह पुस्तक समालोचनार्थ मेरे पास धरा हुआ है। यथासमय पर जो मैं समालोचना न कर सका इसलिये ग्रन्थकारके निकट बड़ा लज्जित हूं। श्रीयुक्त बाबु राजेन्द्रनाथ दत्त महाशयने इस ग्रन्थ बनाया। कलकत्ता सोमप्रकाश यन्त्रमें उत्तम पत्रपर बंगाक्षरमें मुद्रित हुआ; मूल्य १, मात्र है। इसमें "प्राचीन भारतवर्षीय ग्रन्थावली

(१) आर्य्य ऋषियोंके धर्म्म पहले पर्व्वत-गुहा नदी-किनारे, तरुतल आदि पवित्र स्थानहीमें अंकुरित होकर चारोंओर फैलाया।

ध:, प्र:, सं,

(२) बीच बीचमें देशदेशान्तरीय आर्य्यधर्म्मोत्साही महात्माओंके समागम-सुखलाभ करना मेरीभी एकान्त इच्छा है। अन्यान्य अनेक दूरदेशसेभी इस भांति आदेश पत्र पाया जाता है। नारायणकी कृपासे "धर्म्मप्रचार" कार्य्य आरम्भ होनेहीसे पर हम हम महात्माओंके अनुरोध सम्यक् रीतिसे रक्षा कर सकेंगे।

ध: प्र: सं।

বিবরণ, তাহাদের কাল নির্ণয় ও সংক্ষিপ্ত সমালোচনা প্রকাশিত হইয়াছে।

এই গ্রন্থখানি আদ্যোপান্ত পাঠ করিলে লেখকের অধ্যবসায়, যত্ন, পরিশ্রম ও বহুদর্শীতার প্রশংসা না করিয়া থাকা যায় না, পুস্তকের উপক্রমণিকা ৪৭ পৃষ্ঠায় সমাপ্ত হইয়াছে। তৎপরে গীতগোবিন্দ ও কৃষ্ণ প্রেমসাগর, কাদম্বরী, হর্ষচরিত, চণ্ডিকা শতক, রামায়ণ, মহাভারত, পাতঞ্জল, মহাভাষ্য, ভোজচম্পু, নীতিরত্ন; বৈরাগ্য শতকাদি কতিপয় সংস্কৃত গ্রন্থ সমালোচিত হইয়াছে। গ্রন্থকারের গ্রন্থাবলীর সমালোচনা পাঠে সংস্কৃতবিৎ শাস্ত্ররহস্য-রস-প্রবীণ পণ্ডিত পুঞ্জ যে পারিতোষ প্রাপ্ত হইয়াছেন এরূপ বোধ হয় না। সমালোচনার সংক্ষিপ্ততা বশতঃই হউক অথবা অন্যান্য গুরুতর কারণেই হউক সমালোচিত গ্রন্থগুলির মাধুর্য্য, লালিত্য, ভাব ও রসাদিরূপ অমৃতের সৌরভ যথাযোগ্যভাবে বিস্তারিত হয় নাই। সংস্কৃত গ্রন্থের সমালোচনা করিতে হইলে বরং সংস্কৃতভাষায় কবি, অতীব চিন্তাশীল ও মহাপণ্ডিত হওয়া আবশ্যক। বর্ত্তমান ভারতে তাদৃশ পুরুষ অতি বিরল, এজন্য ভারত হিতৈষি সংস্কৃত গ্রন্থ সমালোচক বৃন্দ যথেষ্ট চেষ্টা করিয়াও আমাদিগের মনোভিলাষ পূর্ণ করিতে পারিতেছেন না কিন্তু তাঁহাদিগের সাধু চেষ্টাকে আমরা শতবার ধন্যবাদ দিতেছি। ভারতীয় গ্রন্থাবলীর সমালোচনা কালে লেখক গ্রন্থ ও তৎপ্রণেতৃবর্গের সময়াদি নিরূপন জন্য ইউরোপীয় পণ্ডিত পুঞ্জের সাহায্য লইতে বাধ্য হইয়াছেন। ভারতবর্ষের ঐতিহাসিক বিবরণের বিশৃঙ্খলা জন্যই গ্রন্থকার ভারতের কথা জিজ্ঞাসা করিবার নিমিত্ত ভারত ত্যাগ করিয়া ইউরোপে গমন করিয়াছেন। উপক্রমণিকা ভাগ লিখিবার সময়েও তিনি পরকীয় সাহায্য না লইয়া কৃতকার্য্য হইতে পারেন নাই। যাহা হউক গ্রন্থকার মহাশয়ের মহাযত্ন প্রস্তুত পুস্তকখানি যে ভারতের সমাদরের ধন হইয়াছে তাহাতে সন্দেহ নাই, কেন না এতৎ পাঠে ভারতের অনেক পুরাতন তত্ত্বের বিষয় বিদিত হওয়া যায়; এতাবৎ বিবিধ গ্রন্থ হইতে সংগৃহীত হইলেও বিবিধ মহামূল্য বিষয়ের একত্র সমাবেশ প্রায় সর্ব্বত্র দেখিতে পাওয়া যায় না। [illegible]

का विवरण, उस सबोंका काल निरूपण औ संक्षिप्त समालोचन लिखे गये हैं।

इस ग्रन्थका आदिसे लेकर अन्ततक पाठ करने पर लेखकका अध्यवसाय, यत्न, परिश्रम औ बहुदर्शिताकी प्रशंसा किया विना रहा नहीं जाता है। पुस्तककी उपक्रमणिका ४७ पत्रमें समाप्त हुई। तिसके आगे गीतगोविन्द औ कृष्णप्रेम-सागर, कादम्बरी, हर्षचरित, चण्डिकाशतक, रामायण, महाभारत, पातञ्जल महाभाष्य, भोजचम्पू, नीतिरत्न, बैराग्यशतक आदि कैएक संस्कृत ग्रन्थकी समालोचना करी गयी। ग्रन्थकारने जो ग्रन्थावलीकी समालोचना करी है, सो पठनानन्तर संस्कृतवित् शास्त्ररहस्य-रस प्रवीण पण्डितपुंज जो परितोष प्राप्त हुए होंगे ऐसा बोध नहीं होता है। चाहे समालोचनाकी संक्षिप्तता करके होय अथवा अन्यान्य गुरुतर हेतुही करके होय समालोचित ग्रन्थोंके माधुर्य्य, लालित्य, भाव वो रसादि रूप अमृतका सुगन्ध यथायोग्य रीतिसे विस्तारित नहीं हुआ। संस्कृत ग्रन्थकी समालोचना करनेमें प्रवृत्त होनेपर स्वयं संस्कृत भाषामें कवि, अतीव चिन्ताशील वो महापण्डित होना चाहिये। वर्त्तमान भारतवर्षमें तादृश पुरुष अति विरल है, इसलिये भारत-हितार्थी संस्कृत ग्रन्थ समालोचक मण्डली यथेष्ट चेष्टा करके भी हमारा मनोभिलाष पुराने नही सके हैं, परन्तु उन्होंकी जो साधु चेष्टा है, तन्निमित्त हम शतवार धन्यवाद देते है। भारतीय ग्रन्थावलीकी समालोचनके समय लेखकने ग्रन्थ वो उसका रचनेहार वृन्दके समय आदि निरूपणके निमित्त युरोपीय पण्डित पुञ्जकी सहायता लेना अंगीकार किया। भारतवर्षके ऐतिहासिक विवरणकी विशृंखलाके लिये ग्रन्थकारने भारतकी बातें जिज्ञासार्थ भारत-छोड़कर युरोपमें चला गया। उपक्रमणिका भाग लिखनेके समयभी लेखकने परकीय सहाय्य विना कृतकार्य्य न हो सका। जोहो, ग्रन्थकार महाशयका महा यत्नसे प्रकाश किया हुआ पुस्तक जो भारतका समादर का धन है तिसमें सन्देह नहीं, क्योंकि इस पुस्तक पठनसे भारतके अनेक प्राचीन तत्व विदित हुआ जाता है। एतावत बिबिध ग्रन्थोसे संगृहीत हुआ है, किन्तु इसभांति बिबिध महामूल्य बिषयका [illegible]

পাইবার সম্পূর্ণ উপযুক্ত তাহার আর সন্দেহ নাই। তিনি ক্রমে ক্রমে আরও সমালোচনা প্রকাশ করিবেন বিদিত হইয়া আমরা পরম সুখী হইলাম। ১ম খণ্ড অপেক্ষা ২য় খণ্ড আমাদিগের আশানুরূপ অধিকতর ফলদান করিয়া সুখী করিবে, ঈশ্বরের নিকট ইহার একান্ত প্রার্থনা রহিল। ভারত গৌরব প্রার্থী পাঠক মহোদয় গণের পাঠার্থ উপক্রমণিকা ভাগ হইতে নিম্নে কিয়দংশ উদ্ধৃত করিলাম।

অদ্য উনবিংশ শতাব্দীতে মহাত্মা উইলিয়াম জেমস্ গর্ব্ব সহকারে যে সাহিত্যকে গ্রীক হইতে সুসম্পাদিত, লাটীন হইতে বিস্তৃত এবং অন্যান্য সকল ভাষা হইতে সুমিষ্ট বলিয়া গিয়াছেন, সেই মনোহর সাহিত্যশাস্ত্র এই ভারতবর্ষ বহুকাল পূর্ব্বে প্রসব করিয়াছেন; অধুনাতন বিজ্ঞানবিৎ মহৎপ্রতীচ্য পণ্ডিতগণ সতত মস্তিষ্ক আলোড়ন করিয়া যে সমুদয় বিজ্ঞান সূত্রআবিষ্কার করিতেছেন, অন্বেষণ করিলে সেই সমস্ত বা তদনুরূপ আবিষ্ক্রিয়া পর্ণ কুটীরে অবস্থান করিয়া ফলমূল ভোজী ভারতীয় মহর্ষিগণ বহুকাল পূর্ব্বে করিয়া গিয়াছেন। মেলিয়া, ভেলটিয়া প্রভৃতি প্রতীচ্য রাজনৈতিকগণ যে সকল নীতি অস্পষ্টস্বরে ইউরোপীয় রাজ সভায় বিবৃত করেন এবং যাহা অধুনাতন প্রায় সমস্ত ইউরোপীয় রাজনীতির ভিত্তি স্বরূপ হইয়াছে' সেই সমস্ত কথা অতি বিশদ রূপে বহুদিন পূর্ব্বে কুরু মন্ত্রি কণিক উক্ত করিয়া গিয়াছেন এইরূপ যাবতীয় বিষয় ধৈর্য্যসহকারে পুঙ্খানু পুঙ্খরূপে অনুসন্ধান করিলে স্পষ্টই দেখা যায়, এক্ষণে যে সমস্ত একটী প্রতীচ্য মেধাবী লোকের নবপ্রসূত বলা হয়, তাহা অন্য সকলের পক্ষে নূতন হইলেও ভারতের পক্ষে কদাপি নূতন নহে; ইহা বহুকালপূর্ব্বে প্রাচ্য ভারতীয়গণ গ্রন্থমধ্যে সন্নিবেশিত করিয়া গিয়াছেন।

"ভারতের মহিমা নিবিড় তমসাচ্ছন্ন। ভারত ভূমি মানব সমাজের কি কি মহান উপকার সাধন করিয়াছেন, ভারত সন্তানেরাও ভাবিয়া দেখেন কিনা সন্দেহ। আমরা জানি যে বর্ত্তমান সুসভ্য ইউরোপায় জাতিগণ য়িহুদী দেশ হইতে ধর্ম্ম, রোমের নিকট হইতে ব্যবস্থা ও রাজনীতি এবং গ্রীশের নিকট হইতে বিজ্ঞান, সাহিত্য, ইতিহাস দর্শন, ও শিল্প প্রাপ্ত হইয়াছেন। কিন্তু বোধ করি অনেকেই জানেনা যে এই সকল জাতি প্রাচীন

साह पानेका सम्पूर्ण योग्य हैं, तिसमें सन्देह नहीं। उन्होंने क्रम क्रमसे औरभी समालोचना प्रकाश करेंगी इतना विदित होकर हम परम सुखी हुए। ईश्वर के निकट हमारी यही प्रार्थना रही कि द्वितीय खण्ड प्रथम खण्डकी अपेक्षा हमारी आशाके अनुसार अधिक फल देगी। इस ग्रन्थकी उपक्रमणिका भागसे कियदंश नीचे प्रकाश किया जाता है, जोने हमारे भारतके गौरव चाहनेहारे पाठक महोदयगण पाठ करेंगे।

"जिस साहित्यको ऊनवीश शताब्दीमें महात्मा सरविलिम जोनस ग्रीकसे सुसम्पादित, लाटिनसे विस्तृत औ अन्यान्य भाषाओंसे सुमधुर कहगये, भारतवर्षे वही मनोहर साहित्य शास्त्रको बहुकाल पूर्व्वही प्रसव करी हैं, वर्त्तमान कालके विज्ञानवित महत प्रतीच्य पण्डितगण सर्व्वदा मस्तिष्क आलोड़न कर जितना विज्ञानसूत्र आविष्कार कर रहे हैं, अन्वेषण करने पर तत् समस्त अथवा तत् समान आविष्क्रिया पाई जाती हैं जितना के फल मूल भोजन करनेहारे भारतवर्षीय महर्षिगण पर्णकुटिरमें विराजते हुये बहुकाल पूर्व्वही कर गये हैं। मेलियावेकी, वालटियर, प्रभृति प्रतीच्य राजनैतिक पण्डितगण जितनी नीति युरोपकी राजसभामे विवृत किया औ जिन सबको अधुनातन प्राय समस्त युरोप राजनीतिकी भित्ति करके मानली गई वह समस्त बातें बहु दिन पूर्व्वही हमारे कुरुकुलमन्त्री कणिक विस्तार करके कहगये हैं इस रीतिसे हरेक विषय धैर्य्य सहित पुंखानुपुंख रूपसे अनुसन्धान करने पर स्पष्टही देखा जाता है कि आजकाल युरूपके कोइ मेधावी पुरुष जिस बातको नयी करके प्रकाश करते हैं वह अन्यके लिये नूतन हो सकी, किन्तु भारतके लिये कदापि नूतन नहीं; क्योंकि बहुकाल पूर्व्व ही भारतवर्ष वासीने उस बात को ग्रन्थमें प्रकट कर गये।

पर्णकुटिरमें विराजते हुये बहुकाल पूर्व्व ही कर गये हैं। मेलियावेली, वालटियर प्रभृति प्रतीच्य राजनैतिक पण्डितगण जितनी नीति युरोपकी राजसभामे विवृत किये औ राजन सबको अधुनातन प्राय समस्त युरोप राजनीतिकी भित्तकरके मान ली गई, वह समस्त बातें बहुदिन पूर्व्वही हमारे कुरुमन्त्री कणिक बिस्तार करके कहगाये हैं। इस रीतिसे हरेक बिषय धैर्य्य सहित पुंखानुपुंख रूपसे अनुसंधान करने परस्पर ही देखा जाता है, कि आजकाल युरोपके कोई मेधावी पुरुष जिस बातको नयी करके प्रकाश करते है वह अन्यके लिये नूतन हो सकता किन्तु भारतका लिये कदापि नूतन नहीं: क्योंकि बहुकाल पूर्व्वही भारतवर्षवासीगण उस बातको ग्रन्थमें लिख गये।

"भारतवर्षकी महिमा निबिड़तमसाच्छन्न हैं। भारतभूमीने मनुष्य समाजका क्या क्या महान उप-

আর্য্য বংশোদ্ভব হিন্দুগুরুর শিষ্য, সাহিত্য, সংগীত, বিজ্ঞান, দর্শন, জ্যোতিষ, সকল শাস্ত্রই ভারতভূমি হইতে প্রথম জন্মগ্রহণ করিয়া ভারতবাসী হিন্দুদিগের চরণসেবা করত অন্যান্য দেশে বিস্তৃত হইয়া পড়ে। যখন পাণ্ডিত্যাভিমানী গ্রীস ও রোম অতল-জলধি-তলশায়ী ছিল, যখন সমুদায় জগদ্বাসী অজ্ঞানে সমাচ্ছন্ন ছিল, তখন হিন্দুগণের গণিত, দর্শন, ন্যায়, ইতিহাস, সাহিত্য, সংগীত চিকিৎসা, বানিজ্য, শিল্প, রাজনীতি, দণ্ডনীতি, বিজ্ঞান, জ্যোতিষ, এবং বার্ত্তা ও শব্দ শাস্ত্র আপনাদের উন্নতির পরাকাষ্ঠা দর্শন করিয়া এবং অপর জাতি সমূহের অসভ্যাবস্থা অবলোকন করিয়া উচ্চৈস্বরে হাসিতেছিল। যতদিন চন্দ্র, সূর্য্য বিরাজিত থাকিবে, যতদিন পৃথিবীতে বিদ্যার মোহিনী মূর্ত্তি জীবিত থাকিবে, যতদিন সত্যের অপলাপ করিতে কেহই সমর্থ হইবেনা ততদিন আমাদের পিতৃপুরুষদিগের অক্ষয় কীর্ত্তি এবং যশোরাশি ভূরি পরিমাণে অহরহ জগতীতলে ঘোষিত হইতে থাকিবে। একজন ফরাসী পণ্ডিত বলিয়াছেন যে ভারতবর্ষ মনুষ্যজাতির প্রথম প্রধান আবাস স্থান। যে গ্রীসের সুখ্যাতি ইউরোপীয় পণ্ডিতদিগের মুখে ধরেনা সেই গ্রীশ ভারতবর্ষের ছায়া মাত্র। গ্রীকেরা যাহা কিছু শিখিয়াছেন তন্নিমিত্ত তাঁহারা ভারতবর্ষের নিকট ঋণী ছিলেন। সক্রেটিস প্রভৃতি তত্ত্ববিৎগণ ভারত বর্ষীয়দিগের গ্রন্থ পাঠ করিয়া যাহা কিছু করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন; পৃথিবীর সৃজন অবধি ধর্ম্ম ও অন্যান্য বিষয় সম্বন্ধে যাহা কিছু লিখিত হইয়াছে, তাহার আদি স্থান ভারতবর্ষ। পৃথিবীর মধ্যে বাস্তবিক একটী মাত্র ভাষা রহিয়াছে, সেটী সংস্কৃত, আর যাবতীয় ভাষা সংস্কৃত হইতে উৎপন্ন হইয়াছে। হিন্দুগণ পৃথিবীর আদিম জাতি, আর সকলে তাঁহাদের শাখা মাত্র। ইউরোপে যত অধিক সংস্কৃতের অনুশীলন হইতেছে; ততই পণ্ডিতেরা হিন্দুদিগকে সম্মান করিতেছেন। একজন জর্ম্মণীয় পণ্ডিত বলিয়াছেন যে হিন্দু ধর্ম্মের ন্যায় উৎকৃষ্ট ধর্ম্ম আর নাই। আর সকল ধর্ম্ম তাহার নকল মাত্র। তিনি বলিয়াছেন যে ব্রাহ্মণ-

कार साधन किया है, उस बात पर मात संताप भी ध्यान देता है या नहीं सो भी सन्देह स्थल है। हमारे पास यह प्रगट है कि वर्त्तमान सुसभ्य युरोप जातिगणने यहूदी देशसे धर्म्म रोमके निकटसे व्यवस्था वो राजनीति और ग्रीसके निकटसे विज्ञान साहित्य इतिहास दर्शन वो शिल्प सीखे हैं किन्तु बोध होता है बहुतेरे मनुष्य यही विदित नहीं कि यह सब जाति प्राचीन आर्य्य कुलके हिन्दू गुरुके शिष्यो थे। साहित्य, संगीत, बिज्ञान, दर्शन ज्योतिष आदि जितना शास्त्र हैं सब ही भारतभूमीसे प्रथम जन्मग्रहणकर भारतवासी आर्य्यलोगोंके चरणसे वा पूर्व्वक अन्यान्य देशमें बिस्तार हुये जिस दिनमें पाण्डित्याभिमानी ग्रीसे और रोम अतल-जलधीतलशायी थे. जिस दिन सारी जगतवासी अज्ञान तम साच्छन्न थे, उन दिनोंमें हिन्दूगण गणित, दर्शन, न्याय, इतिहास, साहित्य, संगीत, चिकित्सा, वाणिज्य, शिल्प, राजनीति, दण्डनीति, बिज्ञान, ज्योतिष और वार्त्ति वो शब्दशास्त्र अपनोंकी अपनी उन्नतिकी पराकाष्ठा दर्शनकर वो और और जातियोंकी असभ्यवस्था अवलोकन करके उंची स्वरसे हंसती हैं। जितना दिन चन्द्र सूर्य्य बने रहेंगे जितना दिन पृथिवी पर विद्याकी मोहनी मूर्ति जीवित रहेंगी, जितना दिन सत्यका अपलाप करनेमें कोई समर्थ न होगा उतना दिनतक हमारे पितृपुरुषोंकी अक्षय कीर्ति और यशोराशी भूर परिमाणसे दिन पर दिन संसारमें विज्ञोपित होती रहेगी। एक जन फरासी पण्डित ने कहा हैं, जो भारतवर्ष मनुष्य जातिका प्रथम प्रधान निवासके स्थान है। जिस ग्रीस देश की सुनाम युरोपीय पण्डितगण सर्व्वदा किया करते हैं, वही ग्रीस भारतवर्ष की छाया भाव हैं। ग्रीक मण्डलीने जो कुछ सीखा, तन्निमित उन लोग भारतबर्षके निकट ऋणी थे। सक्रटीस प्रभृति तत्त्वज्ञ गंने जो कुछ करनेमें समर्थ हुया था, सो भारतवर्षके ग्रन्थ पठनसे हुआ; पृथिवी के सृष्टिकाल से धर्म्म वो अन्यान्य विषय जो कुछ जहां कहीं लिखित है, भारतवर्षको उसका आदिस्थान जानना। पृथिवीके मध्यमें वास्तविक एक मूल भाषा है. उसका नाम संस्कृत; और यावतीय भाषा संस्कृत से उत्पन्न हुई हैं। आर्य्यगणने पृथिवीके आदिम जाति था, और सब कोई उनकों शाखा मात्र। युरोपमें जितना अधिक संस्कृतकी चरचा बढ़ती जाती है, उतनाही पण्डितगण हिन्दुओंकी मर्य्यादा भटति जाते है। एक जन जर्म्मान देशीय पण्डितने कहा है जो आर्य्य धर्म्मके समान उत्तम धर्म्म और नहीं है, अन्यान्य धर्म्म उसका नकल मात्र। उन्होंने और भी कहा है जो ब्राह्मणके निकट पृथिव

" এক এব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেহপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমং নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥'

৩ য় ভাগ। | শকাব্দা ১৮০২।
৩৭ সংখ্যা। | কার্ত্তিক পূর্ণিমা।

রাম গীতা।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

আদৌচ মধ্যেচ তথৈবচান্ততো
ভবং বিদিত্বা ভয় শোক কারণং।
হিত্বা সমস্তং বিধিবাদচোদিতং
ভজেৎ স্বমাত্মান মথাখিলাত্মনাং ॥ ৫৫ ॥

জীবন্মুক্ত পুরুষ সংসারকে আদি, অন্ত ও মধ্যে সর্ব্বপ্রকার ভয়শোকের হেতু জানিয়া বিধি বোধিত সমস্ত কর্ম্ম-মার্গকে পরিত্যাগ পূর্ব্বক অখিল জীবের স্বরূপ ভূত আমাকে নিজ স্বরূপ সত্বাসহ অমোদ বোধে চিন্তা করিয়া থাকেন।

এই পরিদৃশ্যমান সংসারকে ব্রহ্ম হইতে বিভিন্ন ভাবে চিন্তা করিলেই এতাবৎ ভয়ের কারণ হইয়া থাকে। দ্বৈতবুদ্ধিই সমস্ত বিপত্তির মূল। ব্রহ্মই সমস্ত বস্তুর বীজ, অজ্ঞানতা বশতঃ এই জগৎকে ব্রহ্ম হইতে. পৃথক পদার্থ বলিয়া অনুভূত হইয়া থাকে মাত্র। যখন তাবৎ বস্তুর সত্বাকে ব্রহ্ম

"एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥

२ य भाग। | शकाब्दा १८०२।
३७ संख्या। | कार्त्तिक पूर्णिमा।

राम गीता।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

आदौच मध्येच तथैव चान्ततो
भवं विदित्वा भयशोक कारणं।
हित्वा समस्तं विधि वादचोदितं
भजेत् स्वमात्मान मथाखिलात्मनां ॥ ५५ ॥

जीवन्मुक्त पुरुषने संसारको आदि अन्त वो मध्य में सर्व्व प्रकार भय वो शोक के हेतु समझ कर विधि बोधित समस्त कर्म्म मार्गको परित्याग पूर्व्वक अखिल जीवके स्वरूप-भूत मुझको निज स्वरूप सत्वा से अभेद बुद्धि करके चिन्ता की करती है।

इस परिदृश्यमान संसारको ब्रह्मसे पृथक बुद्धि करने हीसे एतावत भयका कारण हुआ करता है। द्वैतबुद्धिही सारी विपत्ति का मूल है। ब्रह्मही समस्त वस्तुका बीज है, अज्ञानता प्रयुक्त इस जगतको ब्रह्मसे पृथक पदार्थ करके अनुभव होता है। जब तावद्वस्तुकी सत्वाको ब्रह्मसत्वा करके प्रतीति हुआ

সত্তা বলিয়া প্রতীতি জন্মিবে, তখনই মনুষ্য ছিন্নচ্ছেদ্য সংসার-বন্ধন হইতে মুক্ত হইবেন।

আত্মন্যভেদেন বিভাবয়ন্নিদং
জানাত্যভেদেন ময়াত্মনস্তদা।
যথা জলং বারিনিধৌ যথাপয়ঃ
ক্ষীরে বিয়দ্ব্যোম্ন্যনিলে যথানিলঃ॥ ৫৬॥

কেননা যে সময়ে তিনি এই সমস্ত জগৎকে নিজ সত্তাসহ অভেদ বুদ্ধিতে চিন্তা করেন তখন পয়োধিতে প্রবিষ্ট নদ্যাদির জল, দুগ্ধ রাশিতে মিশ্রিত দুগ্ধ, মহাকাশে ঘটাকাশ, মহাবায়ুতে ভস্ত্রাদি যন্ত্র নির্গত বায়ুর ন্যায় যেরূপ আত্মা ও জগৎ অভেদভাবে প্রতীয়মান হয় তদ্রূপ পরমাত্মা স্বরূপ আমার সহিত তাঁহার আত্ম-সত্তাকে অভিন্নভাবে বিদিত হয়েন।

ইত্থং যদিক্ষেত হি লোক সংস্থিতো
জগন্মৃষৈবেতি বিভাবয়েন্মুনিঃ।
নিরাকৃতত্বাচ্ছ্রুতি যুক্তি মানতো
যথেন্দুভেদো দিশি দিগ্‌ভ্রমাদয়ঃ॥ ৫৭॥

লোকমণ্ডলী মধ্যস্থিত মুনিপদ বাচ্য জ্ঞানি ব্যক্তি যদি এই প্রকারে জগৎকে দর্শনও করেন, তথাচ তিনি এই জগৎকে অসত্য বলিয়া বিদিত হয়েন, কেননা শ্রুতিযুক্তি প্রমাণ দ্বারা জগতের সত্যতা জ্ঞান নিরাকৃত হইয়াছে। যেমন দৃষ্টি বিভ্রম জন্য চন্দ্রে দ্বিচন্দ্রভ্রম, উত্তরাদি দিঙ্‌মণ্ডলে দিগন্তর ভ্রান্তি এবং ঊর্দ্ধে নীলবর্ণ কটাহ তুল্য পদার্থ আকাশের আচ্ছাদন রূপে প্রতীত হইয়া থাকে তদ্রূপ জ্ঞানীর নিকট এই জগৎ ভ্রমদৃষ্টি মিথ্যা বলিয়া বোধ হয়।

যাবন্নপশ্যেদখিলং মদাত্মকং
তাবন্মদারাধনতৎপরো ভবেৎ।
শ্রদ্ধালুরত্যূর্জ্জিত ভক্তি লক্ষণো
যস্তস্য দৃশ্যোহমহর্নিশং হৃদি॥ ৫৮॥

যতদিন পর্য্যন্ত এই সমস্ত জগৎকে আমার (ব্রহ্মের) স্বরূপ বুদ্ধিতে দর্শন না করিবে, তাবৎ-কাল সেই পরমোপাদেয় ভাব লাভার্থ আমাকে সৃষ্টি, স্থিতি ও প্রলয়-কর্ত্তা ঈশ্বর-স্বরূপ জানিয়া সাধক আরাধনা করিবে। সেই সাধনায় যে ব্যক্তি দৃঢ় বিশ্বাসী হইয়া প্রেমলক্ষণা (কখন রোদন, কখন হাস্য, কখন বা নৃত্য, কখন বা গানাদি)

व.रेगी. तबही म.नुष्य : ेद्य संसारबंधनसे मुक्त होंगे।

आत्मन्य भे न विभावयन्निदं
जानात्य भे न मयात्मनस्तदा।
यथाजलं वारिनिधौ यथापय:
क्षीरे वियद्व्योम्न्यनिले यथानिल: ॥ ५६ ॥

क्यों कि जब उन्होंने समस्त जगतको निज सत्ताके साथ अभेद बुद्धि करके चिन्ता की करते हैं उस समय उनको ऐसी प्रतीति होती कि जैसा समुद्र में प्रविष्ठ नद्यादिका जल, दुग्ध राशिमें मिला हुआ दुग्ध, महाकाश में घटाकाश, महावायुमें भस्त्रादि से निकलता हुआ वायु हैं। इस प्रकार मुझसे (परमात्मा से) निज आत्म सत्ताको अभिन्न भावसे विदित होंगे।

इत्थं यदिक्षेत हि लोक संस्थितो
जगन्मृषैवेति विभावयेन्मुनि:।
निराकृतत्वाच्छ्रुति युक्ति मानतो
यथेन्दु भेदो दिशि दिग्भ्रमादय: ॥ ५७ ॥

लोक मण्डलीके मध्यस्थित मुनिपद वाच्य ज्ञानिपुरुष यदि इस रीतिसे जगत दर्शन करते रहे, तथाच उन्होने इस जगतको असत्य करके मानता है, क्यों कि श्रुति युक्ति प्रमाण से जगतको मिथ्या करके समझ लिया। जैसा दृष्टि भ्रम से चन्द्रमाको द्विचन्द्र मालुम पड़ता, उत्तर आदि दिशाको और कोई दिशा बोध होती, उपरमें नील रंगकी कड़ाई का न्याय जैसा किसी पदार्थने आकाशको आच्छादन रखा है ऐसी प्रतीति होती है, तद्रूप इस जगत भ्रम दृष्टिके समान ज्ञानीके निकट मिथ्या अनुभव होता है।

यावन्न पश्येदखिलं मदात्मकं
तावन्मदाराधनतत्परो भवेत्।
श्रद्धालुरत्यूर्जित भक्ति लक्षणो
यस्तस्य दृश्योऽहमहर्निशं हृदि ॥ ५८ ॥

जबतक इस सारे जगतको मेरा (ब्रह्मका) स्वरूप करके दर्शन न करेंगा तावतकाल उस परमोपदेय भाव लाभार्थ साधकने मुझको सृष्टि स्थिति प्रलय करनेहारे ईश्वर स्वरूप जानकर आराधना करते रहेंगे। उस साधना पर योन पुरुषों ने दृढ़ विश्वासी होकर प्रेम लक्षणा (कभी रोदन, कभी हास्य, कभी नृत्य, कभी गानादि) से भक्ति युक्त होता.

ভক্তিযুক্ত হয়, আমি তাহার হৃদয়ে জ্ঞান স্বরূপে দিবানিশি প্রকাশিত হইয়া থাকি।

মুমুক্ষু পুরুষ প্রথমতঃ সাধুচেষ্টা বিগর্হিত কার্য্য পরিত্যাগ পূর্ব্বক পবিত্র কার্য্য, শাস্ত্রপাঠ, সৎসঙ্গাদি করিবে; নিঃসংশয় চিত্তে গুরু বাক্যে বিশ্বাস স্থাপন করিয়া প্রেমার্দ্র হৃদয়ে ঈশ্বরের প্রতি ভক্তি যুক্ত হইবে। ভক্তি সাধনা দ্বারা সর্ব্বদা ঈশ্বর সত্বার সহানুভব বশতঃ ব্রহ্ম দৃষ্টির অভ্যুদয় হইবে, এই অবস্থাই ঘনীভূত হইলে আত্ম সত্বা ব্রহ্মে বিলীন হইয়া একত্ব প্রাপ্ত হইয়া যাইবে।

ক্রমশঃ

ধর্ম্ম প্রচারকের ৪র্থ বর্ষ।

কাল সাগরের প্রবল তরঙ্গ রাশি ভেদ করিয়া ধর্ম্ম প্রচারক ৩য় বর্ষ অতিক্রম করিলেন। সামগ্রী সকল যতই কেন সুখদ ও প্রিয় হউক না, চিরদিন আমাদের অধিকারে থাকে না। ধর্ম্ম প্রচারকের সহিত অনুগ্রাহক গ্রাহক ও পাঠক মহাত্মাগণের তৃতীয় বর্ষের পরম সুখকর সম্বন্ধের শেষ হইয়া গেল। এক্ষণে পুনর্নবানুরাগে সমুত্তেজিত হইয়া তাঁহাদের সহিত আত্মীয়তা বর্দ্ধনে ৪র্থ বর্ষের নিমিত্ত ধর্ম্ম প্রচারক উৎসাহ যুক্ত চিত্তে প্রবৃত্ত হইলেন। ভারতভূমি বহুদিন হইতে বিজাতীয় রাজ শাসনাধীন থাকিয়া, বিজাতীয় ভাব পূর্ণ শত২ আর্য্যধর্ম্ম বিদ্বেষ্টার মুখ বিনির্গলিত অনার্য্য উপদেশ আকর্ণন করিয়া, সামাজিক, রাজনৈতিক ও ধর্ম্ম সম্বন্ধীয় বিবিধ বিপ্লবের তাড়নায় বিপদগ্রস্ত হইয়া, সময় স্বভাব-সুলভ নানাবিধ অনার্য্য কার্য্যাদি অনুষ্ঠান করিয়া যেরূপ কদাচার পূর্ণ ও পুণ্যপথ পরিভ্রষ্ট হইয়াছে তাহাতে প্রাচীন ভারতের পরমাদরণীয় ও সর্ব্ব ধর্ম্মের মূল, সত্যের ভাণ্ডার স্বরূপ সনাতন আর্য্যধর্ম্মের পুনঃ প্রচারার্থ ভারতীয় ভাষায় প্রকাশিত "ধর্ম্মপ্রচারক" যে এক বৎসরও সুস্থ দেহে জীবিত থাকিয়া ভারতীর শ্রীচরণ সেবা করিতে পারিবে, এ আশা ছিল না। বৃদ্ধগণের নিশ্চেষ্টতা, নব্য সভ্যগণের চঞ্চল প্রকৃতি প্রথম২ আমাদিগকে যেরূপ নিরুৎসাহ প্রদর্শন করিয়াছিল, তাহাতে নীরাশ হওয়াও বিস্ময়ের বিষয় নহে; কিন্তু ভারতের বর্ত্তমান দুরবস্থা

है, उनके हृदयमें ज्ञानस्वरूप होए मैं दिवानिशि प्रकाशित हो रहता हूं।

जो पुरुषने मुक्ति चाहती है, उनका पहला यह करना चाहिये कि साधु चेष्टाका विरुद्ध कार्य्य परित्याग पूर्ब्बक पवित्र कार्य्य, शास्त्र अध्ययन, सत्संगादि करें, निःसंशयचित्त होये गुरुकी वचनो पर विश्वास कर प्रेमार्द्र हृदय से भक्तियुक्त होवें; भक्ति की साधनासे सर्व्वदा ईश्वर सत्ताका संग बोधवशतः ब्रह्मदृष्टि उपजेगी; इस अवस्था जब घनीभूत होगो तबही आत्मसत्ता ब्रह्मसत्तामें विलीन होकर एकत्व प्राप्त हो जायगी।

क्रमशः

धर्म्मप्रचारकका ४र्थ वर्ष।

काल समुद्र की प्रवल तरंग समूह भेद कर धर्म्मप्रचारकने तृतीय वर्षको अतिक्रम किया। द्रव्य सामग्री जितनाही क्योंन सुखद औ प्यारा होय उन्होंने चिरदिन हमारे अधिकार में न रहता हैं। धर्म्मप्रचारकके सहित अनुग्राहक ग्राहक औ पाठक महात्माओंके तृतीय वर्षका जो सुखकर सम्बन्ध था सब अन्त हो गया। अब फिर नवानुराग से समुत्तेजित हो कर उन्होंके संग आत्मीय भाव वर्द्धनार्थ चतुर्थ वर्षमें धर्म्मप्रचारक उत्साहयुक्त चित्त से प्रवृत्त हुये। भारतभूमि बहुदिनसे विजातीय राजशासनाधीन रहकर, विजातीय भावसे पूर्ण शत शत आर्य्यधर्म्म विद्वेष्टाओंके मुखविनिर्गलित अनार्य्य उपदेश श्रवणकर, सामाजिक, राजनैतिक वो धर्म्म सम्बन्धी बिबिध विप्लवका तड़पनसे बिपदग्रस्त हो कर, काल स्वभाव-सुलभ नानाबिध अनार्य्य कार्य्य आदि अनुष्ठान करके जिस भांति कदाचार पूर्ण वो पुण्यपथ परिभ्रष्ट हो चुकी, उसमें यह आशा न थी कि धर्म्मप्रचारक, जोनि प्राचीन भारतके परमादरणीय वो सर्व्व धर्म्मका मूल सत्यका भण्डारस्वरूप सनातन आर्य्य धर्म्मका पुनः प्रचारार्थ भारतिय भाषा में प्रकाशित हो रहा हैं, एक वर्ष भी नीरोग शरीर से जीवित रहकर भारती की श्रीचरण सेवा कर सकेगा। वृद्धोंकी निश्चेष्टता वो नव्य सभ्यमण्डलीकी चंचल प्रकृति हमको जिस भांति निरुत्साह दिखाई थी उसमें नीराश होना भी कुछ आश्चर्य्य नहीं; किन्तु भारतकी वर्त्तमान दुर्द्दशा आर्त्तनाद

আর্ত্তনাদ-সহ আমাদিগকে "ধর্ম্মপ্রচারকের" প্রকাশার্থ বারম্বার উত্তেজনা করিল। দুর্ব্বল মন নীরাশ হইয়াও ভগ্নোদ্যম হইল না। ভারতে সনাতন আর্য্য ধর্ম্মের পুনঃ প্রচার জীবনের প্রধান ব্রতমালার মধ্যমণি করিয়া লইলাম। বিঘ্ন বিনাশন বিধাতার অভয় চরণ স্মরণ করিয়া শুভকার্য্যে প্রবৃত্ত হইলাম। ধর্ম্ম বিদ্বেষ্টৃবর্গের বাক্য মিথ্যা করিয়া, ভারতের ভাবী আশা-পথ বিমোচন করিয়া ধর্ম্মপ্রচারকের শুভ উদ্দেশ্য সাধন জন্য ভগবান্ স্বয়ং সহায়তা করিতে লাগিলেন, স্বনৈঃ২ ধর্ম্মানুরাগী অনুগ্রাহক গ্রাহকগণের সংখ্যা বৃদ্ধি হইতে লাগিল। তাঁহার অভয়পদ সেবনের গুণে ধর্ম্মপ্রচারক ক্ষুদ্রাশয় পত্রাবলির ন্যায় যে অকালে অন্তর্হিত হইবে না তাহার পূর্ণ আশা হইয়াছে। ভারতের দিগ্দেশে ইহার যেরূপ সমাদর দেখা যায়, সমালোচকগণের নিকটও ইহার যেরূপ ভাবগম্ভীরতা রক্ষিত হইয়াছে, গ্রাহক ও পাঠকগণ যেরূপ প্রীতিপূর্ণ-হৃদয়ে ইহাকে গ্রহণ করিয়া থাকেন তাহাতে আর্য্য ধর্ম্মোৎসাহি মাত্রেই পরমানন্দিত হইবেন সন্দেহ নাই।

মানব সমাজের একমাত্র কল্যাণকর সনাতন ধর্ম্ম প্রচার ও স্বদেশ হিত সাধনই ধর্ম্মপ্রচারকের গূঢ় উদ্দেশ্য, এই জন্যই ভগবান্ স্বয়ং নিজ মঙ্গলময় হস্ত দ্বারা সর্ব্বপ্রকার বিঘ্ন বিপত্তি হইতে ইহার কোমল মস্তক রক্ষা করিতেছেন। সেই সর্ব্বভূতান্তরাত্মার একান্ত প্রেরণা না হইলে দেশ বিদেশীয় সাধু হৃদয় মহোদয়গণ কখনই ধর্ম্মপ্রচারকের প্রতি সরল শ্রদ্ধা-সহ সমাদর করিতেন না। ধন্য তাঁহার মহিমা !!! তাঁহার কৃপায় শুষ্ক মরুভূমিতে পয়োধি প্রবাহ বহিতে থাকে, পাষাণেও বীজ অঙ্কুরিত হয়। তিনি ক্ষুদ্রের দ্বারা অতীব মহৎ কার্য্যও সাধন করিয়া লয়েন। "ধর্ম্মপ্রচারক" নিজ বহুল প্রচার দ্বারা এবং নিজ ভাবানুকূল সাময়িক পত্রাদির সাহায্যে কয়েক বর্ষের মধ্যেই ভারতের একটী অবস্থাপরিবর্ত্তনের অভিনয় দর্শনে সমর্থ হইয়াছেন। স্পষ্ট দেখা যাইতেছে যে আর্য্যগণের বিশেষ বিবরণ জানিবার জন্য, আর্য্য ধর্ম্মের নিগূঢ় তত্ত্ব আয়ত্ত করিবার জন্য এক্ষণে শত শত আর্য্য সন্তান ব্যাকুল হৃদয় হইয়া উঠিয়া-

कर इसको धर्म्मप्रचारकका प्रकाशार्थ बारम्बार उत्तेजित कराई। दुर्ब्बल मन नीराश हो कर भी उद्यमको न छोड़ा। भारतवर्ष में सनातन आर्य्यधर्म्मका पुनः प्रचाररूप महत कार्य्यको मैंने मेरे जीवनकी प्रधान व्रतमालाका मध्यमणि कर लिया। विघ्न विनाशन विधाताके अभयचरण स्मरण पूर्व्वक मैंने इस शुभ कार्य्यमें प्रवृत्त हुआ। धर्म्मका द्वेष करनेवालोंकी बचनें मिथ्याकर, भारतकी भविष्यत आशाकी पथ मुक्त कर, धर्म्मप्रचारकका शुभ उद्देश्य साधनार्थ भगवानने स्वयं सहायता करने लगी। धीरे धीरे धर्म्मानुरागी अनुग्राहक ग्राहकोंकी संख्या बढ़ने लगी। उनके अभयपदकी सेवा का फल से धर्म्मप्रचारक जो क्षुद्राशय पत्र समूह के न्याई अकालमें अन्तर्हित न होगा तिसकी पूर्ण आशा हुई। भारतवर्षके देश देशान्तरमें जिस भांति समादर देख पड़ता है, समालोचकों के निकट भी इसका जिस भांति भावगम्भीरता रक्षित हुई है, ग्राहक वो पाठकोंने जिस भांति प्रीति पूर्ण हृदयसे इस पत्रका ग्रहण किया करते हैं इससे निःसन्देह बोध होता है कि हर एक आर्य्यधर्म्मोत्साही परमानन्दित होंगे।

मानव समाजके एक मात्र कल्याणदायक सनातन धर्म्मप्रचार वो निज देश हित साधन ही धर्म्मप्रचारक का गूढ़ अभिप्राय है, इस लिये भगवान ने निज मंगलमय हस्तके द्वारा सर्व्व प्रकार विघ्नविपत्तिसे इसका कोमल मस्तक को रक्षा कर रही है। वही सर्व्वभूतान्तरात्मा की एकांत प्रेरणाबिना देश विदेशीय साधु हृदय महोदयगण कभी धर्म्मप्रचारक के प्रति सरल श्रद्धापूर्व्वक समादर न करते। धन्य उनकी महिमा!!! उनकी कृपा होने पर जलहीन उषरभूमिमें समुद्रकी धारा बहा करती है, पथ्थेर पर भी बीज अंकुरित हुआ करती है। उन्होंने सामान्य क्षुद्र व्यक्तिके द्वारा अत्यन्त महत कार्य्य भी साधन कराय लेते हैं। धर्म्मप्रचारक ने निज बहुत प्रचारके द्वारा और उन पत्रों की सहायता से जितना ने धर्म्मप्रचारकका अनुकुल भाव युक्त है कई हो बर्षके मध्यमें भारतवर्षकी एक अवस्थाके परिवर्त्तनका अभिनय देखने में समर्थ हुआ। स्पष्ट देखा जाता है जो आर्य्यलोगोंकी विषय विवरण विदितार्थ, आर्य्यधर्म्मका निगूढ़ तत्व आयत्त करनेके निमित्त आज कल शत शत आर्य्य सन्तानों ने

ছেন। আর্য্যবিজ্ঞান, আর্য্যদর্শন, আর্য্যধর্ম্ম আদি আন্দোলনের তরঙ্গ সমুদ্র রাশির উত্তুঙ্গ তরঙ্গমালাকে পদাঘাত করিয়া পৃথিবীর তাবৎ সভ্য সমাজের শ্রদ্ধা আকর্ষণ করিয়াছে। ধন্য আর্য্যগণ! তোমরা কবে ধরাধাম পরিত্যাগ করিয়াছ তাহার নির্ণয় নাই কিন্তু তোমাদের সাধু পবিত্র জীবন দেখিবার জন্য আজ জগৎ চঞ্চল হইয়াছে। হা! তোমাদের আশ্চর্য্য যোগ-বিজ্ঞান রহস্য তোমাদের সঙ্গেই বুঝি পরিসমাপ্ত হইল! তোমাদের প্রকৃতি দেব দুর্ল্লভ। তোমাদের গৌরব শুনিতে ভারত জাগ্রত হইতেছে। ধর্ম্মপ্রচারক তোমাদের উচ্চতম পবিত্র ভাবের বিজ্ঞাপন পত্র। তোমাদের উত্তেজনা, তোমাদের বলবীর্য্য, তোমাদের তপোমর্য্যাদা, তোমাদের দূরদর্শী তত্ত্বজ্ঞানাদি দ্বারা ধর্ম্মপ্রচারকের অঙ্গ সুদৃঢ় করিয়া দেও; তোমাদের তেজস্বিনী বুদ্ধির প্রেরণা করিয়া ধর্ম্মপ্রচারকের শুভ উদ্দেশ্য সংসাধন কর। ভগবানের কৃপাবৃষ্টি এবং তোমাদের শুভ-কামনার সুধা বৃষ্টি ধর্ম্মপ্রচারকের মস্তকে পতিত হইলে আর কিছুই চিন্তা করি না।

ধর্ম্মপ্রচারকের গ্রাহক মহোদয়গণ যেরূপ সদাশয় ও ভদ্র তাহাতে আমরা আশ্বস্ত হৃদয়ে বিশ্বাস করি যে নিয়মিত মূল্য ও ডাক করাদি জন্য তাঁহাদিগকে পৃথক পত্রাদি দ্বারা আর উত্তেজিত করিতে হইবে না। কেননা অর্থাভাবে যে কার্য্যের বিশৃঙ্খলা ঘটিয়া থাকে, ইহা তাঁহারা উত্তমরূপ বিদিত আছেন। তাঁহাদের পরমাদরের ধর্ম্মপ্রচারকের কোন প্রকার ক্লেশ না হয় তজ্জন্য বোধ করি তাঁহারা অবশ্য যত্নবান থাকিবেন। ভগবান্ ধর্ম্মপ্রচারকের অনুগ্রাহক গ্রাহক, পাঠক, সহায়ক, সহানুভাবক ও অন্যান্য সর্ব্ব সাধারণের কল্যাণ বিধান করুন। তিনি প্রত্যেকের ধর্ম্ম পথের নেতা হউন; সমস্ত জীবকে তাঁহার দিকে আকর্ষণ করুন। আমরা যেন তাঁহার প্রকৃত সেবা পূর্ব্বক নিজ২ কর্ত্তব্য সাধনে কৃতার্থ হইয়া তাঁহার অভয়পদ লাভ করিতে পারি। ধর্ম্মপ্রচারক ৪র্থ বর্ষে যেন তাঁহার তত্ত্ব ও আর্য্য মাহাত্ম্য বিশেষ রূপে প্রকাশ করিতে সামর্থ হয়।

व्याकुल हृदय हो उठा है। आर्य्य विज्ञान आर्य्य दर्शन, आर्य्य धर्म्म आदिकी चर्चा का तरंगने समुद्र राशी की उत्तुंग तरंग मालाको पदाघात करके पृथ्वीकी तावत् सभ्य समाजकी श्रद्धा आकर्षण करी है। धन्य ही आर्य्यगण! आप लोगोंने कबधराधाम परित्याग किया तिसका निर्णय नहीं किन्तु आप लोगोंके साधु पवित्र जीवन दर्शनार्थ आज जगत् चंचल हुआ है। हा! आप लोगोंके आश्चर्य्य योग विज्ञानका रहस्य, बोध होता है कि आप लोगोंके संगहीसे परिसमाप्त हुआ। आप लोगोंकी प्रकृति देव दुर्लभ थी। आप लोगोंकी गौरव की ध्वनीसे भारत जागता जाता है 'धर्म्मप्रचारक' आप लोगोंके उच्चतम पवित्र भाव का विज्ञापन पत्र है। आप लोगोंकी उत्तेजना, आप लोगोंके बल बीर्य्य आप लोगोंकी तपो मर्य्यादा, आप लोगोंका तत्वज्ञान आदि से धर्म्मप्रचारकके अंग सुदृढ़ वो सुशोभित कर दीजिये; आप लोगोंकी तेजस्विनी बुद्धिकी प्रेरणा करके धर्म्मप्रचारक का शुभ उद्देश्य संसाधनकी जिये। भगवानकी कृपावृष्टि और आप लोगोंकी शुभ कामना की सुधावृष्टि धर्म्मप्रचारक का मस्तक पर गिरनेसे फिर और कुछ भी चिन्ता नहीं।

'धर्म्मप्रचारक'के ग्राहक महोदय मण्डली जिस भांति महाशय और भद्र हैं उससे हम आशायुक्त हृदयसे विश्वास करते हैं जो नियमित मूल्य वो डाक कर आदिके निमित्त उन्होंको पृथक पत्रादि से फिर उसकाना न पड़ेगा क्योंकि उन्होंने उत्तमरूप विदित हैं जो अर्थाभाव से कार्य्यका बहुत गड़बड़ हो जाता है। तन्निमित्त हमने बोध करता हैं जो उन्होंने इस आशयपर अवश्यही यत्नवान रहेंगे कि जिस तरहसे उन्होंके परमादरणीय "धर्म्मप्रचारका किसही भाति क्लेश ना होय। भगवानने धर्म्मप्रचारकके अनुग्राहक ग्राहक, पाठक, सहायक, सहानुभावक वो सर्व्वसाधारणके कल्याण विधान करें; समस्त जीवोंको अपने ओर आकर्षण करें! हमको भी यह सामर्थ दें कि उन्हकी प्रकृत सेवा पूर्व्वक निज निज कर्त्तव्य साधनसे कृतार्थ हो उनका अभयपद लाभ कर सकें और धर्म्मप्रचारक भी चतुर्थ वर्षमें उनका तत्व और आर्य्य माहात्मा विशेष रीतिसे प्रकाश करने में समर्थ होय।

চারু চিন্তাবলি।

১। যিনি আপনাকে বিশ্ব-নিয়ন্তার সেবক মনে করিয়া স্বকীয় ও পরকীয় উন্নতি সাধনে যত্নবান হয়েন, ঈশ্বর স্বয়ং তাঁহার সহায়ক; উন্নতি তাঁহার আজ্ঞাধীন থাকিয়া শনৈঃ২ কার্য্যক্ষেত্রে আধিপত্য করে। পরশ্রীকাতর ক্ষুদ্রাশয় মনুষ্যগণ সেই মহাত্মার বৃথা অপযশ সহস্র কণ্ঠে কীর্ত্তন করিলেও তাঁহার ক্ষতি নাই। ভগবান নিজ মঙ্গল হস্তে বিজয় পতাকা ধারণ করিয়া তাঁহার উৎসাহ বর্দ্ধন করেন।

২। যদি চিরজীবী হইতে চাও, তবে মৃত্যু হইবার পূর্ব্বেই মরিয়া যাও। কিরূপে মরিতে হয়, তাহা ঐ সমাধিস্থ মৌনী যোগীকে জিজ্ঞাসা কর, তিনি নীরব থাকিয়াও স্পষ্টাক্ষরে বুঝাইয়া দিবেন। তিনিই মরিয়াছেন, যাঁহাকে আর মরিতে হইবে না।

৩। বিহঙ্গ! তুমি যখন দেবদুর্ল্লভ অমৃতমাখা মধুর স্বরে গাইতে২ ঊর্দ্ধে আকাশে উড়িতেছিলে, তখন আমি অবাক হইয়া তোমার দিকে তাকাইয়াছিলাম, কিন্তু তুমি পুনর্ব্বার অবনীতে অবতরণ করিয়া তণ্ডুলকণা ভোজনে প্রবৃত্ত হইয়াছ দেখিয়া অতীব দুঃখিত হইলাম। পৃথিবীর আকর্ষণ শক্তি তোমাকে পুনরাকর্ষণ করিয়াছে। বিহঙ্গ! এবার তুমি এরূপ বেগে ও এত ঊর্দ্ধে উড্ডীন হইবে, যে যেন সংসার তোমাকে আর ধারণ করিতে না পারে।

জীবের নিদ্রা ভঙ্গ।

জন্মাবধি আমি সংসার সুখে আসক্ত। কেন না সংসার ভিন্ন আর কোন সুখদ সামগ্রী আমি কখন দর্শন করি নাই। এই সুখের সংসার পরিত্যাগ করিতে হইবে, এই নিদারুণ বার্ত্তা স্মরণ করিলেও মন চিন্তাকুল ও ভয়বিহ্বল হইয়া উঠে। সংসারের বিচিত্র, মোহিনী মূর্ত্তি, ভোগ বিলাসের রমণীয়তা শৈশব হইতেই আমার হৃদয়কে অধিকার করিয়াছে। আমি সংসারের দাস হইয়া সংসারের অনুগত থাকিয়া আপনার জীবনকে সুখী মনে

चारु चिन्तावली।

१। जोने अपनेको बिश्व नियन्ताका सेवक मानकर स्वकीय वो परकीय उन्नति साधनमें यत्नवान होय, ईश्वर स्वयं उनका सहायक बनते हैं; उन्नति ने उनकी आज्ञाधीन रहकर धीरे २ कार्य्य क्षेत्र में आधिपत्य करता है। परश्रीकातर, क्षुद्राशय, मनुष्योंने यदि उस महात्मा का बृथा कुयश सहस्र कंठसे कीर्त्तन किया करे तव भी उनकी क्षति नहीं। भगवान ने निज मंगल हस्तमें बिजयपताका लिये हुये उनका उत्साह बढ़ाया करता है।

२। यदि चिरंजीव होने चाहो तब मृत्यु होने का पहिले ही मरजाओ। किस रीति से मरने होता, सो वह समाधिस्थ मौनी योगीको जिज्ञासा करो। उन्होंने नीरव रहकर भी स्पष्टाक्षरसे समझावि देगा। उन्होंने मरा है जिन्हें फिर मरते न होगा।

३। बिहंग! तू जब देव दुर्ल्लभ अमृत मिलाया हुआ मधुर स्वरसे गाते हुए ऊंची अकाशपर उड़ता था उस समय में बचन शून्य हुये तेरा ओर ताक रहा था परंतु तुझे पुनर्व्वार धरित्रीपर उतर कर चावल का दाना खानेमें प्रवृत्त हुआ देख के अतीव दुःखित हुआ। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति तुझको पुनराकर्षण करी। बिहग! इस देर तू इस भांति बेगसे और इतने ऊंचे में उड़ता रहेगा जैसे कि संसार तुझ को फिर पकड़ न सके।

जीवका जगना।

मैं जन्मसे संसारके सुखोंमें आसक्त हो रहा हूँ, क्योंकि संसारको छोड़कर और कुछ सुखदायक वस्तु कभी नहीं देखनेमें आया। इस संसारके सुखको छोड़ ना पड़ेगा, इस निदारुण बातोंको सुमरनेसे मन चिन्ताकुल औ भयविह्वल हो जाता है। संसार का विचित्र चित्र, मोहिनी मूर्त्ति, भोगविलासोंको रमणीयताने बालक पनहीसे मेरे हृदय पर अधिकार कर छोड़ा है। मैं संसारका दास हो कर, औ उसका अनुगत रह कर अपनि जीवन सुखी मानता हूं! मैं अपने प्राणसे भी संसार को अधिक प्यार,

করি। আমার প্রাণ হইতেও সংসারকে আমি অধিক প্রিয়তর জ্ঞান করিয়া থাকি। যখন মনে হয় যে এই বিস্তৃত গৃহ অট্টালিকা উদ্যানাদি ভূ-সম্পত্তির আমিই এক মাত্র অধিপতি, তখন আমার হৃদয়ে আত্মগৌরব আর ধরে না; যখন ভাবি যে এই পরম রূপবতী যুবতি আমার সহধর্ম্মচারিণী হইয়া জীবন যৌবন আমারই সুখ সম্বর্দ্ধনে ও পরিচর্য্যায় উৎসর্গ করিয়াছেন, যখন দেখি অপত্যগণ বেশভূষা ও ভোজনাদির জন্য একমাত্র আমারই মুখের দিকে চাহিয়া রহিয়াছে, যখন অবলোকন করি যে ভৃত্য ও পরিচারিকাগণ বিনীত ও সতর্ক ভাবে আমার আজ্ঞার প্রতীক্ষা করিতেছে, যখন দেখি রথ, গজ, বাজি রাজি আমারই জন্য দ্বারদেশে সুসজ্জিত, তখন আমার নয়ন হইতে অবিরল ধারায় আনন্দাশ্রু বহিতে থাকে। যখন আমার বিদ্যা ও যশঃ-কুসুমের সৌরভে দশদিক আমোদিত হইয়াছে জানিতে পারিলাম, যখন আমার সাধারণ জন সমাজে অনুষ্ঠিত কার্য্য-কলাপ রাজ দ্বারে সম্মানিত হইতে লাগিল, যখন শত ২ লোকের মুখে আমার প্রশংসা ধ্বনি নৃত্য করিতে আরম্ভ করিল সে দিন আমি সুখের উচ্চতম সোপানে আরোহণ করিলাম। সংসার আমাকে এই রূপে নানা সম্পদ-সুবাসিত কুসুম শয্যায় শোয়াইয়া সমাদর পূর্ব্বক সুখনিদ্রায় অভিভূত করিয়া দিল। আমি মনের অনুরাগে, কল্পনার বেগে কতই আশ্চর্য্য ২ স্বপ্ন দেখিতেছিলাম, হৃদয়ে যেন সুধা বৃষ্টি হইতেছিল; কিন্তু হা! অকস্মাৎ আমাকে কে ডাকিল! আমার সুখের নিদ্রা ভঙ্গ হইয়া গেল। এখন বিষয় সম্পদের কোমল শয্যা যেন কণ্টকাকীর্ণ বোধ হইতেছে; সুখময় সংসার যেন বিষম বিষধরবৎ আমাকে দংশন করিতেছে; ভোগ বিলাস বিকট বেশে আমাকে ভয় প্রদর্শন ও তাড়না করিতেছে। চিরদিনের আশা ক্ষেত্রকে যেন আজ উষর ভূমি প্রতীতি হইতেছে। আজ সম্মানকে পুতিগন্ধের সমান, আত্মগৌরবকে ঘোর রৌরব মহানরক তুল্য ও প্রতিষ্ঠাকে শূকরী বিষ্ঠা সদৃশ বলিয়া ঘৃণা বোধ হইতেছে। আজ বাস-ভবন কারাগার ও স্ত্রী পুত্রাদি তাবৎ সামগ্রী একত্র সমবেত হইয়া যেন আমার বন্ধন শৃঙ্খল রচনা করিয়াছে এইরূপ অনুমান হইতেছে। হায়! আমার সুখ-স্বপ্ন-সমাকুল নিদ্রা কে অকস্মাৎ ভঙ্গ করিল,

करता हूं। जब मनमें आता है कि इस विस्तृत गृह औ अट्टालिका फुलवाड़ी आदि भूसम्पत्तिका मैं ही मालिक हूं, तब मेरे हृदयमें इतना आत्मगौरव आमिलता कि फूलानसमाता; जब मनमें देखता हूं कि यह परम रूपवती युवतिनें मेरी सहधर्म्मचारिणी होकर जीवन यौवनको मेरे ही सुख औ परिचर्य्याके लिये उत्सर्ग किया है, जब देखता हूं सब लड़केवाले वेश भूषा औ भोजनादिके लिये मेरेही ओर ताक रहे हैं, जब देखता हूं कि भृत्य औ परिचारिकागण विनीत औ सतर्क हो हो कर मेरी ही आज्ञाकी प्रतीक्षा करते हैं, जब देखता हूं कि रथ, गज, वाजि राजि मेरे ही लिये द्वारदेशमें सुसज्जित रहते हैं, तब मेरे आखोंसे अविरल आनन्दकी आंसू वहा करती हैं। मैं जानता हूं कि जब मेरी विद्या औ यशके फूलके सुगन्धसे दसो दिशा सुवासित हो रहीं हैं, जब साधारण जनसमाजमें मेरा किया काज राजद्वार में सम्मानित होने लगा, जब सकड़ों आदमीके मुखमें मेरी प्रशंसा की ध्वनि नृत्य करने लगी, तब ही मैं सुखके उत्तम सोपान पर आरोहण किया। संसारने मुझको इसी भांति नाना सम्पत्ति सुवासित कुसुमशय्यापर सोलाकर आदरपूर्व्वक सुखनिद्रामें अभिभूत कर डाला। मैं अपने मनके अनुराग से, कल्पनाके वेगसे कितना आश्चर्य्य आश्चर्य्य स्वप्न देखता था जैसाकि हृदयमें अमृत की वृष्टि हो रही थी; किन्तु हाय! अकस्मात् मुझे किसनें पुकारा। मेरी सुख नींद टूट गई। अभी विषय सम्पत्की कोमल शय्या कण्टकाकीर्ण सी बूझ पड़ती है॥ सुखमय संसार जैसा विषम विषधरका सा दंशन करता है, भोग विलास विकट रूपसे मुझको डराता औ धमकाता हैं, इतने दिनोंका आशा क्षेत्र जैसे ऊषरभूमि कीसी देख पड़ती है। आज सम्मानको पूतिगन्धके समान, प्रतिष्ठाको सूकरी विष्ठाके तुल्य और आत्मगौरवको महाघोर रौरव नरकके सदृश जान पड़ते हैं औ घृणा लगती है। आज रहनेका घर कारागार सा हो गया है। औ अनुमान होता है कि स्त्री क्या पुत्र सबही सब इकट्ठे हो कर मुझको बांधनेके लिये बेड़ी प्रस्तुत किये हैं। हाय! मेरी सुखस्वप्न समाकुल निद्राको अकस्मात् भङ्ग किया। किसकी पाथरको भी भेदन करने-

কাহার পাষাণ ভেদিনী সুমধুর বাণী আমার কঠোর হৃদয়ের মর্ম্মদেশে প্রবেশ করিয়া আমাকে জাগ্রত করিল!!

অপূর্ব্ব রূপ মাধুরী দর্শনে হৃদয় পুলকিত হইয়া উঠিল। হায়! চৈতন্য দান করিয়াই আবার তিনি কোথায় লুকাইলেন আর দেখিতে পাইলাম না! মন তাঁহারই জন্য পাগল হইল। তাঁহাকে না দেখিলে আর থাকিতে পারিতেছি না। সে রূপের আদর্শ নাই, সে মধুর বাণীর উপমা নাই; তিনি বিদ্যুদ্বৎ প্রকাশিত হইয়াই আমাকে সচেতন করিয়া কোন লীলা পটের অন্তরালে লুকাইলেন, আর তাঁহার তত্ত্ব পাইতেছি না। সংসার আমাকে বারম্বার বলিতেছে যে উহা তোমার অমূলক চিন্তা, তোমার কল্পনা মাত্র, উহা স্বপ্নোচ্ছাসের একটী চঞ্চল তরঙ্গ। কিন্তু এই প্রবোধ বাক্যে আমার মন মানিতেছে না আর মানিবেও না। আমার মন সেই মোহন মূর্ত্তির আশ্চর্য্য মাধুরি দর্শনে বিমোহিত হইয়া গিয়াছে; আমার প্রাণ তাঁহার দর্শনার্থ আপনাকে উৎসর্গ করিয়া বসিয়াছে; আত্মা তাঁহাকে ছাড়িয়া আর এ দেহে থাকিতে চাহে না। হায়! এক্ষণে কোথায় গেলে তাঁহার দর্শন পাইব! কে আমাকে তাঁহার প্রকৃত তত্ত্ব বলিয়া দিয়া চিরদিনের মত কৃতার্থ করিবে!!

সংসার তুমি আর আমাকে তোমার অপবিত্র হস্তে স্পর্শ করিও না। যিনি আমাকে ডাকিয়া জাগ্রত করিয়াছেন, আমি তাঁহার নিকট যাইব। তাঁহার অমৃত-নিস্যন্দিনী বাণী স্মরণে আমার এখনও শরীর রোমাঞ্চিত হইতেছে। আমার নিদ্রা ভঙ্গ হইয়াছে, আর তোমার মায়া-বিস্তারিত বিষয় শয্যা সুখকর বোধ হইতেছে না। আমি চলিলাম সংসার! তোমার নিকট চিরদিনের মত বিদায় লইলাম। আমি সেই মন-বিমোহন মহাপুরুষের স্বর লক্ষ্য করিয়া যাত্রা করিলাম!

যাঁহারা কেবল তাঁহারই কথা কহিবেন, আজ হইতে তাঁহাদেরই কথা শুনিব, যে পুস্তকে কেবল তাঁহারই গুণানুবাদ ও নিগূঢ় তত্ত্ব লিখিত থাকিবে তাহাই পাঠ করিব, যেখানে জাগ্রত পুরুষ বর্গ তাঁহার সহিত সদালাপ করিতেছেন, সেই স্থানেই গমন করিব, যেখানে তাঁহার অপূর্ব্ব মূর্ত্তি দর্শনার্থ

हारी सुमधुर वाणीने मेरे कठोर हृदय मर्म्मदेशमें प्रकाश करके मुझको जगा दिया!

इस अपूर्व रूप माधुरीका दर्शन होतेही हृदय पुलकित हो गया। हाय! चैतन्य दान भर करके फिर कहां अन्तर्धान हो गये, पुनर्व्वार देख न सका; मन उन्हीके हेत पागल हुआ। उनको बिन देखे अब रह नहीं सकता हूं। उस रूपका और आदर्शनही है। उस मधुर वाणीकी उपमा नहीं है। वह केवल बिजली की नाईं चमक कर मुझे सचेतनकर किसी लीलापटके ओटमें छिप गये, फिर उनके तत्त्वको न पाता हूं। संसार बारम्बार मुझको कहता है कि यह तुम्हारी अमूलक चिन्ता है, यह तुम्हारी कल्पना मात्र है, वह स्वप्नोच्छासका कोई चञ्चल तरङ्ग है। किन्तु इस प्रबोध वाक्यमे मेरा मन नहीं मानता नही मानेगा। मेरा मन उसी मोहन मूर्त्तिके आश्चर्य्य माधुरी दर्शन मे विमोहित हो गया है; मेरे प्राणों उनको देखनेके लिये अपनेको उत्सर्गकर डाला है; आत्मा उन्हे छोड़कर और इस देहमें रहने नहीं चाहता है। हाय! इस समय कहां जानेसे उनका दर्शन पाउंगा? मुझको कौन उनका प्रकृततत्त्व बताके चिरदिनतक कृतार्थ करेगा!!

संसार! तु फिर तेरा अपवित्र हातसे मुझे स्पर्श न कर। जीने मुझे पुकारकर जगाया है मैं उन्हीके निकट जाउंगा। उनकी अमृत निकालती हुई वाणी स्मरणसे मेरा शरीर अबतक भी फुला न समाता है। मेरी नीन्द टूटी, और तेरी माया से सारी हुई विषय शय्याकरी सुखकर बोध न होती है। अब मैं चले, संसार! तेरे निकट चिरदिन के निमित्त विदाय ले लेता हूं। मैं वह मन विमोहन महापुरुषका स्वरको लक्ष्य करके यात्रा करी।

जिन्होंने केवल उन्हीकी कथा कहेगी आज तिन्हों ही की कथा मैं सुनुंगा, जिस पुस्तकमें उन्हीका गुणानुवाद व निगूढ़ तत्त्व लिखा रहेगा उसही हीको पाठ करूंगा, जहां जाग्रत पुरुषोंने उनके साथ सदालाप कर रहा है उसी स्थानमें जाउंगा, जहां उनकी अपूर्व्व मूर्त्ति दर्शनार्थ कोइ पावल अनुष्ठान हो रहा है, वहांही विश्राम करूंगा, जिन्होंने लोक लज्जा को तुच्छ मानकर गभीर साहस वो जोर शोरसे उनका समाचार प्रचार कर रहा है

কোন পবিত্র অনুষ্ঠান হইতেছে, সেই খানে বিশ্রাম করিব, যাঁহারা লোক লজ্জা তুচ্ছ করিয়া গম্ভীর সাহসে উচ্চ নিনাদে তাঁহার সমাচার প্রচার করিতেছেন তাঁহাদের শরণাগত হইয়া সেই প্রিয়তমের সংবাদ জিজ্ঞাসা করিব। আমি কখনও বনে বসিয়া তাঁহাকে মনন করিব, কখন বা পর্ব্বত কন্দরবাসি ঋষিগণের নিকট গিরি গাম্ভীর্য্য সহ তাঁহার আশ্চর্য্য মহিমা অনুধ্যান পূর্ব্বক অগাধ গম্ভীর সত্বায় ডুবিয়া যাইব, কখন কখন বন কুসুম রাজিতে তাঁহার প্রসন্ন বদন বিলোকন করিব, কখন গিরি নিঃসৃত নির্ম্মলনীর নদী তীরে উপবিষ্ট হইয়া চন্দ্র কিরণমিশ্রিত লহরী-মালার মধ্যে তাঁহার মধুর হাস্য দর্শন করিব, কখন মহাঘোর মেঘ মণ্ডলের সঙ্গে ২ বজ্র গর্জ্জনে তাঁহার প্রচণ্ড দোর্দ্দণ্ড প্রতাপ ও মহিমা দেখিব, কখন পীক কোকিল কুজনাদির মধ্য হইতে তাঁহার স্তুতি পাঠ শুনিয়া শ্রবণ শীতল করিব, কখন সমুদ্রের নীল-নীর নিনাদে তাঁহার ত্রিভুবন শাসন বাক্য আকর্ণন করিব, কখন বা তাঁহার ভাবে উন্মত্ত হইয়া নৃত্য করিতে থাকিব।

সংসার! আর তোমার ক্রোড়ে নিদ্রা যাইব না। যে দেশে সন্ধ্যা নাই, শর্ব্বরী নাই, যেখানে নিদ্রা নাই, স্বপ্ন নাই, যেখানে তাপ নাই, বিক্ষেপ নাই, আমি সেই দেশের লোক পাইয়াছি। আমার নিদ্রা ভঙ্গ হইয়াছে। যাঁহার মধুর স্বর ও যাঁহার অপ্রার্থিত কৃপা আমার নিদ্রা ভঙ্গ করিল, হা! সেই প্রিয় সখা এক্ষণে কোথায়! আমি তাঁহারই শরণাপন্ন হইলাম।

প্রাণ সখে! যদি দয়া করিয়া নিদ্রা ভঙ্গ করিলে, তবে হস্ত ধারণ করিয়া তোমার অমৃত ধামে লইয়া চল। তুমি দয়া করিয়া দেখা না দিলে কেহই তোমাকে দেখিতে পায় না। শুনিয়াছি তুমি নাকি ভক্তের প্রতি দয়া করিয়া তাহার সহচর হইয়া থাক। তুমি সাধুদিগের সর্ব্বস্ব ধন। তোমার মহিমা অপার! দীনবন্ধো! দুঃখী দেখিলে তুমি দয়া করিয়া থাক, দেশে দেশে সাধুদিগের নিকট এই সংবাদ শুনিয়া আজ তোমার দ্বারে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছি। অভয় পদে স্থান দান কর। হে হরে! তোমার পাষাণ ভেদী স্বরে সংসার স্বপ্ন সংকুল মোহ নিদ্রা-ভঙ্গ হইয়াছে। এক্ষণে অন্তর্যাগে জাগ্রত থাকিয়া তোমার পরম

उन्होंके शरणागत हुये मेरे प्रियतमके सम्वाद जिज्ञासा करुंगा। मैं कभी बनमें बैठकर उनका मनन करुंगा, कभी पर्व्वत कन्दरवासी ऋषीओंके निकट पर्व्वतोपम गम्भीरता से उनकी आश्चर्य्य महिमा अनुध्यान पूर्ब्बक अगाध गम्भीर सत्वामें डुब जाउंगा, कभी कभी वन कुसुम राजि में उनका प्रसन्न वदन दर्शन करुंगा, कभी गिरि निःसृत निर्म्मल नीरपूर्ण नदीके किनारे उपविष्ट होकर चन्द्रकिरणसे मिली हुई लहरीमालाके मध्यमें उनका मधुर हास्य दर्शन करुंगा, कभी महाघोर घनघटाके संगही संग वज्र ध्वनिसे उनके प्रचण्ड दोर्दण्ड प्रताप वो महिमा देखूंगा, कभी कोकिल आदिके कूजनके मध्यमें से उनकी स्तुतिपाठ सुनकर श्रवणको शीतल करुंगा, कभी समुद्र की नील नीर निनादसे उनकी त्रिभुवन शासन वाक्य आकर्णन करुंगा, कभी उनका भावसे उन्मत्त होकर नृत्य करता रहुंगा।

संसार! फिर तेरा गोदीपर मैंन सोउंगा। जिस देशमें सन्ध्या नहीं, शर्वरी नहीं, जहां निद्रा नहीं; स्वप्न नहीं, जहां ताप नहीं, बिक्षेपनहीं, मैंने उसी देशका एक पुरुषको पाया है। मेरी निद्रा टूटी है। जिनका मधुर स्वर वो जिन की प्रार्थना की बिना कृपाने मुझको जगाया है! वह प्रियसखा अब कंहा! मैं उन्होंके शरणापन्न होउं।

प्राण सखे! यदि कृपा करके मुझे जगायो तो हस्तधारण किये आपकी अमृतपुरीमें ले चलिये, आपकी दया बिना कोइ न आपका दर्शन पाता है। सुना है कि आप भक्तकी और दया करके उसका सहचर बने हैं। आप साधुओंके सर्व्वस्व धन हैं। आपकी महिमा अपार है! हे दीनबन्धो! देश देशान्तर में साधुओके निकट यह सम्वाद सुना कि आपने दुःखियों को देखके दया की करते हैं, सोही मैं आज आपके दरवाजासे आ पहुंचा। अभयपद में स्थान दीजिये। हे हरे! आपकी पाषाणभेदी स्वरसे संसार रूपी स्वप्न समाकुल मोह निद्रा छुटी है अब अन्तर्यौग से जागते हुये आपके परमपदका पीयुष पान

পদ পীযুষ পান করিব। হে অভীষ্ট ফল দাতা। আমার আশা পূর্ণ কর।

শান্তিঃ, শান্তিঃ, শান্তিঃ. হরি ওঁ।

কাণপুর হইতে আমাদের জনৈক বন্ধু বেদার্থ বিপর্য্যয় সম্বন্ধে একখানি পত্র লিখিয়াছেন। মাননীয় শ্রীযুক্ত পণ্ডিত দয়ানন্দ সরস্বতী যে নবীন বেদভাষ্য প্রকাশ করিতেছেন তাহারই অর্থব্যভিচার প্রদর্শনই পত্র খানির মূল উদ্দেশ্য। বেদ ত্রিকাণ্ডে (কর্ম্ম, উপাসনা ও জ্ঞান) বিভক্ত যিনি এক কাণ্ডীয় মন্ত্রের অন্য কাণ্ডের উপযোগী অর্থ করেন, বোধ করি এতাদৃশ ব্যক্তিকেই লোকে "কাণ্ডজ্ঞানরহিত" বলিয়া তিরস্কার করিয়া থাকেন। যাহা হউক সাধারণের গোচরার্থ ও অবধান পূর্ব্বক বিচারার্থ পত্রখানি নিম্নে প্রকটন করিলাম।

বেদার্থ বিচার।

"ইষেত্বোর্জ্জে ত্বা বায়ব স্থ দেবোবঃ সবিতা প্রার্পয়তু শ্রেষ্ঠতমায় কর্ম্মণ আপ্যায়ধ্বমঘ্ন্যা ইন্দ্রায় ভাগং প্রজাবতী রনমীবা অযক্ষাসাব স্তেন ইষত মাঘশঞ্জসো ধ্রুবা অস্মিন্ গোপতৌস্যাত বহ্বীর্যজমানস্য পশূন্পাহি।"

যজুর্বেদ সংহিতা। ১।

শব্দ।	দয়ানন্দকৃত অর্থ	মহিধরকৃত অর্থ
ইষে	ইচ্ছা	বৃষ্টির জন্য
উর্জ্জে	পরাক্রম	অন্নাদি রস নিমিত্ত
ত্বা	আশ্রয়	(ত্বাং) তোমাকে
বায়ব	প্রাণাদি	বায়ুরূপ
স্থ	উহাকে	
বঃ	সকলের	
সবিতা	পরমেশ্বর	সবিতাদেবঃ প্রেরক
শ্রেষ্ঠতমায়	অত্যুত্তম	উৎকৃষ্ট
কর্ম্মণে	যজ্ঞাদি কর্ম্ম	যজ্ঞ
প্রার্থয়তু	সংযুক্ত করেন	প্রাপ্ত
ভাগং	ধন ও জ্ঞান	দুগ্ধ
আপ্যায়ধ্বম	উন্নতি প্রাপ্তি	বৃদ্ধি
ইন্দ্রায়	পরমৈশ্বর্য্য	ইন্দ্রদেবতা
প্রজাবতী	সন্তানবতী	সন্তানবতী
অনমীবা	আদি	আরোগী
অযক্ষা	যক্ষা রহিত	অযক্ষা
গোপতি	পৃথ্বীপতি	গোপালক

करूंगा। हे अभीष्ट फलदाता! मेरी आशा पूर्ण की जये।

शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, रों आर्फ"

कानपुर से हमारे जनैक मित्रने वेदका विपरीत अर्थ प्रकाश होनेका आशयपर एक पत्र लिखा। माननीय श्रीयुक्त पण्डित दयानन्द सरस्वती जीने जो नवीन वेदभाष्य प्रकाश कर रहा है! उसमें जो वेदका उलटा पुलटा अर्थ लगाया गया सोई देखावना पत्रका मूल अभिप्राय है। वेद त्रिकाण्ड (कर्म्म, उपासना वो ज्ञान) में विभक्त है। जिन्हों ने एक काण्ड के मंत्र का अर्थ अन्य काण्डका उपयोगी कर लगावे, बोध होता है कि लोगोंने ऐसा ऐसा पुरुषों को "काण्डज्ञान हीन" कहकर तिरस्कार किया करता है। जो हो, साधारण जनोंके गोचरार्थ वो अवधान पूर्व्वक विचारार्थ उस पत्रको हम नीचे प्रगट करते हैं।

वेदार्थ विचार।

"इषेत्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्थयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावती रनमीवा अयक्ष्मासाव स्तेन इषत माघशंजसो ध्रुवा अस्मिन् गोपत्योस्यात बह्वीर्यजमानस्य पशुन् पाहि।

यजुर्वेद संहिता। २।

शब्द	दयानन्द कृत अर्थ	महिधर कृत अर्थ
इषे	इच्छा।	वृष्टि का अर्थ।
ऊर्ज्जे	पराक्रम।	अन्नादि रसके अर्थ।
त्वा	आश्रय।	(त्वां) तुमको।
वायव	प्राणादि।	वायुरूप।
स्थ	उनको।	
वः	सबकी।	
सविता	परमेश्वर।	सवितादेवः प्रेरकः।
श्रेष्ठतमाय	अत्युत्तम।	उत्कृष्ट।
कर्म्मणे	यज्ञादि कर्म्म।	यज्ञ।
प्रार्थयतु	संयुक्त करें।	प्राप्त।
भागं	धन वो ज्ञान।	दुग्ध
आप्यायध्वम	उन्नति प्राप्ति।	वृद्धि।
इन्द्राय	परमैश्वर्य्य	इन्द्रदेवता।
प्रजावती	सन्तानवती।	सन्तानवती।
अनमीवा	आदि।	अरोगी।
अयक्ष्मा	यक्ष्मा रहित।	अयक्ष्मा।
अघ्न्या	अहिंसा।	अहिंस्य।

অদৃপ্তা	অহিংসা	অহিংস্য
অঘশাংস	পাপী	হিংস্র ব্যাঘ্রাদি
স্তেন	চৌর	চৌর
ঈশত	উৎপন্ন	সমর্থ
যজমান	ধার্ম্মিক	যজ্ঞকর্ত্তা
পশূন্	গো,অশ্ব,হস্তীলক্ষ্মী	গোবৎসাদি
পাহি	রক্ষা কর	রক্ষা কর
অস্মিন্	ইহার	এই স্থানে
ধ্রুব	নিশ্চয়	স্থির

দয়ানন্দ কৃতভাষার্থ—হে মানবগণ! সেই পরমেশ্বর সকলের প্রাণস্বরূপ তিনি ইন্দ্রিয়গণকে উত্তম কর্ম্ম জন্য সংযুক্ত করিয়া থাকেন। তিনি অন্নাদি পদার্থ, বিজ্ঞানের ইচ্ছা ও পরাক্রম লাভার্থ ধন ও জ্ঞানাদি শ্রেষ্ঠ গুণগ্রাম প্রদান করেন। হে মিত্রগণ! তোমরাও উন্নতি লাভ কর। হে ভগবন্। আমাদিগের পরমৈশ্বর্য্য প্রাপ্তির নিমিত্ত আরোগী ও অযক্ষা সন্তান সন্ততি এবং অহিংসা-যোগ্য বহুতর গবাদি পশু সর্ব্বদা দান কর। পাপী ও চৌর সৃষ্টি করিও না। তুমি ধর্ম্মাত্মা, গো, অশ্বাদি পশু, লক্ষ্মী ও প্রজাকে নিরন্তর রক্ষা কর। ধার্ম্মিকের নিকটেই এতাবৎ পদার্থ নিশ্চল হইয়া থাকে।

মহীধরকৃত অর্থ—হে পলাশ শাখে! বৃষ্টির জন্য তোমাকে ছেদন করা হইতেছে। শাখে! অন্নাদি রসের জন্য তোমাকে কোমল করা যাইতেছে। হে বৎসগণ! তোমরা বায়ুরূপ, বায়ুবৎ গমনশীল, নিজ২ মাতার নিকট হইতে অন্যত্র দূরে গমন করিও না। প্রেরক পরম দেবতা সবিতা তোমাদিগকে উত্তম তৃণপূর্ণ বনে লইয়া যাউন। হে গাভিগণ! তোমরা যজ্ঞ সিদ্ধির জন্য ইন্দ্রভাগ দুগ্ধ বৃদ্ধি কর। বনে ব্যাঘ্রাদি হিংস্র পশুগণ ও চৌর মণ্ডলী যেন তোমাদিগকে হনন করিতে না পারে, কেননা তোমরা প্রজাবতী, অরোগী ও অযক্ষা। তোমরা যজ্ঞকর্ত্তার নিকট বর্দ্ধিত হও ও নিশ্চল হইয়া থাক। হে পলাস শাখে! যজমানের পশুগণকে রক্ষা কর।

"পর্ণশাখাচ্ছিনত্তি, শাল্মলীঃ ত্বেযেতেজ্জে-ত্বেতি বা চ্ছিনদ্মীতি বোভয়োস্তাকাওংক্ষত্বাৎ সংনময়ামীতিবোত্তর ইতি।"

মাতৃভির্ব্বৎসান্ সঞ্চসৃজ্যবৎসঞ্চ শাখয়োপস্পৃ-হতি বায়বেস্থেতি।

गोपति	पृथ्वीपति।	गोपालक।
अघशंजस	पापी।	हिंस्र व्याघ्रादि।
स्तेन	चोर।	चोर।
ईशत	उत्पन्न।	समर्थ।
यजमान	धार्म्मिक।	यज्ञकर्त्ता।
पशून्	गो, अश्व, हस्ति, लक्ष्मी।	गोवत्सादि।
पाहि	रक्षा करो।	रक्षा करो।
अस्मिन्	इसका।	यहां
ध्रुव	निश्चय।	स्थिर।

दयानन्दकृत भाषार्थ। "हे मनुष्य लोगों। वह परमेश्वर सो सबके प्राण और इन्द्रियोंको उत्तम कर्म्मके लिये संयुक्त करते हैं वो अन्नादि पदार्थ, विज्ञानकी इच्छा और पराक्रमके प्राप्तिके लिये धन और ज्ञानादि श्रेष्ठ गुणोंके देनेहार हैं। हे मित्र लोगों! तुम भी उन्नतिको प्राप्त हो। हे भगवन्। हम लोगोंके परमैश्वर्य्यको प्राप्तिके लिये बहुत सा सन्तान जो अरोगी वो अयक्ष्मा होय, और अहिंसा योग्य बहुत सा गो आदि पशु सदैव नियत कीजिये। पापी वो चोर डांकु मत उत्पन्न होय। आप धर्म्म परायण मनुष्यके गो अश्वादि, लक्ष्मी वो प्रजाकी निरन्तर रक्षा कीजिये। इस धार्म्मिकके समीप उक्त पदार्थ निश्चल होय।

महीधर कृत अर्थ। हे पलाश शाखे? जलकी वृष्टिके अर्थ तुमको छेदन करते हैं। शाखे, अन्नादि रसके अर्थ तुमको कोमल करते हैं। हे वत्सों तुम वायुरूप, वायुतुल्य गमनशील हो, अपनी माताओंके समीप से अन्यत्र दूर मत जाओ। प्रेरक परम देवता सविता तुमोंको उत्तम तृणपूर्ण वनमें ले जावें। हे गावः! तुम यज्ञ सिद्धिके अर्थ इन्द्रके भाग, दुग्ध वृद्धि करो। वनमें व्याघ्रादि हिंस्र पशु अथवा चोर तुमे मारनेको वा चोरानेको समर्थ न होय क्योंकि तुम प्रजावती हो, अरोगी और अयक्ष्मा हो। तुम यजमानके यहां वृद्धि वो स्थिर हो। हे पलाश शाखे! तुम यजमानका पशुनको रक्षा करो।

"पर्णशाखाच्छिनत्ति शाल्मली, त्वेषे त्वेर्ज्जे त्वेति वाच्छिनद्मीति वो भयोस्ताकाङ्क्षत्वात् संनमयामीति वोत्तर इति।"

मातृभिर्वत्सान सञ्च सृज्य वत्संच शाखयोपस्पृशति वायवस्थेति

দেবোব ইতি মাতৃনামেকাং ব্যাকৃতৈন্দ্রং ভবতি মা ইন্দ্রং বেতি।

কাত্যায়ন সূত্র। ৪।

"ইষেত্বা" এই মন্ত্র দ্বারা পলাশশাখা অথবা সমীশাখা ছেদন করিবে। "উর্জ্জেত্বা" এই মন্ত্র দ্বারা (সংনমযামি) নমন করিবে। এই দুই মন্ত্রেই ক্রিয়াপদের আকাঙ্ক্ষা রহিয়াছে। "বায়ব" এই মন্ত্র দ্বারা গাভীগণের সহিত বৎসবৃন্দের সংযোজনা পূর্ব্বক একটী বৎসের গাত্রে পলাশ শাখা স্পর্শ করাইবে। "দেবোব" এই মন্ত্র দ্বারা একটী গাভীকে পৃথক করিবে, উহার দুগ্ধাদি ইন্দ্র দেবতার জন্য। "যজমানস্য পশূন্ পাহি" এই মন্ত্র পাঠ পূর্ব্বক অগ্নিহোত্র স্থানে পলাশ শাখা স্থাপন পূর্ব্বক প্রার্থনা করিবে ইতি।

শতপথ ব্রাহ্মণ—যজমানস্য পশূনিত্যগ্ন্যাগরিস্যান্তরস্য পুরস্তাচ্ছাখামুপগূহতীতি। শঃ পঃ ১।৫।৪।১।৮ সর্ব্বে পর্ণশাখয়া বৎসান্ পা করোতি। যত্র বৈ গায়ত্রী সোমমচ্ছা পতত্তদস্যা আঁদরন্ত্যা অপাদস্তাভ্যায়ত্যর্পণ্যং প্রচিচ্ছেদ গায়ত্রৈ বা সোমস্য বা রাজ্ঞস্তন্য তিত্বা পর্ণো ভবতস্মাৎ পর্ণো নাম (পলাশ) শাখয়া বৎসান্ পা করোতি। ১।

তমাচ্ছিনত্তি ইষেত্বোর্জ্জেত্বেতি বৃষ্টৈতদাহ যদাহৈ ষেত্বেতু র্জ্জেত্বেতি যো বৃষ্ট্যাদূর্গ্রসো জায়তে তস্মৈ তদাহ। ২।

ভাবার্থ—যজ্ঞকর্ত্তা পর্ণশাখা দ্বারা বৎসগণকে পৃথক করিয়া থাকেন। এক সময় গায়ত্রী পক্ষীরূপ ধারণ করিয়া আকাশস্থ সোমকে গ্রহণ করিবার জন্য ধাবিত হইয়াছিলেন সেই সোমলতার একটী পত্র ছিন্ন হইয়া পৃথিবীতে পতিত হয় তাহা হইতেই পলাশ উৎপন্ন ও গায়ত্রীর সম্বন্ধ নিবন্ধন উহা ব্রহ্মরূপ বলিয়া প্রতিপন্ন হইল। এই জন্যই পলাশ শাখা দ্বারা বৎসগণকে পৃথক করা বিধেয়।

"ইষেত্বা" ও "উর্জ্জেত্বা" এতন্মন্ত্রদ্বয় দ্বারা পলাশ শাখা ছেদন করিবে। "ইষেত্বা" অর্থাৎ বৃষ্টির জন্য, হে পলাশ শাখে! তোমাকে ছেদন করিতেছি। উক্ত বৃষ্টি দ্বারা অন্নাদি উৎপন্ন হইবে এই নিমিত্ত তোমাকে সংনমন করিতেছি।

ফতেগড়স্থ পণ্ডিত শ্রীউমাদত্ত কৃত অর্থ—দর্শপৌর্ণমাস যাগ জন্যই বাস্তবিক যজুর্ব্বেদান্তর্গত এই কাণ্ডটী উক্ত হইয়াছে। ইহাতে পাঁচটী মন্ত্র আছে। দর্শপৌর্ণমাস যাগে তিন২ দবিঃ হইয়া

देवोव इति मातृणमेकां व्याकृतैन्द्रं भवति मा इन्द्रं वेति।

कात्यायन सूत्र। ४।

अर्थ। "इषेत्वा" इस मंत्र करके पलाश शाखा अथवा समीशाखा छेदन करे, "ऊर्ज्जेत्वा" इस मंत्र करके (संनमयामि) नमावे, इन दोनोंही मंत्रमें क्रिया पदकी आकांक्षा रही। "वायवस्था" इस मंत्र करके माताओंसे बत्सोंको मिलाकर एक बत्सको पलाश शाखासे स्पर्श करे। "देवोव" मंत्र करके एक गौको पृथक करे, उसका क्षीरादिक इन्द्र देवताका होता है। "यजमानस्य पशून पाहि" इस मंत्र करके अग्निहोत्र स्थानके आगे पलाश शाखाको स्थापन पूर्व्वक प्रार्थना करे इति।

शत पथ ब्राह्मण।

यजमानस्य पशूनित्यग्न्यागारस्यान्तरस्य पुरस्ताच्छाखामुपगूहतीति। श: प: १।५।४।१।८।

सर्व्वे पर्णशाखया वत्सान् पाकरोति। यत्र वै गायत्री सोम मच्छा पतत्तदस्या आहरन्त्या अपादस्ताभ्यायत्यर्पण्यं प्रचिच्छेद गायत्रै वा सोमस्य वा राज्ञस्तस्यति वा पर्णो भवतस्मात् पर्णो नाम (पलाश) शाखया वत्सान पा करोति॥ १॥

तमाच्छिनत्ति इषेत्वोर्ज्जेत्वेति वृष्टैतदाह यदा हैषे त्वोर्ज्जेत्वेति या वृष्ट्यादूर्ग्रसो जायते तस्मै तदाह॥ २॥

भावार्थ। सो यज्ञकर्त्ता पर्णशाखासे बत्सोंको पृथक करता है। एक समय में गायत्री पक्षीरूप धारण कर स्वर्गस्थ सोम का ग्रहण करनेकी सम्मुख धावन करी थी। उसही समय में सोमलताका एक पत्र छिन्न होके पृथ्वीपर गिरा उसमेंसे पलाश उत्पन्न हुआ। गायत्रीका सम्पर्क से वह ब्रह्म रूप हुआ। इस लिये पलाश शाखा करके बत्सोंको पृथक करना चाहिये। इषेत्वा और ऊर्ज्जेत्वा इस मंत्र करके उस पलाश शाखा को छेदन करता है। "इषेत्वा" अर्थात् वृष्टिके अर्थ, हे पलाश शाखे तुमको छेदन करते हैं। उस वृष्टिसे अन्नादि रसके अर्थ तुमको संनमन करते हैं।

फतेगढ़स्थ पण्डित श्रीउमादत्त कृत अर्थ। "वास्तव से यजुर्व्वेदका एकाण्ड दर्श पौर्ण मास याग की है। दर्श पौर्णमास यागमें तीन तीन हवि: होते हैं। अग्निदेवताका पुरोडाश, इन्द्र देवता

থাকে। অগ্নিদেবতার পুরোডাস ও ইন্দ্রদেবতার দধি ও দুগ্ধ। অমাবস্যাতে অগ্নিহোত্র করিয়া প্রতিপদ প্রাতঃকালে দধি হবন করিতে হয়, সেই দধির হবনই যাগোপযোগী হইয়া থাকে। এবং দধি মন্ত্রপূত করিয়া জমাইতে হয়। এই জন্যই পলাশ শাখা ছেদন, সংনমন, বৎসকে স্পর্শ ও তাহাকে পৃথক্ করণ, গাভীকে যজ্ঞশালায় রক্ষণ, অন্যান্য গাভীগণকে বনে প্রেরণ, গৃহস্থিত গাভীর দুগ্ধে দধি প্রস্তুত ও তদনন্তর তদ্দ্বারা হবনাদি করা বিধেয়।

লেখকের মন্তব্য দয়ানন্দকৃত "হে মানবগণ" ইত্যাকার সম্বন্ধ তাঁহার স্বকপোল কল্পিত বোধ হইতেছে, কেননা শতপথ ব্রাহ্মণ অথবা কাত্যায়ন সূত্রে এরূপ সম্বোধন নাই। আর্য্যমত পরিবর্ত্তনান্তর নিজ মত প্রতিষ্ঠা পূর্ব্বক প্রতিপন্ন হইবার মানসে আর্য্যদিগের সর্ব্ব শাস্ত্র শিরোমণি একমাত্র বেদবাণীর মধ্যে এ কপোল কল্পনা জাল বিস্তার করিয়া তিনি অতীব গর্হিত কার্য্য করিয়াছেন। ইহাতে বেদার্থ বিচারানভিজ্ঞ অনেক ব্যক্তিই তাঁহার ভাষার্থ মাত্র পাঠ করিয়াই বিপথগামী ও বিপদগ্রস্ত হইবার সম্ভাবনা। বস্তুতঃ পলাশ শাখার সম্বোধনই এখানে সুলভ। ইহা দ্বারা সপ্রমাণ হইতেছে যে পণ্ডিত উমাদত্ত কৃত অর্থ মহীধর কৃত অর্থের অনুগত ও শতপথ সম্মত। দয়ানন্দ কৃত বেদভাষ্য যদি সর্ব্বত্রই এইরূপ অসমীচীন অর্থে প্রকাশিত হইয়া থাকে তবে তাহা আর্য্য ধর্ম্মাবলম্বীদিগের অগ্রাহ্য ও নিতান্ত অনর্থকর হইয়াছে। সংস্কৃত ভাষার এক এক শব্দের অনেকানেক অর্থ হইয়া থাকে; কিন্তু যথাযোগ্য স্থান, প্রকরণ আদি বিচার পূর্ব্বক যদি অর্থ ব্যাখ্যা না করা হয়, তাহা হইলে সদর্থ প্রকাশ হওয়া অতীব দুষ্কর হইয়া উঠে। কর্ম্মকাণ্ডীয় মন্দ উপাসনা কাণ্ডে গ্রহণ লোক-প্রতারণা মাত্র। পণ্ডিতগণ এতদ্দ্বারা সিদ্ধান্ত করিয়া লইবেন যে, আজকাল "সরস্বতীই" স্বয়ং নিজ কুহকজালে লোক প্রবঞ্চনা করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছেন।

সম্পাদকের রাজ-সাক্ষাৎকার।

কিয়দ্দিবস অতীত হইল, মতিহারী আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভা কর্ত্তৃক আহূত হইয়া আমি চম্পারণে গমন করিয়াছিলাম। মতিহারী সভার অবস্থা ও তাহাতে সাধারণের সহানুভূতি দর্শনে পরম

दधि वो दुग्ध। अमावस्या का दिन अग्निहोत्र करके प्रतिपद्‌के दिन प्रातःकाल दधिका हवन होता है। वह दधि मंत्रपूत करके (जमाई जाती है; तदर्थ पलाश शाखा छेदना, संनमन, वत्सको स्पर्श ना, पृथक करना, एक गौको यज्ञशालामें रखना, अन्य गौओंको वनमें भेजना, गृहस्थित गौका दुग्ध से दधि जमावना, तदनन्तर हवनादि करना कर्त्तव्य है।

लेखकका अभिप्राय। दयानन्दका "हे मनुष्य लोगो! यह सम्बोधन निज कपोल-कल्पित बोध होता है। क्योंकि शत पथ ब्राह्मण अथवा कात्यायन सूत्रमें यह सम्बोधन नहीं मिलता है। ऋषियोंके मत के बदले निज मतको प्रतिष्ठा पूर्व्वक प्रतिपन्न होनेकी इच्छा से आर्य्य लोगोंके सर्व्वशास्त्र-शिरोमणि एकमात्र वेदवाणीके मध्य में स्वकपोल कल्पना जाल विस्तार करके उन्होंने अतीव गर्हित कार्य्य किया। इस से इतनीही पूरी सम्भावना हैं कि बहुत सा लोग जिन्होंने वेदार्थ विचारने में समर्थ नहीं, वे इनका बनाया हुआ भाषार्थ मात्र पढ़ कर कुराह पर जाते हैं। विपद्‌ग्रस्त होंगे। वस्तुतः यहां पलाश शाखाका सम्बोधन सुलभ है। इस से प्रमाण होता है कि पण्डित उमादत्त कृत अर्थ महीधर कृत अर्थके पोषक वो शतपथ सम्मत है यदि दयानन्द कृत वेद भाष्य इसही रीति सर्व्वत्र असमीचीन अर्थ करके पूर्ण होय तो वह आर्य्य धर्म्मावलम्बीयोंके अग्राह्य वो नितान्त अनर्थकर हुआ। संस्कृत भाषाका हरेक शब्द नानार्थ बोधक है, किन्तु यदि यथायोग्य स्थान, प्रकरण आदि विचार पूर्व्वक अर्थ न लगाया जाय तो सदर्थ प्रकाश होना अतीव कठिन है। कर्म्मकाण्डीय मंत्र उपासना काण्डमें ग्रहण करना लोक भुलावना है। पण्डित लोग उपरोक्त व्याख्यान से समझ लेवें कि आज कल सरस्वतीही स्वयं निज मोहन मंत्र करके लोग भुलाने में तत्पर हुए।

सम्पादक का राज दर्शन।

थोड़े दिन अतीत हुआ, मतिहारी आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभासे बुलाये हुये मैं चम्पारण्य में गया था। मतिहारिस्थ सभाकी अवस्था औ उसपर सर्व्व साधारणकी सहानुभूति देखकर परमप्रीति ला-

প্রীতি লাভ করিলাম সভার সম্পাদক মান্যবর শ্রীযুত বাবু উপেন্দ্রনাথ গঙ্গোপাধ্যায় ও বাবু দরবারিলাল প্রভৃতির অনুরোধে তথায় "সৎসঙ্গ" প্রসঙ্গে একটী বক্তৃতা করিলাম। তদনন্তর আর্য্য কুল ভূষণ বেতিয়াধিপতির অভিপ্রায়ানুসারে আমি উক্ত বাবুদ্বয় ও শ্রীযুক্ত কান্তিচন্দ্র মুখোপাধ্যায় মহাশয় সমভিব্যাহারে বেতিয়ায় গমন করিলাম। তথায় প্রথমে ধীর প্রকৃতি ধীশক্তি সম্পন্ন শ্রদ্ধাভাজন শ্রীশ্রীশ্রীশ্রীমন্মহারাজকুমার হরেন্দ্রকিশোর সিংহ বাহাদুরের সহিত শুভ সাক্ষাৎ হইল। তাঁহার সদুৎসাহ, ধর্ম্মভার ও আর্য্য প্রতিভা দর্শনে পরম পুলকিত হইলাম। তিনি ইতিপূর্ব্বে হইতেই আমাদের কার্য্যের বিষয়ও ভারতে সনাতন আর্য্যধর্ম্মের পুনঃ প্রচারাদি চেষ্টার আভাস বিদিত ছিলেন, এক্ষণে আমার প্রমুখাৎ ভারতের বর্ত্তমান দুর্দ্দিনে আর্য্যধর্ম্মের পুনরুদ্দীপনা ও সংস্কৃত ভাষার উন্নতি সাধনের আবশ্যকতার বিষয় বিশেষরূপ অবগত হইয়া অধীর আনন্দ প্রকাশ করিলাম এবং তজ্জন্য কোন সাহায্য প্রার্থনা করিবার পূর্ব্বেই তিনি স্বয়ং অতি উৎসাহকর বাক্যে বলিলেন যে এই গুরুতর কার্য্যের জন্য আমার দ্বারা যত দূর অর্থ সাহায্য হওয়া সম্ভব তাহা আমি করিব। প্রচার কার্য্যের জন্য তিনি আমার প্রতি যে রূপ ভাবে সহানুভূতি প্রকাশ করিয়াছিলেন, আত্ম-গৌরব প্রকাশ জন্য প্রমাদভয়ে তাহা উল্লেখ করিতে সঙ্কুচিত হইলাম তাহার উদার প্রকৃতি ও ধর্ম্মোৎসাহ দর্শনে আমি মনে মনে তাঁহাকে শত শত সাধুবাদ না দিয়া থাকিতে পারিলাম না।

তৎপরদিন ভগবচ্চরণ পরায়ণ আর্য্য কুলাভরণ গুণগ্রাহীগণাগ্রগণ্য মহামান্য বদান্যবর শ্রীশ্রীশ্রীশ্রীশ্রীমন্মহারাজা রাজেন্দ্রকিশোর সিংহ বাহাদুর সদয় সাধু হৃদয় মহোদয়ের সহিত শুভ সাক্ষাৎকার হইল। তাঁহার পবিত্র প্রবীণ মূর্ত্তি দর্শন করিলেই ভক্তি ও শ্রদ্ধার উদয় হয়। যিনি কখন সৌভাগ্যক্রমে একবারও তাঁহার শুভ দর্শন লাভ করিয়াছেন তিনি তাঁহার বচন মাধুর্য্য, ঔদার্য্য, শান্ত স্বভাব, বিনয়, নিরভীমানীতা ইষ্টদেবনিষ্ঠা, পরহিত ব্রত আদি দেবোপম সদ্গুণরাশির প্রশংসা না করিয়া থাকিতে পারেন না। এপর্য্যন্ত কোন প্রার্থী রিক্ত হস্তে তাঁহার নিকট হইতে প্রতিনিবৃত্ত হয় নাই। তাঁহার প্রত্যেক প্রজার মুখে

भ किया। सभा के सम्पादक मान्यवर श्रीयुत बाबू उपेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय वो बाबू दरवारीलाल आदि के अनुरोध से मैंने वहां "सत् संग" के आश्रय पर एक वक्तृता करी। तदनन्तर आर्य्यकुल भूषणबेतियाधिपति का अभिप्राय अनुसार मैंने उन दोनों बाबूयें वो श्रीयुक्त बाबू कान्तिचन्द्र मुखोपाध्याय महाशयके संग बेतिया में जा पहुंचा। वहां प्रथमत: धीर प्रकृति धीशक्ति सम्पन्न श्रद्धाभाजन श्रीश्रीश्रीश्रीमन्महाराजकुमार हरेन्द्र किशोर सिंह बहादुरका शुभ दर्शन पाया। उनके सदुत्साह धर्म्मभाव वो आर्य्य प्रतिभा देखकर परम पुलकित हुआ। उन्होंने इसका पूर्व्व ही से हमारे कार्य्य के अभिप्राय बिदित था और एतना आभास भी पाया था कि भारतवर्ष में सनातन आर्य्यधर्म्मका पुनर्व्वार प्रचारके लिये चेष्टा करी जाती है। भारतवर्षको वर्त्तमान दुर्द्दशाके दिन आर्य्य धर्म्मकी पुनरुद्दीपनाओ संस्कृतभाषाकी उन्नति साधन की आवश्यकताके विषय मेरे मुंहसे आब विशेष रूप बिदित हुये अत्यन्त आनन्द प्रकाश किया और तदर्थ कोइ साहाय्य प्रार्थना करने का अवसर दिये बिना उन्होंने अति उत्साहयुक्त वचनसे बोला कि इस गुरुतर कार्य्यके वास्ते हमसे जहांतक हो सके तहांतक मैं मदद करूंगा। प्रचार कार्य्यके निमित्त उन्होंने मुझपर जिस भांतिसे सहानुभूति प्रकाश किया सो लिखने में मैं संकोच मानता हूं, क्योंकि उससे आत्मगौरव प्रकाशार्थ मेरी हानि पहुंचेगी। उनकी उदार प्रकृति वो धर्म्मका उत्साह दर्शनकर हृदयमें उनको शत शत साधु बाद दिये बिना मुझे नहीं रहा गया।

तदनन्तर द्वितीय दिनमें भगवत चरण परायण आर्य्य कुलाभरण गुणग्राही गणाग्रगण्य महामान्य बदान्यवर श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीमन्महाराजा राजेन्द्रकिशोर सिंह बहादुर सदय साधु हृदय महोदय के शुभ दर्शन प्राप्त हुआ। उनकी पवित्र प्रवीणमूर्त्ति दर्शन करनेहीसे भक्ति वा श्रद्धा उपजती है। जिन्होंने सौभाग्य करके एकबार भी उनका शुभदर्शन लाभ किया उन्होंने उनके वचन माधुर्य्य, औदार्य्य, शान्त स्वभाव, बिनय, निरभिमानीता इष्टदेवनिष्टा परहित व्रत आदि देवोपम सद्गुणो की प्रशंसा किये बिना रह नहीं सकती हैं। अवतक किसी याचक ने उनके निकटसे खाली हाथ नहीं लौटा। उनका हरेक प्रजाके मुंहसे उनकी गुणानुवाद सुनी जाती

তাঁহার গুণগাথা শুনিতে পাওয়া যায়। শ্রীমন্মহারাজার অভিপ্রায়ানুসারে মহারাজকুমার প্রধান সদস্য, মণ্ডলী, ও অন্যান্য সহস্রাধিক লোক পরিবেষ্টিত মহারাজার সম্মুখে একটী অনতিদীর্ঘ বক্তৃতা করিলাম। তৎপরদিন বিদায়কালে তাঁহার সহিত যে বার্ত্তালাপ হইল তাহাতে তিনি আমাদের কার্য্য সম্বন্ধে যথেষ্ট সহানুভাবকতা প্রদর্শন করিলেন এবং আর্য্যধর্ম্মের পুনঃ প্রচার কার্য্যের জন্য যথোচিত অর্থ সাহায্যার্থ প্রসন্ন বদনে প্রতিশ্রুত হইলেন। সেই দিন মহারাজকুমারের নিকটও বিদায় লইলাম। তিনি আমার বেতিয়ায় পুনর্গমন সম্বন্ধে ইচ্ছা ও অনুরাগ প্রকাশ করিলেন। আমি জীবন সত্বে তাঁহাদের ভদ্রোচিত সৎকার ও শিষ্টাচার বিস্মৃত হইব না। ব্রাহ্মসমাজ কর্ত্তৃক যে বঙ্গ বিভাগে সনাতন আর্য্যধর্ম্মের যথা কথঞ্চিৎ ক্ষতি হইয়াছে ও হইতেছে, তজ্জন্য শ্রীমন্মহারাজা ও মহারাজকুমার সাতিশয় বিরক্তি ও ক্ষোভ প্রকাশ করিলেন। ব্রাহ্মগণের আচার ব্যবহারকে তাঁহারা অন্তরের সহিত ঘৃণা করিয়া থাকেন। তাঁহার রাজ্যে (মতিহারীতে) আর্য্য ধর্ম্মপ্রচারিণী সভা সংস্থাপিত হইয়া রাজ্যের মুখোজ্জ্বল করিয়াছে বিদিত হইয়া তাঁহারা সাতিশয় প্রীতি প্রকাশ করিলেন এবং তৎসভারও নিয়মিত সাহায্য করিবেন, স্বীকার করিয়াছেন।

মহারাজ ভবনে সুযোগ্য বাঙ্গালীগণেরও বিশেষ সমাদর দৃষ্ট হইল। তাঁহার সভায় ভট্টপল্লী নিবাসী জনৈক পরমোদার প্রকৃতি শাস্ত্র জ্ঞান সম্পন্ন পণ্ডিত আছেন। তাঁহার চিকিৎসালয়াধ্যক্ষ ও চিকিৎসকও আমাদের বাঙ্গালী তাঁহার নাম মান্যবর শ্রীযুক্ত বাবু জয়গোপাল মুখোপাধ্যায়। ইনি মহারাজার একজন প্রিয়ভাজন, শান্তপ্রকৃতি ও সুচিকিৎসক। ইনি পাশ্চাত্য বিদ্যায় ব্যুৎপন্ন হইয়াও আর্য্যধর্ম্মের ও ভারতীয় ভাবের নিতান্ত অনুরাগী! ইহার সজ্জনোচিত সৎকারে আমরা পরিতৃপ্ত হইয়াছি রাজভবনের ইঞ্জিনিয়ার শিল্পচতুর মাননীয় শ্রীযুক্ত বাবু অম্বিকাচরণ গঙ্গোপাধ্যায় মহাশয়ও বঙ্গদেশবাসী তাঁহার তুল্য ধীর ও শান্ত স্বভাবের লোক অতি অল্পই দৃষ্ট হয়। তাঁহার সদ্ব্যবহার ও আমাদের কার্য্যের সহযোগীতা জন্য তিনি আমাদের চিরস্মরণীয়।

পাঠক মহোদয়গণ! শ্রীমন্মহারাজা ও মহারা-

है। महाराज कुमार, प्रधान सदस्य मण्डलीयो अन्यान्य सहस्राधिक लोगोंसे परिबेष्टित महाराजके सम्मुख उनका अभिप्राय अनुसार मैंने एक अनति दीर्घ बक्तृता करी। तत परदिन मेरा बिदाय कालमें उनसे जो बार्त्तालाप हुई थी उस समय उन्होंने हमारे कार्य्यके ओर यथोचित सहानुभावकता देखाई और आर्य्यधर्म्मका पुनः प्रचारके अर्थ प्रसन्न बदन कमल से स्वीकार किया कि यथोचित साहाय्य करेगा उसी दिन महाराज कुमारसे भी बिदाय लिया; उन्होंने मेरा बेतिया में पुनर्गमनार्थ इच्छावो अनुराग प्रकाश करी। मैं जीवन भरमें उन्होंके भद्रोचित सत्कार शिष्टाचार न भुलूङ्गा! ब्राह्मसमाजोंके द्वारा बङ्ग बिभागमें सनातन आर्य्यधर्म्म को जो कुछ हानि हुई वो होती जाती है तन्निमित्त श्रीमन्महाराजा वो महाराजकुमार अत्यन्त बिरक्ति वो खेद प्रकाश किया। ब्राह्मलोगोंके आचार व्यवहारादिको उन्होंने दिलसे घृणाकी करती है। उनके राज्यमें (मतिहारी; में) आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा संस्थापित होती हुई जो राजका मुखोज्ज्वल करी इससे उन्होंने सातिशय आनन्द प्रकाश किया और उस सभाको नियमित सहायता करनेमें भी स्वीकार किया।

महाराज भवनमें सुयोग्य बंगदेश वासियोंके भी समादर दृष्ट हुआ। उनकी सभामें भट्टपल्ली निवासी एक पण्डित रहते हैं। उन्होंने परमोदार प्रकृति वो शास्त्रज्ञान संपन्न हैं। उनके चिकित्सालयाध्यक्ष वो चिकित्सक भी हमारे एक बंगाली हैं। उनका नाम मान्यवर श्रीयुक्त बाबू जयगोपाल सुखोपाध्याय। इन्होंने महाराजाके प्रियभाजन, शान्त प्रकृति वो सचिकित्सक है। इन्होंने अंगरेजी बिद्यासे व्युत्पन्न हुये भी आर्य्यधर्म्म वो भारतिय भावके एकान्त अनुरागी हैं। इनका सज्जनोचित सत्कारसे हम परितृप्त हुये। राजभवनके इञ्जीनियार शिल्पचतुर माननीय श्रीयुक्त बाबू अम्बिकाचरण गङ्गोपाध्याय महाशय भी वंगदेश बासी है। इनका तुल्य धीर वो शान्त स्वभाव का पुरुष अति अल्प देखा जाता हैं। तिनका सद्व्यवहार वो हमारे कार्य्यकी सहयोगिता के लिये उन्होंने हमारे चिरस्मरणीय रहा।

জকুমার আমাদের প্রস্তাবিত ভারতের এই গুরুতর কার্য্যে কি রূপ সাহায্য করেন, ইহা জানিবার জন্য আপনারা ব্যগ্র হইয়াছেন। আশা করি তাঁহারা "শুভস্য শীঘ্রং" স্থির করিয়া নিজনিজোচিত দেয় অর্থ প্রেরণ করিবেন। আমরাও প্রফুল্লচিত্তে কৃতজ্ঞতা পূর্ব্বক তত্তাবৎ প্রাপ্তি স্বীকার করিয়া আপনাদিগের আনন্দ বর্দ্ধন করিব।

বিশেষ দ্রষ্টব্য।

ভারতবর্ষের দেশ দেশান্তরে সনাতন আর্য্য ধর্ম্মের (ধর্ম্মপ্রচারাদি নিয়োগ দ্বারা) পুনরুদ্দীপনার্থ ও স্থানে স্থানে সংস্কৃত বিদ্যালয়াদি প্রতিষ্ঠা পূর্ব্বক সংস্কৃত ভাষার পুনরুন্নতি বিধানার্থ আমাদিগের প্রস্তাবিত এক লক্ষ টাকার মূল ধনের পূরণ জন্য এককালীন দান স্বীকার।

রায় অন্নদাপ্রসাদ রায় বাহাদুর, কাশিমবাজার	৪০০০৲
শ্রীযুক্ত বাবু রামপ্রসাদ দাস মুঙ্গের	২০০৲
সৈয়দপুর উন্নতি বিধায়িনী সভা (প্রাপ্ত)	২০৲
মতিহারী আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভা ঐ	২০৲
বিবিধ ঐ	১৫৫৲
শ্রীযুক্ত বাবু আশীর্ব্বাদজীপ্রসাদ বরহরোয়া ঐ	১২৲

আশা করি ভারতহিতৈষি মহাত্মা মাত্রেই আমাদের প্রস্তাবিত এই গুরুতর কার্য্যে মহানুভাবকতা ও সহায়তা করিবেন। ধর্ম্মার্থে ও ভারতহিতার্থে যাঁহার যাহা সাধ্য তাহা অনুগ্রহ পূর্ব্বক মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভায় ধর্ম্মপ্রচারক পত্র সম্পাদকের নামে পাঠাইবেন। ধর্ম্মপ্রচারকে ও অন্যান্য প্রকাশ্য সংবাদ পত্রে তত্তদ্দান প্রাপ্তি কৃতজ্ঞতাসহ স্বীকৃত হইবে। ভগবান্ দাতৃবর্গের কল্যাণ করিবেন। এককালীন দান ভিন্ন মাসিক বৃত্তি প্রার্থনীয় নহে।

মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম-প্রচারিণী সভা। শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন। সম্পাদক।

पाठक महोदयगण! आप लोग इस लिये व्याग्र हुये होंगे कि श्रीमन्महाराजा और महाराजकुमार ने हमारे प्रस्तावित भारतवर्षका इस गुरुतरकार्य्य में किस भांति साहाय्य करें। मैं आशा करता हूं कि उन्होंने "शुभस्य शीघ्रं," स्थिर जानकर निज निजोचित दान योग्य अर्थ प्रेरण करेंगे। हम भी प्रफुल्लचित्त से कृतज्ञतापूर्व्वक तिसकी प्राप्ती स्वीकार करके आप लोगोंके आनन्द बर्द्धन करेंगे।

विशेष द्रष्टव्य।

हमारे प्रस्तावित एक लक्ष रुपये के मूल धन की जोमे इस लिये जमा करी जाती है, कि धर्म्म प्रचारकादि नियत करके भारतवर्षीय देश देशान्तर में सनातन आर्य्यधर्म्मकी पुनरुद्दीपना वो स्थान स्थान में संस्कृत विद्यालय आदि प्रतिष्ठा पूर्व्वक संस्कृत भाषाकी पुनरुन्नति की जाय, तदर्थ एककालिन दान स्वीकार।

राय अन्नदाप्रसाद राय बहादुर काशिमबाजर		४०००)
श्रीयुक्त बाबू रामप्रसाद दास मुंगेर		२००)
सैयदपुर उन्नति बिधायिनी सभा (प्राप्त)		२०)
मतिहारी आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभा	,,	२०)
विविध	,,	१५५)
श्रीबाबू आशीर्बाद जी प्रसाद	,,	१२)

हम आशा करते हैं कि भारतके हित चाहनेहारे महात्मामात्र ही हमारे प्रस्तावित इस अतीव गुरुतर कार्य्यमें महानुभावकता वो सहायता करेंगे। धर्म्मार्थ वो भारतका हितार्थ जिन्होंने जो कुछ देसके सो अनुग्रह पूर्व्वक मुंगेर आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा में धर्म्मप्रचारक पत्र सम्पादकके नाम से भेजें। धर्म्मप्रचारक वो अन्यान्य प्रकाश्य सम्वाद पत्रो में कृतज्ञता पूर्व्वक दान प्राप्ति स्वीकार की जायगी। भगवान दाता ओंका कल्याण करें। एककालिन दान छोड़के मासिक वृत्ति प्रार्थनीय नहीं है।

मुङ्गेर आर्य्यधर्म्म-प्रचारिणी सभा। श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन। सम्पादक।

এই পত্র প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন কর্ত্তৃক প্রকাশিত হইয়া থাকে।

"এক এব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমং নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি।।"

"एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥"

৪ র্থ ভাগ। শকাব্দা ১৮০২।
৩৭ সংখ্যা। অগ্রহায়ণ পূর্ণিমা।

४ र्थ भाग। शकाब्दा १८०२।
३७ संख्या। अग्रहायण पूर्णिमा।

রাম গীতা।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।)

উপসংহার।

রহস্যমেতচ্ছ্রুতি সার সংগ্রহং
ময়া বিনিশ্চিত্য তবোদিতং প্রিয়াৎ।
যস্ত্বে তদালোচয়তীহ বুদ্ধিমান্
সমুচ্যতে পাতক রাশিভিঃ ক্ষণাৎ।। ৫৯।।

যদিও শ্রুতি সমুহের সার সংগ্রহ অত্যন্ত গুহ্যতম তথাপি তোমার কল্যাণের জন্য আমি তত্ত্বাবতের স্থির সিদ্ধান্ত করিয়া কহিলাম। যে ধীমান্ পুরুষ এই শ্রুতিসার সংগ্রহ পর্য্যালোচনা করেন তিনি তৎক্ষণাৎ সমস্ত পাপ হইতে বিমুক্ত হয়েন।

জ্ঞান শাস্ত্র আলোচনা করিলে অজ্ঞান বুদ্ধি বিনষ্ট হইয়া যায়, এবং জ্ঞানোদয় জন্য অজ্ঞানকৃত কর্ম্মও ভস্মীভূত হয়।

राम गीता।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

उपसंहार।

रहस्यमेतच्छ्रुति सार संग्रहं
मया विनिश्चित्य तवोदितं प्रियात्।
यस्त्वे तदालोचयतीह बुद्धिमान्
समुच्यते पातकराशिभिः क्षणात् ॥५८॥

यदिच श्रुति समूहके सारसंग्रह अतीव गुह्य हैं तथापि तुम्हारा कल्याणार्थ मैं ने उनसबों का स्थिर सिद्धान्त करके कह दिया। जो धीमान् पुरुष इस श्रुति सार संग्रह की पर्य्यालोचना किये करते, उन्होंने उसही क्षणमें समस्त पापसे विमुक्त हो जाता हैं।

ज्ञान शास्त्र की आलोचना करके अज्ञान बुद्धि विनष्ट हो जाती है औ ज्ञानोदय होने से अज्ञान से किया हुआ कर्म्म भी भस्मीभूत हो जाता है।

ভ্রাতর্যদীদং পরিদৃশ্যতে জগ-
ন্মায়ৈব সর্ব্বং পরিহৃত্য চেতসা।
মদ্ভাবনা ভাবিত শুদ্ধ মানসঃ
সুখী ভবানন্দ ময়ো নিরাময়ঃ ।। ৬০ ।।

হে ভ্রাতর্লক্ষ্মণ! যদিচ এই জগৎ স্পষ্টতঃ দৃষ্ট হইয়া সত্যবৎ প্রতীত হইতেছে তথাচ এই সমস্ত বস্তুকে মায়াময় মিথ্যা জানিয়া মন দ্বারা তৎসমস্ত পরিত্যাগ পূর্ব্বক পরমাত্মা স্বরূপ আমার সত্ত্বা চিন্তায় নিমগ্ন ও বিশুদ্ধ চিত্ত হইয়া সুখী হও এবং পুনঃ পুনঃ জন্ম মরণাদি রূপ ব্যাধি বর্জ্জিত হইয়া সচ্চিদানন্দ স্বরূপে বিরাজ কর।

যঃ সেবতে মামগুণং গুণাৎ পরং
হৃদা কদা বা যদি বা গুণাত্মকং।
সোহং স্বপাদাঞ্চিত রেণুভিঃ স্পৃশন্
পুণাতি লোক ত্রিতয়ং যথা রবিঃ।। ৬১ ।।

যেমন রবি কিরণ জালে ভুবন পবিত্র হয় তদ্রূপ যে ভক্ত ব্যক্তি নির্ম্মল চিত্তে আমাকে মায়াতীত ও ত্রিগুণ রহিত বিদিত হইয়া অর্থাৎ আমিই পরব্রহ্ম ঈদৃশ অভেদবুদ্ধিতে আমার পূজা করেন কিম্বা লীলাদিকালে আমাকে সত্ব গুণাত্মক জানিয়া আরাধনা করেন তাঁহার চরণরেণু স্পর্শে, ত্রিলোক পবিত্র হইয়া থাকে।

এতৎ শ্লোকে ভক্তবৎসল ভগবান্ অনুরক্ত সেবকগণের সম্মাননা ও সম্বর্দ্ধনা করিয়া অভেদ ভাবের পরাকাষ্ঠা প্রদর্শন করিলেন।

বিজ্ঞানমেতদখিল শ্রুতি সারমেকং
বেদান্ত বেদ্য চরণেন ময়ৈবগীতং।
যঃ শ্রদ্ধয়া পরিপঠেদ্গুরুভক্তি যুক্তো
মদ্রূপ মেতি যদি মদ্বচনেষু ভক্তিঃ।। ৬২ ।।

বেদান্ত বেদ্য পাদপদ্ম বিশিষ্ট আমার কথিত সমস্ত শ্রুতির সারভাগ স্বরূপ এই গীতা যিনি শ্রদ্ধা পূর্ব্বক পাঠ করেন, তিনি আমার বাক্যে বিশ্বাস করিলে, গুরুভক্তি যুক্ত হইয়া আমার সারূপ্য লাভ করেন।

ইতি শ্রীমদ্রামগীতা সমাপ্তা।

भ्रातर्यदीदं परिदृश्यते जग-
न्मायैव सर्व्वं परिहृत्य चेतसा।
मद्भावना भावित शुद्ध मानसः
सुखी भवानन्दमयो निरामयः ॥ ६० ॥

हे भ्रातर्लक्ष्मण! यदिच यह जगत स्पष्ट रूप देख पड़ता और सत्य मालुम होता है तथापि इन समस्त वस्तुओं को मायामय मिथ्या जानकर उन सबको मनसे परित्याग पूर्व्वक परमात्मा स्वरूप जो मैं हूं, मेरी सत्ताकी चिन्तामें निमग्न वो विशुद्ध चित्त हो कर सुखी होओ औ वारम्वार जन्म मरणादि रूप व्याधि से रहित होकर सच्चिदानन्द स्वरूप बने हुए विराज करते रहो।

यः सेवते मामगुणं गुणात्परं
हृदा कदावा यदिवा गुणात्मकं।
सोऽहं स्वपादाञ्चित रेणुभिः स्पृशन्
पुणाति लोक त्रितयं यथा रविः ॥ ६१ ॥

जैसा सूर्य्य किरण समूहसे धरित्री पवित्र हो जाती है उस ही रीत जो भक्त पुरुष निर्म्मल चित्त से मुझको मायातीत वो त्रिगुण रहित विदित हो कर अर्थात् मैं ही परब्रह्म हूं इस भांति अभेद बुद्धि करके मुझको पूजें अथवा लीलादि के समय सत्व-गुणात्मक जानकर आराधना करें ऐसे महात्मा का चरण रेणुका स्पर्शसे त्रिलोक पवित्र हो जाते हैं।

इस श्लोक करके भक्तवत्सल भगवानने अनुरक्त सेवकों की मर्य्यादा वो बड़ाई करके अभेद भाव की पराकाष्ठा देखलाई है।

विज्ञानमेतदखिल श्रुतिसारमेकं
वेदान्तवेद्य चरणेन मयैव गीतं।
यः श्रद्धया परिपठेद्गुरुभक्ति युक्तो
मद्रूपमेति यदि मद्वचनेषु भक्तिः ॥ ६२ ॥

वेदान्त आदि ज्ञान से विदित होने का योग्य पद कमल से युक्त मेरी कही हुई सारी श्रुति का सारांशरूप जो यह गीता है, श्रद्धा पूर्व्वक जो ने इस को पाठ करेगा, मेरी बातोंपर यदि उसका विश्वास रहे तो वह गुरु भक्तियुक्त होते हुए मेरा सारूप्य लाभ करेगा।

इति श्रीमद्रामगीता समाप्ता।

জীব, ঈশ্বর ও ব্রহ্ম।

জীব, ঈশ্বর ও ব্রহ্ম লইয়া বাদানুবাদ বৃথা জল্পনা মাত্র বলিয়া বোধ হয়, বস্তুতঃ তিনেই এক ও একেই তিন। একমাত্র ব্রহ্মই ভিন্ন ভিন্ন নামে শাস্ত্র ও লোক ব্যবহারের নিয়ামক, পালক ও রক্ষক হইয়া থাকেন। ব্রহ্ম শাস্ত্র ব্যবহারের নিয়ামক ও কেবল মাত্র শব্দের প্রমাণীভূত এবং জীব ও ঈশ্বর ইহলোক ও পরলোক নিয়ামক, পালক ও রক্ষক স্বরূপে প্রত্যক্ষ ও অনুমান প্রমাণীভূত সত্য। ব্রহ্ম শ্রুতি প্রামাণ্য, ঈশ্বর অনুমান প্রামাণ্য, জীব প্রত্যক্ষ প্রামাণ্য। ঈশ্বর পরলোক নিয়ামক, জীব ইহলোক নিয়ামক, ব্রহ্ম প্রমাণাতীত।

> তস্মান্মুমুক্ষুভির্নৈব মতি জীবেশ বাদয়োঃ।
> কার্য্যা কিন্তু ব্রহ্মতত্ত্বং বিচার্য্য বুধ্যতাঞ্চ তৎ॥

অতএব মুমুক্ষু মহোদয়গণের জীবেশ্বরাদি বাদ বিচারে প্রবৃত্ত হওয়া বিধেয় নহে কিন্তু শাস্ত্র দ্বারা সর্ব্বথা ব্রহ্মতত্ত্ব বিচার করিতে থাকিবেন। শাস্ত্রীয় রীতিতে ব্রহ্ম বিচার পূর্ব্বক অনুমান বা প্রগাঢ় পরিচিন্তন দ্বারা তাঁহার ঐশ্বর্য্য মনন করিয়া প্রত্যক্ষ আত্ম সত্তায় তাঁহাকে লাভ করিবে। বিচারার্থ দ্বৈত কল্পনার আশ্রয় না লইলে অদ্বৈত ব্রহ্মতত্ত্ব নির্ণয় হয় না, সুতরাং তত্ত্ববেত্তাগণও ঈশ্বর সংজ্ঞা দিয়া গুরু ও লঘু ভাব স্থাপন করিয়াছেন সত্য কিন্তু তত্ত্ববোধ উদয় হইলে এতাবৎ নিতান্ত নিষ্প্রয়োজন হইয়া পড়ে। যে কারণকে উপলক্ষ করিয়া এক বস্তুর ত্রিধা কল্পনা প্রতীতি হয়, সেই বস্তুর প্রতি লক্ষ্য স্থির রাখিয়া সেই কারণের অন্বেষণ করা দ্বৈতে বিচার ও অদ্বৈতে সিদ্ধান্ত লাভ হইয়া থাকে এই ষড়ৈশ্বর্য্যময়ী মায়া বা অবিদ্যা সেই কারণ বলিয়া কথিত হইয়াছেন। এক অখণ্ড চিদ্বস্তুতে এই মায়া ও অবিদ্যার অন্তরায় বশতঃ জীবেশ্বরময় দ্বৈত জগৎ প্রতিভাসিত হইতেছে, বিচার দ্বারা সেই কারণ বিদিত হইলে অখণ্ড চিদ্রূপ প্রত্যক্ষ হইবার কোন প্রতিবন্ধক থাকে না। এই প্রত্যক্ষের নাম অপরোক্ষানুভূতি, উক্ত অন্তরায়ও দুই প্রকার; আনন্দ ও বিজ্ঞান। মায়া আনন্দের মূল ও অবিদ্যা বিজ্ঞানের কারণ। ঈশ্বর মায়াবী আনন্দময় এবং জীব মায়িক (অবিদ্যাযুক্ত) বিজ্ঞান ময়। এ উভয়ই অদ্বৈত চৈতন্য স্বরূপ সত্তার

जीव, ईश्वर औ ब्रह्म।

जीव, ईश्वर वो ब्रह्म के विषय में वाद विवाद करना वृथा जल्पना मात्र बोध होती है; वस्तुतः तीनों ही में एक रूप वो एकही में तीनो रूप विद्यमान हैं। केवल एक ब्रह्म ही भिन्न भिन्न नाम से शास्त्र वो लोक व्यवहार का नियन्ता, पालन कर्त्ता वो रक्षा करनेहारे बनते हैं। ब्रह्म जो है सो शास्त्र व्यवहार का नियामक वो केवलमात्र शास्त्र प्रमाण के योग्य हैं, औ जीव वो ईश्वर इस लोक वो परलोक के नियामक, पालक वो रक्षक रूप करके प्रत्यक्ष वो अनुमान प्रमाण से सत्य ठहरते हैं। ब्रह्म श्रुति के प्रामाण्य, ईश्वर अनुमानके प्रामाण्य वो जीव प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। ईश्वर परलोक के नियामक वो जीव इस लोक का नियामक वो ब्रह्म प्रमाणातीत हैं।

> तस्मान्मुमुक्षुभिर्नैव मतिर्जीवेशवादयोः।
> कार्य्या किन्तु ब्रह्मतत्वं विचार्य्यबुध्यतां च तत्॥

अतएव जीवेश्वरादि के विषय में वाद वितण्डा करना मुमुक्षु महोदयोंके उचित नहीं, किन्तु केवल शास्त्रद्वारा सर्व्वथा ब्रह्म तत्त्व विचारते रहेंगे। शास्त्रीय रीति से ब्रह्मविचार पूर्व्वक अनुमान वा प्रगाढ़ चिन्तनद्वारा उनके ऐश्वर्य्य मनन करके प्रत्यक्ष आत्म सत्तामें उनको लाभ करेंगे। विचारके समय द्वैत कल्पना का आश्रय लिये विना अद्वैत ब्रह्मतत्व नहीं निरूपण होता है, सुतरां तत्त्ववेत्ताओंने जीव वो ईश्वर इतनी संज्ञा लगाकर गुरु वो लघु भाव स्थापन किया सही, किन्तु तत्त्वबोध होने से एतावत नितान्त निष्प्रयोजन हो पड़ते हैं। जिस जिस कारण को अवलम्बन करके एक वस्तुकी त्रिधा कल्पना प्रतीति होती है, उसही वस्तु के ओर लक्ष्य दृढ़ करके कारण का अन्वेषण करना आवश्यक है। द्वैत करके विचार वो अद्वैत भावसे सिद्धान्त लाभ होता है। षडैश्वर्य्यमयी माया वा अविद्याही वहां कारण करके कही गयी है। एक अखण्ड चिद्वस्तु में यही माया वा अविद्या का व्यवधान वशात् जीवेश्वरमय द्वैत जगत भासित हो रहा है। विचार के द्वारा उसही कारण को विदित होने पर अखण्ड चिद्रूप प्रत्यक्ष होनेमें कोई बाधा न रहेगी। इस प्रत्यक्षका नाम "अपरोक्षानुभूति" करके जानना। उक्त अन्तराय भी दो प्रकार के हैं; आनन्द वो विज्ञान। माया आनन्द का वो अविद्या विज्ञान का मूल कारण है। ईश्वर मायावी आनन्द मय वो जीव मायिक (अविद्यायुक्त) विज्ञान मय है। इन दोनों ही अद्वैत चैतन्य स्वरूप सत्ताकी

কল্পনা মাত্র। পুরুষের অবস্থা বিচার করিলেই এতাবৎ সংশয় বিদূরিত হইবে।

জীব ও ঈশ্বরে দ্বৈত জগৎ রহিয়াছে সেই জন্য স্থূল, সূক্ষ্ম ও কারণ এতচ্ছরীর ত্রয় দৃষ্ট হয়। এই শরীর ত্রয়ের নামই ত্রৈলোক্য। এই শরীর আছে বলিয়া অবস্থা ত্রিতয়ও বিদ্যমান রহিয়াছে। যথা বাল্য, যৌবন, জরা ও জাগ্রত স্বপ্ন ও সুষুপ্তি। একটী অঙ্কুরের যেমন দুইটী পত্র হয় তদ্রূপ এক মূলা প্রকৃতি মায়ার বিজ্ঞান ও আনন্দ নামক দুইটী বৃন্ত হইতে জীব ও ঈশ্বর কল্পনা করা নিতান্ত অমূলক নহে। যতদিন জীবের জীব ও ঈশ্বর বুদ্ধি থাকিবে ততদিন দ্বৈত জগৎও পরিদৃষ্ট হইবে এবং যখন অখণ্ড চৈতন্য স্বরূপ পরব্রহ্মে জীব ও ঈশ্বর-রূপ কল্পনা বিনষ্ট হইবে সেই সঙ্গে সঙ্গে দ্বৈত জগদ্ভাতিরও শান্তি হইয়া যাইবে। এই অবস্থাই প্রকৃত ব্রহ্মজ্ঞানের অবস্থা বলিয়া অভিহিত হইয়া থাকে।

"ঈক্ষণাদি প্রবেশান্তা সৃষ্টিরীশেন কল্পিতা,,

এতচ্ছ্রুতি বাক্য দ্বারা প্রতীতি হইতেছে যে ঈশ্বরই কর্ত্তা, কেননা পর্য্যালোচন হইতে অনুপ্রবেশ পর্য্যন্ত তাবদ্ব্যাপারই ঈশ্বরের কার্য্য; ব্রহ্মেতে কার্য্য আরোপিত হইল না, কেননা ব্রহ্ম চৈতন্যস্বরূপ নিষ্ক্রিয়। এখানে যেরূপ ব্রহ্মে ও ঈশ্বরে ভেদ ব্যপদেশ আছে তদ্রূপ জীব ও ঈশ্বরেও ভেদ প্রদর্শিত হইতেছে।

"জাগ্রদাদি বিমোক্ষান্তঃ সংসারোজীবকল্পিতঃ"

জাগ্রত হইতে মুক্তি পর্য্যন্ত সমুদয় ব্যাপারই জীবকল্পিত। জীবের বুদ্ধি হইতে এই সকল কার্য্য নিষ্ক্রান্ত হইয়া থাকে, এই জন্য বিজ্ঞানময় অবিদ্যাকোষস্থ চিৎ "জীব" নামে এবং পর্য্যালোচন হইতে অনুপ্রবেশ পর্য্যন্ত (লীলা) ব্যাপার মাত্রই মায়া কল্পিত, এই জন্য আনন্দময় কোষস্থ চিৎ "ঈশ্বর" নামে উক্ত হইয়াছেন।

"অদ্বিতীয় ব্রহ্মতত্ত্বে স্বপ্নোয়মখিলং জগৎ।
ঈশজীবাদিরূপেণ চেতনাচেতনাত্মকং"॥

ঈশ্বর জীব ও দেহ আদি সচেতন ও অচেতনাত্মক এই জগৎ সমস্ত একমাত্র অদ্বিতীয় ব্রহ্ম-চৈতন্যে কল্পিত। যেমন জীবাত্মায় বিশ্ব, তৈজস প্রাজ্ঞ এই তিন সংজ্ঞা; জাগ্রৎ স্বপ্ন ও সুষুপ্তি এই তিন ভাব, বাল্য, যৌবন, জরা এই তিন অবস্থা এবং প্রত্যক্ষ, অনুভব ও আকস্মিক জন্য সুখ দুঃখ

कल्पना मात्र है। पुरुष की अवस्था विचारने ही से एतावत सन्देह मिट जागे।

जीव वो ईश्वर में द्वैत जगत रहा है, तन्निमित्त स्थूल सूक्ष्म वो कारण इनतीनों शरीर देख पड़ते हैं। इन शरीर तीनों ही का नाम त्रैलोक्य है। इन शरीरों की वर्त्तमानता करके अवस्था तीनों भी विद्यमान रही हैं, यथा बाल्य; यौवन वो जरा औ जाग्रत स्वप्न वो सुषुप्ति। किसी अंकुर से जैसा दो पत्ते निकलते हैं वैसा ही एक मूला प्रकृति माया के विज्ञान वो आनन्द नाम दो वृन्तसे जीव वो ईश्वर नाम को कल्पना करना नितान्त अमूलक नहीं। जब तक जीव की जीव वो ईश्वर बुद्धि बनी रहेगी तब तक द्वैत जगत भी प्रतीत होगा औ जब जीव वो ईश्वर कल्पना अखण्ड चैतन्य स्वरूप परब्रह्म में मिट जावेगी उसका साथ ही साथ द्वैत जगत बोध की शान्ति भी हो जायगी इस ही अवस्थाको प्रकृत ब्रह्मज्ञान की अवस्था करके जानना।

"ईक्षणादि प्रवेशान्ता सृष्टिरीशेन कल्पिता"

यही श्रुति बचन से प्रतीति होती है जो ईश्वर ही कर्त्ता हैं क्योंकि पर्य्यालोचन से लेकर अनुप्रवेश पर्य्यन्त समस्त व्यापार ही ईश्वर की क्रिया हैं; ब्रह्म में कार्य्य न लगाया गया। क्योंकि ब्रह्म चैतन्य स्वरूप निष्क्रिय है। यहां जैसा ब्रह्म वो ईश्वर में भेद देखाया गया, तद्रूप जीव वो ईश्वर में भी भेद देखाया जाता है।

"जाग्रदादि विमोक्षान्त: संसारी जीव कल्पित:"

जाग्रदशा से लेकर मुक्ति पर्य्यन्त समस्त व्यापार ही जीवका कल्पित हैं। जीवकी बुद्धिसे इस सब कार्य्यने उत्था करता है इस लिये विज्ञानमय अविद्याकोषस्थ जो चित है वही "जीव" करके औ पर्य्यालोचन से लेकर अनुप्रवेश तक (लीला) समस्त कार्य्यही माया कल्पित हैं इस लिये आनन्दमय कोषस्थ जो चित् है वह "ईश्वर" करके उक्त होता है।

'अद्वितीय ब्रह्मतत्वे स्वप्नोयमखिलं जगत्।
ईश जीवादि रूपेण चेतनाचेतनात्मकं॥

ईश्वर, जीव वो देह आदि सचेतन वो अचेतनात्मक जितना जगत है सबही एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म चैतन्य पर कल्पित है। जैसा जीवात्मा पर विश्व, तैजस वो प्राज्ञ इनतीनों संज्ञा, जाग्रत स्वप्न वो सुषुप्ति इन तीनों भाव; बाल्य, यौवन, जरा

ও আনন্দভোগ কল্পিত হয়, তদ্রূপ ব্রহ্ম চৈতন্যে পরমাত্মা, ঈশ্বর, ভূতাত্মা, হিরণ্যগর্ভ বিরাট্ সংজ্ঞা ; সৃষ্টি, স্থিতি, প্রলয় এই তিন ভাব ; সত্ব, রজঃ ও তমঃ এই তিন অবস্থা, অধিভূত, অধিদৈব ও অধ্যাত্ম জনিত ভোগানন্দ, যোগানন্দ ও পরমানন্দ কল্পিত হইয়াছে।

আনন্দই কারণ ; আনন্দ কারণেই ঈশ্বরত্ব। উক্ত আনন্দ ষড়ৈশ্বর্য্য জন্য প্রযুক্ত মায়িক বা প্রাকৃতিক। স্বরূপানন্দে ভেদ ভাব নাই ; উহা অনন্ত ও অনুপম। জীব ও ঈশ্বরের আনন্দসাগর গোষ্পদ তুল্য সীমা শূন্য নহে। উপাস্য ও উপাসকের ভাবের সীমা আছে। যতক্ষণ এতদুভয়ের বিদ্যমানতা থাকিবে ততক্ষণ অসীম স্বরূপানন্দ কখনই উদয় হইবে না। ঈশ্বর 'অহংব্রহ্ম' ভাবে পরমানন্দ ভোগ করেন, জীবাত্মা 'অহংজীব' ভাবে বিষয়ানন্দ ও "অহং যোগী" ভাবে যোগানন্দ ভোগ করেন। "যখন" ও "তখন" আদি কালভেদ থাকিলেই "অহং ঈশ্বর" "অহং জীব" আদি অভিমান ; "অহং ভোক্তা" "অহং সুখী" "অহং দুঃখী" আদি বুদ্ধিবিকার থাকিবে ; এতাবৎই ঈশ্বরত্ব ও জীবত্বের পরিচায়ক। যখন এই দ্বৈতভাবকে প্রাকৃতিক বলিয়া স্বপ্নবৎ অসত্য বোধ হইবে তখনই স্বরূপানন্দে ব্রহ্মত্ব নিশ্চয় হইবে। আমি কে! উহা কি! তাহা কি! ইহা কি! ইত্যাকার সংশয় সত্ত্বে, ভ্রাম্যমাণ মায়াবী আত্মা, স্বীয় স্বরূপকে (স্বভাব) যখন অবিদ্যার অন্তরায়ে অপ্রত্যক্ষ অনুভব করেন তখনই আত্মার "জীব" সংজ্ঞা এবং যখন ইহা, উহা, তাহা আদি কিছুই নহে, সমুদয়ের অন্তর্যামী (কূটস্থ) প্রকৃতিস্থ, প্রতিবিম্বিত চৈতন্যের নিয়ামক একমাত্র "আমিই" আছি ইত্যাকার উপলব্ধি হইবে তখনই আত্মার "ঈশ্বর" সংজ্ঞা হইয়া থাকে। যখন ইহা, উহা, তাহা আদি তাবৎই আমি, আমা হইতে পৃথক কিছুই নাই এরূপ অনুভব হইবে তখনই স্বরূপানন্দ অদ্বৈত ব্রহ্মত্ব ভাবের আবির্ভাব স্বীকার্য্য।

"জলাভ্রোপাধ্যধীনে তে জলাকাশাভ্র খৈতয়োঃ।
আধারৌতু ঘটাকাশ মহাকাশৌ সুনির্ম্মলৌ॥"

इन तीनों अवस्था और प्रत्यक्ष, अनुभव वो आकस्मिक हेतु ; सुख, दुःख वो आनन्द भोग की कल्पना करी जाती है, तद्रुप ब्रह्म चैतन्य परमात्मा, ईश्वर सूत्रात्मा, हिरण्य गर्भ, विराट नाम संज्ञा ; सृष्टि, स्थिति, प्रलय नाम तीन भाव, सत्व, रज: वो तम: नाम तीन अवस्था ; अधिभूत, अधिदैव, वो आध्यात्म जन्य भोगानन्द, योगानन्द वो परमानन्द की कल्पना करी गयी है।

आनन्दही कारण है। आनन्दही का हेतु करके ईश्वरत्व भी है। उक्त आनन्द षड़ैश्वर्य्य से बना हुआ, इस लिये मायिक वो प्राकृतिक है। स्वरूपानन्द में भेद भाव नहीं ; वह अनन्त वो अनुपम है। जीव वो ईश्वर का आनन्द रूप सागर गोष्पदके समान है, असीम नहीं। उपास्य वो उपासक सम्बन्धी भाव की सीमा है। जब तक इन दोनों की विद्यमानता रहेगी तब तक असीम स्वरूपानन्द कभी हो न उपजेगा, "मैं ब्रह्म हूं" इस भाव करके ईश्वर परमानन्द भोग करते रहते हैं और जीवात्मा "मैं जीव हूं" इस भावसे विषयानन्द वो "मैं योगी हूं" इस भावसे योगानन्द भोग किये करते हैं, 'जब" वो "तब' आदि काल भेद रहने हीसे "मैं ईश्वर हूं" "मैं जीव हूं" आदि अभिमान, "मैं भोग करनेवाला हूं" "मैं सुखी हूं" "मैं दुःखी हूं" आदि बुद्धि विकार रहेगी, इतना ही ईश्वरत्व वो जीवत्व का पहचान देनेहारे हैं। जब इन द्वैत भावको प्राकृतिक समझ कर स्वप्नवत् मिथ्या बोध होगा, तबही स्वरूपानन्दमे ब्रह्मत्व निश्चय होगा। "मैं कौन हूं" "वह क्या है," "यह क्या है' इस प्रकार का संशय रहते भी भ्रमते हुए मायावी आत्मा, अपना स्वरूपको (स्वभाव) जब अविद्याका आड़ में अप्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, उसही समय आत्मा की जीव संज्ञा औ जब "यह," "सो" आदि कुछ ही नहीं सर्व्वान्तर्यामी (कूटस्थ) प्रकृतीस्थ प्रतिविम्बित चैतन्य के नियामक एकमात्र 'मैं ही हूं" ऐसा बोध होगा, उसही समय आत्मा की ईश्वर संज्ञा होती है। "यह" वह "सो" आदि सबही मैं हूं, मुझसे कुछ भी पृथक नहीं जब ऐसा बोध होता रहेगा, तब ही स्वरूपानन्द में ब्रह्म भाव का आविर्भाव स्वीकार किया जायगा।

"जलाभ्रोपाध्यधीने ते जलाकाशाभ्र खेतयो:।
आधारौ तु घटाकाश महाकाशौ सुनिर्म्मलौ॥"

যেমন জলাকাশ ও মেঘাকাশ জল ও মেঘ উপাধি দ্বারা বিভিন্ন হইলেও আধারভূত ঘটাকাশ ও মহাকাশ নির্ম্মল থাকে, তদ্রূপ আনন্দ ও বিজ্ঞান, মায়া ও বুদ্ধির অধীন চৈতন্য এক অদ্বৈত ব্রহ্ম চৈতন্যে নির্ম্মলভাবে থাকে। এক্ষণে জীব ও ঈশ্বরের প্রভেদ দূরীভূত হইল। ব্রহ্মই ঈশ্বর ও ব্রহ্মই জীব বলিয়া প্রতিপন্ন হইলেন।

"আত্মভেদো জগৎসত্যমীশোন্য ইতি চেৎত্রয়ং।
ত্যজ্যতে তৈস্তদা সাংখ্যযোগ বেদান্ত সম্মতিঃ॥"

বুদ্ধিভেদ বশতঃ আত্মার যে ভেদভাব দৃষ্ট হয় তাহা পরিত্যাগ পূর্ব্বক সাংখ্যশাস্ত্রবাদিগণ, মায়িক জগতের নিত্যত্ব ও সত্যত্ব পরিহার পূর্ব্বক যোগাচারিগণ এবং ব্রহ্মেশ্বরের ভাবান্তর ভেদ পরিত্যাগ পূর্ব্বক বেদান্তবাদিগণ যদি একবাক্য হয়েন তাহা হইলে সর্ব্বশাস্ত্রসিদ্ধ ঐক্যভাবের আর কিছুমাত্র সংশয় থাকে না।

বেদান্ত শাস্ত্র প্রথমতঃ ব্রহ্ম ও ঈশ্বরের ভেদ প্রতিপাদন করিয়াছেন বটে কিন্তু পুনর্ব্বার ঐক্য প্রতিপাদন করিয়াছেন এজন্য অন্যান্য দর্শনশাস্ত্রের সহিত বেদান্তের বিরোধ দৃষ্ট হইয়া থাকে কিন্তু সে বিরোধ বিচারার্থ মাত্র, সিদ্ধান্ত জন্য নহে। সিদ্ধান্ত বাক্যে তাবচ্ছাস্ত্রই বেদান্তের অবিরোধী।

সদদ্বৈতং শ্রুতং সৃষ্টেঃ প্রাক্তদেবাদ্যচোপরি
মুক্তাবপি বৃথা মায়া ভ্রাময়ত্যখিলান্ জনান্।

সৃষ্টির পূর্ব্বেও বর্ত্তমান যে অদ্বৈত সদ্বস্তুর বিষয় শ্রুতিতে উক্ত হইয়াছে, তিনি এখনও তদ্রূপ বিরাজ করিতেছেন ও ভবিষ্যতেও সেইরূপ বিদ্যমান থাকিবেন; তাঁহার সেই মুক্তাবস্থার কখন কোন ব্যতিক্রম হয় না ও হয়ও নাই তবে বৃথা কেন অখিল জীব "আমি বদ্ধ" "আমি মুক্ত" বলিয়া ভ্রমণ (জন্মজন্মান্তর) করিয়া বেড়াইতেছে? উক্ত সদ্বস্তুর আশ্রিত অসৎ-মায়ার প্রভাবেই এই ভ্রমণরূপ ভ্রমের উদয় হইয়াছে। যে মহাত্মা সেই মায়ারূপ কারণকে বিদিত হইয়াছেন, তিনি ঈদৃশ ভ্রমণকে মিথ্যা বলিয়া স্থির করিয়াছেন; তাঁহার বিশুদ্ধ দৃষ্টিতে ভ্রমণ নাই, সুতরাং জীব ও ঈশ্বরের কল্পনাও নাই কিন্তু যাঁহারা এই মায়াকল্পিত স্বপ্নময় সংসারকে নিত্য ও সত্য বোধ করেন তাঁহারা ভ্রমণও করিতে

जैसा जलाकाश वो मेघाकाश जल वो मेघ इस उपाधि करके विभिन्न होने पर भी आधारभूत घटाकाश वो मेघाकाश निर्म्मल रहते हैं, तद्रूप आनन्द वो विज्ञान वो बुद्धि के अधीन चैतन्य एक अद्वैत ब्रह्म चैतन्यमें निर्म्मल भावसे रहा करते हैं। अब जीव वो ईश्वर में जो प्रभेद बुद्धि थी सो मिट गयी। ब्रह्मही ईश्वर वो ब्रह्मही जीव करके प्रतिपन्न हुए।

"आत्मभेदो जगत सत्यमीशोन्य इति चेत् त्रयं।
त्यज्यन्ते तैस्तदा सांख्ययोग वेदान्त सम्मतिः॥"

बुद्धि का भेद जन्य आत्माका जो भेद भाव देख पड़ता है, उसको परित्याग पूर्बक सांख्य शास्त्रबादी, वो मायिक जगतका नित्यत्व वो सत्यत्व परिहार पूर्बक योगाचारबालें और ब्रह्म वो ईश्वरका भावान्तर भेद परित्याग पूर्बक वेदान्तवादी यदि एकवाक्य हों, तो सर्बशास्त्र सिद्ध ऐक्य भाव होनेमें कुछ भी संशय न रहता है।

वेदान्त शास्त्रने प्रथमतः ब्रह्म [illegible] ईश्वर इन दोनों में भेद दिखाया है सोही, [illegible] पुनर्बार ऐक्य भी प्रतिपादन किया, इसलिये [illegible] दर्शन शास्त्र के सहित वेदान्तका [illegible] देख पड़ता है किन्तु उस बिरोध को विचारार्थ [illegible] जानना, सिद्धान्तके निमित्त नहीं [illegible] समस्त शास्त्रहीने वेदान्तके [illegible] थी है।

"यद [illegible] तं [illegible]: [illegible]।
मुक्तावपि वृथामाया भ्रामय [illegible] जनान्॥

सृष्टिके पूर्व्वमें भी वर्त्तमान रहनेहारे जिस सद्वस्तुके बिषय श्रुतिमें उक्त है उन्होंने अबतक वैसाही विराजमान हैं औ भविष्यतमें भी वैसाही विद्यमान रहेंगे; उनकी उसी मुक्तावस्थाका व्यतिक्रम न कभी हुआ न होनेवाला है, तब क्यों जीवों ने वृथा "मैं बद्ध हूं" "मैं मुक्त हूं" ऐसा सोचकर भ्रमण (जन्मजन्मान्तर) कर फिरा करता है? उक्त सद्वस्तुका आश्रय ली हुई असत् माया का प्रभावहो से यह भ्रमण रूप भ्रमका उदय हुआ है। जिस महात्माने उस मायारूप कारणको विदित हुआ, उन्होंने इसभांति भ्रमणको मिथ्याकरके स्थिर करलिया है; उनकी विशुद्ध दृष्टिमें भ्रमण नहीं, सुतरां जीव वो ईश्वरत्व की कल्पना भी नहीं किन्तु जिन्होंने इस मायाकल्पित स्वप्नमय संसारको नित्य वो सत्य बोध किया करता है, उन्होंने भ्र

থাকেন, কেননা স্বপ্নদৃষ্ট ব্যাঘ্র ও ভয়ের কারণ হয়, দ্বৈত পদার্থ পূর্ব্বে ছিল না, ঈশ্বর সৃষ্টি করিয়াছেন, যাঁহার এই প্রকার মায়িক বুদ্ধি, তিনিই এক অদ্বৈত ব্রহ্মে ঈশ্বরত্ব কল্পনা করেন এবং সৃষ্টবস্তু বিনশ্বর এবং নিত্য সদ্বস্তুর উৎপত্তি ও বিনাশ নাই যাঁহার সূক্ষ্ম ও নির্ম্মল বিবেক জন্মিয়াছে তিনি ঈশ্বরত্ব ও জীবত্বের নিরাকরণ পূর্ব্বক ব্রহ্ম চৈতন্যে একীভূত হয়েন। আত্মা যে সর্ব্বসঙ্গ বর্জ্জিত, ইহা তত্ত্বজ্ঞানীর নিত্য সিদ্ধান্ত; তাহাতে ঈশ্বরত্ব বা জীবত্ব কল্পনা করা অজ্ঞান ও ভ্রান্তি সম্ভূত বলিতে হইবে। ষড়ৈশ্বর্য্য সম্পন্নতাই ঈশ্বরত্ব; ষড়ৈশ্বর্য্য মায়াময়। মায়াবী ব্রহ্ম চৈতন্যই ঈশ্বর ও মায়াধীন ব্রহ্ম চৈতন্যই জীব বলিয়া অভিহিত হইয়া থাকেন।

জগচ্চিত্রং স্বচৈতন্যে পটে চিত্রমিবার্পিতং
মায়য়া তদুপেক্ষৈব চৈতন্যে পরিশিষ্যতাং ॥

এই প্রত্যক্ষ পরিদৃশ্যমান জগৎ চিত্রপটের ন্যায় এক চৈতন্য সত্বায় সুচিত্রিত বোধ হইতেছে। মায়াই তাহার রঙ্গরূপ অবয়ব। যেমন পটই এক মাত্র বস্তু ও রঙ্গরূপ অবয়ব মিথ্যা কল্পিত তদ্রূপ এক চৈতন্য মাত্র সদ্‌ব্রহ্ম বস্তুতে জীবেশ্বরাদি নাম-রূপ কল্পনা সকলই মিথ্যা, কেবল চৈতন্য মাত্রই সত্য। ইহাই শাস্ত্রের চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত।

ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরি ওঁ।

প্রশ্নোত্তর।

প্রশ্ন। বালক কাহাকে বলে? কাহাকেই বা পিতা বলা যায়? মহান্ বলিয়া মাননীয় কে? শ্রেষ্ঠত্ব লাভের প্রকৃত পদ্ধতি কি? এবং বৃদ্ধই বা কাহাকে কহে?

উত্তর।

"অজ্ঞো ভবতি বৈ বালঃ পিতা ভবতি মন্ত্রদঃ।
অজ্ঞং হি বালমিত্যাহু পিতৃত্বেব তু মন্ত্রদম্ ॥"

কেবল মাত্র অল্প বয়স্ক হইলেই বালক বলা যায় না। মূর্খ ব্যক্তি যদি অধিক বয়স্কও হয় তবে সে ব্যক্তিও বালক মধ্যে পরিগণিত। যিনি

भ्रमणे भी पड़ता है क्योंकि स्वप्न दृष्ट व्याघ्र भी भय का कारण होता है। जिसकी ऐसी मायिक बुद्धि है कि द्वैत पदार्थ आगे नहीं था, ईश्वरने सृष्टि किया है, उन्होंने एक अद्वैत ब्रह्ममें ईश्वरत्व की कल्पना की करती है औ जिनका ऐसा सूक्ष्म वो निर्म्मल विवेक उपजा की सृष्ट वस्तु नाशमान वो नित्य सद्वस्तु की उत्पत्ति वो विनाश नहीं है, उन्होंने ईश्वरत्व वो जीवत्व का निराकरण पूर्ब्बक ब्रह्म चैतन्यमें एकीभूत हो जाता है। यह तत्वज्ञानीका नित्य सिद्धान्त है कि आत्मा सर्ब्बसङ्गवर्जित; उनमें ईश्वरत्व वा जीवत्वकी कल्पना करना अज्ञान वो भ्रान्ति करके है, जानना चाहिये। षड़ैश्वर्य्य सम्पन्नता ही का नाम ईश्वरत्व; षड़ैश्वर्य्य मायामय है। मायावी जो ब्रह्म चैतन्य है सोही ईश्वर, वो मायाधीन जो ब्रह्म चैतन्य, सोही जीव करके प्रसिद्ध है!

"जगच्चित्रं स्वचैतन्ये पटे चित्रमिवार्पितं।
मायया तदुपेक्षैव चैतन्ये परिशिष्यतां ॥

यह प्रत्यक्ष परिदृश्यमान जगत् चित्रपटके न्याई एक चैतन्य सत्वामें सुचित्रित बोध होता है। माया ही उसके रं, रूप वो अवयव है। जैसा कि पटही एकमात्र वस्तु है औ रं, रूप, अवयव मिथ्या कल्पना मात्र हैं वैसाही एक चैतन्यमात्र सद्ब्रह्म वस्तुमें जीव वो ईश्वर आदि नाम रूपकी कल्पना सबही मिथ्या हैं, केवल चैतन्य मात्रही सत्य। यही शास्त्रका चूड़ांत सिद्धान्त है।

ओं शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरि ओं।

प्रश्नोत्तर।

प्रश्न। बालक किसको कहलावे? पिता किसको कहा जाय? महान् करके कौन माननीय हैं? ज्येष्ठत्वलाभ करने की प्रकृत रीति क्या है? औ वृद्धही वा किसको कहा जाय?

उत्तर।

'अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः।
अज्ञंही बालमित्याहु पितृत्वेव तु मन्त्रदम् ॥"

केवलमात्र अल्प वयःक्रम होनेही से बालक नहीं कहावता है। मूर्खजन यदि अधिक वयःक्रम का भी होय तो वह भी बालक के मध्यमें गिना जाता

জন্মদাতা অর্থাৎ যাঁহা হইতে শরীর প্রাপ্ত হইয়াছ তিনি পিতা নহেন যিনি আত্মার চির সদ্গতির জন্য মন্ত্রদান অথবা বেদাধ্যাপনা দ্বারা জ্ঞান প্রদান করেন তিনিই পিতা।

"ন হায়নৈর্ন পলিতৈর্ন বিত্তেন ন বন্ধুভিঃ।
ঋষয়শ্চক্রিরে ধর্ম্মং যোঽনুচানঃ স নো মহান্।"

অধিক বয়স হইলে বা কেশ কলাপ পলিত হইয়া গেলে কিম্বা বহু ধন সম্পত্তি লাভ করিলে অথবা পিতৃব্য, শ্বশুরাদি সম্পর্কযুক্ত হইলেই মহান্ বলা যায় না। যিনি বেদের গূঢ় গর্ভনিহিত প্রকৃত রহস্য ভেদ করিয়া বেদের অধ্যাপনা করিতে পারেন তিনিই আমাদিগের মধ্যে মহান্ বলিয়া মাননীয়।

"বিপ্রাণাং জ্ঞানতো জ্যৈষ্ঠং ক্ষত্রিয়ানাস্তু বীর্য্যতঃ।
বৈশ্যানাং ধান্য-ধনতঃ শূদ্রাণামেব জন্মতঃ॥"

ব্রাহ্মণগণের মধ্যে তিনিই জ্যেষ্ঠ যিনি বেদবিদ্যাধ্যয়ন পূর্ব্বক সমধিক তত্ত্বজ্ঞান লাভ করিয়াছেন; ক্ষত্রিয়বর্গের মধ্যে তিনিই জ্যেষ্ঠ যিনি সমধিক সাহস, সেনা ও বলবীর্য্য সম্পন্ন; বৈশ্যবৃন্দের মধ্যে তিনিই জ্যেষ্ঠ যাঁহার গৃহে প্রচুর ধন ধান্য বস্ত্রাদিতে পরিপূর্ণ; শূদ্র সমূহের মধ্যে তিনিই জ্যেষ্ঠ যিনি অধিক বয়স্ক।

"ন তেন বৃদ্ধো ভবতি যেনাস্য পলিতং শিরঃ।
যো বৈ যুবাঽপ্যধীয়ান্স্তং দেবাঃ স্থবিরং বিদুঃ॥"

যাঁহার অধিক বয়ঃপ্রাপ্তি প্রযুক্ত মস্তকের কেশ কলাপ শুক্ল হইয়া গিয়াছে তিনি বৃদ্ধ নহেন, যুবা হইয়াও যিনি বিদ্বান ও জ্ঞানবান দেবতারা তাঁহাকেই বৃদ্ধ বলিয়া জানেন।

সৈয়দপুর উন্নতিবিধায়িনী সভা হইতে প্রাপ্ত।

মদ।

মনের যে বৃত্তি মনুষ্যের অন্তঃকরণকে অভিভূত করিয়া মনের মত্ততা উৎপাদন করে তাহাকেই "মদ" বলিয়া অভিহিত করা যায়। ইহা যে আমাদের ইষ্ট সাধন জন্য ঈশ্বর কর্ত্তৃক নিয়োজিত হইয়াছে তৎপক্ষে সংশয় মাত্র নাই। আমি কে? এই প্রশ্নটী সকলেই আপনা আপনি জিজ্ঞাসা করিয়া থাকেন। এবং ইহা লইয়া মনোমধ্যে

है। जो जन्मदेनेहारे हैं अर्थात् जिनसे शरीर मिला है, वे प्रकृत पिता नहीं, जिन्होंने आत्माकी चिर सद्गति के निमित्त मंत्रदान अथवा वेद पढ़ाकर ज्ञान दान करता हैं उन्होंको पिता करके जानना।

"न हायनैर्नपलितैर्नवित्तेन न बन्धुभिः।
ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनुचानः सनोमहान्॥"

वयःक्रम अधिक होनेसे वा केश कलाप पलित होनेपर, किम्बा बहुत् धन सम्पत्ति मिलनेसे अथवा पितृव्य, श्वशुरादि सम्बंधयुक्त होने हो पर महान् नहीं कहा जाता है। जिनने वेदका गुढ़ गर्भमें निहित प्रकृत रहस्य भेद करके वेदकी अध्यापना कर सकी, वही हमारे मध्यमें महान् करके माननीय हैं।

"विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठं क्षत्रियानान्तु वीर्य्यतः।
वैश्यानां धान्यधनतः शुद्राणामेव जन्मतः॥"

ब्राह्मणोंके मध्यमें वही ज्येष्ठ है जिनने वेदविद्या पढ़कर समधिक तत्वज्ञान लाभ किया है, क्षत्रियोंमें वही ज्येष्ठ है, जिनने समधिक साहस, सेना वो बलवीर्य्य सम्पन्न है, वैश्यवृन्द में वही ज्येष्ठ हैं जिनका गृहमें प्रचुर धन, धान्य, वस्त्रादि करके परिपूर्ण हैं; शुद्र समूहमें वही ज्येष्ठ हैं जिनकी अवस्था अधिक है।

"नतेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः।
यो वै युवाऽप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः॥"

जिनकी अवस्था अधिक होनेपर मस्तकके केश कलाप शुक्ल हो गये हैं, वह वृद्ध नहीं किन्तु युवा होकर भी जिनने विद्वान वो ज्ञानवान होवें देवताओंने उन्होंको वृद्ध करके मानते हैं।

सयदपूर उन्नत विधायिणी सभासे प्राप्त।

मद।

मन की जिस वृत्तिने मनुष्यका अन्तःकरण को अभीभूत करके मनकी मत्तता उत्पादन किया करता उसही का नाम "मद" करके जानना। यह निःसन्देह है कि ईश्वरने इसको हमारे कल्याणार्थ नियत किया। सबकोई "मैं कौन हुं" इस प्रश्नको अपने मनमें पुछा करते हैं, और इसपर जितनी चर्चा की जाय उतनाही मद की प्रतीति होती है। अहं भाव

যতই আন্দোলন করা যায় ততই মদের কার্য্য প্রতীয়মান হয়। আমিত্ব আসিয়া আমাদের অন্তঃকরণ অধিকার করে। কথিত আছে যে "বাইবেলের" বর্ণিত আদি পুরুষ আদম হঠাৎ শোভা সজ্জা সমবেত ধরা অবলোকন পূর্ব্বক অতিশয় কৌতূহলাক্রান্ত এবং তিনি কে ইহা জানিবার জন্য ব্যাকুল হইয়াছিলেন। ক্রমে তাঁহার চতুষ্পার্শ্ববর্ত্তী জীবগণের কার্য্যকলাপ দেখিয়া তাঁহার অন্তর মধ্যে নিজ মহত্ত্বের ভাব উদ্দীপিত হইল। তাহারা যে তাঁহার সহবাস যোগ্য নহে তাহা তাঁহার প্রত্যয় হইল। তিনি দেখিলেন যে, পশুপক্ষী প্রভৃতি জীবগণ অপেক্ষা তাঁহার ক্ষমতা অধিক, সুতরাং তাহাদের সহবাসে তাঁহার তৃপ্তী লাভ হইল না। তখন তিনি ব্যাকুলচিত্তে তাঁহার স্রষ্টার অনুসন্ধান করিতে লাগিলেন। পরম পিতার তত্ত্ব করিতে করিতে কতই আনন্দ অনুভব করিলেন। তাঁহার সৃষ্টির কৌশল ও মঙ্গল ভাব যতই হৃদয়ঙ্গম করিতে লাগিলেন ততই তাঁহার সহবাস সুখ লাভ করিবার আশা তাঁহাকে উৎফুল্ল করিয়া তুলিল। মনুষ্য মাত্রেই উচ্চ পদবীর অধিকারী বিবেচনা করিয়া পার্থিব সুখকে অতি অকিঞ্চিৎকর বিবেচনা করিয়া থাকে এবং ঈশ্বর লাভের জন্য প্রাণমন তাঁহাতেই সমর্পণ করে। ফলতঃ আপনাকে উৎকৃষ্ট জীব বলিয়া বিবেচনা না হইলে উন্নতি হইবার সম্ভাবনা নাই। পরম পিতা আমাদিগকে যাদৃশ স্বাধীনতা ও সদ্বিচারবুদ্ধি প্রদান করিয়াছেন, তাহাতে আমরা সংসারের কার্য্য সুচারু রূপে সম্পন্ন করিতে এবং বিবিধ বিঘ্ন বাধা অতিক্রম করিয়া সত্য পথে বিচরণ করতঃ তাঁহার সহবাস জনিত সুখ অনুভব করিবার যোগ্য হইতে পারি। যদিও আমরা কিয়ৎকালের জন্য ধরাধামে আবদ্ধ আছি বটে, কিন্তু ইহা আমাদের সর্ব্বদা হৃদয়ঙ্গম থাকা উচিত যে আমরা ধরাপৃষ্ঠে সৃষ্ট জীব সমষ্টীর মধ্যে শ্রেষ্ঠ এবং দেবলোকের অধিকারী। মনোমধ্যে এবম্প্রকার ভাব পোষণ করিলে আমরা কখন নিকৃষ্ট পথ অবলম্বন করিতে পারি না। পাপ চিন্তা অন্তরে উদয় হইবামাত্র অমনি মদ ভর্ৎসনা করিয়া বলে তুমি মনুষ্য পদবীতে অধিষ্ঠিত হইয়া কি প্রকারে পাপাচরণ করিবে? বিশুদ্ধ জ্ঞান সম্পন্ন হইয়া কি রূপে পশুর ন্যায় ব্যবহার করিবে?

आकर हमारे अन्तःकरण को अधिकार करलेता है। ऐसी कहावत चली आती है जो बायबुलमें लिखा हुआ आदि पुरुष आदमने अकस्मात् शोभा साजसे युक्ता धरा मण्डल को अवलोकन करके अत्यन्त कौतुहल युक्त और वह स्वयं कौन हैं यह जाननेके लिये व्याकुल हुआ था। क्रमशः उनके चारो ओर बिचरते हुये जीवोंके कार्य्यकलाप देखकर निज मनमें अपने महत्वका भाव उठा; वह सब जो उनका सहवास योग्य नहीं हैं सो उनको बूझ पड़ा। उनने देखा जो पशु पक्षी आदि जीवोंसे उनको क्षमता अधिक है, सुतरां उन सबके सहवास से उनकी तृप्ति न हुई। अनन्तर उनने व्याकुल चित्तसे अपने स्रष्टा का अनुसन्धान करने लगा। परम पिताके तत्त्व बिचारते हुये उन को कितनाही आनन्द अनुभव हुआ। उनकी सृष्टि कौशल, मङ्गल भाव जहां तक हृदयङ्गम करने लगे तहांतक उनके सहवास सुख-लाभ करने की आशा उनको प्रफुल्ल करने लगी। हरेक मनुष्य अपनेको उच्च पदके अधिकारी समझकर पार्थिव सुख को अत्यन्त तुच्छ मानता है वो ईश्वर लाभार्थ उनमें प्राण मन समर्पण कर देता है। फलतः यदि कोई अपने को उत्कृष्ट जीव करके नमाने तो उन्नति होने की सम्भावना नहीं। परमपिताने हमको जिस भान्ति स्वाधीनता सद्विचार बुद्धि प्रदान करते हैं तिससे हम संसार के कारबार सुन्दर रूपसे सम्पादन करने और नाना भान्ति की विघ्न बाधा अति क्रम करके सत्य राह पर विचारते हुये उनके सहबास सुख अनुभव करनेका योग्य बन सकते हैं। यद्यपि हम थोड़े दिन के लिये संसारमें आवद्ध हैं सही, परन्तु हमको सर्वदा स्मरण रखना चाहिये जो हम संसार के जीवोंमें श्रेष्ठ औ देवलोक अधिकारी हैं। यदि अन्तःकरणमें हम इस भांति भाव को पोषण करते रहें तो हम कभी बुरी राहपर न जासकेंगे। पाप चिन्ता हृदयमें उदय होनेहींसे झट "मद" ने तिरस्कार कर बोलता रहता है' तुम मनुष्य पदवी में रह कर कैसे पापाचरण करोगे? विशुद्ध ज्ञान युक्त होकर कैसे पशुके न्याइ कार्य्य करोगे? तुम क्या मोह करके अपने को नही पहचान सकते हो? पृथिवी तुम्हारी प्रवास भूमिमात्र हैं; ब्रह्मलोक ही को तुम्हारे प्रकृत निवास स्थान जानना। जिस उपायसे उसही परमपवित्र पुण्यधाम के अधिकारी बन सको तिसकी चेष्टा

পৃথিবী তোমার প্রবাস ক্ষেত্র মাত্র, ব্রহ্মলোকেই তোমার যথার্থ আবাস। যাহাতে সেই পরম পবিত্র পুণ্যধামের অধিকারী হইতে পার তাহার চেষ্টা কর। মদের এবম্প্রকার উত্তেজনাতেই উত্তেজিত হইয়া মনুষ্যগণ সৎকার্য্য করিতে উৎসুক হইয়া থাকে। কোন ভদ্র সাধু-মণ্ডলী ভুক্ত হইলে মনুষ্য মদের ক্ষমতা বিশেষ রূপে হৃদয়ঙ্গম করিতে পারেন। সাধুবিগর্হিত কার্য্য করা তাঁহার পক্ষে অসম্ভব হইয়া উঠে। যিনি সাধুসমাজে তেজস্বী হইয়া বিরাজ করেন তিনি পাপ পঙ্কে কলুষিত হইয়া কি প্রকারে প্রভাহীন প্রভাত প্রদীপের ন্যায় লোকের অনাদর ভাজন হইয়া থাকিবেন। যিনি অনেকের দৃষ্টান্তের স্থল, যাঁহার কার্য্য কদম্ব অনুকরণ করিয়া অনেকে আত্মোৎকর্ষ লাভ করিয়াছেন এবং যিনি ধর্ম্মাত্মা বলিয়া সমাজে বিশেষ রূপ সম্মানিত তিনি কি প্রকারে নিকৃষ্ট পথ অবলম্বন পূর্ব্বক সাধারণের নিকট ঘৃণিত হইয়া রহিবেন! মদ তাঁহার অন্তঃকরণ অধিকার করাতে তিনি আপনাকে সাধু বিবেচনা করেন, সুতরাং নানাপ্রকার প্রলোভন সত্ত্বেও তিনি সাধু পদবীতে অটল ভাবে থাকিতে কৃতসঙ্কল্প হয়েন। কিন্তু মদ স্বীয় সীমা অতিক্রম করিলে সমূহ অনিষ্ট উৎপাদন করে। ইহার বিক্রম অতি বিশাল। ইহা এ প্রকার গুপ্ত ভাবে অন্তঃকরণ অধিকার করে, যে ইহার কার্য্য অনুভব করা কঠিন হইয়া উঠে।

কোন ভক্তি ভাজন আচার্য্য কোন ধর্ম্মোপদেশ প্রদান করিতেছেন, শ্রোতৃবর্গ একাগ্রচিত্তে তাহা শ্রবণ করিতেছেন এবং তাঁহার বিশুদ্ধভাব হৃদয়ঙ্গম করিয়া মনে মনে তাঁহাকে সাধুবাদ দিতেছেন। এমন সময়ে মদ ভাব বিমুগ্ধ আচার্য্যের অন্তঃকরণ অধিকার করিল। আচার্য্য মনে মনে বিবেচনা করিলেন, আহা! আমার কি চমৎকারিণী বক্তৃতা শক্তি! শ্রোতাগণ তাহা আকর্ণন করিয়া বিমোহিত হইতেছেন। অপরের বক্তৃতায় কি লোকের মন এপ্রকার দ্রব হইয়া থাকে?

কোন ধার্ম্মিক ব্যক্তি উপাসনার সময়ে বিনীত ভাবে ঈশ্বর সমীপে আত্ম নিবেদন করিতেছেন, তাঁহার মানসিক দুর্ব্বলতা ঈশ্বরের নিকট প্রকাশ করিয়া পাপের জন্য অনুতাপ করতঃ ক্ষমা প্রার্থনা করিতেছেন এমন সময়ে মদ অলক্ষিত ভাবে তাঁ-

करो। 'मद" की इस भांति उसकाने में उत्तेजित होकर मनुष्यगण सत्कार्य्य करनेमें उत्सुक हुआ करते हैं। कोइ भद्र साधू मंडलीमे मिलने पर मदकी शक्ती विशेष भांति हृदयंगम की जा सकी हैं, असाध कार्य्य करना उनके लिये असम्भव हो उठता है। जिनने साधसमाज में तेजस्वी हुये विराज करता है उनने पाप पंकसे कलुषित होकर किस प्रकार से प्रभा शून्य प्रभात दीपके न्याई लोगोंके अनादर पात्र बने रहेगा! जिनने बहुत लोगोंके दृष्टांतके स्थल है, जिनके कार्य्यकदम्ब अनुकरण करके कितनें लोगने आत्मोन्नति लाभ करी है और जिनने धर्म्मात्मा करके लोगोंके पास विशेष रूप सम्मानयुक्त है, उनने कैसे निकृष्ट पथ अवलम्बन पूर्ब्बक साधारणके निकट घृणाके पात्र बने रहेगा! "मद," उनके अन्तःकरणको अधिकार करनेसे वे अपने को साधुकरके मान लेते हैं सुतरां नाना प्रकारके प्रलोभन आने से भी उन्होंने किसी प्रकार से साधपदवी से नहीं टरता है। किन्तु मद अपनी सीमा टप जाने से अत्यन्त हानि करता हैं। इसका विक्रम अतीव विशाल हैं। इसने इस भांति अन्तःकरणकी अधिकार कर लेता है कि इसका कार्य्य अनुभव करना कठिन हो पड़ता है।

मानो कोई भक्तिभाजन आचार्य्य धर्म्मका उपदेश दे रहे हैं। श्रोताओंने एकाग्रचित्त होकर सब सुन रहे हैं, वो उनके विशुद्ध भाव हृदयंगम करके मनमें उनको साधुवाद दे रहे हैं ऐसा समय "मद" ने, भाव से मोहित हुये आचार्य्य के अन्तःकरणको अधिकार कर लिया। आचार्य्यने बिचारने लगा, आहा! मेरी कैसी चमत्कारिनी वक्तृता शक्ति है! श्रोतागण सुनकर मोहित हो गये! दुसरा किसी की वक्तृतासे क्या लोगोंके मन इस भांति द्रव होते हैं?

कोई धर्म्मात्माने उपासनाके समय बिनीत भावसे ईश्वरके समीप आत्म निवेदन कर रहे हैं, उनके मनकी दुर्ब्बलता ईश्वरके निकट प्रकाश पूर्ब्बक पापके लिये पश्चात्ताप करके क्षमा प्रार्थना कर रही हैं। "मद" ने ऐसा समय अलक्षित भावसे उनको दिक् करने लगा। उनके

হাকে বিরক্ত করিতেছে তাঁহার মন বিষয় চিন্তায় ব্যাকুল হইয়া উঠিতেছে, সুতরাং ভগবদুপাসনায় বিশেষ বিঘ্ন জন্মিল। সে ভাব অন্তর্হিত হইবারও কোন সম্ভাবনা নাই। প্রকৃত পক্ষে এরূপ সময়ে ইষ্টদেবের অর্চ্চনা করিলে কোন ফলোদয় হয় না। সমাহিত অন্তঃকরণে উপাসনায় প্রবৃত্ত হওয়া বিধেয়। কিন্তু মদের কি কুটিল কার্য্য! অমনি অস্ফুট স্বরে কহিতেছে মানব! তুমি ধার্ম্মিক বলিয়া সকলের নিকট পরিচিত। অনেকে অবগত আছেন যে তুমি অনেকক্ষণ পর্য্যন্ত সমাহিত চিত্ত হইয়া জগদ্বিধাতার উপাসনা করিয়া থাক। এখন কি প্রকারে আসন পরিত্যাগ করিবে? তোমার অন্তঃকরণ যে ভাবে অবস্থিতি করুক না কেন, মন্ত্র জপ কিম্বা স্তোত্র পাঠ করিয়া আপনার ধর্ম্ম প্রবৃত্তির পরিচয় প্রদান কর।

কোন মহাত্মা কোন দীনের দৈন্যাবস্থা অবলোকন করিয়া মুক্ত হস্তে দান করিতেছেন। ক্ষুধার্ত্তকে অন্ন দান, বস্ত্রহীনকে বস্ত্র দান, এবং রোগীকে ঔষধি ও পথ্য প্রদান করিতেছেন। চারি দিক হইতে যশোগৌরব ধ্বনি উঠিতেছে দাতা পুলকে পূর্ণ হইতেছেন। এমন সময় মত্ততা অন্তর অধিকার করিল। আমার ন্যায় দাতা যে আছে, আমার ন্যায় কে দরিদ্রের জন্য এত ক্লেশ স্বীকার করিয়া থাকে?

কোন প্রভূত ধনশালী ব্যক্তি সৎকার্য্যে অর্থ ব্যয় করিতেছেন। প্রশস্ত রম্যা নির্ম্মাণ, বিদ্যালয় ও চিকিৎসালয় সংস্থাপন, পান্থ নিবাস নির্ম্মাণ এবং কূপ ও তড়াগ খনন করিয়া অতুল যশস্বী হইতেছেন। চতুর্দ্দিক হইতে সুখ্যাতির ধ্বনি আসিয়া তাঁহার কর্ণকুহরে প্রবেশ করিতেছে। এই সুযোগে মদ অবসর পাইয়া তাহাকে উত্তেজিত করিতেছে। তিনি আপনাকে বড় লোক বিবেচনা করিয়া উন্মত্ত ও আত্মবিস্মৃত হইলেন। আমি সৎকার্য্যে অর্থের কেমন সার্থকতা সম্পাদন করিতেছি। ধনীতো অনেক আছেন, কিন্তু আমার ন্যায় এমন পুণ্য কর্ম্ম কে করিয়া থাকেন?

উপরোক্ত কার্য্য কদম্বের দ্বারা মদের ক্ষমতা প্রকাশ পাইতেছে বটে, কিন্তু তাহার বিশেষ ক্ষমতার বিষয় এখনও উল্লিখিত হয় নাই। মান-মদ কি ভয়ানক! সামান্য ব্যক্তি হইতে সম্রাট পর্য্যন্ত ইহার বশীভূত। মানৈষণা সকলেরই অন্তরেই

मन विषयकी चिन्तासे व्याकुल हो उठता है सुतरां भगवतकी उपासनामें विशेष विघ्न हुआ। वह भाव मिटनेकी भी कोइ सम्भावना नहीं। वस्तुत: ऐसा समय इष्टदेवकी अर्च्चना करनेसे कुछ फल नहीं होता है। समाहित अन्त:करण हुये उपासनामें प्रवृत्त होना चाहिये। परंतु "मद" का क्या कुटिल कार्य्य है! उसी दम अस्पष्ट स्वरसे कह रहा है— मानव! तू धर्म्मात्मा करके सबके निकट परिचित है, बहुतसे लोग जानते हैं जो तूने बहुत देर तक समाहित चित्त हुये जगद्विधाताकी उपासनाकी करती है। अब क्यों करके आसन छोड़ेगा? तेरा अन्त:करण जिस अवस्था में क्यों न रहे, मन्त्र जप किम्वा स्तोत्र पढ़कर अपनी धर्म्म प्रवृत्ति का परिचय देते रहो।

किसी महात्मा कोइ दरिद्र की दुर्दशा देख कर मुक्त हस्त से दान कर रहे हैं। क्षुधार्त्तको अन्न दान, वस्त्रहीन को वस्त्र दान, वो रोगी को औषध वो पथ्य दे रहे हैं। चारो ओरसे सुयश की ध्वनि उठ रही है,। दाता आनन्द से पूर्ण हो रहें हैं। ऐसा समय "मत्तता" ने हृदय को अधिकार कर लिया। मेरे समान [illegible] कौन है। दरिद्रोंके निमित्त मेरे समान [illegible] करता है?"

कोई बड़े धनाढ्य पुरुष सत्कार्य्य में धनव्यय कर रहे हैं। प्रशस्त पथ निर्म्माण, विद्यालय, चिकित्सालय संस्थापन, पांथ निवास की प्रतिष्ठा और कूप वो तड़ाग आदि खुदवा कर अतुल यश लाभ कर रहे हैं। चारो ओरसे प्रशंसा वाद आआ कर उनके कर्णकुहर में प्रवेश कर रही है। इसी संयोग में मद ने अवसर पाकर उनको उस्का रहा है। उनने अपने को बड़े आदमी समझ कर उन्मत्त वो आत्म विस्मृत हो गये। "मैंने सत्कार्य्य करके अर्थ की कैसी सार्थकता सम्पादन कर रही है। धनाढ्य तो बहुत हैं किन्तु मेरे समान ऐसा पुण्य कर्म्म कौन् किया करता है?"

उपरोक्त कार्य्य कदम्ब करके "मद" की शक्ति प्रकाश पारही है, किन्तु उनकी विशेष क्षमता के विषय अबतक भी लिखा न गया है। "मानमद" कैसा भयङ्कर है! सामान्य व्यक्ति से लेकर सम्राट तक इसका वशिभूत हैं। मर्यादा की इच्छा हर

নিহিত আছে। প্রভু তাঁহার ভৃত্যকে কটুক্তি করিলেন, অমনি অভিমান আসিয়া ভৃত্যের অন্তঃকরণ অধিকার করিল যে প্রভুর ভয়ে সে সর্ব্বদা সশঙ্কিত তাঁহার সহিত উত্তর প্রত্যুত্তর করিতে সে ভীত হইল না। কোন কার্য্যালয়ের অধ্যক্ষ তাঁহার কোন কর্ম্মচারীর প্রতি একটী কঠিন বাক্য প্রয়োগ করিলেন, অমনি তিনি আপনাকে অপমানিত বিবেচনা করিলেন। যদিও তিনি বিশেষ রূপে অবগত আছেন যে তিনি অনন্যোপায় এবং কার্য্যে তাঁহার তাদৃশ দক্ষতা নাই, হটাৎ কর্ম্মত্যাগ করিলে স্থানান্তরে কোন উপায় হওয়া সহজ নহে, বিশেষতঃ গৃহে অনেক গুলি পরিবার, তিনি যাহা উপার্জ্জন করিতেছেন তাহাই তাহাদের জীবন ধারণের উপায়। তথাপি মদের এমনি ক্ষমতা যে মানে উন্মত্ত হইয়াও ভবিষ্যত বিবেচনা না করিয়া তিনি তাহার উপস্থিত কর্ম্মটী পরিত্যাগ করিলেন। মান-মদ আত্ম বিচ্ছেদেরও একটী প্রধান কারণ। কয়েক জন সমবয়স্ক একত্রিত হইয়া কথোপকথন করিতেছেন। ইহার মধ্যে একটী কথা কাহার বিবেচনায় অপমান সূচক বলিয়া প্রতীয়মান হইল, অমনি ইহা হইতে বিবাদের তরঙ্গ উঠিল ; শান্তি কোথায় পলায়ন করিল। এই মান মদে সুহৃদভেদ হইতেছে, কত গৃহ বিবিচ্ছেদ ঘটিতেছে। মান মদের বিষ-ময়ফল কুলীন দিগের মধ্যে বিশেষ রূপে লক্ষিত হয়। মানে উন্মত্ত হইয়া তাঁহারা বংশজ অথবা নিকৃষ্ট কুলীনগণের অতি হেয় জ্ঞান করিয়া থাকেন। কোন নিকৃষ্ট কুলীন, বিশুদ্ধ চরিত্র এবং সদ্বংশজাত হইলেও তাহার গৃহে অন্নগ্রহণ করিতে কিছুতেই সম্মত হয়েন না। এদিকে তিনি যে নিজে কদাচারীর অগ্রগণ্য তাহা তাঁহার মনে একবারও উদয় হয় না। মান-মদে উন্মত্ত হইয়া তিনি কি পর্য্যন্তই না অত্যাচার করিতেছেন, স্নেহের পাত্রী দুহিতাকে অশীতি বৎসর বয়স্ক পাত্রের সহিত পরিণয় কার্য্য সম্পাদন করিয়া দিতেছেন; অথবা সহতুল্য ঘর না পাওয়াতে আপনার কন্যাকে অনূঢাবস্থায় রাখিয়াছেন, এবং ইহা হইতে যে কি প্রকার বিষময় ফল উৎপাদন হইতেছে, তাহা হৃদয়ঙ্গম করিলে অন্তঃকরণ সিহরিয়া উঠে। কিন্তু কি আশ্চর্য্যের বিষয় কুলীন মহাশয় সাধারণের ন্যায় অবস্থিতি করিয়া এই সকল অত্যাচার প্রত্যক্ষ

किसीके मन में निहित है। प्रभुने अपने भृत्यको कटु वचन बोला, उसी दम अभिमान आकर भृत्यके अन्तःकरण को अधिकार किया। जिस प्रभुके डरसे वह सर्ब्बदा संकुचित रहता था, अब उनसे उत्तर प्रत्युत्तर करने में भय न माना। किसीकार्य्यालय के अध्यक्षने किसी कर्म्मचारी का कोइ कठिन वचन कह बैठा। उसी दम वह अपने को अपमानित समझा। यद्यपि वह खूब जानते हैं जो वह स्वयं अनन्योपाय है और कार्य्य करने में उनकी उत्तम रूप दक्षता नहीं, अकस्मात् काम छोड़ने से स्थानान्तर में कोइ उपाय होना भी सहज नहीं, विशेषत: गृहमें बहुत सा परिवार है उनहीके उपार्जन से उन लोगों की जीवन यात्रा निर्व्वाह होती है, तथापि "मद" की ऐसी शक्ति है सम्मान बुद्धि कारके अनन्यमत हुये वो बिना भविष्यत के विचार किये वह उपस्थित कर्म्म परित्याग किया। "मानमद" आत्म विच्छेद का भी प्रधान हेतु है। कैक समवयस्क पुरुष एकट्ठे हुए कथोपकथन कर रहे हैं। इसमें कोइ एक बात किसीके विचारमें अपमानसूचक करके प्रतीति हुई ; झट उसही से विवाद की तरंग उठा। शान्ति कहां तो भागी। इसी "मानमद" से कितना सुहृदभेद हो रहा है, कितने गृहमें आत्म विच्छेद हो गया। कुलीनों के मध्यमें मानमदक विषमय फल देख पड़ता है। मानसे उन्मत्त हो कब उन्होंने बंशज अथवा निकृष्ट कुलीनों को अत्यन्त तुच्छ मानते। कोई निकृष्ट कुलीन विशुद्ध चरित्र औ सद्बंश जात होने पर भी उसकी गृहमें कुलीन लोग अन्नग्रहण करने में किसो तरह से सम्मत नहीं होते हैं। परन्तु वे स्वयं जो कदाचारी के अग्रगण्य हैं सो एकबार भी स्मरण नहीं होता है। "मानमद"से उन्मत्त होकर उनने कहां तक न अत्याचार कर रहा है स्नेह की पात्री लड़की को अशी वर्ष के एक वृद्ध के सहित बिवाह दे रहे हैं अथवा समयोग्य कुल न मिलनेपर अपनी कन्या को अविवाहित अवस्था में रक्खा करते हैं और इससे जो किस भांति विषमय फल उत्पन्न होता है सो स्मरण करने से भो अन्तःकरण सिहर उठता हैं ; किन्तु क्या आश्चर्य्य का विषय है, कि कुलीन महाशयगण अन्य साधारण के न्याई, चुप रह कर इतना विकृताचार प्रत्यक्ष कर रहे हैं और वे ही जो स्वयं इन सबका कारण है वो एकबार भी मनमें चिन्तन

করিতেছেন। এবং তিনিই যে এই সমুদয়ের কারণ তাহা একবার ও মনোমধ্যে অনুধাবন করিতেছেন না। কি প্রকারেই বা করিবেন? মান মদ তাঁহাকে উন্মত্ত করিয়াছে যে, তাঁহার গৃহ মধ্যে জুগুপ্সিত ভাবে যে সকল অত্যাচার হইতেছে তিনি সম্যক্ রূপে তাহার প্রশ্রয় দিতেছেন। পাছে গুপ্ত কথা প্রকাশ পায়, পাছে তাঁহার মর্য্যাদা রূপ নির্ম্মল শশাঙ্কে কলঙ্কের মলিন রেখা নিপতিত হয়, ইহাই তাঁহার ভাবনা। অকিঞ্চিৎকর সম্ভ্রম রক্ষা করিবার জন্য কঠিন হৃদয় হইয়া স্বীয় তনয়ার উপরে কঠিন ব্যবহার করা,, এবং স্বয়ং সকল অত্যাচারের কারণ অন্তঃকরণকে পাপে কলুসিত করা যে কতদূর পর্য্যন্ত অন্যায় কার্য্য সহজেই উপলব্ধি হইতে পারে। ভূপতিগণ মানে বশীভূত হইয়া কতদুর পর্য্যন্ত না অনিষ্ট উৎপাদন করিতেছেন। সামান্য মান হানির আশঙ্কায় তাঁহারা অপরের বিত্ত হরণ, লক্ষ লক্ষ জীবের প্রাণ নাশ এবং অবশেষে রাজ্য নাশ করিয়া তবে ক্ষান্ত হইতেছেন। দুর্গ সকল ভগ্ন ও বিচূর্ণ, পুস্তকাগার ভস্মীভূত, বহু বর্ষ বিনির্ম্মিত সুন্দর সুন্দর জনপদ সকল ধ্বংশ এবং অসংখ্য নরের শোণিত স্রোতে সমৃদ্ধি শালী রাজ্য নিক্ষেপ করা কি প্রশংসার কার্য্য? এবং ইদৃশ আচরণেই কি প্রভুত সম্মান বৃদ্ধি হইয়া থাকে? বিদ্যার আলোচনায় বৈজ্ঞানিক উৎকর্ষ সাধনায়, আধ্যাত্মিক উন্নতিতে এবং শিল্প, কৃসি, ও বানিজ্য আদি কার্য্যে নিপুণতা প্রকাশ করিলে কি মানের বৃদ্ধি হয় না।

ক্রমশঃ।

বিশেষ দ্রষ্টব্য।

ভারতবর্ষের দেশ দেশান্তরে সনাতন আর্য্যধর্ম্মের (ধর্ম্ম প্রচারকাদি নিয়োগ দ্বারা) পুনরুদ্দীপনার্থ ও স্থানে স্থানে সংস্কৃত বিদ্যালয়াদি প্রতিষ্ঠা পূর্ব্বক সংস্কৃত ভাষার পুনরুন্নতি বিধানার্থ আমাদিগের প্রস্তাবিত এক লক্ষ টাকার মূলধনের পুরণ জন্য এককালীন দান স্বীকার।

রায় অন্নদাপ্রসাদ রায় বাহাদুর কলিকাতা ৪০০০৲

শ্রীযুক্ত বাবু রামপ্রসাদ দাস মুঙ্গের ২০০৲

বিবিধ ২০৭৲

नही करते हैं। कैसे करें! "मानमद" उनक इतना उन्मत्त कर रखा है, जो उनके घरमें जुगुप्सित भावसे जितना अत्याचार हो रहा है उनमे हर तरह से उसका आश्रय देता जाता है। गुप्त बात का प्रकाश न होवे, उनकी मर्य्यादा रूप निर्म्मल शशांक पर कलङ्क की मलीन रेख न पड़े, एतने ही उनकी चिन्ता है। अकिंचित कर मर्य्यादा रक्षा करनेके लिये कठोर हृदय से निज तनयापर कठोर व्यवहार करना वो स्वयं सारे अत्याचारके कारण अन्त:करण को पापसे कलुषित करना जो कहां तक अन्याय कार्य्य है सो सहज ही में अनुभव हो सकता है। नृपतिगणने "मान"के वशीभूत हो कर कहां तक न अनिष्ट उत्पादन कर रहे हैं। सामान्य मानकी हानिके डरसे उन्होंने दुसरे का धन हरण, लक्ष लक्ष जीवके प्राणनाश, वा अन्त में राज्यनाश करके तब निवृत्त होता है। दुर्ग समूहों को भग्न वो बिचूर्ण, पुस्तकागार भस्मीभूत, लक्ष्य तवर्ष में निर्म्माण कये वैंठाये हुये, सुन्दर सुन्दर जनपद समूह को ध्वंश वो असंख्य मनुष्यों के शोणित के प्रवाह समृद्धिशाली राज्यको वहाय देना क्या प्रशंसा की कार्य्य है? और ऐसे ऐसे आचरणसे क्या प्रभूत सम्मान की वृद्धि होती है? विद्याकी चर्चा में वैज्ञानिक उत्कर्ष साधना में, आध्यात्मिक उन्नति में और शिल्प, कृषि वो वाणिज्यादि कार्य्य में निपुणता देखलाने से क्या मान की वृद्धि न होती है?

शेष आगे।

विशेष द्रष्टव्य।

हमारे प्रस्तावित एक लक्ष रुपये के मूलधन की जोने इस लिये जमा करी जाती हैं, कि धर्म्म प्रचारकादि नियत करके भारतवर्षीय देश देशान्तर में सनातन आर्य्यधर्म्म की पुनरुद्दीपना वो स्थान स्थान में संस्कृत विद्यालय आदि प्रतिष्ठा पूर्व्वक संस्कृत भाषा की पुनरुन्नति की जाय, वहेश्य एककालिन दान स्वीकार।

राय अन्नदाप्रसाद वहादुर कासिमबाजार ४०००)

श्रीयुत बाबु रामप्रसाद दास मुंगेर २००)

बिबिध २०७)

আশা করি ভারতহিতৈষি মহাত্মা মাত্রেই আমাদের প্রস্তাবিত এই গুরুতর কার্য্যে সহানুভাবকতা ও সহায়তা করিবেন। ধর্ম্মার্থে ও ভারত হিতার্থে যাঁহার যাহা সাধ্য তাহা অনুগ্রহ পূর্ব্বক মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভায় ধর্ম্মপ্রচারক পত্র সম্পাদকের নামে পাঠাইবেন। ধর্ম্মপ্রচারকেও অন্যান্য প্রকাশ্য সংবাদ পত্রে তত্তজ্ঞান প্রাপ্তি কৃতজ্ঞতাসহ স্বীকৃত হইবে। ভগবান্ দাতৃবর্গের কল্যাণ করিবেন। এককালীন দান ভিন্ন মাসিক বৃত্তি প্রার্থনীয় নহে।

৩য় বর্ষের মুল্যপ্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত রাজা নরেন্দ্রনারায়ণ রায় বাহাদুর কাঁদী ৫্

শ্রীমতী মহারাণী শরৎসুন্দরী পুটিয়া ৩৵০

শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসাদ চৌধুরী ঐ ৩্

,, গিরিধর লাল ঐ ৩্

,, শম্ভুচন্দ্র বিশ্বাস ঐ ৩্

,, নবাব সিং (জমীদার) ঐ ৩্

,, বিশ্বেশ্বর মুখোপাধ্যায় জামালপুর ৩্

,, দয়ালনাথ ভট্টাচার্য্য কলিকাতা ৩।৵০

,, রাজকৃষ্ণ মল্লিক হাবড়া ৩্

,, নফরচন্দ্র রায় বহরমপুর ৩।৵০

,, শ্রীকান্ত চট্টোপাধ্যায় ঐ ৩।৵০

,, মহেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায় ঐ ৩।৵০

,, মতিলাল বন্দ্যোপাধ্যায় ঐ ৬৸০

,, দ্বারকানাথ ভট্টাচার্য্য মুন্সেফ আরা ৩।৵০

,, মহেন্দ্রনাথ ঘোষাল, কানপুর ৩।৵০

,, প্রমথনাথ ঘোষ, ধন্দ ৩।৵০

,, কুমারনাথ ভটাচার্য্য, গজা ৩।৵০

,, অমৃতনারায়ণ আচার্য্য, মুক্তাগাছা ৩।৵০

,, শান্তপ্রসাদ ডিং মাঃ জাফরপুর ৬৸০

,, অভয়চরণ বসু ভগলপুর ৩।৵০

,, রাধাগোবিন্দ পাল শ্রীহট্ট ৩।৵০

,, আঘরি কাঁদর্জীপ্রসাদ বরহরোয়া ৩।৵০

,, উমেশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় ডিং, কঃ, গঙ্গা ৩।৵০

,, ভূষণচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায় হালিশহর ৪্

,, জানকীপ্রসাদ সিংহ মৌঝোল ৩।৵০

,, ক্ষেত্রনাথ মুস্তফী সোমড়া ৩।৵০

,, হরিশ্চন্দ্র কাশী ৬৸০

हम आशा करते हैं कि भारत के हित चाहने हारे महात्मामात्र ही हमारे प्रस्तावित इस अतीव गुरुतर कार्य्य में सहानुभावकता वो सहाता करेंगे। धर्म्मार्थ वो भारतको हितार्थ जिन्होने जो कुछ दे सँके सो अनुग्रह पूर्व्वक मुंगेर आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा में धर्म्मप्रचारक पत्र सम्पादकके नामसे भेजें। धर्म्म प्रचारक वो अन्यान्य प्रकाश्य सम्वाद पत्रो में कृतज्ञता पूर्व्वक दान प्राप्ति स्वीकार की जायगी। भगवान दाताओंका कल्याण करें। एककालिन दान छोड़ के मासिक वृत्ति प्रार्थनीय नहीं है।

३य वर्षका मौल प्राप्ति स्वीकार।

श्रीयुक्त राजा नरेन्द्रनारायण राय वाहादुर, कांदी, ५)

श्रीमती महाराणी शरत्सुन्दरि, पुटिया ५।=

श्रीयुक्त वाबु कालीप्रसाद चौधुरी, मुंगेर २)

,, शम्भुचन्द्र विस्वास ,, २)

,, गिरिधर लाल, ,, २)

,, नवाव सिं: (जमीदार) ,, २)

,, विश्वेश्वर मुखोपाध्याय, जामालपुर २)

,, दयालनाथ भट्टाचार्य्य, कलिकाता २।=

,, राजकृष्ण मल्लिक, हावड़ा २)

,, नफरचन्द्र राय, बहरमपुर २।=

,, श्रीकान्त चट्टोपाध्याय, ,, २।=

,, महेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ,, २।=

,, मतिलाल वन्द्योपाध्याय ,, ३।=

,, द्वारकानाथ भट्टाचार्य्य मुनसेफ, आरा २।=

,, महेन्द्रनाथ घोषाल, काणपुर २।=

,, प्रमथनाथ घोष, धन्द २।=

,, कुमारनाथ भट्टाचार्य्य, गजा २।=

,, अमृतनारायण आचार्य्य, मुक्तागाछा २।=

,, शान्तप्रसाद, डि: मा:, मजाफरपुर ६॥

,, अभयचरण वसु, भगलपुर २।=

,, राधागोविन्द पाल, श्रीहट्ट २।=

,, आखौरिकांदजी प्रसाद, वरहरोया २।=

,, उमेशचन्द्र वन्द्योपाध्याय: डि: क: गङ्गा २।=

,, भूषणचन्द्र गंगोपाध्याय, हालिशहर ४)

,, जानकीप्रसाद सिंह, मौफाल २।=

,, क्षेत्रनाथ मुस्तफि, सोमड़ा २।=

,, हरिशचन्द्र, काशी ६ ≡

শ্রীযুক্ত বাবু গিরিশচন্দ্র রায়(জমীদার)রায়নগর ৩।৵০
,, বৈশাখী লাল মজাফরপুর ৩।৵০
,, রামদয়াল নন্দী জামালপুর ২৲
,, শ্যামাপদ রায় দশঘরা ৩।৵০
,, মাতাদীন (সব জজ) গয়া ২।৵০
,, হরিদাস বসু ছোটসরসা ২।৵০
,, স্বরূপচন্দ্র চাঁদ শ্রীহট্ট ২।৵০
,, বৈকুণ্ঠচন্দ্র দাস অষ্টপতি ঐ ২।৵০
,, সনৎকুমার রায় চৌধুরী ধর্ম্মপুর ২।৵০
,, রাধাগোবিন্দ মুন্সী ঐ ২।৵০
,, বিপিনবিহারী সরকার রাহুলপিন্ডী ২।৵০
,, অন্নদাপ্রসাদ চক্রবর্ত্তী লক্ষ্ণৌ ১।৵০
,, আশুতোষ মুখোপাধ্যায় ঐ ১।৵০
,, লাডলীমোহন বসু বহরম্পুর ১।৵০
,, রসিকলাল রায় মুন্সী রাহুলপিণ্ডী ১।৵০
,, গঙ্গাদাস বন্দ্যোপাধ্যায় লালবাগ ৩৸০
,, পূর্ণচন্দ্র দাস মিরাট ১।৵০
,, কৃষ্ণবল্লভ রায় চৌধুরী কলিগ্রাম ১।৵০
,, কমললোচন রায় চৌধুরী ঐ ১।৵০
,, তারকবন্ধু ভট্টাচার্য্য ভট্টপল্লী ১।৵০
,, যোগাশ্বর রায় মকদমপুর ২৸০
,, সারদাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায় নয়াডুমকা ১।৵০
,, উদয়চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় মিরাট ১।৵০
,, শিবপ্রসাদ চক্রবর্ত্তী পাহাড়পুর ১।৵০
,, বৈকুণ্ঠনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় গরলগাছা ১।৵০
,, বৈষ্ণবচরণ পূর্ব্ব কায়স্থ রায়নগর ১।৵০
,, কবিরাজ ভগবচ্চরণ সেন মালদহ ১।৵০
,, ,, যোগেন্দ্রনাথ মণ্ডল মহাচাঁদা ১।৵০
,, ব্রজগোপাল চট্টোপাধ্যায় কুলুগাছী ১।৵০
,, প্রিয়নাথ মজুমদার রামপুর হাট ১৲
,, হরিনারায়ণ মিশ্র কাঁদী ১।৵০
,, অঘোরানন্দ চট্টোপাধ্যায় বননবগ্রাম ২৸০
,, বেণীমাধব নাথ রাহুলপিণ্ডী ১।৵০
,, বিরজানাথ ন্যায়বাগীশ পাখিতা ১।৵০
,, কৃষ্ণচন্দ্র দাস অষ্টপতি নাটু ১।৵০
,, শ্যামলাল সাহ রাজমহল ১।৵০
,, কালীপ্রসাদ সাহ ঐ ১।৵০
,, চন্দ্রনারায়ণ ঝাঁ ঐ ১।৵০
,, চরণ দাস নরসিংপুর (মধ্যপ্রদেশ) ১।৵০
,, পিয়ারে লাল পাঁচমারি (ঐ) ১।৵০
,, বৈকুণ্ঠনাথ দত্ত শ্রীহট্ট ১।৵০
,, ভুবনমোহন বন্দ্যোপাধ্যায় কানসাট ১।৵০
,, গোবর্দ্ধন চক্রবর্ত্তী শিবগঞ্জ ১।৵০

श्रीयुक्त बाबु गिरीशचन्द्र राय (जमीदार) रायनगर ३।=
,, वैशाखोलाल, मजफरपुर ३।=
,, रामदयाल नन्दी जामालपुर २)
,, श्यामापद राय, दशघरा ३।=
,, मातादीन (सबजज) गया २।=
,, हरिदास बसु छोटसरसा २।
,, स्वरूप चन्द्रचांद, श्रीहट्ट २।=
,, वैकुण्ठचन्द्रदास अष्टपति, श्रीहट्ट २।=
,, सनतकुमार राय चौधुरी धर्म्मपुर २।=
,, राधागोविन्द मुन्सी, ,, २।=
,, विपिनविहारी सरकार, रायलपिण्डि २।
,, अन्नदाप्रसाद चक्रवर्त्ती, लक्ष्मणी १।=
,, आशुतोष मुखोपाध्याय, ,, १।=
,, लाडलीमोहन बसु, बहरमपुर १।=
,, रसिकलाल राय मुन्सी, रायलपिण्डि १।=
,, गंगादास बन्द्योपाध्याय, लालबाग ३॥
,, पूर्णचन्द्र दास, मिराट १।=
,, कृष्णवल्लभ रायचौधुरी, कालियाम १।=
,, कमललोचन रायचौधुरी ,, १।=
,, तारणबन्धु भट्टाचार्य्य, भट्टपल्ली १।=
,, योगाम्बर राय, मकदमपुर २॥
,, सारदाप्रसाद मुखोपाध्याय, नयाडुमका १।=
,, उदयचन्द्र वन्द्योपाध्याय, मिराट १।=
,, शिवप्रसाद चक्रवर्त्ती, पाहाड़पुर १।=
,, वैकुण्ठनाथ वन्द्योपाध्याय, गरलगाछा १।=
,, वैष्णवचरण पुर्वकायस्थ, रायनगर १।=
,, कविराज भगवच्चरण सेन, मालदह १।=
,, योगेन्द्रनाथ मण्डल, महाचांदा १।=
,, नीलमोहन मुखोपाध्याय, बांका १।=
,, ब्रजगोपाल चट्टोपाध्याय, कुलुगाछी १।=
,, प्रियनाथ मजुमदार, रामपुरहाट १)
,, हरिनारायण मिश्र, कांदि, १।=
,, अघोरानन्द चट्टोपाध्याय, बननवग्राम २॥०
,, वेनीमाधवनाथ, रायलपिण्डि १।=
,, विरजानाथ न्यायवागीश, पाखित्ता १।=
,, कृष्णचन्द्र दास अष्टपति, लाटु १।=
,, श्यामलाल साहु, राजमहल १।=
,, कालीप्रसाद साहु, १।=
,, चन्द्रनारायण झां, राजमहल १।=
,, चरण दास, नरसिंपुर (मध्यप्रदेश) १।=
,, पियारिलाल, पांचमारि १।=
,, वैकुण्ठनाथ दत्त, श्रीहट्ट १॥
,, भुवनमोहन वन्द्योपाध्याय, कानसाट १।=
,, गोवर्द्धन चक्रवर्त्ती, शिवगञ्ज १।=

	নাম	স্থান	টাকা
,,	পণ্ডিত রামনাথ বিদ্যাভূষণ	কানসাট	১।৵০
,,	দীননাথ দাস	শ্রীহট্ট	১।৵০
,,	পণ্ডিত রাজচন্দ্র চক্রবর্ত্তী	হবিগঞ্জ	১।৵০
,,	অঘোরনাথ ভট্টাচার্য্য	কানসাট	১।৵০
,,	প্রসন্নকুমার দত্ত	হবিগঞ্জ	১।৵০
,,	প্যারীমোহন গোস্বামী	মোনাখালী	১।৵০
,,	শ্রীমন্ত রায় কবিরাজ	ভবানীগঞ্জ	১।৵০
,,	সারদাপ্রসাদ চট্টোপাধ্যায়	গাইঘাট	১।৵০
,,	নবকিশোর দাস	শ্রীহট্ট	১।৵০
,,	নবকিশোর ঘোষ	কমলগঞ্জ	১।৵০
,,	পরমেশ্বর ভট্টাচার্য্য	জামালপুর	১৲
,,	অঘোরনাথ ঐ	ঐ	১৲
,,	ক্ষেত্রনাথ মাহিন্দার	ঐ	১৲
,,	যদুনাথ ভট্টাচার্য্য	ঐ	১৲
,,	নিবারণচন্দ্র ঘোষ	ঐ	১৲
,,	হরিশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী	ঐ	১৲
,,	আশুতোষ চক্রবর্ত্তী	ঐ	১৲
,,	বেণীমাধব গুপ্ত	ঐ	১৲
,,	বিষ্ণুচন্দ্র ভট্টাচার্য্য	ঐ	১৲
,,	ভূষণচন্দ্র ঘোষ	ঐ	১৲
,,	কিশোরীমোহন চক্রবর্ত্তী	ঐ	১৲
,,	রামরত্ন শুকুল	ঐ	১৲
,,	প্রাণকৃষ্ণ চক্রবর্ত্তী	ঐ	১৲
,,	লালবিহারি গুপ্ত	ঐ	১৲
,,	বেণীমাধব রায়	ঐ	১৲
,,	মতিলাল রায়	ঐ	১৲
,,	নবীনচন্দ্র দত্ত	ঐ	১৲
,,	দীননাথ নন্দী	ঐ	১৲
,,	ত্রৈলোক্যনাথ রায়	ঐ	১৲
,,	সত্যকৃষ্ণ মুখোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,,	প্যারীমোহন পাঠক	ঐ	১৲
,,	গিরীশচন্দ্র বসু	ঐ	১৲
,,	দীননাথ রায়	ঐ	১৲
,,	অবিনাশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,,	অখিলচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,,	জগদ্বন্ধু সেন	ঐ	১৲
,,	জানকীনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,,	গিরীশচন্দ্র ঘোষাল	ঐ	১৲
,,	মহেন্দ্রনাথ ঘোষ	ঐ	১৲
,,	মুন্সীলাল	ঐ	১৲
,,	বুলাকীলাল	ঐ	১৲
,,	নাথসহায়	ঐ	১৲
,,	বলদেবপ্রসাদ	ঐ	১৲
,,	ব্রজকিশোর লাল	ঐ	১৲
,,	অযোধ্যাপ্রসাদ	ঐ	১৲
,,	দৌলতপ্রসাদ	ঐ	১৲
,,	সূর্য্যনারায়ণ	ঐ	১৲

	नाम	स्थान	रुपया
,,	श्रीयुक्त पण्डित रामनाथ विद्याभूषण	कानसाट	१।=
,,	बाबु दीननाथ दास	श्रीहट्ट	१।=
,,	पण्डित राजचन्द्र चक्रवर्त्ती	हविगञ्ज	१।=
,,	बाबु अघोरनाथ भट्टाचार्य्य	कानसाट	१।=
,,	प्रसन्नकुमार दत्त	हविगञ्ज	१।=
,,	प्यारीमोहन गोस्वामी	मोनाखाली	१।=
,,	श्रीमन्त रायकविराज	भवानीगञ्ज	१।=
,,	सारदाप्रसाद चट्टोपाध्याय	गाईघाट	१।=
,,	नवकिशोर दास	श्रीहट्ट	१।=
,,	नवकिशोर घोष	कमलगञ्ज	१।=
,,	परमेश्वर भट्टाचार्य्य	जामालपुर	१)
,,	अघोरनाथ भट्टाचार्य्य	जामालपुर	१)
,,	क्षेत्रनाथ महिन्दार	जामालपुर	१)
,,	यदुनाथ भट्टाचार्य्य	जामालपुर	१)
,,	निवारणचन्द्र घोष	जामालपुर	१)
,,	हरिशचन्द्र चक्रवर्त्ती	,,	१)
,,	आशुतोष चक्रवर्त्ती	जामालपुर	१)
,,	वेणीमाधव गुप्त	,,	१)
,,	विष्णुचन्द्र भट्टाचार्य्य	,,	१)
,,	भूषणचन्द्र घोष	,,	१)
,,	किशोरीमोहन चक्रवर्त्ती	,,	१)
,,	रामरत्न शुक्ल	,,	१)
,,	प्राणकृष्ण चक्रवर्त्ती	,,	१)
,,	लालविहारी गुप्त	,,	१)
,,	वेणीमाधव राय	,,	१)
,,	मतिलाल राय	,,	१)
,,	नवीनचन्द्र दत्त	,,	१)
,,	दीननाथ नन्दी	,,	१)
,,	त्रैलोक्यनाथ राय	,,	१)
,,	सत्यकृष्ण मुखोपाध्याय	,,	१)
,,	प्यारीमोहन पाठक	,,	१)
,,	गिरीशचन्द्र वसु	,,	१)
,,	दीननाथ राय	,,	१)
,,	अविनाशचन्द्र बन्द्योपाध्याय		१)
,,	अखिलचन्द्र मुखोपाध्याय		१)
,,	जगद्बन्धु सेन	,,	१)
,,	जानकीनाथ बन्द्योपाध्याय	मुंगेर	१)
,,	गिरीशचन्द्र घोषाल	,,	१)
,,	महेन्द्रनाथ घोष	,,	१)
,,	मुनशी लाल	,,	१)
,,	बुलाकी लाल	,,	१)
,,	नाथ सहाय	,,	१)
,,	बलदेव प्रसाद	,,	१)
,,	व्रजकिशोर लाल	,,	१)
,,	अयोध्या प्रसाद	,,	१)
,,	दौलतप्रसा	,,	१)
,,	सूर्य्यनारायण	,,	१)

এই পত্র প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে নূতন দত্ত প্রেসে শ্রীবিশ্বনাথ দাস কর্ত্তৃক মুদ্রিত
এবং শ্রীকমলাপ্রসন্ন সেন কর্ত্তৃক প্রকাশিত হইয়া থাকে।
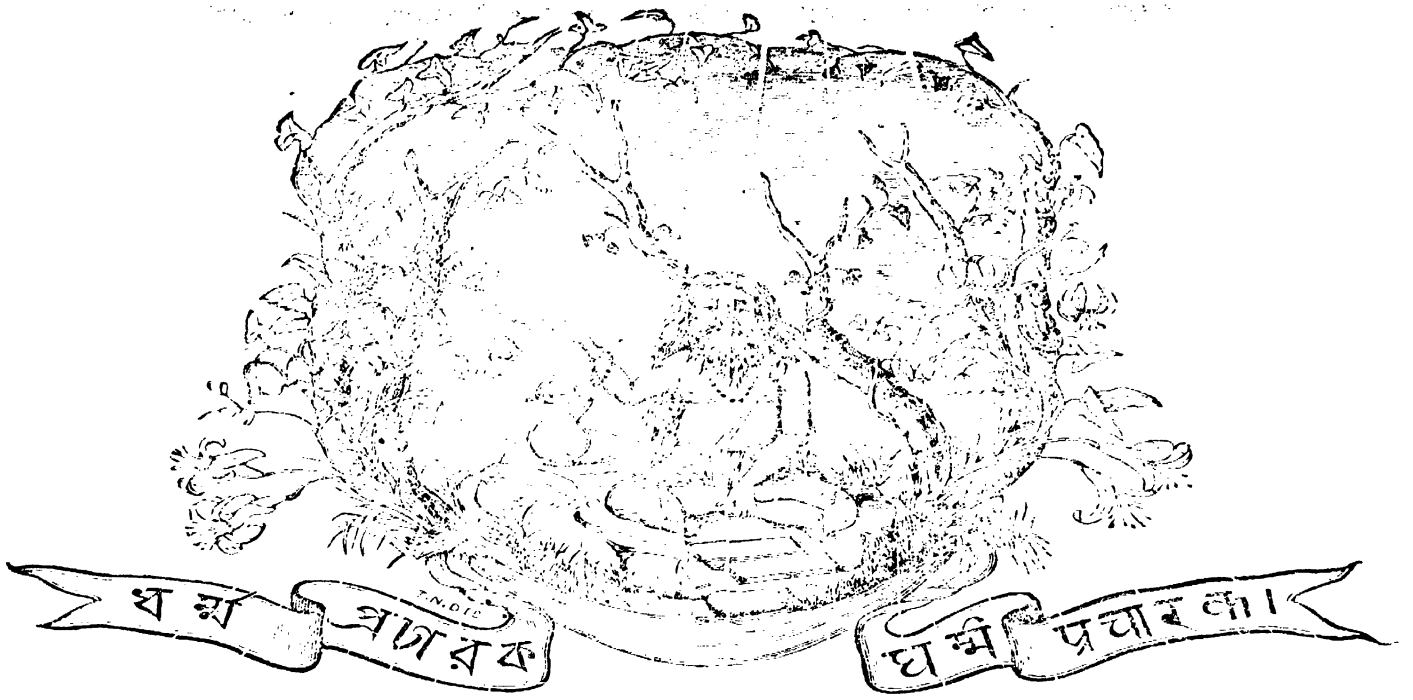
"একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমংনাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি॥"

৩য় ভাগ। } শকাব্দাঃ ১৮০২।
৩৯ ও ৪০ সংখ্যা। } পৌষ ও মাঘ—পূর্ণিমা।

পরমার্থসার।

(শ্রীমদ্ভগবান শঙ্করাচার্য্য প্রণীত।)

পরং পরস্যাঃ প্রকৃতেরনাদি-
মেকন্নিবিষ্টং বহুধা গুহাসু।
সর্ব্বালয়ং সর্ব্বচরাচরস্থং
ত্বামেব বিষ্ণুং শরণং প্রপদ্যে॥ ১॥

তুমি পরাপ্রকৃতি হইতেও পরম শ্রেষ্ঠ, অনাদি, সজাতীয় বিজাতীয় ও স্বগতভেদরহিত এক স্বরূপ হইয়া দেব, দানব, মানবাদি দেহে বহুরূপে বিরাজ করিতেছ, তুমি সকলের একমাত্র আশ্রয়স্থান, অথচ তুমি চরাচরব্যাপী, তুমিই বিষ্ণু, আমি তোমার শরণাপন্ন হইলাম।

আত্মাম্বুরাশৌ নিখিলোঽপি লোকো
মগ্নোঽপি নাচামতি নেক্ষতে চ।
আশ্চর্য্যমেতন্মৃগতৃষ্ণিকাভে
ভবাম্বুরাশৌ রমতে মুধৈব॥ ২॥

আত্ম সত্তারূপ অগাধ জলনিধিতে তাবৎ লোকই নিমগ্ন রহিয়াছে, কিন্তু কেহ সে জলের স্বাদ গ্রহণ বা তাহার দিকে দৃষ্টিপাতও করিতেছে না। আশ্চর্য্য

"एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समन्नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति॥"

३य भाग। } शकाब्दा १८०२।
३९ वो ४० संख्या। } पौष वो माघ—पूर्णिमा।

परमार्थसार।

(श्रीमद्भगवान शङ्कराचार्य्यकृत)

परं परस्याः प्रकृतेरनादि-
मेकन्निविष्टं बहुधा गुहासु।
सर्व्वालयं सर्व्वचराचरस्थं
त्वामेव विष्णुं शरणं प्रपद्ये॥ १॥

आप पराप्रकृति से भी परम श्रेष्ठ हो, आप अनादि हो, आप स्वजातीय विजातीय वो स्वगत-भेदरहित एकस्वरूप होकर भी देव, दानव, मानव आदि विविध देह में नाना भांति से विराज कर रहे हो, आप सारे संसारके एक मात्र आश्रय हो, अथच आप चराचर में व्यापे हुये हो, आप हि विष्णु हो, मैं आपके शरण आया हूं।

आत्माम्बुराशौ निखिलोऽपि लोको
मग्नोऽपि नाचामति नेक्षते च।
आश्चर्य्यमेतन्मृगतृष्णिकाभे
भवाम्बुराशौ रमते मुधैव॥ २॥

आत्म सत्तारूप गम्भीर समुद्र में सब जगत्‌ही निमग्न हो रहा है, किन्तु कोई उस जलका न स्वाद लेता न उस ओर कोई देखता है। आश्चर्य्य

এই যে মায়ামরীচিকায় মোহিত হইয়া মিথ্যা সংসারসলিলে ক্রীড়া করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছে।

গর্ভবাসজন্মজরামরণবিপ্রয়োগ দুঃখাব্ধৌ।
জগদালোক্য নিমগ্নং প্রাহ গুরুং প্রাঞ্জলিঃ শিষ্যঃ॥৩॥

জঠরযন্ত্রণা ও জন্ম, জরা মরণাদিরূপ ক্লেশসমুদ্রে সংসারকে নিমগ্ন অবলোকন করিয়া শিষ্য কৃতাঞ্জলিপুটে নিবেদন করিল।

ত্বং সাঙ্গবেদবেত্তা ভেত্তা সংশয়গণস্য সত্যবক্তা।
সংসারার্ণবতরণে প্রশ্নং পৃচ্ছম্যহং ভগবন্॥৪॥

হে গুরো! আপনি সাঙ্গবেদবেত্তা, সংশয়পাশ বিনাশকর্ত্তা ও প্রকৃত তত্ত্ববেত্তা, অতএব হে ভগবন্ আমাকে এই সংসার সমুদ্র হইতে পারের সদুপায় বলিয়া দিন্।

দীর্ঘেঽস্মিন্ সংসারে সংসরতঃ কস্য কেন সংবন্ধঃ।
কর্ম্মশুভাশুভফলান্যনুভবতি গতাগতৈরিহ কঃ॥৫॥

এই সুদীর্ঘ সংসারে জন্ম মরণাদি যোগে জীবগণ বারম্বার ভ্রমণ করিতেছে; এখানে কাহাঁর সহিত কিরূপ সম্বন্ধ এবং কেই বা এখানে পূর্ব্বকৃত পাপ পুণ্যের ফলস্বরূপ সুখ দুঃখ ভোগ করিয়া থাকে।

কর্ম্মগুণজালবদ্ধো জীবঃ সংসরতি কোশকার ইব।
মোহান্ধকার গহনাত্তস্য কথনং বন্ধনান্মোক্ষঃ॥৬॥

যেমন কোশকার কীট নিজ নির্ম্মিত সূত্রগৃহে স্বয়ং রুদ্ধ হয় তদ্রূপ কর্ম্মরূপ সূত্রজালে জীবগণ আবদ্ধ হইয়াছে, এই মোহান্ধকার ভয়ঙ্কর বন্ধন হইতে তাহারা কিরূপে মুক্তিলাভ করিবে।

গুণকর্ম্মবিভাগজ্ঞে ধর্ম্মাধর্ম্মৌ নিবন্ধকৌ ভবতঃ।
ইতি গদিতং পূর্ব্ববাক্যৈঃ প্রকৃতিং পুরুষঞ্চ মে ব্রূহি॥৭॥

এইরূপ পূর্ব্বতন মহাত্মাগণের উক্তি শুনিতে পাওয়া যায় যে, যিনি গুণকর্ম্ম বিভাগজ্ঞ ধর্ম্ম ও অধর্ম্ম তাঁহার বন্ধনের কারণ হয় না; অতএব সেই মায়া ও জীবের বিভাগ ব্যাখ্যা করুন।

ক্ষিৎপাধারো ভগবান্ পৃষ্ঠঃ শিষ্যেণ তং সহোবাচ।
বিদুষামপ্যতিগহনং বক্তব্যমিদং শৃণু তথাপি ত্বং॥৮॥

শিষ্যের ঈদৃশ প্রশ্ন শ্রবণ করিয়া ভগবান্ অনন্তদেব বলিলেন যে, তোমার জিজ্ঞাসিত বিষয় বিদ্যাবান্গণেরও দুরধিগম্য, তথাপি তোমার নিকট বলিতেছি, অবহিতচিত্তে শ্রবণ কর।

ক্রমশঃ।

कि बात यह है कि माया जगतृष्णा से मोहित होकर सबकोई मिथ्या संसाररूप जलमें वृथा रम रहे हैं।

गर्भवासजन्मजरामरणविप्रयोगदुःखाब्धौ।
जगदालोक्य निमग्नं प्राह गुरुं प्रांजलिः शिष्यः॥३॥

जठर की यातना वो जन्म, जरा मरणादि रूप क्लेशसमुद्र में सारा संसारको डूबता हुया देखकर शिष्य कर जोड़के गुरु से निवेदन किया।

त्वं सांगवेदवेत्ता भेत्ता संशयगणस्य सत्यवक्ता।
संसारार्णवतरणे प्रश्नं पृच्छाम्यहं भगवन्॥४॥

हे गुरो! आप सांग वेदवेत्ता हो, आप संशयपाशको नाश करने हारे हो, आप प्रकृत त्वके बातानेवाले हो, अतएव हे भगवन्! इस संसारसमुद्र से पार उतरने का उपाय मुझको बनाइये। यही मेरी पुछना है।

दीर्घेऽस्मिन् संसारे संसरतः कस्य केन संबन्धः।
कर्म्म शुभाशुभफलान्यनुभवति गतागतैरिह कः॥५॥

इस बड़ा भारी संसार में जन्म मरणादि करके जीवोंने बारंबार घुम रहा है। यहां किस से क्या संबन्ध औ जन्म जन्मान्तर में किया हुआ पाप पुण्य का फलरूप सुख दुःखको कौन हो वा भोग किया करती है?

कर्म्मगुणजालवद्धो जीवः संसरति कोशकार इव।
मोहान्धकार गहनात्तस्य कथं बंधनान्मोक्षः॥६॥

जैसा कुशकरी का कीड़ा अपना बनाया हुआ सुतरी का घरमें स्वयं बंध हो रहता है, वैसे कर्म्मरूप सूतमें जीवसमूह बंधे गये हैं, इस मोहान्धकार रूप बंधन से उन्हों को किस तरहसे मुक्ति होगी?

गुणकर्म्मविभागज्ञे धर्म्माधर्म्मौ निर्वंधकौ भवतः।
इति गदितं पूर्ववाक्यैः प्रकृतिं पुरुषञ्च मेब्रूहि॥७॥

पूर्व्वतन महात्माओं का ऐसी वचन सुनी जाती है, कि जो गुण वो कर्म्मका बिभाग जानते हैं, धर्म्म वो अधर्म्म उसका बन्धनका कारण न होते, अतएव उन माया वो जीवका विभाग कहिये।

क्षित्याधारो भगवान् पृष्टः शिष्येण तं सहोवाच।
विदुषामप्यतिगहनं वक्तव्यमिदं शृणु तथापि त्वं॥८॥

शिष्य की इस भांति वचन सुन कर भगवान् अनन्तदेव ने बोला हे शिष्य! तुम्हारी पुछी हुइ बात विद्वानों के भी जानने योग्य नहीं, तथापि तुमको मैं कहता हूं, दत्तचित्त हुए सुनते रहो।

शेष आगे।

দুঃখনিবারণ বা গোপালন।

অহো এ পর্য্যন্ত আমাদিগের সে ভাব উদয় বা একবার স্মরণও হইল না। আমাদিগকেও ধিক্! ও আমাদিগের "আমিত্বকেও" ধিক্!! ধর্ম্মরাজ মহারাজ যুধিষ্ঠিরের অধিকার কাল হইতে সকলেই শুনিয়া আসিতেছেন যে গো ও দুহিতার ন্যায় নিঃসহায়া ও দুঃখিনা আর কেহই নাই, কিন্তু বলিতে পারি না আমাদিগের এতই কি ধনগর্ব্ব হইয়াছে যে আমরা তাহাদিগের প্রতি একবার দৃষ্টি করিতে বা মনোযোগও করিতে অসমর্থ। আমাদিগের পূর্ব্ববর্ত্তী ও অন্যান্য লোক কত সুখ ও দুঃখ জনক রীতি যাহা কাল প্রত্যক্ষ সাক্ষ্য প্রদান করিতেছে এবং ইংরাজি শিক্ষার গুণে যাহার ফলভাগী হইতেছি এবং প্রসঙ্গক্রমে দুর্ব্বলতাদি জন্য যাহার গুরুতর দৃশ্য দুঃসহ হইয়া উঠিয়াছে, হায়! এখনও কি আমাদের মন হইতে তাহা অপসারিত হইবে না এখনও কি আমরা আত্মপরিচয় না লইয়া মৌনী থাকিব, আমাদিগের স্বতঃ প্রতিষ্ঠিত ধর্ম্মের "আর্য্য" নামের তবে ফল কি হইল! আমরা কি তাহার প্রতিষ্ঠা বিস্মৃত হইয়াছি! যাহা আমার মৃত্যুর পরেও সঙ্গ পরিত্যাগ করে না, তাহা সত্ত্বেও আমরা কেন স্থির-নিশ্চিন্ত রহিয়াছি। আমরা উন্মত্তের ন্যায় তবে কেন পূর্ব্ব রীতির অনুসরণ করিতেছি ইহা কি আমাদের একাকী সাধন করিবার জন্য নহে।

হে অভিমানীগণ! হে ভ্রাতৃমণ্ডলি!

একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।

ধর্ম্মের গতি যে কত সূক্ষ্ম ও ধর্ম্ম ভিন্ন মরণান্তর যে আর কিছুই সহগামী হয় না, তাহা সকলেই বিদিত আছেন। অন্যান্য জাতির ধর্ম্ম এখন পর্য্যন্ত যথাবৎ উন্নতি লাভ করিয়া যাইতেছে কিন্তু অত্যন্ত দুঃখের বিষয় এই যে আমাদিগের পরস্পর অনৈক্যবশতঃ আমাদিগের ধর্ম্মই দিন দিন প্রতিভাহীন হইয়া পড়িতেছে এবং এই জন্য ইহার মর্য্যাদা এত ন্যূন হইয়া গিয়াছে যে গত ১২০০ বৎসর হইতে আমাদিগের ধর্ম্মবিরোধী যবনগণ ভূপতিগণের নিকট স্বকীয় সমধিক প্রতিষ্ঠা স্থাপন করিয়া আসিতেছে এবং ভূপতিও আমাদিগের ধর্ম্মের প্রতি আস্থা বা ন্যায়পরতার প্রতিদৃষ্টিপাত না করিয়া সর্ব্ব প্রকার আমাদিগকে দুর্ব্বল বোধে সকল বিষয়েই তিরস্কার করিতেছেন। গত ১৪

आर्तिनिवारण, वा गोप्रतिपालन।

क्या अब भी हमलोगोंको वह ईर्ष्या नहीं आती, और हम नहीं जानते!? धिक्कार है! हमको और हमारे "हम" पनको और हमको! आजतक सबकोई महाराज धर्म्मराज वा युधिष्ठिरके समयसे कहते आये हैं, कि गौ वा लड़कीके समान कोई गरीब वस्तु नहीं, परंतु न जाने हम लोग अपनी अमीरी के ही कारण उन गरीबोंकी ओरतक नहीं देखते क्या—झुकते! हाय! क्या अबतक भी हमलोगोंके दिलसे वे बातें न उतरेंगी! जो कि हमारे पर्वजोंने वा अन्यलोगोंने, कोई सुखकारी कोई दुःखकारी समय प्रत्यक्ष दिखनेवालीं कीं हैं, जिनको कि हम लोग इनही अंग्रेजोंकी सुराज्य शिक्षासे जानकर उनके भागी होते हैं और प्रसंगसे दुर्बलताके कारण उनके वजनको सहना भी भारी समझते हैं? क्या अबभी हम लोगोंका मौन कभी हमको "तुम कौन" ऐसा नहीं कहलावेगा? क्यों हमारा धर्म्म इतना स्वतएव प्रतिष्ठित "आर्य्य" नांव पाया, क्यों हम उसकी प्रतिष्ठा भूलगये? वह भी, जो श्मशानवासके अनंतर भी हमरा साथ न छोड़ना—क्यों हमको इतने दीन और निर्लज्ज करचुका? हमभी क्यों वृथा पागलके समान, उसका पीछा खींचे ही जाते हैं? क्यों यह हमारा अकेलेका ही न बना रहा?

हे अभिमानियो वा भाईयो!

एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।

धर्म्मकी गति कितनी सूक्ष्म है, और धर्म्मके सिवाय मरणके अनंतर भी साथ जानेवाला कोई नहीं है, यह सबकोई जानते हैं, उसमें भी औरोंका धर्म्म यद्यपि अभीतक जैसा तैसा वृद्धिपर ही है, परंतु बड़े शोचका विषय है कि हम लोगोंके अनैक्यसे हमरा धर्म्म दिन दिन घटता जाता है और इसी कारणसे इसकी कदर इतनी घट गई कि आज १२०० वर्षसे हमारी शत्रुता करनेवाले जो यवन, उनका वजन हर बातमें हमसे अधिक, सरकारमें पड़ने लगा और सरकार भी हम लोगोंके धर्म्मका ख्याल वा न्यायकी रीति परध्यान न रखकर, सब रीतिसे दुर्बल हम लोगोंको हरबातमें तिरस्कार करने लगी, आज कोई चार महीनोसे बराबर एक नाएक मुकद्दमा* आर्य वा हिंदु और यवन वा मुसलमानोंका हुआ ही करता है, और जिसका

মাস হইতে আর্য্য বা হিন্দু ও যবন বা মুসলমানের মধ্যে একটী না একটী মোকদ্দমা * প্রায়ই ঘটিতেছে এবং হিন্দুদিগের কারাবরোধ, অর্থদণ্ড বা ধিক্কার আদি তাহার পরিণাম ফল হইতেছে। ক্রমে ক্রমে যবনদিগের স্পর্দ্ধা এত বৃদ্ধি হইয়াছে যে যেমনই কেন ধর্ম্মবিরুদ্ধ কার্য্য হউক না তাহারা অবাধে সম্পন্ন করিতেছে কেন না তাহাদের ইহা স্থির নিশ্চয় হইয়াছে যে আমরা যেমন কেন উলঙ্গ হইয়াও নৃত্য করি না শাসন কর্ত্তৃপক্ষ আমাদিগেরই পক্ষ সমর্থন করিবেন। বাস্তবিকও এতাবৎ মোকদ্দমার ফল সেইরূপই হইয়াছে। যে দিন হইতে আর্য্যগণের হস্ত হইতে ভারতাধিপত্য ভার যবনদিগের হস্তে গিয়াছে সেই দিন হইতেই আমাদিগের বল বিনষ্ট হইয়াছে। যদিও শ্রীমতি মহারাণী ভারতেশ্বরীর বিজয়পতাকা ও ন্যায়শরণী আমাদিগের সুখ দুঃখ শুনিয়া যথার্থ বিচার করিবার জন্য প্রস্তুত, অথচ রাজকর্ম্মচারীগণ তদ্বিষয়ে অমনোযোগী. এই নিমিত্ত ঈদৃশ কটূক্তি দ্বারা স্বধর্ম্মানুরাগবশতঃ রাজার মনোদুঃখ না দিয়া থাকিতে পারিলাম না। ইহার সদুপায় বিধানও রাজার আয়ত্ত।

হে আর্য্যধর্ম্মাবলম্বীগণ! যদি তোমরা যথার্থই স্বধর্ম্মপরায়ণ থাক ও নিজ ধর্ম্ম বা জননী রূপিনী গাভীকে পূজ্য বলিয়া সম্মান কর, তবে শীঘ্রই ইহার উপায় বিধান কর। নিজ নিজ মণ্ডলী বা সভা হইতে রাজ প্রতিনিধি শ্রীমান মহামান্য মার্কুইস্ অব রিপন বাহাদুরের নিকট এক এক খান নিবেদন পত্র প্রেরণ কর নতুবা হায়দ্রাবাদ, ভগলপুর বা মিরজাপুরের গোবধ হইল আর তত্রস্থ হিন্দুগণ কোন উপায় করিতে পারিলেন না এরূপ ঘটনা তোমাদিগেরও ঘটিতে পারে এবং তোমাদিগকেও "ব্রাহ্মণার্থং গবার্থং বা সদ্যঃ প্রাণান্ পরিত্যজেৎ" এতদ্বাক্যানুসারে প্রাণ বা ধর্ম্ম পরিত্যাগ করিতে হইবেক।

হে নৃপতিবর্গ! আপনারা যদিও সর্ব্বদা লোক বার্ত্তার মনোযোগ পূর্ব্বক কর্ণপাত করেন না তথাচ প্রার্থনা এই যেন এ বিষয়ে ঔদাস্য না করেন।

হে পণ্ডিতগণ! আপনারা কেবল পুস্তকাদি

* মনশী ইন্দ্রমণি; হায়দ্রাবাদের বিদ্রোহ, ভগলপুর, মিরজাপুর, বারাণসী, আদি স্থানে গোবধ, বেহারের মহরমে গণেশজীর বিবাদ ইত্যাদি।

फल हिंदुओंको कैद, जुरमाना, वा धिक्कार आदि ही मिला। होते होते अब यवनोंका प्राबल्य इतना हुआ कि अब वे कोई बात, कैसी भी धर्म्म विरुद्ध हो, बेधड़क कर गुजरते हैं, कारण उन्हे यह पूरा निश्चय हो गया है कि हम चाहे जैसे नंगे नाचे तौ भी सरकार हमारा ही पक्ष करेगी, और इसी रीतिका आजतक इन मुकद्दमोमें सरकारका बर्ताव भी होता आया है, हम लोगोंका बल तभी नष्ट हुआ है जब कि हमारे पूर्वजोंके हाथसे हमारी प्रभुता, यवनोंके वा मुसलमानोंके हाथमे गई. यद्यपि श्रीमती महाराणी भारतेश्वरीकी विजय पताका और न्याय सरणी हमारे सुखदुःखको सुनकर यथार्थ रीतिसे मिटानेवाली है, तथापि राज कर्मचारी इसका ध्यान नही रखते, इस लिये ऐसी ऐसी कटु उक्तिके लेख द्वारा अपने धर्मके जोषसे सरकारको दुःखित किये विना रहा नहीं जाता, इसका उपाय भी तो सरकारके ही हाथ है।

हे आर्य्यधर्म्मावलंबियो, यदि तुम सच्चे अपने धर्म्मपर आरूढ हो और अपनी धर्म्म वा जननीरूप गौको पूज्य मानते हो तो इसका उपाय शीघ्र करो, अपनी अपनी मंडली वा सभासे एक एक निवेदनपत्र श्रीमान् महामान्य मार्क्विस आफ रिपन् राजप्रतिनिधिके नामसे शीघ्र भेजो नहीं तो हैदराबाद, भागलपुर, वा मिर्जापुरमें गोवध हुआ, और वहांके हिंदू मुंह देखते रहें, वैसे कभी तुम्हारे ऊपर भी यह प्रसंग आवेगा और तुम लोगोंको भी "ब्रह्मणार्थं गवार्थं वा सद्यः प्राणान् परित्यजेत्" इस वाक्यानुसार जानसे वा अपने धर्म्मसे हाथ धोना पडेगा।

हे नृपतिवरो, यद्यपि आप लोग सर्व्वदा लोगवार्ता को सावधान चित्तसे कभी नहीं सुनते, तथापि इस प्रार्थनाके विषयमें वैसे न होजाइये।

हे पंडितवरो, आप लोग केवल पुस्तकादि अवलोकन, श्रवण, पठनमें ही अपना काल बिताते

* मुनशी इन्द्रमणीं, हैदराबादका बलवा, भागलपूर, मिर्जापूर, बनारस आदि स्थानका गोवध बिहारके मुहर्रम में गणेशजीका झगडा आदि कई उदाहरण हैं।

দর্শন, শ্রবণ, পঠন করিয়াই দিনপাত করেন, কিন্তু আশা করি এ বিষয়টীর জন্যও কিঞ্চিৎ সময় ব্যয় করিবেন।

হে ধনাঢ্যগণ! ইহা নিদ্রা যাইবার সময় নহে, দেখ, তোমাদের ধর্ম্ম নষ্ট হইতে চলিল শীঘ্র ধন সহ জাগ্রত হও।

হে সার্ব্বত্রিক সভ্যগণ! যদিও এই কার্য্যটী সকলের সমবেত যত্নসাধ্য, তথাপি প্রত্যেকের ইহাতে সচেষ্ট হইতে হইবে। এজন্য নিজ নিজ সভাকে উত্তেজিত কর।

হে নিরুদ্যোগীগণ! ইহাই তোমাদের উদ্যম দেখাইবার উত্তম অবসর, এজন্য এখনও দয়াল ইংরেজ রাজপ্রতিনিধি রিপন সাহেব বাহাদুরের নিকট স্বকীয় এবং স্বধর্ম্মের রোদনধ্বনি গোচর করিতে ত্রুটি করিও না।

হে সৎকার্য্যপরায়ণ ও অসৎকর্ম্মবিরাগীগণ! পত্র সম্পাদকগণ! যদিও তোমাদিগের কণ্ঠ এই রূপ কার্য্যের জন্য চীৎকার করিতে করিতে ভগ্ন স্বর হইয়াছে ও হইবে তথাপি এই সময়ে ধর্ম্মকার্য্যানুরোধে নিজ ধর্ম্মানুসারে কেবল তোমাদিগকেই নহে তোমাদিগের পাঠকগণকেও চীৎকার করিতে ও সর্ব্বতোভাবে সদুপায় প্রচার করিতে হইবে।

হে নিরক্ষরগণ! তোমরাও এই উপলক্ষেও পড়িতে অভ্যাস ও সকলের সহিত মিত্রতা কর।

হে ভারতবাসিগণ! তোমরা সকলেই এই দেশবাসী, অতএব পরস্পরের বন্ধুত্ব যেন বিচ্ছেদ না হয়।

হে রাজকর্ম্মচারীগণ আপনারাও ঈদৃশ কার্য্যে যথার্থ কাহার অপরাধ এবং আপনাদিগের বিচার কত দূর প্রজাহিতকারী ও রাজনিষ্ঠা-বর্দ্ধনকারী তৎপ্রতি সূক্ষ্ম দৃষ্টি করুন তাহা হইলে পক্ষপাতের কার্য্য শুনিয়া বা দেখিয়া আমাদিগকে দুঃখিত হইতে এবং আপনাদিগকেও গ্রহবৈগুণ্যের বশবর্ত্তী হইয়া ঈদৃশ রাজদণ্ডও দিতে হইবে না।

হে মহামান্য রিপন মহোদয়! আপনার শুভাগমনে আনন্দ এবং পীড়া জন্য দুঃখ অনুভব করিলাম, এক্ষণে কার্য্যক্ষেত্রে আসিয়া শুভানুষ্ঠান দ্বারা আপনার পূর্ব্ব প্রতিজ্ঞানুসারে আমাদিগের আশা পূর্ণ করুন। আপনার এই সৎকীর্ত্তি আমরা চিরকাল স্মরণ রাখিব এবং ইতিহাস তাহার সাক্ষ্য প্রদান করিবে।

हैं परंतु इधर भी कुछ काल अवश्य आप देंगे ऐसी आशा है।

हे धनिको, अपने धनके साथ आप लोगोंभी जलद जागिये, ऐसे विषयमें सोना अच्छा नहीं देखो, तुम्हारे धर्मकी चांदी बनगई।

हे सार्व्वत्रिक सभासदो, यद्यपि यह काम सर्व्व संमतका है तथापि प्रत्येकको इसका यत्न करना चाहिये, इसलिये सोती हुई अपनी सभाओंको खड़ी करो।

हे निरुद्योगियो, यही तुम्हारे उद्योगको प्रारम्भ करनेका अच्छा मुहूर्त्त है। इसलिये अबभी दयाल अंग्रेज सरकारके प्रतिनिधि रिपन साहबके पास अपनी वा अपने धर्मकी आर्त्तध्वनि पहुचाने में कसर न करो।

हे सत्कर्म्मप्रवृत्ति दुष्कर्म्मनिवृत्ति सूचको, वृत्त-पत्र संपादको, यद्यपि तुम लोगोंका कंठ इन हो कामोंमें चिल्लाते चिल्लाते बैठ गया वा बैठेगा, तथापि इस समय फिर भी इस धर्म्मकृत्य के हेतु अपने धर्म्मानुसार तुमको ही केवल नहीं, किन्तु, तुम्हारे पाठकोंको भी चिल्लाना और सब रीतिसे सदुपाय जताना पड़ेगा।

हे अक्षर शतुओ, इस बहानेसे तौ भी तुम पढ़नेका अभ्यास करो और सबके मित्र बनो।

हे भारतवासियो, चाहे जिस रीतिसे आपसमें एकदेशनिवासित्वके कारण बंधुत्वको न तोड़ो।

हे राजकर्म्मचारियो, आप भी ऐसे ऐसे कामोंमें यथार्थ किसका अपराध है और आपका किया हुआ न्याय कहां तक प्रजाकी रक्षा और राजनिष्ठाकी वृद्धिको सहकारी है इसपर भी सूक्ष्मदृष्टि दिया करो, तो एक तर्फी ही बातें सुनकर वा देखकर हम लोगोंको इतना आक्रोश करना न पड़ेगा और आपके विपरीत ग्रहका कारण होकर राजदण्ड न भुगतना होगा।

हे महामान्य रिपन महोदय, आपके शुभागमनका आनन्द और रुग्नताके शोकका अनुभव तो हम लोग ले ही चुके, अब कार्य्यसरणीकी शिक्षा जो बाकी है, उसको भी, आशा है, कि जन्मभर तक हम लोग, आपकी पूर्व्वप्रतिज्ञाओंके अनुसारसे, न भूलेंगे, और यह निश्चय है कि वह इतिहास द्वारा भी आपकी सत्कीर्त्ति ही का सदा स्मरण देगी।

হে ভারতচক্রবর্ত্তিনী রাজরাজেশ্বরী! যখন আমরা ভারতবাসীদিগের নিকটেই আমাদিগের আর্ত্তনাদ গোচর করিতে পারিতেছি না তখন তোমাকে কিরূপে বিদিত করিব!

হে পরমেশ্বর! তুমিও এই সকল উপায়ের সহায়তা করিয়া আমাদিগকে কৃতার্থ কর।

"উচিতকারিণী" কার্য্যালয় } ধর্ম্মাবনত
শ্রীনাথ দ্বারা, মেওয়ার প্রান্ত } উচিতকারিণী সভার সভ্যগণ।

আমরা উচিতকারিণী সভাকে এই সদুদ্যম জন্য হৃদয়ের সহিত সহানুভূতি করি। ভগবান তাহাদের আশা পূর্ণ করিলে সমস্ত ভারতের বিবিধ কল্যাণ সংসাধিত হইবে। কিন্তু মহাত্মা রিপন বাহাদুরের নিকট আবেদন মাত্র করিলেই যে এতৎ প্রার্থনা পূর্ণ হইবে, তাহার আশা নাই। প্রত্যহ যে ইংরাজগণের ভোজনার্থ কত গোহত্যা হইয়া থাকে তাহার ইয়ত্তা করা কঠিন। অতএব উচিতকারিণী সভার নিকট আমাদের প্রার্থনা এই যে, আমাদের ধর্ম্মপ্রচারকের ১৪শ, ১৫শ, ১৬শ, ও ১৭শ সংখ্যায় "গোহত্যা নিবারণ" প্রস্তাবের সমালোচনা কালে যাহা যাহা লিখিত হইয়াছে তদ্বিষয়ে একটু প্রণিধান করেন, তদনুসারে অনুষ্ঠানপত্র প্রচার করিয়া সমস্ত ভারতকে উত্তেজিত করিলে অপেক্ষাকৃত উৎকৃষ্ট ফললাভ হইবেই হইবে। তবে আর্য্য ও মহম্মদীয় ধর্ম্মাবলম্বীগণের মধ্যে যে মধ্যে মধ্যে বিষম বিরোধ উপস্থিত হয়, তাহার সুবিচার জন্য রিপন মহোদয় একটু বিশেষ ব্যবস্থা করুন। ইহা আমাদের একান্ত প্রার্থনা।

ধঃ, প্রঃ, সঃ।

মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভার ৫ম বার্ষিকোৎসব।

যে পরমাত্মার প্রচণ্ড তেজোপ্রভাবে ত্রিভুবনের তাবৎ ক্রিয়াই নিয়ম পূর্ব্বক সুনির্ব্বাহিত হইতেছে, যাঁহার কৃপায় আমরা দুর্ল্লভ মনুষ্যদেহ লাভ করিয়া, তাঁহার অনন্তলীলা দর্শনে বিমোহিত হইয়া রহিয়াছি, সেই বৃন্দারকবৃন্দবন্দনীয় পরমপুরুষের অভয় চরণারবিন্দে প্রণাম করি। যাঁহার দয়ালাভ করিলে প্রবল বায়ু বিতাড়িত মেঘ-মণ্ডলের ন্যায় বিপুল বিঘ্ন বিপত্তি বিনষ্ট হইয়া যায়, যাঁহার কৃপা-কটাক্ষমাত্রেই মহাপাতকীও মুক্তিলাভ করে, যিনি ভক্তবৎসলতা-বশম্বদ হইয়া সময়ে সময়ে সংসারের

हे भारतचक्रवर्त्तिनी राजराजेश्वरि, जब हमारे भारतवासियों तक भी हम अपनी पुकार नहीं पहुंचा सकते, तो तुम तक कैसे जायगी ?

हे परमेश्वर इन सबके उपायोंको साहाय्य करनेके लिये तुम भी कम्बर बान्धे रहो।

"उचितकारिणी" कार्य्यालय } धर्म्मविनीता
श्रीनाथद्वारा, प्रान्त मेवाड़, } उचितकारिणीसभासदः

इस सदुद्यम के अर्थ हम "उचितकारिणी सभाके ओर पूर्णहृदयसे सहानुभूति प्रकाश करते है। भगवान् उन्होंकी आशा पूरीकर देनेसे समस्त भारतवर्षके नाना भान्ति कल्याण संसाधित होंगे। किन्तु यह कुछ आशा नहीं देखी जाती कि रिपन वहादुरके निकट आवेदन करने ही से सभा की कामना पूरेगी। हर दिन जो अंरेजोंके भोजनार्थ कितने गोहत्या हो रही है, तिसकी इयत्ता करना ही कठिन है। अतएव उचित्कारिणी सभाके निकट हमारी यह प्रार्थना है जो वे उस आशय पर तनिक प्रणिधान करें, जो कि हमारे १४, १५, १६ वो १७ संख्यक "धर्म्मप्रचारक" में "गोहत्यानिवारण" नाम प्रस्ताव को समालोचनाके समय लिखा गया है। तदनुसार अनुष्ठान पत्र प्रचार कर समस्त भारत को उस्कानेपर इससे कुछ अवश्य ही उत्तम फल मिलेगा। हां, आर्य्य वो महम्मदी धर्म्मवालेंके मध्य में जो बीच बीच में विषम विरोध मचजाता है, इसके सुविचारार्थ रिपन महोदय तनिक विशेष वन्दोवस्त करें, यह हमारी एकान्त प्रार्थना हैं।

ध:, प्र:, सं।

मुङ्गेर आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभाका ५म वार्षिकोत्सव।

जिन परमात्माके प्रचण्ड प्रतापसे त्रिभुवन की हरएकक्रिया नियम पूर्व्वक चल रही है, जिनकी कृपासे हम सब दुर्लभ मनुष्यदेह पाकर उनकी अनन्तलीला देखते हुये मोहित होरहे है, उन वृन्दारक वृन्द वन्दनीय परम पुरुषके अभय चरणारविन्द में सीर झुकाये प्रणाम करते हैं। जिनकी कृपालाभ करने से, प्रबल वायुके जोरसे उड़ने हुए घनंघटामण्डके समान विपुल विघ्न विपत्ति विनष्ट हो जाती जिनकी कृपादृष्टी होने

সদ্গতি বিধানার্থ বিবিধ বিগ্রহ পরিগ্রহ পূর্ব্বক অধর্ম্মাচারের উচ্ছেদ, ধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা ও ভক্তগণকে রক্ষা করিয়া থাকেন সেই সচ্চিদানন্দ স্বরূপ যোগীজনহৃদয়বিহারী নারায়ণের কৃপায় ও তাঁহার ভক্তগণের যত্ন ও সহায়তায় এই আর্য্য ধর্ম্মপ্রচারিণী সভা আনন্দ সহকারে নিজ কর্ত্তব্য সাধনপূর্ব্বক ৫ম বর্ষ অতিক্রম করিয়া অদ্য ষষ্ঠবর্ষে পদার্পণ করিল। এই শুভ দিনের উপলক্ষে ২২এ মাঘ হইতে ২৫ মাঘ শঃ ১৮০২ পর্য্যন্ত ৪ দিবস সভার বার্ষিকোৎসব হইয়াছিল। ধর্ম্মানন্দ সাধুহৃদয় পাঠকমহাত্মাগণের বিদিতার্থ সংক্ষিপ্ত কার্য্য বিবরণ নিম্নে প্রকটন করিলাম।

২২এ মাঘ। বৃহস্পতিবার।

সভাগৃহ ও সংস্কৃতপাঠশালা ধ্বজা, পতকা, পত্র, পুষ্প, ফলাদি দ্বারা সুশোভিত ও পবিত্র ভাবযুক্ত হইয়াছিল। বায়ুবেগে পতাকা যখন ঘন ঘন হিল্লোলিত হইতে লাগিল তখন বোধ হইতেছিল যেন ভারতবাসীদিগের একমাত্র চিরপরমাদরের সামগ্রী অমূল্য বিজয়চিহ্ন ধর্ম্ম বর্ত্তমান শতাব্দীর ভ্রষ্টাচারের প্রবল তাড়নায় বিকম্পিত ও অস্থির হইয়া উঠিয়াছে। প্রাতঃকালে সংস্কৃতপাঠগৃহে শ্রীশ্রীশ্রীমন্নারায়ণ ও বেদ, বেদান্ত, দর্শন, পুরাণাদি সহ ৺সরস্বতীদেবী মূর্ত্তির বিহিত উপচার সহ পূজা হইল। পণ্ডিতগণ যখন বেদমন্ত্রে বাগ্দেবীরস্তব পাঠ করিতেছিলেন, তখন বাস্তবিক শ্রোতার হৃদয়ে ভক্তির উচ্ছাস উঠিতে ছিল। অতঃপর যখন বেহারবাসী ও বঙ্গদেশী বালক ও যুবকগণ একত্রে শ্রেণীবদ্ধ ভাবে দণ্ডায়মান হইয়া করযোড়ে ভক্তিপূর্ব্বক মন্ত্র পাঠ করিয়া পুষ্পাঞ্জলি প্রদান করিতেছিলেন, তখন তাহা (বেহার ও বঙ্গের সমাবেশ) একটী অভিনব দৃশ্য বলিয়া বোধ হইয়াছিল। মধ্যাহ্নে নিমন্ত্রিত ব্রাহ্মণগণকে মিষ্টান্নাদি দ্বারা পরিতৃপ্তিকর ভোজন করাইয়া দক্ষিণা দান পূর্ব্বক বিদায় করা হইল। অপরাহ্ন বেলা ৩ টার সময় মুঙ্গের ও জামালপুরস্থ হরিগুণগাননিপুণ অন্যূন পঞ্চাশৎ ব্যক্তি কণ্ঠে পুষ্পমালা; মৃদঙ্গ, করতাল, ভেরী, ঘড়ী আদি বাদ্যোদ্যম সহ সুমধুর সম-স্বরে "নগর সংকীর্ত্তনে নির্গত হইলেন। অগ্রে অগ্রে বঙ্গীয় ও বেহারী বালকগণ প্রসন্নবদনে হরিনামাঙ্কিত পতাকাবলি হস্তে গমন করায় সমধিক শোভা হইয়াছিল। নগরীর প্রধান প্রধান পথ ও পল্লীর মধ্য দিয়া নগরবাসী-

हों मानमें महापतकी भी उद्धार हो जाता है, जिनकी भक्तवत्सलताने संसारको सुधरनेके लिये नाना भान्तिरूप धारण पूर्व्वक अधर्म्मका उच्छेद, धर्म्मकी प्रतिष्ठा औ भक्तों की रक्षा की करती है, वही सच्चिदानन्द स्वरूप योगीजन हृदय विहारी नारायण की कृपासे. उनके भक्तों की यत्न औ सहायता से यह आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा आनन्द पूर्व्वक निज कर्त्तव्य साधन करती हुई ५म वर्ष अतिक्रम कर आज षष्ठ वर्षको प्राप्त हुई। इस शुभदिनके उपलक्ष करके माघसुदी ५से माघसुदी ८ तक चार दिवस सभाका वार्षिकोत्सव हुआ था, धर्म्मानन्द साधुहृदय पाठक महात्माओं के विदितार्थ संक्षेप से कार्य्यविवरण नीचे प्रगट करते हैं।

माघ सुदि ५। वृहस्पतिवार।

ध्वजा, पताका, पत्र, पुष्प, फलादि के द्वारा सभागृह वो संस्कृत पाठशाला को सुशोभित औ पवित्र भावयुक्त किये गये थे। वायुके प्रवाह करके पताका जब तरङ्गाकार होती हुई बड़ा जोरसे उड़ने लगी, तब बोध होता था जैसा कि भारतवासीयोंके अमूल्य विजयचिह्न धर्म्म, जो कि इन्होंके एकमात्र चिर परमादर की सामग्री है, वर्त्तमान शताब्दी की भ्रष्टाचार की प्रबल तड़पन से कम्पित वो अस्थिर हो उठा है। प्रातःसमय संस्कृत पाठगृह में श्रीश्रीश्रीमन्नारायण वो वेद वेदान्त, दर्शन, पुराणादि सहित विहित उपचार से सरस्वती देवी मूर्त्ति की पूजा हुई। पण्डितोंने जब वेदमन्त्रसे वाग्देवी का स्तव पाठ कर रहा था, उस समय श्रोताओंके हृदय में यथार्थतः भक्तिका उच्छ्वास उठ रहे थे। इसका उपरान्त जब बेहारवासी वो बङ्गदेशी बालक वो युवकगण कतार दिये खड़े होकर हातजोड़े भक्ति पूर्व्वक मन्त्रपाठ करते हुए देवीके चरण पर पुष्पाञ्जलि चढ़ाते थे तब उसको (बेहार वो बङ्गला का मिलन) एक अभिनव दृश्य करके समझ पड़ा था। मध्याह्नके समय निमन्त्रित ब्राह्मण मण्डली को मिष्टान्नादि से परितोष पूर्व्वक भोजन कराकर यथोचित दक्षिणा देके बिदाय किये गये। अपराह्नबेला ३ बजे के समय मृदङ्ग, करताल, भेरी, घड़ी, आदि वाद्योद्यमके साथ मुङ्गेर वो जमालपुरके हरि-गुण-गान-निपुण अन्यून पञ्चाशत पुरुष कण्ठमें पुष्पके हार लटकाये हुए सुमधुर स्वर मिलाय "नगर-सङ्कीर्त्तन" गावने निकले, आगे आगे बङ्गीय वो बेहारी बालक मण्डली प्रसन्नवदन से हरिनामाङ्कित पताकावलि हातमें लेते हुए

গণের কর্ণ-কুহর স্বর্গীয় সুসমাচারে-হরিনামধ্বনিতে পুলকিত ও পবিত্র করিয়া সকলে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন। অতঃপর ৺সরস্বতীর আরতী হইল। তদনন্তর গায়কগণ হরিনাম গানে পুনঃ প্রবৃত্ত হইয়া প্রেমোন্মত্তবৎ নৃত্য, কুন্দন ও হরিনামের জয় কীর্ত্তন করিয়া প্রথম দিনের কার্য্য শেষ করিলেন।

২৩ এ মাঘ। শুক্রবার।

অপরাহ্ন বেলা ৪টার সময় বাদ্যোদ্যমাদি সহ সুসজ্জিত ৺সরস্বতী প্রতিমা নগরের প্রধান প্রধান স্থান পরিবেষ্টন করিয়া প্রসিদ্ধ পবিত্র কষ্টহারিণী ঘাটে বিসর্জ্জিত হইল।

সন্ধ্যাবসানে আ, ধ, প্র, সভান্তর্গত বালকবর্গের সুনীতি সঞ্চারিণী সভার অধিবেশন হইয়াছিল। ব্যাসাসনের বাম পার্শ্বে বঙ্গীয় শিশুগণের, দক্ষিণ-পার্শ্বে বেহারী বালকবর্গের ও সম্মুখে অন্য সাধারণের বসিবার স্থান হইয়াছিল। সভা আলোক-মালায় সুশোভিত ও ভদ্র মহাত্মামণ্ডলীতে পরিপূর্ণ হইল। প্রথমতঃ সভার গায়ক মহাশয় তানলয় বিশুদ্ধতা সহ দুইটী ধর্ম্ম সংগীত গাইলেন। তৎপরে বাঙ্গালীবালকগণ সমবেতস্বরে পরমাত্মার স্তব ও পদ্যাবদ্ধ বাঙ্গালা ভাষায় বালকগণের প্রতিজ্ঞা পাঠ করিল। এতদবসানে ক্রমান্বয়ে সু, সং, সভার বাঙ্গালা বিভাগের সম্পাদক প্রিয়দর্শন শ্রীমান্ জগদ্বন্ধু রায় ও হিন্দীবিভাগের সম্পাদক বিনয়াবনত শ্রীমান্ বুলাকীলাল কর্ত্তৃক বাঙ্গালা ও হিন্দী ভাষায় বার্ষিক কার্য্য বিবরণ পঠিত হইল। উভয়েরই পঠিত বিবরণ হইতে আর্য্য ভাবাগ্নির জ্বলন্ত কণিকা বিস্ফারিত হইতেছিল। তাঁহাদের পঠনপটুতার সহিত হৃদয়ের সদুদ্যম, উত্তেজনাদিও প্রকাশ পাইল। এক বর্ষ কাল নীতিশিক্ষক শ্রীযুক্ত বাবু সুরেন্দ্রনাথ পাল, শ্রীযুক্ত বাবু রাখালদাস সেন ও সু, সং সভার অধ্যক্ষ শ্রীযুক্ত শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন এই তিন জনের নিকট নীতি উপদেশ লাভ করিয়া বালকগণ যে দিন দিন সৎপ্রকৃতিস্থ হইতেছে ও তাহারা যে অনেক দুরধিগম্য বিষয় সরল ভাবে শিক্ষা করিতেছে, তাহা সম্পাদকদ্বয় কর্ত্তৃক কৃতজ্ঞতাসহ কথিত হইল। উপসংহার কালে শ্রীমান্ জগদ্বন্ধুর কয়েকটী কথা আমাদিগের আশাপ্রদ ও পরম সন্তোষকর বোধ হইল। যথা "হে সহোদরোপম প্রিয়বালক বন্ধুগণ। আইস, আর মিথ্যা বাগ্বিতণ্ডার প্রয়োজন নাই, ইহা জীবন সংগঠনের

जाते थे, इससे और भी शोभा झलकती थी। नगरके प्रधान प्रधान मार्ग वो महल्लेके सवजनोंके कर्णकुहरको पुलकित वो पवित्र करते हुए, सवकोई लौट आये। अनन्तर उसके, गायकोंने फिर हरिनाम गाते गाते प्रेमोन्मत्तता से नाच कुन्दकर वो हरिनाम का जय कीर्त्तन करके प्रथम दिनका कार्य्य समाप्त किये।

माघ सुदी ६। शुक्रवार।

अपराह्न वेला ४ बजे के समय वाद्योद्यम आदिके साथ उत्तमरूप सजाई हुई सरस्वती प्रतिमाको नगरके प्रधान प्रधान स्थाननिवासीयोंको दर्शन कराकर प्रसिद्ध पवित्र कष्टहारिणी नामघाटमें विसर्ज्जन किया गया।

संध्याके उपरान्त आ, ध. प्र. सभान्तर्गत वालकोंकी "सुनीति—सञ्चारिनी सभा"का अधिवेशन हुआ था। व्यासासनका वाम भागमें वङ्गदेशी शिशुओंके वो दाहिने किनारे में वेहारवासी वालकोंके औ साम्हने में अन्य साधारण के वैठने का स्थान हुआ था। सभा आलोकमालासे सुशोभित वो भद्र माहात्मा मण्डलीसे परिपूर्ण हुई। पहले सभाके गायक महाशय ने विशुद्ध तानलयके साथ दो धर्म्म सङ्गीत गाया। तदनन्तर वङ्गदेशी वालकोंने मिलाई हुई सुरसे परमात्माका स्तोत्र वो छन्दमें रची हुई वङ्गभाषा में वालकोंकी प्रतिज्ञा पाठ करी। वाद इसके क्रम पूर्व्वक सु, सं, सभाके वङ्गला विभागके सम्पादक प्रियदर्शन श्रीमान् जगद्बन्धु राय वो हिन्दी विभागके सम्पादक विनयविनम्र श्रीमान् वुलाकीलालने वङ्ग वो हिन्दी भाषा में वार्षिक कार्य्य विवरण पाठ किये। दोनों हीकी पड़ी हुई विवरणसे आर्य्यभाव-रूप अनल की लहरती हुई झुनगी निकल आती थी। उन्होंकी पटन पटुता के साथ हृदयका सदुद्यम, उत्तेजना आदि भी प्रकाश पाई। एक वर्षभर नीतिशिक्षक श्रीयुक्त सुरेन्द्रनाथ पाल, श्रीयुक्त वावु राखालदास सेन वो सु. सं, सभाके अध्यक्ष श्रीयुक्त श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन इन तीनोंसे नीति उपदेश पापाकर वालकगण जो दिन परदिन सत्प्रकृतिस्थ होते जाते हैं, वो उन्होंने जो अनेक विषय जो कि अतिकठिनता से वुझ पड़ती, सरल रीतिसे शिक्षाकरी हैं, सो सम्पादक द्वयने कृतज्ञता पूर्व्वक प्रकाश किये। अन्तमें श्रीमान् जगद्बन्धुकी कैएक वातें हमको आशा देनेवाली वो परम सन्तोषकारी समझ पड़ी, जैसा "हे सहोदरके समान प्रियवालक वन्धुगण! आओ और झूटी वाग्वितण्डा का प्रयोजन नहीं, अव अपनी प्रकृतिको

অবহেলা বা ঔদাস্য করিবার সময় নহে। এই সময় হইতেই সুসজ্জিত হইতে হইবে। সম্মুখে ঘোর যৌবনকাল আসিতেছে,দেখিয়াও কি ভয় হইতেছে না! যৌবনের প্রিয়সহচর রাক্ষসরূপ ব্যভিচার আমাদিগকে গ্রাস করিয়া ফেলিবে, আর অসাবধান থাকিয়া কালক্ষেপ করা কর্ত্তব্য নহে। এই সময়ে সুনীতি শিক্ষা রূপ তরবারি সুশাণিত রাখিতে হইবে, তাহারই তীব্র আঘাতে রাক্ষস বিনষ্ট হইবে। আমাদিগকে মনুষ্য নামের গৌরব রক্ষা করিতে, পশুবৎ ব্যবহার করিব না বলিয়া, প্রতিজ্ঞা করিতে ও ভারতের প্রকৃত সন্তান হইতে হইবে। করুণাময় পরমেশ্বর ও গুরুগণ আমাদিগের কামনা পূর্ণার্থ শুভাশীর্ব্বাদ করুন"।

সু, সং, সভার অন্যতর সভ্য নীতি শিক্ষানুরাগী শ্রীমান্ হরিলাল সোম কর্ত্তৃক "পিতা মাতা গুরুজনাদির নিকট বালকদিগের প্রার্থিত সদ্ব্যবহার" লিখিত বিষয়ক প্রবন্ধ পঠিত হইল। তাহার স্থূল তাৎপর্য্য এই যে ১ম, পিতা মাতা শিশুকে গর্ভস্থ জানিয়া অবধি তাহার চিরজীবনের শারিরীক কল্যাণ যেরূপ কামনা করিয়া থাকেন, তাহার সৎপ্রকৃতি সংগঠনোপযোগী তাবৎ উপকরণের সদ্ব্যবস্থা করিয়া দেওয়াও তদ্রূপ উচিত। ২য়,শিশুর প্রকৃতি সাহিত্য, গণিত, শিল্প, সঙ্গীত আদি যে কোন বিষয়ে অনুকূল ও উপযুক্ত হইবে, পিতা মাতা তাহাকে তদ্বিষয়িণী উচ্চ শিক্ষা দান করিলে, শিশু পরিণামে এক জন প্রসিদ্ধ ও বিচক্ষণ লোক হইতে পারিবে। ৩য়, শিশুর অসদাচার, দুষ্টতা বা বিদ্যা শিক্ষা বিরাগাদি দর্শনে কুপিত হইয়া পিতা মাতা সচরাচর শিশুকে প্রহার করেন, তাহা না করিয়া শিশুর ঈদৃশ প্রকৃতির মূল কারণ, অসৎসঙ্গ আদির উচ্ছেদ করিয়া দেওয়াই বিধেয়। ৪র্থ, শিশু চৌর্য্যাদি কোন দুষ্কার্য্য করিলে, তাহাকে প্রথমে দণ্ডাদি না দিয়া, দুষ্ক্রিয়ার অকর্ত্তব্যতা বুঝাইয়া দেওয়া উচিত, নতুবা প্রহার ভয়ে শিশু গোপনে তাবৎ কুক্রিয়াই করিতে অভ্যাস করিবে। ৫ম, যখন বালক কোন সুনীতি শিক্ষা বা ধর্ম্ম শিক্ষা জন্য সভাদিতে স্বতঃপ্রবৃত্ত হইয়া গমন করিবে, তখন পিতা মাতাদি তাহাতে আনন্দ প্রকাশ পূর্ব্বক তাহার সদুৎসাহ বর্দ্ধন করিবেন, স্বয়ং না গমন করিলে পিতা মাতা যত্ন করিয়া তথায় শিশুকে প্রেরণ করিবেন। ৬ষ্ঠ, কর্দ্দম হইতে গর্দ্দভের ও বিষ্ণুর উভয় মূর্ত্তিই প্রস্তুত হইতে পারে,

सुगठनार्थ तुच्छ मानने वा उदास होनेका समय नहीं है। अब ही से साज बाजके तैयार होना चाहिये। साम्हने में घोर यौवन काल आनेवाला है। इतने में भी क्या भय नहीं होना है? यौवनके प्यारा साथी राक्षसरूप व्यभिचार हमको ग्रास करडालेगा। और असावधानतासे काल बीतानान चाहिये। अब सुनीति शिक्षारूप तरवार को सानदेकर रखना। उसही का तीव्र आघातसे निशाचर नष्ट होगा। हमको मनुष्य नामकी गौरव रखना, पशुवत् कार्य्य न करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा करना वो भारतके सुसन्तान बनना चाहिये। करुणामय परमेश्वर वो गुरुगण हमारी कामना पूरणार्थ शुभाशीर्व्वाद करें।"

सु. सं. सभाके अन्यतर सभ्य नीतिशिक्षानुरागी श्रीमान् हरिलाल सोमने इस आशय पर एक प्रबन्ध पाठ किया कि "लड़कोंने पिता, माता, गुरुजनादिसे किस भान्ति सद्व्यवहार चाहा करता है"। उसका स्थूल अभिप्राय यह है; १म, पिता माताका जबसे मालुम पड़ा कि गर्भ में लड़का का सञ्चार हुआ तब हीसे उन्होंने शिशुके चिरजीवन के शारीरिक कल्याण कामना की करती है, उसही भान्ति उन्होंके यह भी चाहिये कि शिशु की सत्प्रकृति बननेके योग्य प्रबन्ध कर देवे। २य, शिशुकी प्रकृतिने साहित्य, गणित, शिल्प, सङ्गीत आदि जिस किसी विद्या के अनुकूल वो योग्य होय, पिता माता यदि उसको उसही विषय की उची शिक्षा देंगे अन्त मे शिशु कोई एक प्रसिद्ध वो विचक्षण पुरुष बन सकेगा। ३य, शिशुकी मन्द आचरण, दुष्टता वा विद्या सिखने में विराग देखनेसे पिता माता सचराचर शिशुको बड़ा पीटते हैं। किन्तु यह छोड़के उन्को चाहिये कि असत्सङ्ग आदि जो की लड़के की बुरी प्रकृतिका मूल कारण है, उसही को उच्छेद कर देवें। ४र्थ, लड़का यदि कभी चोरी आदि कोई कुकाज करे तो पहले ही उसको दण्ड न देना, कुकाज करना जो अकर्त्तव्य है सोही समझान देना चाहिये, नही तो लड़का समस्त कुकार्य्य ही चुप चुप करने का अभ्यास करता रहेगा। ५म, जब लड़का किसी सुनीति शिक्षा वा धर्म्मशिक्षा के लिये सभा आदि में स्वतः एव आयगा, उस समय पिता माताको चाहिये कि आनन्द प्रकाश पूर्व्वक उसका सदुत्साह बढावें, यदि स्वयं जायतो यत्नकरके वह्ना शिशुको भेजाकरें। ६ष्ठ, कादुसे गाधा वो विष्णु इन दोनों

নির্ম্মিত মূর্ত্তি উত্তাপে কঠিন হইয়া গেলে, তাহার রূপ আর পরিবর্ত্তন হইতে পারে না, তদ্রূপ শৈশব কালেই মানবের প্রকৃতি যাদৃশী সংঘটিত হইবে, চিরদিন তাহাই থাকিবার সম্ভাবনা। শিশু প্রথমে অসৎ প্রকৃতি লাভ করিলে, পরিণামে তাহার সাধু প্রকৃতি হওয়া অতীব দুষ্কর, এই জন্য অতি সতর্ক থাকিয়া, শৈশবেই সাধু প্রকৃতির উপযোগী শিক্ষা দেওয়া পিতা মাতাদির কর্ত্তব্য ইত্যাদি।

তদনন্তর সু. সং সভার অন্যতর সভ্য, শান্তস্বভাব শ্রীমান্ পূর্ণানন্দ সেন কর্ত্তৃক "বালকদিগের কর্ত্তব্য কি" বিষয়ক নিম্ন প্রকটিত প্রবন্ধটী পঠিত হইল। "সকল বালকেরই সুবোধ, সুশীল, শান্তস্বভাব ও বিনয়বিনম্র হওয়া কর্ত্তব্য। পিতা মাতা যখন যাহা আদেশ করিবেন, তাহা প্রাণপণ যত্নে প্রতিপালন করিয়া তাঁহাদিগকে সর্ব্বদা সন্তুষ্ট রাখা কর্ত্তব্য। যাহা করিতে নিষেধ করিবেন, তাহা মন্দ হইলে কোন ক্রমেই করা উচিত নহে। তাঁহারা তিরস্কার করিলে তাহাতে রুষ্ট বা অসন্তুষ্ট, বিরক্ত বা অভিমানযুক্ত হওয়া অনুচিত। কারণ তাঁহারা আমাদের মঙ্গলের জন্যই তদ্রূপ করিয়া থাকেন। স্বীয় ভ্রাতা ভগ্নিদিগকে ভাল বাসা ও তাহাদের আনন্দে আনন্দ ও দুঃখে দুঃখানুভব করা সুবোধ শিশুর প্রকৃতি সিদ্ধ। তাহাদিগের সহিত মারামারি ও কলহ করা উচিত নহে। অন্যান্য বালকগণের সহিতও নিজ ভ্রাতার ন্যায় ব্যবহার করা উচিত ও পরস্পর বিবাদ বিসম্বাদ বা বিদ্বেষ করা উচিত নহে। আপনাপেক্ষা বয়ঃজ্যেষ্ঠ ব্যক্তিদিগের সহিত নম্রভাবে কথা বার্ত্তা কহা, ও তাঁহারা যাহা বলেন তাহা মনোযোগ পূর্ব্বক ধীরচিত্তে শ্রবণ করা কর্ত্তব্য। পরনিন্দা, মিথ্যা কথন ও অন্যের প্রতি কটূক্তি প্রয়োগ, আমোদের জন্য দুর্ব্বল জীব সকলকে পীড়া দেওয়া ও অন্ধ ব্যক্তিদিগকে কুপথ দেখাইয়া দিয়া হাস্য করা অনুচিত, এবং যে সকল বালক এই রূপ করে, তাহাদের সঙ্গে থাকাও অকর্ত্তব্য। অন্ধ, অর্দ্ধান্ধ, বিকলাঙ্গ ও দুঃখী প্রভৃতি ব্যক্তিদিগকে দয়া করা ও পরোপকার জন্য সর্ব্বপ্রকার ক্লেশ সহ্য করিতে শিক্ষা করা কর্ত্তব্য। বিদ্যালয়ে শিক্ষক যে সকল উপদেশ প্রদান করেন স্থির মনে তত্তাবৎ শ্রবণ করা উচিত। সর্ব্বদা সুবোধ বালকগণের সহবাসে থাকা এবং অধ্যয়ন কালে হাস্য, গীত, গল্প প্রভৃতি পরিত্যাগ করিয়া নিবিষ্ট

ही मूर्त्ति बन सक्ती है। बनायी हुई मूर्त्ति जैसा उत्तापसे कठिन होजाने पर उसके रूप फिर बदल न सक्ता है, उस भान्ति लड़कपन ही में मनुष्योंकी प्रकृति जैसी बनेगी भर जीवन उस भान्ति रहने की सम्भावना है। लड़का यदि पहले ही बुरी प्रकृति को लाभ करे तो अन्त में उसकी साधु प्रकृति बनना अतीव कठिन है, इस लिये पिता माताको चाहिये कि अति सतर्कता पूर्व्वक लड़कपन ही में साधु प्रकृति बनानेके योग्य शिक्षा देवें। इत्यादि।

तदनन्तर सु सं सभाके औरएक सभ्य शान्तस्वभाव श्रीमान् पूर्णानन्द सेन ने नीचे लिखा हुआ प्रबन्धको पाठ किया, इसका आशय यह है कि "बालकोंके क्या कर्त्तव्य है" इरेक लड़कोंको चाहिये कि सुबोध, सुशील, शान्तस्वभाव वो विनय विनम्र बने। पिता माता जब जो आज्ञा करेंगे, उसको प्राणपण यत्नसे प्रतिपालन कर उन्हों को सदा सन्तुष्ट रखें। जो कुछ काम करने में माना करेंगे वह बुरा होनेपर किस ही तरहसे करना ना चाहिये। वे यदि तिरस्कार करें तो रुष्ट वा असन्तुष्ट, विरक्त वा अभिमानयुक्त होना अनुचित है। क्योंकि हमारे ही कल्याणार्थ उन्होंने उस रीति डाटते है। अपने भाइ बहीनको प्यार करना, इन्होंके आनन्दमें आनन्द वो दुःखके समय दुःख अनुभव करना सुबोध शिशु की प्रकृति सिद्ध है। उन्होंसे मारपिट वो झगड़ा करना न चाहिये। अन्यान्य बालकोंके साथ भी अपने भाइके न्याइ व्यवहार करना उचित है औ परस्पर विवाद, विसम्बाद वो विद्वेष करना उचित नहीं। अपने से जिनकी अवस्था अधिक हैं उन्होंके साथ नम्रभावसे वार्त्तालाप करना वो वे जो कुछ कहें सो धीरता पूर्व्वक दत्तचित्त हुए श्रवण करना कर्त्तव्य है। दुसरे किसही कि निन्दा, मिथ्याकथन वो दुसरे को बुरी बुरी बातें कहना, तामासा के अर्थ दुर्ब्बल जीवोंको पीड़ा देना औ अन्धे को कुमार्ग देखाकर हास्य करना ना चाहिये औ जितने बालक इस भान्ति किया करें उन्होंके सङ्ग करना भी उचित नहीं। अन्ध, अर्द्धान्ध, विकलाङ्ग वो दरिद्र आदि व्यक्तियोंको दया करना वो परोपकारार्थ सब भान्ति क्लेश उठाने की शिक्षा करना चाहिये। विद्यालय में शिक्षक जितने उपदेश देंगे स्थिरमनसे सब श्रवण करना उचित है। सर्व्वदा सुबोध बालकोंके सङ्ग करना औ

মনে পাঠাভ্যাস করা উচিত। সচ্চরিত্র হওয়া, সত্য কথা কহা ও গুরুজনকে ভক্তি করা উচিত, কোন ক্রমেই তাঁহাদিগের অমর্য্যাদা অথবা তাঁহাদিগের কথা উপেক্ষা করা উচিত নহে। পিতা মাতার নিকট সর্ব্বদা উৎকৃষ্ট বেশভূষাদি প্রার্থনা করিয়া তাঁহাদিগকে ব্যস্ত করা কাহারও উচিত নহে; কারণ তাঁহারা তাহা দিতে না পারিলে, অত্যন্ত দুঃখিত হন, অতএব তাঁহাদিগের যখন যেরূপ সামর্থ হইবে সেই রূপ বস্ত্রাদি দিবেন এবং তাহাতেই সন্তুষ্ট থাকিতে হইবে। তাঁহারা কন্যাদিগকে বিবিধ মূল্যবান্ অলঙ্কারাদি দিয়া থাকেন বটে কিন্তু আমাদিগকেযে "বিদ্যা" দান করেন, তাহার সঙ্গে তুলনায় অলঙ্কারাদি অতি তুচ্ছ ও অল্প মূল্য বোধ হয়। অতএব এরূপ বহুমূল্যদ্রব্য পাইয়াও সামান্য বেশভুষাদির জন্য তাঁহাদিগের মনঃকষ্ট দেওয়া বালকমাত্রেরই অকর্ত্তব্য। বাল্যকাল হইতেই বিদ্যা অধ্যয়নের সঙ্গে সঙ্গেই নীতিশিক্ষা, ঈশ্বরের প্রতি ভক্তি ও স্বধর্ম্মের প্রতি আস্থা করা বিধেয়। এবং যদি কোন ধর্ম্মাত্মা অনুগ্রহ পূর্ব্বক নীতি অথবা ধর্ম্মাদির কোন উপদেশ দান করেন, তাহাতে অবহেলা না করিয়া স্থিরচিত্তে শ্রবণ, মনন ও ধারণা করতঃ তদ্রূপ কার্য্য করা সকল বালকেরই কর্ত্তব্য। কারণ, মূলপত্তন সুদৃঢ় হইলে যেমন অট্টালিকা সুসংগঠিত হয়, সেই রূপ মনুষ্যের বাল্যাবস্থা ভবিষ্যজ্জীবনের ভিত্তিভূমি স্বরূপ, অতএব যদি সেই বাল্যাবস্থা এই সকল গুণে অলঙ্কৃত হয়, তাহা হইলে, সেই মনুষ্য যে এক জন উচ্চ উদার স্বভাব অশেষ গুণসম্পন্নব্যক্তি হইবেন তাহার আর সন্দেহ নাই। যদিও নীতি ও ধর্ম্মশিক্ষা এবং ঈশ্বরের প্রতি ভক্তি না থাকিলেও সকলেই বিদ্বান হইতে পারেন, কিন্তু সেই বিদ্যা যে পরিণামে কুফল প্রসব করে, তাহা কেহই অনুভব করেন না। ধর্ম্মনীতি জ্ঞান শূন্য বিদ্যা শিক্ষা, প্রাণশূন্য দেহের ন্যায়, জানিতে হইবে। আমাদের দেশে যে সকল লোক এক্ষণে বর্ত্তমান রহিয়াছেন, তাঁহাদের মধ্যে অনেকেই বাল্যকালে নীতি ও ধর্ম্ম শিক্ষা না করায় এক্ষণে পরস্পরের বিষয় লইয়া বিবাদ করিতেছেন, কেহ বা দুর্নীতির দাস হইয়া, অসদুপায়ে অর্থোপার্জ্জন পূর্ব্বক কারাবরুদ্ধ হইতেছেন, কেহ বা বৃথা নাট্য গীতাদি, বেশ্যাসমাগম ও মদ্যপান দ্বারা অযথা অর্থব্যয় করিয়া, ভবিষ্যৎ বংশাবলীর অসৎ আদর্শ স্বরূপ হইতেছেন, কেহ নাস্তিক

पढ़ने के समय हास्य, गीत, गल्प आदि परित्याग कर मन लगाये पाठाभ्यास करना चाहिये। सत्य वचन बोलना, सच्चरित्र होना, वो गुरुजनोंको भक्ति करना, कर्त्तव्य है, किसही तरहसे उन्हों की अमर्य्यादा अथवा आज्ञा की उपेक्षा करना चाहिये। सर्व्वदा पिता माताके निकट उत्तम वेश भूषा आदिके अर्थ प्रार्थना कर उन्होंको व्यस्त न करना; क्योंकि वे उन वस्तुओंको यदि देने न सकेता बड़ा दुःख मानते है, अतएव जब उन्होंको जैसा सामर्थ होगा तदनुसार वस्त्रादि देंगे औ उस ही से सन्तुष्ट होना उचित है। उन्होंने लड़कीयोंको नानाभान्ति के मूल्यवान अलङ्कारादि देते हैं सही किन्तु हमको जो "विद्या" दान करते है तीस को बराबरीसे अलङ्कार आदि को अति तुच्छ वो अल्प मूल्यका समझा जाता है। अतएव ऐसा बहुमूल्य द्रव्य पाये भी सामान्य वेश भूषादि के अर्थ पिता माताके मन में पीड़ा देना बालक मातही का अकर्त्तव्य है। लड़कपन हीसे विद्या अध्ययन के ही साथ नीति शिक्षा, ईश्वर के ओर भक्ति वो निज धर्म्मपर आस्था करना चाहिये औ यदि कोई धर्म्मात्मा कृपा करके नीति अथवा धर्म्मके विषय में कोइ उपदेश दें, उससे तुच्छ न समझे स्थिर चित्तसे श्रवण, मनन वो धारणा पूर्व्वक उस रीति काम करना हरेक लड़का का उचित है, क्यों कि नेव मजबुत होने से जैसा इमारत सुन्दर बनती है, तद्रुप बालकपनही मनुष्योंके भविष्यत जीवन की भित्ति भूमि है। अतएव यदि इस बाल्यावस्था इनसब गुणोंसे सुशोभित हो तब वह मनुष्य जो कोइ एक उच्च उदारस्वभाव, अशेषगुणसम्पन्न पुरुष होंगे उस में सन्देह नहीं। यद्यपि नीति वो धर्म्म शिक्षा और ईश्वरके ओर भक्ति रहे विना भी सबजन विद्यावान हो सक्ते है, किन्तु वही विद्या जो अन्तमें कु फलको देनेवाली होती है सो कोइ भी न समझता धर्म्मनीति वो ज्ञान से रहित जो विद्या शिक्षा है उस्को प्राण शुन्य शरीरका समान जानना। आज कल हमारे देश में जितने पुरुष वर्त्तमान हैं, उन्हो में बहुतेरे जन लड़कपन में नोति वो धर्म्म शिक्षान करने पर अब आपुस में नाना भान्ति की मामला लड़ रहे हैं। कोइ कोइ दुर्नीति के दास बने बुरी रीति से रूपै कमाकर कैद होते है, कोइ कोइ वृथा नाट्य गीतादि वेश्यासमागम, वो मद्यपान से हद से अधिक अर्थ व्यय करके भविष्यत वंशावली के असत आदर्श बनते है। कोइ नास्तिक कोइ इसाई

কেহ বা খ্রীষ্টান হইতেছেন ইত্যাদি নানা কারণে ভাবতবর্ষ কলঙ্কিত হইতেছে ও জগন্মান্য আর্য্য গণের চির গৌরব হারাইতেছে। আর শিক্ষা কালে সকল বালকেরই মনে করা কর্ত্তব্য যে বিদ্যা শিক্ষা করা কেবল মাত্র ধনোপার্জ্জনের জন্য নহে। কারণ ধনোপার্জ্জন বিবিধ উপায়ে হইতে পারে। কেহবা চৌর্য্যবৃত্তি দ্বারা কেহ বা মিথ্যা সাক্ষ্যাদি প্রদান দ্বারাও ধনোপার্জ্জন করিতেছে। অতএব যাহা ঈদৃশ নীচ কর্ম্মের দ্বারাও উপার্জ্জন হয়, তাহা কখনই বিদ্যার চরম ফল হইতে পারে না। সুতরাং বিদ্যার ফল অপেক্ষাকৃত কিছু উচ্চ ও উৎকৃষ্ট হওয়াই সম্ভব। বিদ্যা দ্বারা প্রথমতঃ ঈশ্বরের মাহাত্ম্য, আত্মার গূঢ়তত্ত্ব ও শাস্ত্রের মর্ম্ম বুঝিতে পারা যায়। দ্বিতীয়, ধনোপার্জ্জন দ্বারা স্বীয় জীবিকা নির্ব্বাহ ও পরের অভাব মোচন করা যায়। তৃতীয়, ধর্ম্ম ও নীতি উপদেশ দ্বারা লোক সকলকে সচ্চরিত্র, ধার্ম্মিক ও বিদ্বান করিয়া স্বদেশের উন্নতি সাধন ও নিজ সূক্ষ্ম বুদ্ধি দ্বারা উদ্ভাবিত বিবিধ কৌশলজাল বিস্তার দ্বারা জনসমূহের মঙ্গলার্থ নানা সদুপায় করা যায়। অতএব এই গুলি মনে করিয়া বিদ্যা শিক্ষা করা সকল বালকেরই কর্ত্তব্য। যিনি বাল্যাবস্থা রূপ ভূমিতে সদ্বিদ্যারূপ বৃক্ষ রোপণ করেন, তিনি জ্ঞানরূপ ফল, স্বকীয় ও পরকীয় ভরণ পোষণ ও আবশ্যকীয় ব্যয় নির্ব্বাহোপযোগী অর্থোপার্জ্জন রূপ শীতল ছায়া লাভ করেন এবং তাঁহার বিদ্যমানতা জগতে মনুষ্যের প্রকৃত আদর্শ প্রচার করিতে থাকে।

উপসংহার কালে পরম কারুণিক পরমেশ্বরের নিকট প্রার্থনা এই যে তিনি আমাদিগকে সুনীতি পথে পরিচালিত করুন ও গুরুজন আমাদিগের মঙ্গলার্থ আশীর্ব্বাদ করিতে থাকুন"।

তৎপরে আ, ধ, প্র, সভার কার্য্য সম্পাদক শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত পণ্ডিত ভাইরাম অগ্নিহোত্রী হিন্দী ভাষায় ও সহযোগী সম্পাদক শ্রীযুক্ত শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন বাঙ্গালা ও হিন্দীভাষায় পিতামাতা ও সন্তানের পরস্পরের গুরুতর কর্ত্তব্যের বিষয় বাচনিক বক্তৃতা দ্বারা বালকগণের ও কর্ত্তৃপক্ষীয়গণের সদুৎসাহ বর্দ্ধন করিলেন। তদনন্তর বাঙ্গালা চিত্র পয়ারে বিরচিত ও মুদ্রিত " নীতি পুষ্পহার " উপস্থিত প্রত্যেক বালককে বিতরিত, অবশেষে মধুর-সুর, তাল সহ শিশুর উক্তি সূচক কয়েকটী ধর্ম্ম

होजाता हैं, इस भान्ति नाना हेतुसे भारतवर्ष कलङ्कित होते जाते हैं और जगन्मान्य आर्य्य पुरुषोंके चिर गौरव खोआ रहे हैं। शिक्षाके समय सब लड़के ही का याद करना चाहिये, जो केवल मात्र धन कमानेके लिये विद्याशिक्षा करना नहीं, क्योंकि नाना उपाय से धन कमाया जा सकता है। कोइ चोरी से कोइ झुटी गवाह देकर धन कमा रहा है। अतएव इतने नीच कामोंसे जो द्रव्य मिलता है वह कभी विद्या के चरम फल नहीं हो सका सुतरां विद्याके फल इससे कुछ उच्च वो उत्तम होना ही सम्भव है; विद्याके द्वारा पहिले ईश्वर की महिमा, आत्माके गूढ़ तत्त्व वो शास्त्र के अभिप्राय समझने सकते हैं। द्वितीयः, धन उपार्जन करके अपनी जीविका निर्व्वाह वो दूसरे की घटती पूरी कर दिया जाता है। तृतीयतः, धर्म्म वो नीति उपदेश करके लोगोंको सच्चरित्र, धर्म्मात्मा वो विद्यावान बनाकर स्वदेशकी उन्नति साधन वो निज सूक्ष्म बुद्धी करके निकाली हुई नाना भान्ति कौशल जाल विस्तार पूर्व्वक सब जनोंके मङ्गलार्थ नाना सदुपाय किये जाते हैं। अतएव सब बालकोंके चाहिये कि इतने स्मरण कर विद्याशिक्षा करे। जोने लड़कपन रूप भूमिपर सद्विद्यारूप वृक्ष को रोपे, उन्हं ज्ञानरूप फल और अपने वो दुसरेका भरण पोषण वो प्रयोजन अनुसार व्यय निवाहने को योग्य धन जोकि शीतल छायाके रूप है, लाभ करते हैं, और उनकी बिद्यमानता, "मनुष्यके प्रकृत आदर्श क्या है" यही जगतमें प्रचार की करती है।

उपसंहारमें परम कारुणिक परमेश्वरसे यही प्रार्थना है जो वे हम सब को सुनीति मार्गपर चलावें और गुरुजन हम सबके कल्यानार्थ आशीर्व्वाद करते रहैं।

तदनन्तर आ, ध, प्र, सभाके कार्य्यसम्पादक श्रद्धास्पद श्रीमान् पण्डित भाईराम अग्निहोत्री महाशय हिन्दी भाषामें वो सहयोगी सम्पादक श्रीयुक्त श्रीकृष्णप्रसन्न सेन बङ्गला वो हिन्दी भाषा में इस आशय पर वाचनिक वक्तृता किये कि पिता माता वो सन्तानोंके मध्य में परस्पर गुरुतर कर्त्तव्य क्या है इससे लड़कोंके वो कर्त्तृपक्षियोंका सदुत्साह बढ़ा। इसके अनन्तर बङ्गभाषा चित्र पयार दोहा में रची वो छापी हुई "नीति पुष्पहार" हरेक लड़का को बांटी गई वो अन्तमें मधुर स्वर, ताल के साथ लड़कोंको उक्तिसूचक

সংগীত হইয়া সভা ভঙ্গ হইল। আ, ধ, প্র, সভা স্নেহসহ স্ব, সং, সভার সভ্যগণকে কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ মিষ্টান্ন দিয়া বিদায় করিলেন।

২৪শে মাঘ শনিবার, অপরাহ্ণ ৩টা হইতে রাত্রি ৮॥ পর্য্যন্ত।

মুঙ্গেরস্থ আমন্ত্রিত সংস্কৃতবিৎ পণ্ডিত মাত্রেই সভার মুখ্য স্থানে সমাসীন হইলেন, তৎপার্শ্বে সভান্তর্গত সংস্কৃত পাঠশালার পরীক্ষিত বিদ্যার্থী পুঞ্জ এবং তৎপরেই সভাসদ ভদ্র মহোদয়গণ একত্রে উপবিষ্ট থাকিয়া, সভার শোভা বর্দ্ধন করিতেছিলেন। প্রথমে সভার সহযোগীসম্পাদক শ্রীযুক্ত শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন পণ্ডিত মাত্রকেই সম্বর্দ্ধনা পূর্ব্বক জিজ্ঞাসা করিলেন যে, ঈশ্বরের অবতারবাদ পুরাণাদি সম্মত, ইহা ভারতবাসীমাত্রেই বিদিত আছেন; অর্জ্জুনকে উপদেশ দানকালে ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণও স্বয়ং তাহার প্রকৃত রূপ সমর্থন করিয়াছেন, কিন্তু পুরাণাদির প্রতি বর্ত্তমান ভারতের যেরূপ অনাস্থা দৃষ্ট হইতেছে, তাহাতে শ্রীকৃষ্ণোক্ত বাক্যের পোষণার্থ শ্রুতি প্রমাণ প্রদান করিতে পারিলে, সবিশেষ উপকৃত হইব। পণ্ডিতগণ প্রশ্ন শ্রবণে আনন্দ প্রকাশ পূর্ব্বক স্ব স্ব সামর্থ্যোচিত উত্তর ও বিচারাদি দ্বারা সভার সন্তোষ বর্দ্ধন করিলেন। অতঃপর কিয়ৎক্ষণ পণ্ডিতগণের পরস্পর শাস্ত্রীয় বিচার চলিল। তদবসানে সম্পাদকের অনুরোধ ক্রমে মান্যবর শ্রীযুক্ত পণ্ডিত ভোলানাথ মিশ্র মহাশয় সভাপতির আসন পরিগ্রহ পূর্ব্বক সংস্কৃত পাঠশালার বার্ষিক পরীক্ষায় উত্তীর্ণ বালকবর্গকে পারিতোষিক দান করিলেন। তদনন্তর সভার কার্য্য সম্পাদক অর্ঘ্যাদি সহকারে পূজা ও পুষ্পমালা দান পূর্ব্বক সভায় সমাগত পণ্ডিত পুঞ্জকে রজতমুদ্রা ও মিষ্টান্নাদি দ্বারা মর্য্যাদাসহ বিদায় করিলেন। অতঃপর সভার সহযোগী সম্পাদক পণ্ডিতগণের সমাগমে সভার আনন্দ ও গৌরব প্রকাশ পূর্ব্বক "সংস্কৃত ভাষা শিক্ষা ও সংস্কৃতবিৎ পণ্ডিতগণের অনাদর" বিষয়িণী একটী বাচনিক বক্তৃতা করিলেন, স্থানাভাববশতঃ তাহার স্থূল মর্ম্মমাত্র এই স্থলে প্রকটিত হইল।

বর্ত্তমান ভারতবর্ষে সংস্কৃত ভাষার দুর্দ্দশা দর্শন করিয়া প্রত্যেক আর্য্য হৃদয়েই দুঃখোদ্বেগ উপস্থিত হইয়াছে। এতদ্দুঃখ দূর করিবার ইচ্ছা হয়তো প্রত্যেক মহাত্মারই হৃদয়ে উদয় হইয়া থাকে, কিন্তু

धौके धर्म्मसङ्गीत होकर सभा विसर्ज्जन हुई। आ, ध, प्र, सभा स्नेहवश होकर स्व, सं, सभाके सभ्य मण्डलीको थोड़ा कुछ मिठाई देदेकर विदाइ करि।

माघ सुदी ७, शनिवार अपराह्ण ३बजेसे रात्रि ८॥० बजेतक।

मुङ्गेर के संस्कृतज्ञ पण्डितमात्र ही जो कि सभासे बोलाये गयेथे, सभाके मुख्यस्थान पर बैठे, उसके किनारे विद्यार्थी मण्डली जो ने सभाके अधीन संस्कृत पाठशाला में परिक्षा दी थी, और उसके आगे सभासद भद्र महोदयगण एकट्ठे बैठे सभाकी शोभा बढ़ाते थे। पहिले सभाके सहयोगी सम्पादक श्रीयुक्त श्रीकृष्णप्रसन्नसेन सम्मानपूर्व्वक हरेक पण्डितसे यह पूछा जो ईश्वरकी अवतार वाद जो पुराणादि के सम्मत है यह तो हर किसी भारतवासीने विदित हैं, अर्ज्जुन को उपदेशकाल में भगवान श्रीकृष्ण ही स्वयं इसका प्रकृतरूप स्थापन किये थे। किन्तु पुराणादि के ओर वर्त्तमान भारत की जिस भान्ति अनास्था देख पड़ती है इससे यदि कोइ श्रीकृष्णकी कही हुई बातोंको पुष्टी करनार्थ श्रुतिके प्रमाण दे सकें तो सभा बड़ी उपकार मानेगी। प्रश्न सुनकर पण्डितमण्डली आनन्द प्रकाशपूर्व्वक निज निज सामर्थके अनुसार उत्तर वो विचारादि से सभाका सन्तोष बढ़ायें अनन्तर थोडो देर तक पण्डितोंके परस्पर शास्त्रार्थ हुआ। इसके उपरान्त सम्पादक के अनुरोधसे मान्यवर श्रीयुक्त पण्डित भोलानाथ मिश्र महाशय सभापति के आसन सुशोभित किये और संस्कृत पाठशाला की वार्षिक परिक्षा में उत्तीर्ण हुये बालकोंके पारितोषिक दिये। तदनन्तर सभाके कार्य्यसम्पादक अर्घ्यादि सहित पूजा वो पुष्प माला दानपूर्व्वक सभाते समागत पण्डितपुञ्जको रजतमुद्रा वो मिष्टान्नादि द्वारा मर्य्यादा करके विदाइ किये। इसके उपरान्त सभाके सहयोगी सम्पादक ने पण्डितोंके समागम से सभा का आनन्द वो गौरव प्रकाश पूर्व्वक एक वाचनिक वक्तृता करी जिसका आशय यह था कि "संस्कृत भाषा शिक्षा वो क्यों संस्कृतज्ञ पण्डितोंका अनादर होता है।" स्थानाभावके अर्थ उसका स्थूल अभिप्रायमात्र यहां प्रगट किया गया।

वर्त्तमान भारतवर्ष में संस्कृत भाषा की दुर्दशा देखकर हरेक आर्य्य हृदय होंमें दुःख की चिन्ता उठी है। कितने महात्माके हृदय में इस दुःख को दूर करनेके लिये इच्छा होती होगी किन्तु

তাহার প্রকৃত সদ্ব্যবস্থা করিবার সামর্থ্য প্রত্যেকের আয়ত্তীভূত নহে, এই জন্য ঈদৃশী শুভ ইচ্ছা কত লোকের হৃদয়ে উদয় হইয়াই প্রতিনিবৃত্ত হইয়া যায়। ধনাঢ্য ও ভূপতিগণের যথোচিত সহায়তা, তাঁহাদের নিকট সমুচিত সমাদর ও সৎকার না পাইলে, সংস্কৃত ভাষার পুনরুন্নতি হইবার আশা অতি অল্পই দেখিতে পাওয়া যায়। দেশ দেশান্তরে হইলে হইতে পারে, কিন্তু ভারতবর্ষে হওয়া অতীব দুষ্কর। এই সংস্কৃত ভাষার উচ্চাঙ্গের গ্রন্থ গুলি অধ্যয়ন ও অধ্যাপনার অভাবে এরূপ বিলুপ্ত হইয়া যাইতেছে যে, কত কত পুরাতন গ্রন্থের অনুসন্ধান পর্য্যন্ত পাওয়া যায় না। সংস্কৃত শাস্ত্রের বহুল প্রচার না হইলে আর্য্যধর্ম্মেরও কল্যাণ দেখা যায় না, কেন না, ভগবদ্বাণী শ্রুতি হইতে আর্য্য মহাত্মাগণের তাবদুপদেশ পূর্ণ অর্থাৎ আমাদিগের প্রয়োজনীয় সমস্ত গ্রন্থই সংস্কৃত ভাষায় লিপিবদ্ধ। উত্তম রূপ সংস্কৃত না জানিলে, আর্য্যধর্ম্মের প্রকৃত অভিপ্রায় বুঝিয়া লওয়া অত্যন্ত কঠিন অথবা দুরাশামাত্র। কিন্তু দুঃখের বিষয় এই যে, অর্থোপার্জ্জনই বর্ত্তমান ভারতের বিদ্যাশিক্ষার চরম ফল স্থির থাকায়, সর্ব্ব সাধারণ লোকে নিজ নিজ পুত্রগণকে কেবল ইংরাজি বা পারস্য ভাষাদি শিখাইয়া সাহেব বা মৌলবী, মুন্সী প্রস্তুত করিয়া লইতেছেন। অল্প লোকেই সংস্কৃতজ্ঞ পণ্ডিত হইতে ইচ্ছা প্রকাশ করেন। হা সংস্কৃতভাষে! তুমি আজি কাল্ কাঙ্গালীর মাতা বলিয়া জগতে প্রসিদ্ধ হইতে চলিলে!!

নিতান্ত শৈশব কালেই সংস্কৃত ভাষার শিক্ষারম্ভ করা উচিত নহে। কেন না সংস্কৃতভাষা যুক্তাক্ষর সিক্ত শব্দ রাশিতে পরিপূর্ণ। যে বালক প্রথমতঃ নিজ প্রদেশীয় ভাষায় (বাঙ্গালা, হিন্দী, মহারাষ্ট্রী আদি) সরল পাঠাদি যুক্ত পুস্তক পাঠ না করিয়া সংস্কৃতাধ্যয়ন আরম্ভ করে, তাহার পক্ষে সংস্কৃত ভাব আয়ত্ত করা বহু দিন সাধ্য হইয়া পড়ে ও প্রদেশীয় ভাষা উত্তম রূপ না জানায় পঠিত পুস্তক শ্রোতৃগণের নিকট ব্যাখ্যান কালে অত্যন্ত ক্লেশ ও অসুবিধা হইয়া থাকে। প্রচলিত ভাষা শিক্ষা দ্বারা ভাবের বিকাশ করা নিতান্ত আবশ্যক। নতুবা সংস্কৃত শিক্ষা ও তাহার ব্যাখ্যা এক প্রকার বিড়ম্বনা মাত্র হইয়া পড়ে। সচরাচর দেখিতে

इसकी प्रकृत सद्व्यवस्था करनेकी सामर्थ सब किसी के नहीं, तन्निमित्त ऐसी शुभ इच्छा कितने के हृदयमें उठते ही फिर निवृत्त हो जाती है। धनाढ्य वो भुपतिगण से यथोचित सहायता वो उन सबके निकट समुचित समादर वो सत्कार पायेबिना संस्कृत भाषाकी पुनरुन्नति होने की आशा अति अल्प ही देख पड़ती है। देश देशान्तर में होतो हो सक्ती किन्तु भारतवर्ष में होनि अतीव कठिन है। इस संस्कृत भाषाके उच्चाङ्ग के पुस्तकों पठन वो पाठन विना इस भान्ति विलुप्त होते जाते हैं, जो कितने पुरानी ग्रन्थों की पतातक भी नहीं पाई जाती है। संस्कृत शास्त्रके बहुल प्रचार विना आर्य्य धर्म्मका भी कल्याण नहीं देखा जाता है, क्योंकि भगवद्वाणी श्रुति से लेकर आर्य्य महात्माओंके उपदेशों से पूर्ण अर्थात हमारे प्रयोजनयोग्य जितने ग्रन्थ हैं सब ही कुछ संस्कृत भाषा में लिखी हुई हैं। उत्तम भान्ति संस्कृत जाने बिना आर्य्यधर्म्मके प्रकृत अभिप्राय समझलेना अत्यन्त कठिन अथवा दुराशा मात्र है। किन्तु दुःख का विषय यही है जो धनोपार्जन ही वर्त्तमान भारतने विद्या शिक्षाके चरम फल मान लेने पर सर्व्वसाधारण लोग निज निज पुत्रगण को केवल अंगरेजी वा पारस्य भाषादि सिखा सिखाकर साहब वा मौलवी मुन्शी बनाते हैं। अल्प ही लोगने संस्कृतज्ञ पण्डित बनने की इच्छा प्रकाश करते हैं। हा संस्कृत भाषे! तू आज कल कङ्गालियोंकी माता करके जगत में प्रसिद्ध होती चली है!!

नितान्त शैशव काल ही में संस्कृत भाषाकी शिक्षारम्भ करना उचित नहीं, क्योंकि संस्कृत भाषा युक्ताक्षरोंसे सिक्त शब्दसमूह करके परिपूर्ण है। जो लड़का पहिले निज प्रदेश की (बङ्गला, हिन्दी, महाराष्ट्री आदि) भाषा में बनाया हुआ सरल पाठादि युक्त पुस्तक पढ़े बिना संस्कृत अध्ययन आरम्भ करता, उसको संस्कृत भाव हृदयमें लाना बड़ा कठिन बुझ पड़ता है, और प्रदेशीय भाषा भली भान्ति नजानने पर श्रोताओंके निकट पढ़ी हुई पुस्तक की व्याख्यान करने के समय अत्यन्त क्लेश वो असुविधा होती है। प्रचलित भाषाकि शिक्षा करके भावका विकाश करना नितान्त आवश्यक है। नहीं तो संस्कृत शिक्षा वो उसकी व्याख्या करना एक तरह की विडम्बनामात्र हो पड़ती है। सचराचर देखा

পাওয়া যায় যে বহুল সংস্কৃত শাস্ত্রদর্শী কোন পণ্ডিত যখন কোন শাস্ত্রের বাচনিক ব্যাখ্যা বা অনুবাদ করেন, তাহা সাধারণ লোকের দুরধিগম্য হইয়া থাকে। প্রচলিত ভাষার শিক্ষাভাবই এই বিড়ম্বনার মূল। অতএব শিশুগণকে স্ব স্ব প্রদেশীয় ভাষায় সুশিক্ষিত করিয়া সংস্কৃত শিক্ষায় প্রবৃত্ত করা বুধমণ্ডলীর অনুমোদিত।

আমরা দেখিতে পাই যে বহু দিন শ্রমসাধ্য সংস্কৃত ভাষায় সুশিক্ষিত পণ্ডিতগণ অনেক সময়ে অনেক লোকের নিকট যথোচিত সমাদর পান না। এজন্য অনেক পণ্ডিতেই এরূপ আক্ষেপ করেন, যে সংস্কৃত শিক্ষায় কোন ফল নাই; কেন না ইহাতে অর্থোপার্জ্জন, সমাদর ও সম্ভ্রম দিন দিন হ্রাস হইয়া আসিতেছে। আমরা পণ্ডিতগণের এই আক্ষেপোক্তিকে একবারে অমূলক বলিতে পারি না। ভারতের শ্রীস্বরূপ মহাত্মাগণের নিকট ভিন্ন পণ্ডিতগণ সর্ব্বত্রই প্রায় অনাস্থার পাত্র হইয়া উঠিয়াছেন। পণ্ডিতগণের হতাদর হইবার কারণ অবধারণ করা কর্ত্তব্য। মনুষ্য মাত্রেই স্ব স্ব কার্য্য সাধন তৎপর, যাহার দ্বারা লোকে কোন কার্য্যের সহায়তা পায় না, তাহাকে অন্তরের সহিত আস্থা করা প্রকৃতিবিরুদ্ধ। লোকে যদি সাধারণ কার্য্য কালে পণ্ডিতদিগের নিকট হইতে সাহায্য পায় তাহা হইলে নিশ্চয়ই তাঁহাদিগকে সমাদর করিতে পারে। ইংরাজি শিক্ষার যেরূপ পদ্ধতি সংস্কৃত শিক্ষায় তদ্রূপ নহে। ইংরাজি ভাষায় যিনি সুপণ্ডিত, তিনি সাহিত্যে, ব্যাকরণে, ভূবৃত্তে, জ্যোতিস্তত্ত্বে, উদ্ভিদ্বিদ্যায়, ইতিহাসে, গণিতে, দর্শনে, ও বিজ্ঞানাদি নানা শাস্ত্রে যথা সম্ভব অভিজ্ঞতা লাভ করিয়া থাকেন, সুতরাং তিনি লোকসমাজের যে কোন প্রয়োজনীয় বিভাগের কার্য্যক্ষেত্রে অবতরণ করিয়া অর্থ ও প্রতিষ্ঠা লাভ করিবার উপযোগী হইয়া থাকেন। সংস্কৃত শাস্ত্রার্থীগণের মধ্যে হয়তো কেহ অপরাজেয় বৈয়াকরণিক, কেহ হয়তো দিগ্বিজয়ী দার্শনিক, কেহ হয়তো সাহিত্যে মহাপণ্ডিত, হইয়া থাকেন। লোক ব্যবহারোপযোগী শাস্ত্র তাঁহারা অতি অল্পই আলোচনা করেন; ধর্ম্মশাস্ত্র, তর্কশাস্ত্র, জ্ঞানশাস্ত্র, লইয়াই তাঁহারা জীবনানন্দানুভব করিতে অভিলাষী। কিন্তু যে সকল পণ্ডিত জ্যোতিষ বা আয়ুর্ব্বেদাদি ব্যব-

जाता है कि बहुल संस्कृतशास्त्र पढ़े हुए कोई पण्डित जब किसी शास्त्रकी वाचनिक व्याख्या वा अनुवाद करते हैं, तब वह सर्व्वसाधारण जनोंके बुद्धिगम्य ना होता हैं। प्रचलित भाषाकी शिक्षा भाव ही इस विड़म्बना का मूल है। अतएव लड़कोंको निज निज प्रदेशीय भाषामें सुशिक्षित करके संस्कृत सिखावना विज्ञजनोंका अनुमोदित है।

हम देखते हैं जो बहुत दिनके परिश्रमसे लाभ करने के योग्य संस्कृत भाषा में सुशिक्षित पण्डितगण कितने समय कितने लोगोंके निकट यथा योग्य सम्मान नहीं पाते इसलिये कितने पण्डित इस भान्ति आक्षेप करते हैं, जो संस्कृत सिखने से कुछ लाभ नहीं, क्योंकि इसमें जो धनागम, समादर, औ सम्मान ये सोदिन पर दिन घटने जाते हैं। हम पण्डितोंकी इस आक्षेपोक्ति को एक दम अमूलक नहीं कह सक्ते हैं। भारतके श्रीस्वरूप महात्माओंके निकट छोड़कर पण्डित गण सभी जगह में प्राय: अनास्था के पात्र हो उठे हैं। पण्डितोंके अनादर होनेके हेतु स्थिर करना चाहिये। हर एक मनुष्य ही निज निज कार्य्य साधन में तत्पर रहते हैं। जिनसे किसी कार्य्य की सहायता न मिलती, उनको मनके सहित आस्था करना प्रकृति विरुद्ध है। लोगोंने यदि हरएक प्रजोजन में पण्डितोंसे साहाय्य पाता तो निश्चय ही उन सबको आदर कर सक्ता। अंगरेजी शिक्षाकी जिस भान्ति रीति है, संस्कृत शिक्षा की रीति उस भान्ति नहीं। अंगरेजी भाषा में जो पण्डित बनते है वे साहित्य, व्याकरण, भूतत्त्व ज्योतिस्तत्त्व, उद्भिद्विद्या, इतिहास, गणित, दर्शन औ विज्ञानादि नाना शास्त्रमें यथा सम्भव बहुदर्शिता लाभ किये करते हैं, सुतरां उन्होंने लोग समाज की जिस किस ही प्रयोजनीय विभाग के कार्य्यक्षेत्रपर उतर कर धन औ प्रतिष्ठा लाभ करने में उपयोगी बनते हैं। संस्कृत शास्त्रार्थियोंके मध्य में चाहे तो कोई ऐसे वैयाकरणिक बनते हैं जिसको कोइ पराभव नहीं कर सक्ता, कोइ तो दिग्विजयी दर्शन कर्त्ता, कोइ तो साहित्य शास्त्रमें महा पण्डित बनते है। लोकव्यवहारके उपयोगी शास्त्र उन्होंने बहुत ही कम आलोचना करते है; धर्म्मशास्त्र, तर्कशास्त्र, ज्ञानशास्त्र आदि ही से उन्होंने जीवनानन्द अनुभव करना चाहते हैं। किन्तु जितने पण्डित ज्योतिष

হার শাস্ত্রে বিচক্ষণতা ও দক্ষতা লাভ করিয়াছেন. লোকসমাজে তাঁহাদের প্রায় অনাদর বা অপ্রতিষ্ঠা দেখিতে পাওয়া যায় না। আজ্ কাল বর্ত্তমান ভারত যেরূপ ধর্ম্মভাবশূন্য ও ইংরাজি ভাবপ্রিয় হইয়া উঠিতেছে, তাহাতে শ্রীমদ্ভাগবদাদি পাঠক, দর্শন-শাস্ত্র বিচারক, ব্যাকরণশাস্ত্রবিশারদ বা ধর্ম্ম-শাস্ত্রনিপুণ মহাত্মাগণ কিরূপে মর্য্যাদার আশা করিবেন তবে যদি পূর্ব্বতন আর্য্য মাহাত্মাগণের ন্যায় সর্ব্বাবয়বপূর্ণ বিদ্যা শিক্ষা করিতে থাকেন, তাহা হইলে আর্য্যগৌরব, লোকমর্য্যাদা ও অর্থাদি লাভে কৃতকার্য্য হইবেন। শাস্ত্রে দেখিতে পাওয়া যায় যে, ঋষিগণ, যোগ, ধর্ম্ম, জ্ঞান, সাধারণ নীতি, রাজনীতি, সমরবিদ্যা, বাণিজ্য ব্যবসায় পদ্ধতি, অশেষ শিল্পশাস্ত্র, ইতিহাস, ভূগোলাদি তাবদ্বিষয়ই বিদিত থাকিতেন, এজন্য সর্ব্বত্র পূজিত ও সমাদৃত হইতেন, সকলেই তাঁহাদের নিকট কার্য্যের সাহায্য লাভ করিত। এক্ষণে তাদৃশ পণ্ডিত অতি বিরল। সুতরাং ব্যবহার কালে লোক সকলকে অন্যের সাহায্য প্রার্থনা করিতে হয়। যদি পণ্ডিতগণ ঈদৃশী প্রতিষ্ঠার কামনা করেন, তবে বর্ত্তমান শিক্ষা-প্রণালীর পরিবর্ত্তন করিয়া পূর্ব্বতন আর্য্যগণের শিক্ষা প্রণালী অবলম্বন করুন অথবা যদি ধর্ম্মশাস্ত্রাদি দ্বারাই নিজ নিজ অভীষ্ট পূর্ণ করিতে চাহেন, তবে প্রাণপণ যত্নে ধর্ম্মোৎসাহপূর্ণহৃদয়ে ধর্ম্ম প্রচার দ্বারা প্রত্যেক ভারতবাসীর হৃদয়কে ধর্ম্মভাবে উন্মত্ত করিয়া দিন। পণ্ডিত মহাশয়গণ! আর্য্যদিগের কঠোর স্বাধ্যায় ও তপস্যালব্ধ অতুল সম্পত্তি শাস্ত্র সমূহ আপনাদিগকে সমর্পণ করিয়া তাঁহারা ধরাধাম পরিত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহাদের লোকদুর্লভ ধন রক্ষা করুন, তাঁহাদের পবিত্র পদ্ধতি অবলম্বন করুন; তাঁহাদের ধর্ম্মের বিজয়পতাকা হস্তে ধারণ করিয়া বিশ্ববাসীকে বিমোহিত করুন। সচেতন জিহ্বায় তাঁহাদের কীর্ত্তি কীর্ত্তন করিয়া তাঁহাদের বংশমর্য্যাদা প্রকৃত ভাবে রক্ষা করুন। আপনারা বর্ত্তমান সমাজের ঘোর বিপ্লবসমরে পৃষ্ঠভঙ্গ দিলে ভারত প্রবল ভ্রষ্টাচারের প্রজ্জ্বলিত অনলে বিদগ্ধ হইয়া যাইবে। আপনারা কুলকর্ত্তব্য বিস্মৃত হই-বেন না। আর্য্য কার্য্যমালা কণ্ঠে ধারণ করুন, তাঁহাদের তেজোবীর্য্য হৃদয়ে রক্ষা করুন; পতিত-পাবনের প্রকৃত তত্ত্বরূপ পাবক রাশি আপনাদিগের

वो आयुर्वेद आदि व्यवहार शास्त्र में विचक्षणता वो दक्षता लाभ किये हैं, लोक समाजमें उन्होंके प्राय अनादर वो अप्रतिष्ठा न देखी जाती है। आज कल् वर्त्तमान भारत जिस भान्ति धर्म्म भाव शून्य वो अंगरेजी भावप्रिय हो उठ रहा है, तिससे महात्मागण, जोने श्रीमद्भागवत आदि पाठ करने हारे, दर्शनशास्त्र को विचार करनेवाले, व्याकरण शास्त्रमें विशारद वो धर्म्मशास्त्रमें निपुण हैं, कैसे मर्य्यादा की आशा करें। हां, यदि प्राचीन आर्य्य महात्माओंके सदृश विद्याओंकी सर्व्व अवयव से पूर्ण है, शिक्षा करते रहें, तो अवश्य ही आर्य्यगौरव, लोकमर्य्यादा वो धनादि लाभ करने में कृतकार्य्य होंगे शास्त्र में देखा जाता है, जो ऋषिगण योग, धर्म्म, ज्ञान, साधारण नीति, राजनीति, समर विद्या, वाणिज्य व्यवसाय की पद्धति अशेष शिल्पशास्त्र, इतिहास, भूगोलादि सब ही कुछ जाने हुए थे, इस हेतु सर्व्वत्र पूजा वो आदर पाते थे सबकोइ अपने अपने काम में उन्होंका साहायय पाते थे। अब उस भान्ति पण्डित अत्यन्त विरल हैं। सुतरां व्यवहार कार्य्यके समय लोगोंके दुसरा किसी से साहायय लेने पड़ता। यदि पण्डितगण ऐसी प्रतिष्ठा चाहें तो वर्त्तमान शिक्षाप्रणाली बदल कर पूर्व्वज आर्य्यगण की शिक्षाप्रणाली को अवलम्बन करें अथवा यदि केवल धर्म्मशास्त्रादि ही से निज निज अभीष्ट पूरान चाहें तो प्राणपण यत्नकर धर्म्मोत्साह पूर्णहृदयसे सनातनधर्म्म प्रचार पूर्व्वक हर एक भारतवासिके हृदयको धर्म्मभावसे उन्मत्त कर दें। हे पण्डित महाशयगण! आर्य्य महात्माओंने अपने अपने कठोर स्वाध्याय वो तपस्या करके लाभ किया हुआ शास्त्रसमूह रूप अतुल सम्पत्ति आप लोगोंको समर्पण कर धराधाम त्याग किये। उन्होंके लोकदुर्लभ धनको रक्षा किजिये, उन्होंकी पवित्र पद्धति अवलम्बन कीजिये, उन्होंके धर्म्मकी विजय-पताका हात में लिये हुए विश्ववासी को विमोहित कीजिये, सचेत् जिह्वासे उन्होंकी कीर्त्ति कीर्त्तन कर उन्होंकी वंशमर्य्यादा प्रकृत भाव से रक्षा कीजिये। आपलोग यदि वर्त्तमान समाज के घोर विप्लव समर में पिछे हट भागियेगा, तो भारत प्रबल भ्रष्टाचार के जलता हुआ आग में दग्ध हो जावेगा। आप लोग अपने अपने कुल कर्त्तव्य न भूलिये। आर्य्य कार्य्य माला कण्ट में धारण कीजिये, उन्होंके तेज प्रताप हृदय में रक्षा कीजिये; पतित पावन के प्रकृत तत्त्व जो कि पावक रूप है, आपलोगोंके

বদনবিবর হইতে বহির্গত হইতে থাকুক, জগৎ আপনাদিগের চরণে স্বতঃই অবনত হইবে। আপনাদিগের প্রতিষ্ঠা ভারতে পুনঃ প্রতিষ্ঠিত হইবে।

সূর্য্যাস্তকালে সভা ভঙ্গ হইল। সন্ধ্যার পর রাত্রি ৯টা পর্য্যন্ত বিশুদ্ধ তানলয়যুক্ত ধর্ম্মসঙ্গীত ও হরিনাম সংকীর্ত্তন হইয়াছিল। গায়কের ধর্ম্মভাবপূর্ণ সুমধুর স্বর শ্রোতা মাত্রেরই হৃদয়গ্রাহী হইয়াছিল।

২৫শে মাঘ। রবিবার, প্রাতঃকাল।

প্রাতঃ বেলা ৭টার সময় আ, ধ, প্র, সভান্তর্গত সদালোচনী সভার অধিবেশন হইল। প্রথমতঃ গম্ভীরভাবপূর্ণ দুইটি ধর্ম্মসংগীত ও তৎপরে সংস্কৃত ভাষায় ভগবৎস্তোত্র স্বরসংযোগে পঠিত হইল। তাহার পরে একটী সংগীত হইলে আ, ধ, প্র, সভার সহযোগী সম্পাদক একটী জ্ঞানোপদেশ ব্যাখ্যান করিলেন। ব্যাখ্যানটী স্থানাভাব বশতঃ আদ্যোপান্ত সম্পূর্ণরূপ পাঠকগণের গোচর করিতে পারিলাম না। তাহার সংক্ষিপ্তসার মাত্র নিম্নে প্রকটিত হইল।

জীব যখন আলোকাকীর্ণ স্থান হইতে অন্ধকারে আসিয়া উপস্থিত হয়, তখন সে কিছুই দেখিতে পায় না; কোথায় যাইব কি করিব কিছুই অনুভব হয় না। সেই সময় কোন পথপ্রদর্শকের বশবর্ত্তী হইয়া কার্য্য করিতে বাধ্য হয়। সাধকগণ! আজ এই মহোৎসবের সময় মনুষ্য জীবনের একটী ঘটনা শ্রবণ কর। আমি এক সময়ে এক পূর্ণানন্দময় পরমালোকাকীর্ণ স্থান হইতে বহির্গত হইয়া অকস্মাৎ একটী অন্ধকারময় স্থানে আসিয়া পতিত হইলাম; কোথাও কিছুই দেখিতে পাই না, কি করিব, কোথায় যাইব, কিছুই বুঝিতে পারি না। আমার সেই পূর্ব্ব আলোকময় স্থান কোথায় ও আমি এক্ষণে কোথায় আসিলাম, কিছুই অনুভব হয় না। এমন সময়ে হঠাৎ একটী বৃদ্ধা স্ত্রীলোকের সহিত আমার সাক্ষাৎ হইল; তিনি সস্নেহবাক্যে আমাকে সম্ভাষণ করিয়া কহিলেন, বৎস! ভয় নাই, তুমি আমার সঙ্গে আইস, আমি তোমাকে পরম সুখে রাখিব, অতি যত্নে রক্ষা করিব; এমন কি, তোমাকে আমার সুবিস্তীর্ণ রাজ্যের একমাত্র অধিপতি করিব। আমিও সেই ভয়ানক দুরবস্থার সময় তাঁহার হৃদয়লোভন কথায়

पदारविन्द में स्वत:एव शिर झुकावेगी। आप लोगोंकी प्रतिष्ठा भारत में पुन: प्रतिष्ठित होगी।

सूर्य्यास्तके समय सभा विसर्ज्जन हुई। सन्ध्या के उपरान्त रात्रि ९ बजे तक विशुद्ध तानलय युक्त धर्म्मसङ्गीत वो हरि नाम सङ्कीर्त्तन हुआ। गायक महाशयके धर्म्मभाव पूर्ण रसिलो स्वर हरेक श्रोताका मन हर ली थी।

माघ सुदी ८। रविवार, प्रात:काल।

प्रात:काल सात बजे आ, ध. प्र. सभाके अन्तर्गत सदालोचनी सभाका अधिवेशन हुआ। पहिले गम्भीरभावसे पूर्ण दो धर्म्म सङ्गीत गाई गई। तदनन्तर भगवत स्तोत्र, जो कि संस्कृत भाषा में रची हुई है, सुस्वर से पढ़ी गई। इसके आगे एक भजन होने पर आ, ध, प्र, सभाके सहयोगी सम्पादक एक ज्ञानोपदेश व्याख्यान किये। स्थानाभाव के कारण व्याख्यान को आदि से अन्ततक सम्पूर्णरूप पाठकोंके गोचर न कर सके हैं। उसका सारांश मात्र नीचे लिखा गया।

जीव जब ज्योति से पूर्णस्थान पर से अन्धकार में आगिरता है, उस समय उसको कुछ नहीं सूझता है। कहां जायगा क्या करेगा कुछ भी नहीं मालूम पड़ता। उस समय कोई राह दिखाने हारेके वश हो कर कार्य्य करने में बाध्य होता है। साधकगण! आज इस महोत्सव के समय मनुष्य जीवनकी एक बात सुनिये। मैं किसी समय में एक पूर्णानन्दमय परम ज्योति करके भरा हुआ स्थान से निकल कर अकस्मात् किसी अन्धकारमय स्थान में आ पड़ा; कहीं कुछ दृष्टि न चली, क्या करूंगा, कहां जाऊंगा कुछ भी न बूझ सका। मेरा वह पूर्व्व आलोकमय स्थान कहां रहा वो मैं अब कहां आ चुका, कुछ भी अनुभव न हुआ। इस समय अकस्मात् एक वृद्धा स्त्री से मेरा भेट हुआ; वे स्नेह वश वचन से सम्भाषण कर बोली, बेटा! डर नहीं तू मेरे साथ आ, मैं तुझ को परम सुख से रखूंगी, अति यतनसे रक्षा करूंगी, ऐसा कि तुझको मेरे सुविस्तीर्ण राजके एकमात्र अधिपति बनाऊंगी। मैं भी उस भयङ्कर दुर्दशाके समय उनको मन लोभावनी बातोंसे मोहित होगया। धीरे२ उनके पिछे२ जाने लगा। कभी जलमें, कभी स्थल में

বিমুগ্ধ হইয়া গেলাম। ধীরে ধীরে তাঁহার অনুগমন করিতে লাগিলাম। কখন জল, কখন স্থল, কখন ভূগর্ভে, কখন অন্তরীক্ষে, কখন বৃক্ষোপরে প্রতিষ্ঠিত বিবিধ পান্থশালায় অবস্থান করি। কোথাও কেবলমাত্র বায়ুভক্ষণে জীবনধারণ করি, কোথাও তৃণপত্র আহার করিয়া প্রাণধারণ করি, কোথাও বা নানাবিধ তিক্ত, মধুর, অম্ল, কষায়, মজ্জা-মাংসাদি ভক্ষণে ক্ষুৎপিপাসা নিবারণ করি। তিনি বরাবর আমার সঙ্গে আছেন এবং নানাবিধ প্রলোভন দেখাইতে দেখাইতে আমাকে তাঁহার রাজধানীতে লইয়া চলিলেন। ক্রমে নানা স্থান, গিরিগহ্বর, অরণ্যাণি অতিক্রম করিয়া, এক পরিষ্কৃত জনপদে আসিয়া পড়িলাম। তিনি কহিলেন, এই আমার রাজধানী; এতদিন যাহা দেখিয়া আসিলে তাহাও আমার শাসনান্তর্গত। এই স্থানে তুমি সমস্ত রাজ্যের অধীশ্বর হইয়া রাজ্যসুখ ভোগ কর। যত দিন আমি থাকিব, তোমাকে বিধিমতে লালন পালন করিব। আমিও অনেক পরিশ্রান্তির পর একটু বিশ্রাম পাইলাম এবং কিঞ্চিৎ সুখবোধও হইল। ভোগসুখে উন্মত্ত হইয়া, ক্রমে আমার চিরনিবাস পূর্ণালোকাকীর্ণ পরমানন্দময় স্থান একেবারে বিস্মৃত হইলাম।

এইরূপে ক্রমে রাজ ঐশ্বর্য্য ভোগে আমার জীবন গত হইতে লাগিল। কালসহকারে রাজোচিত বিপুল বিক্রম আসিয়া আমাকে আশ্রয় করিল। তখন আমি রাজা হইলাম ও নিজ মর্য্যাদা বুঝিতে পারিলাম। সময়ে সময়ে আমার রাজ্যবিস্তার বাসনাও বলবতী হইতে লাগিল। এক দিন রাজনীতির বশবর্ত্তী হইয়া মৃগয়ার্থ বহির্গত হইলাম, ক্রমে রাজধানীর সীমা অতিক্রম করিয়া এক অদৃষ্টপূর্ব্ব মনোহর বনে উপস্থিত হইলাম। তথাকার প্রাকৃতিক শোভা সন্দর্শন করিতে করিতে মনে আনন্দ উপস্থিত হইল। তরুগণ নবীন পল্লব ও ফল পুষ্পে পরিশোভিত, বিহঙ্গম সকল মৃদু মধুরস্বরে গান করিতেছে, মন্দ২ মারুত-হিল্লোলে শাখা প্রশাখা সকল বিলোড়িত হইতেছে; ভাবিলাম এরূপ শোভা কি আর কোথাও কখন দেখিয়াছি। আহা! এরূপ শোভা সম্বর্দ্ধন কে করিতেছে! ভাবিতে২ আমার পূর্ব্ব অবস্থা স্মরণ হইল, সেই পূর্ণ জ্যোতির্ম্ময় স্থান মনে পড়িল,

कभी भूगर्भ में, कभी अन्तरीक्ष में, कभी वृक्षपर बनाई हुई नाना भान्तिके सराय में टिकने लगा। कहीं केवलमात्र वायु भोजन करके जीवनधारण किया, कहीं तृणपत्र आहार करके प्राण बचया, कहीं नाना भान्ति के तीता, मीठा, खट्टा कसैला, मज्जामांसादि भोजन कर भूखप्यास बुझाया। वे बराबर मेरे साथ रही, और नाना भान्तिके लालच देखलाती हुई मुझको अपनी राजधानी में ले चली। क्रम क्रमसे नानास्थान, गिरिकन्दर बन, टप टप कर एक परिष्कृत जनपदमें आ पड़ा। वे बोलीं यही मेरी राजधानी है, इतना दिन जो जो स्थान देख आये हो वे सब भी मेरे शासनाधीन है। इस स्थान में तुम समस्त राज्यके अधीश्वर बनकर राजसुख भोगते रहो। जबतक मैं रहूंगी तुझको बिधिपूर्व्वक लालन पालन करूंगी। मैं भी बहुत परिश्रम के बाद तनिक विश्राम पाया और कुछ सुख बोध भी हुआ। भोग सुख में उन्मत्त होकर क्रमक्रमसे मेरे चिरवासस्थान पूर्ण ज्योतिर्म्मय परमानन्द से पूर्णस्थान को एक दम भूल गया।

इस ही तरहसे राज ऐश्वर्य्य भोग करते हुये मेरा आयु बीतने लगा। कालसहकार राजोचित विपुलविक्रम मुझको आश्रय किया। उस समय मैं राजा बना वो निज मर्य्यादा समझ लिया। बीच बीच में राज्य बढ़ावनेकी वासना भी बलवती होने लगी। एकदिन राजनीति के अनुसार मृगयार्थ बाहर निकला। क्रमक्रमसे राजधानी की सीमा टपकर एक बन में जा पहुंचा, जो कि पहले कभी न देखा हुआ वो परम मनोहर था। वहां की प्राकृतिक शोभा देखते हुये मन में आनन्द उपजा; तरुगण नवीन पल्लव वो पुष्प आदिसे सुशोभित है, विहङ्गमगण मृदु मधुर स्वर से गाय रहे हैं। मन्द मारुतहिल्लोल से शाखा प्रशाखा डोल रही हैं, मनमें विचारा कि इस भान्ति शोभा क्या और भी कहीं देखा या नहीं। आहा! इस शोभाको कौन बढ़ा रहा है! सोचते विचारते मेरी पूर्व्व अवस्था स्मरण पड़ी। वही पूर्णज्योतिर्म्मय स्थान याद पड़ा, सोचा कि मेरे बड़

ভাবিলাম আমার সে স্থান কোথায়। এই শোভা তাহার নিকট পরাজয় স্বীকার করে।

এইরূপ আন্দোলায়মানচিত্তে ভ্রমণ করিতে২ সম্মুখে এক অত্যুচ্চ পর্ব্বত দৃষ্ট হইল। ভাবিলাম এই পর্ব্বতোপরি আরোহণ করিলে বোধ হয় আরও সমধিক শোভা দেখিতে পাইব। ক্রমে ক্রমে পর্ব্বত সন্নিহিত হইয়া তাহাতে আরোহণ করিতে লাগিলাম। যতই ঊর্দ্ধে গমন করি, ততই শোভা দেখিতে পাই। এইরূপ যখন অর্দ্ধপথে আরোহণ করিলাম। তখন দেখি সেই বৃদ্ধা স্ত্রীলোক অতি বেগে চিৎকার করিতে করিতে আমার অভিমুখে আসিতেছেন এবং হস্ত উত্তোলন করিয়া আমাকে প্রতিনিবৃত্ত হইতে অনুরোধ করিতেছেন। তখন আমি স্তম্ভিত হইয়া ক্ষণকাল দণ্ডায়মান রহিলাম; ক্রমে তিনি আসিয়া আমার হস্ত ধারণ পূর্ব্বক ঊর্দ্ধে উঠিতে বার বার নিষেধ করিতে লাগিলেন; কহিলেন বৎস! এরূপ দুঃসাহসিক কার্য্য কখনই করিও না। ঐ দেখ কত লোক উঠিতে গিয়া ঊর্দ্ধ হইতে বিচ্যুত হইয়া ভগ্নপদ ও বিকলাঙ্গ হইয়াছে, কত লোক পড়িয়া হতচেতন ও অকালে কালকবলে প্রবেশ করিয়াছে; অতএব এরূপ কার্য্যে কখনই উদ্যম করিও না। এস, আমার সঙ্গে প্রতিনিবৃত্ত হও, তোমার যাহা আবশ্যক হইবে আমি তোমার রাজধানীতে আনিয়া দিব। এইরূপ আমাকে নানা প্রলোভন দেখাইতে লাগিলেন। আমিও তখন কি করি, গিরিশীর্ষস্থ অপরূপ শোভারাজি আমাকে ঊর্দ্ধদিকে গমনে আমন্ত্রণ ও তাঁহার প্রলোভন বাক্য প্রত্যাবর্ত্তনে পরামর্শ দান করিতে লাগিল। পরিশেষে তাঁহারই বাক্যের বশবর্ত্তী হইয়া পর্ব্বতারোহণের উদ্যম পরিত্যাগ করিলাম এবং তাঁহার সঙ্গে নিজ রাজভবনে প্রত্যাগমন করিলাম। পুনর্ব্বার রাজভোগে অনুরক্ত হইয়াও সেই অবধি মধ্যে মধ্যে আমার মনে সেই রমণীয় শোভাবলোকনের ঐকান্তিকী ইচ্ছা হইতে লাগিল।

একদা রাত্রিযোগে পর্য্যঙ্কে নিদ্রা যাইতেছি, স্বপ্ন দেখিলাম, যেন আমি পর্ব্বতোপরি আরোহণ করিতেছি। মন আনন্দে উচ্ছলিত হইয়া নৃত্য করিতে লাগিল। রাজভোগ সুখৈশ্বর্য্য ভুলিয়া গেলাম। এমন সময়ে নিদ্রাভঙ্গ হইয়া দেখি, আমি

स्थान अब कहां रहा। यह शोभा उसके पास हार मानती है।

इस भांति आन्दोलायमान चित्तसे फिरते फिरते साम्हने में एक बड़ा भारी उंचा पर्व्वत देख पड़ा, विचार किया कि इसपर्व्वतपर चढ़ने से और भी अधिक शोभा देख पड़ेगी। क्रमक्रमसे पर्व्वत के निकट जा उस पर चढ़ने लगा तत्काल देखा कि वे प्राचीना स्त्री दौड़ती दौड़ती चिल्लाती हुई, मेरे ओर आरही और हाथ उठाकर मुझे लौटाने को इसरा कर रही हैं। उस समय मैं थम कर तनिक खड़ा रहा; वे आकर मेरे हाथ पकड़े हुई उपर उठनेको वारम्बार निषेध करने लगी। बोली कि हे वत्स! ऐसे दुःसाहसिक कार्य्य कभी न करो। उधर देखो कितने लोग उठते उठते उपकसे गिरपर भग्नपद वो विकलाग बन बैठे, कितने तो गिरते ही अचेतन हुए वो अकाल कालकवल में प्रवेश किये, अतएव ऐसा काममें कभी उद्यम न करो। आओ, मेरे सङ्ग लौटो, तुम्हारा जो कुछ प्रयोजन पड़ेगा, मैं तेरी राजधानी में ला दूङ्गी। इस भान्ति अनेक लालच दिखलाने लगी। मैं उस समय क्या करूं, पर्व्वत परको आश्चर्य्य शोभापंति मुझे ऊपर से चढ़ जानेको आमन्त्रण कर रही थी, और उनको मनलोभावनी वचनोंने लौट आनेका परामर्श देने लगा। अन्तमें उन्हींके वचन वश होकर पर्व्वतारोहण के उद्यम छोड़ा वो उनके सङ्ग निज राजभवन में फिर आया। पुनर्व्वार राजभोग में अनुरक्त हुए भी उस समयसे वीच२ में उस रमणीय शोभा देखनेकी ऐकान्तिकी इच्छा होने लगी।

एकदिन राती को पलङ्गपर सोए हुवे स्वप्न देखा जैसा कि मैं पर्व्वत पर चढ़ रहा हूं। मन आनन्दसे उछल उछल कर नृत्य करने लगा। राजभोग सुखैश्वर्य्य सब हो भूलगया। ऐसे समय मेरो निद्रा टूटो, और देखा कि मैं राजभवन में

সেই রাজভবনে সুসজ্জিত পর্য্যঙ্কে শয়ন করিয়া রহিয়াছি। কিন্তু মন তখনও সেই শোভা জাগ্রদ্দশাতে বিস্মৃত হয় নাই; প্রাণ, মন ব্যাকুল হইয়া উঠিল, সমুদয় সুখৈশ্বর্য্য বিরক্তিকর বোধ হইতে লাগিল। কি করি, কাহাকেও কিছু না বলিয়া, প্রভাতে গাত্রোত্থান পূর্ব্বক একাকী নিঃশব্দে রাজ ভবন হইতে বহিষ্কৃত হইয়া সেই পর্ব্বতাভিমুখে গমন করিলাম এবং ঊর্দ্ধে পুনরারোহণ করিতে লাগিলাম। এবারও পূর্ব্ববৎ বৃদ্ধা প্রতিরোধিনী হইয়া আসিলেন, কিন্তু এবার তাঁহার কথায় অমি অনাদর পূর্ব্বক উচ্চৈঃস্বরে ক্রন্দন করিতে২ কহিলাম যদি কেহ নিকটে থাক, তবে আমার অভীষ্ট সাধনে সহায়তা কর, আর যেন বৃদ্ধার বঞ্চনাবাক্য আমাকে মোহিত না করে। এই সুযোগ নষ্ট হইলে আর আশাপূর্ণ হইবে না। এইরূপ ক্রন্দন করিতেছি, এমন সময়ে একটী পরমা সুন্দরী যুবতী ঊর্দ্ধ হইতে আমাকে হস্ত প্রসারণ পূর্ব্বক আশ্বাস বাক্যে আহ্বান করিয়া কহিতে লাগিলেন। আইস, আর পশ্চাৎ দিকে দৃষ্টিপাত করিও না, ও বৃদ্ধা রাক্ষসী, তোমাকে বিনাশ করিবার জন্য মৌখিক মমতা দেখায় মাত্র। আর ভয় নাই, আমি তোমাকে উপরে লইয়া আসিতেছি তোমার মানস পূর্ণ করিব, আমার স্বামীর নিকট তোমাকে পোঁছাইয়া দিব, ভয় নাই, উপরে আইস। আমি সেই বাক্যে আশ্বাসিত হইয়া দ্বিগুণ বেগে আরোহণ করিতে লাগিলাম এবং তিনি স্নেহবশ হইয়া, আমার হস্ত ধারণ করিলেন; ইহা দেখিয়া সেই বৃদ্ধা যে কোথায় তিরোহিত হইল তাহার আর অনুসন্ধান পাইলাম না। উক্ত আর্ত্তদুঃখবিনাশিনী বামা পর্ব্বত শিখরে গিয়া, একজন সম্মুখস্থ প্রশান্ত প্রকৃতি সৌম্য পুরুষের শরণাপন্ন হইতে ইঙ্গিত করিলেন, বলিলেন উনি তোমার মানস পূর্ণ করিবেন। আমি তখন অশ্রুপূর্ণলোচনে গদ্গদ স্বরে তাঁহার চরণে লুণ্ঠিত হইলাম। তিনি কহিলেন বৎস! আর তোমার ভয় নাই, আইস এই সরোবরে স্নান করিয়া আইস। তোমার শরীর বৃদ্ধা স্ত্রীলোকর কুদৃষ্টিতেও উৎপাড়নে ক্ষত বিক্ষত হইয়াছে, উহাতে কীটের সঞ্চার হইয়াছে, ঐ সরোবরে স্নান করিলে সকল মুক্ত হইবে। তখন আমি কৃতাঞ্জলিপুটে কহিলাম, হে শরণাগত-

सजाए हुए पालङ्कपर सोया हूं। किन्तु तौभी मन जाग्रद्दशामें उस शोभाको न भूला; प्राण, मन व्याकुल हो उठा, समस्त सुखैश्वर्य्य विरक्तिकर बोध होने लगा। क्या करूं, किसही को कुछ कहे बिना प्रभात काल उठ कर अकेले निःशब्द हुए राजभवन से बाहर निकला वो उस पर्व्वताभिमुख गमन किया औ फिर ऊपर चढ़ने लगा। इस बेर भी वह वृद्धा पूर्व्ववत प्रतिरोधिनी हो आई। किन्तु इस बेर उनकी बातोंपर बिन मन दिये जोर शोरसे रो रो कर कहने लगा कि यदि कोई निकट रहे हों तो मेरी अभीष्ट साधन में सहायता करो, जैसा कि फिर वृद्धा की वञ्चना वचन मुझे मोहित न करे। यह शुभ योग नष्ट होनेसे फिर आशा पूर्ण न होगी। जब मैं इस भान्ति रो रहाथा, देखा कि एक परमसुन्दरी युवती ऊपरसे हाथ उठाये मुझे आश्वास वाक्यसे पुकार कर बोलने लगी, आओ, पीछे मत देखो, वह वृद्धा राक्षसी है, तुझको मारने के लिये झूटी ममता दिखलाती है। और डर नहीं; मैं तुझको ऊपर लिये आती हूं, तेरी मनसा पूरी करूंगी, मेरे स्वामी के निकट तुझ को पहुंचा दूंगी, डरना नहीं, ऊपर आओ। मैं उसकी वाक्यसे आश्वासित होकर द्विगुण वेगसे आरोहण करने लगा और वे स्नेह वश होकर मेरे हस्तधारण करी, इतना देखतेही वह वृद्धा जो कहां छिप गयी, उसकी पतातक न पाया, वह आर्त्त-दुःख-विनाशिनी वामाने पर्व्वत-शिखर पर जो एक प्रशान्त सौम्य-मूर्त्ति पुरुषके, जो कि सम्मुख बैठे थे, शरण लेने को इशारा करी, बोली कि, वे ही तुम्हारी कामना पूरी कर देंगे। आंसूसे भरा हुया नेत्र वो गद्गदस्वर से उनके चरणकमल पर गिरा। वे बोले, हे वत्स! और तेरा भय नहीं, आयो, इस सरोवर में स्नान कर लेओ। तेरे शरीर वृद्धाकी कुदृष्टि वो उत्पीड़न करके क्षत विक्षत हो गया, उस में कीड़ाभी पड़ा, इस सरोवर में स्नान करनेसे सब छूट जायगा। तब मैं ने हाथ जोड़ कहा, हे शरणागतपालक! मैं किधर किस

পালক! আমি কোন্‌দিকে কিরূপে অবতরণ করিয়া স্নান করিব, তাহা জানি না, আমাকে দেখাইয়া দিন। তিনি কহিলেন, ক্রমে সরোবরে অবতরণ পূর্ব্বক মস্তক অবনত করিয়া অবগাহন কর। আমিও সেই আজ্ঞানুসারে জলমধ্যে অবতরণ করিলাম; ক্রমে মস্তক অবনমন করিয়া তথায় নিমগ্ন হইলাম। শরীর শীতল হইতে লাগিল, বেদনা দূরীভূত হইল; কিন্তু অধিকক্ষণ ডুবিয়া থাকিতে পারিলাম না, আবার ভাসিয়া উঠিলাম। তখন কহিলাম, এ কি হইল! আমি যে ডুবিয়া থাকিতে পারি না। তিনি কহিলেন বৎস! অগ্রে শরীর শীতল হউক, পশ্চাৎ আমি তোমার কণ্ঠে এক দিব্যৌষধি প্রদান করিতেছি, তুমি উক্ত ঔষধি ধারণ পূর্ব্বক জল মধ্যে মগ্ন থাকিতে পারিবে। আমি স্নান করিয়া ঔষধি ধারণ করিলাম, তখন তিনি কহিলেন, এইবার অবগাহন কর, আর ভাসিয়া উঠিবে না। আমি তাঁহার অনুমত্যনুসারে অবগাহন করিলাম, এবং একেবারে জলের গভীরতলে গমন পূর্ব্বক কোথায় গেলাম বলিতে পারি না। তখনও কর্ণকুহরে এই শব্দ প্রবেশ করিল, “আরও গমন কর, আরও সুশীতল হইবে”, ক্রমে আরও গমন করিতে করিতে এক অপূর্ব্ব আনন্দময় স্থানে প্রবেশ করিলাম। দেখিলাম তথায় পরমরমণীয় জ্যোতির্ম্ময় শোভা-বিশিষ্ট কতকগুলি সৌম্যমূর্ত্তি পুরুষ আনন্দে বসিয়া আছেন। সেখানে পৌঁছিবামাত্র আমি স্পন্দ রহিত, আমার হস্ত, পদ শরীরাদি কিছুই দেখিতে পাইতেছি না; কেবল এক আনন্দধ্বনী উচ্ছলিত হইতেছে। তখন আমার সেই পূর্ব্ব পরিচিত সৌম্য পুরুষ সেখানে উপস্থিত হইয়া কহিতেছেন, বৎস! আরও একটু ভিতরে আসিয়া, তোমার মানস পূর্ণ কর। তখন আমি তাঁহার দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখি, তাঁহার সে আকার নাই, সে ভাব নাই; কিন্তু কি দেখিলাম, তাহা প্রকাশ করিতে পারি না, কি অনুভব হইতে লাগিল, তাহা বলিতে পারি না, আমারই বা তখন অবস্থা কি, তাহাও ব্যক্ত করিতে পারি না, সে স্থানের সেই ভাব, সেই শোভা, যে ব্যক্তি দেখিয়াছেন, তিনিই জানেন, তদ্ভিন্ন আর কিছুই বলিতে পারি না।

সাধকগণ! সদালোচনী সভার সভ্যগণ! যদি

रीतिसे उतर कर स्नान करूंगा, सो मैं नहीं जानता हूं, मुझको देखाय दीजिये। उन्होंने कहा धीरे धीरे सरोवर में उतर कर शीर झुकाये गोता लगाओ। मैं भी उनको आज्ञानुसार जलके बीच उतर गया, धीरे धीरे शीर झुकाये उस में निमग्न हुआ। शरीर शीतल होने लगा, दर्द दूर हुआ, किन्तु बहुत देरतक मुझसे मगन हुए न रहा गया, फिर ऊपर उतराय आया, तो बोला यह क्या हुआ! मैं जो डुबे नहीं रह सक्ता हूं, वे बोले हे वत्स! पहले तो शरीर शीतल होय, तत्पश्चात् मैं तेरे कण्ठ में एक दिव्य औषधि देदुंगा हूं, तु वही औषध धारण करके जलके मध्य में मग्न रह सकेगा। मैं स्नान कर औषधि धारण किया तब वे बोले, अब डुबो, फिर न उतर आओगे। मैं उनकी अनुमति अनुसार अवगाहन किया और एक दम गम्भीर जलके नीचे जाकर कहां चला गया, सो नहीं कह सक्ता हूं। तब भी कर्णविवर में इतना शब्द प्रवेश किया कि और भी जाओ और भी सुशीतल होओगे क्रमक्रमसे और भी जाते जाते एक अपूर्ब्ब आनन्द स्थानको प्राप्त हुआ। देखा कि कितने परम रमणीय ज्योतिर्म्मय शोभा-विशिष्ट सौम्यमूर्त्ति पुरुष वहां आनन्द में विराज कर रहे हैं। वहां पहुंचनेहीसे मैं स्पन्दरहित होगया। मेरे हस्त, पद, शरीरादि कुछ हो न देख पड़ता रहा, केवल एक आनन्द की ध्वनी उछल रही है। उस समय मेरे पूर्ब्बपरिचित सौम्य पुरुष वहां उपस्थित होकर बोलें, हे वत्स! और भी कुछ दुर भितर पैटकर अपनी मानस पुरी करले। उस समय उनके ओर मैं दृष्टिकर देखा कि उनके वह आकार नहीं, वह भाव नहीं; किन्तु क्या देखा, सो नहीं प्रकाशकर सक्ता हूं, क्या अनुभव होने लगा सो कह नहीं सक्ता हूं, मेरी भी अवस्था उस समय कैसी हुई, सो प्रगट नहीं कर सक्ता हूं। उस स्थानके वह भाव, वह शोभा, जोने देखा, वही जानते होंगे, इतना छोड़के और कुछ भी नहीं कहा जा सक्ता है।

साधकगण! सदालोचनी सभाके सभ्यगण! यदि मनुष्यदेह धारण करके निज उद्देश्य सफल करने चाहो, तो इस अपूर्ब्ब भावको एकवार मन में चर्च्चा करो। यदि निज जीवन में यह उपभोग

মনুষ্য জীবনের উদ্দেশ্য সফল করিতে চাও, এই অপূর্ব্বভাব একবার মনোমধ্যে আন্দোলন কর। যদি নিজ জীবনে ইহা উপভোগ করিতে চাও, দেখিতে পাইবে, সেই অপার আনন্দ কি, তাহা মুখে ব্যক্ত করিবার নহে, তাহা উপভোগ ভিন্ন আর কিছুতেই অনুভব করা যায় না।

মদুক্ত বিবরণের গূঢ় তাৎপর্য্য অবধারণ কর। ব্রহ্মলোকই আমার জ্যোতির্ম্ময় নিকেতন, মূলা প্রকৃতি বা মায়াই ঐ বৃদ্ধা স্ত্রী। জীবাত্মা যখন ব্রহ্মসত্বায় বিলীন থাকে, তখন সেই পরমোজ্জ্বল পূর্ণ জ্যোতির্ম্ময় স্থান উপভোগ করে, অতঃপর মায়াবশতঃ দেহ ধারণ করিয়া জীবোপাধি প্রাপ্ত হইলে উক্ত মায়া আসিয়া আক্রমণ করে, এবং কীট পতঙ্গাদি চতুরশীতি লক্ষযোনি (পান্থনিবাস) ভ্রমণ করতঃ তত্তদ্দেহের উপভোগোপযোগী জলে, স্থলে, ফল, মূল পত্রাদি ভক্ষণ করিয়া জীবন ধারণ করে, ক্রমে মানব দেহ প্রাপ্ত হইলে, জীবের রাজপদ লাভ হয়। তখন ক্রমে রাজ-বিক্রম বা মনুষ্যত্ব প্রাপ্ত হইলে, জীব ধর্ম্মারণ্যে দেবোপভোগ্য আনন্দ লাভার্থ বা মৃগয়ার্থ প্রবেশ করে। তথা হইতে সৎসঙ্গরূপ পর্ব্বতারোহণে প্রবৃত্তি জন্মে, মায়া অবিদ্যাবেশে তাহা হইতে নিবৃত্ত করিলেও বিবেক সময়ে সময়ে স্বপ্নবৎ জীবকে উত্তেজনা করিয়া পুনর্ব্বার তাহাকে সৎসঙ্গার্থে প্রবর্ত্তনা দেয়। অবিদ্যা পুনর্নিবারণে উদ্যত হইলে, সৎসঙ্গ প্রভাবে জীবের মনে পশ্চাত্তাপের উদয় হইয়া থাকে ও অনুতাপাশ্রু পতিত হয়। তৎক্ষণাৎ সদ্গুরুর কৃপারূপিণী রমণী জীবকে অভয়দান করিতে থাকে ও তদ্দর্শনে অবিদ্যা তিরোহিত হইয়া যায়। সদ্গুরুই সৌম্য পুরুষ, তিনি জীবের কাম, ক্রোধাদি ও ইন্দ্রিয় সেবাদি জন্য যে বিবিধ ব্যাধি জন্মিয়া থাকে, তাহা দেখাইয়া দেন এবং ভগবদুপাসনারূপ সরোবরে স্নান করাইয়া তাহার আধিব্যাধি শান্তির বিধান ও সদ্ব্যবস্থা করিয়া দেন। জীব স্বয়ং চেষ্টা করিয়া ভগবৎ প্রেমনীরে অধিকক্ষণ ডুবিয়া থাকিতে পারে না। গুরু আত্ম মন্ত্র প্রদান করিলে, জীব ব্রহ্ম সমাধিতে ব্রহ্মানন্দোপভোগ করিতে থাকে। ভক্ত, জ্ঞানী, যোগীগণ আনন্দ ধামের যে বৃত্তে অবস্থিত, তথায় তাহার গতি হইয়া থাকে। সেখানে গেলে, দিব্য

करने चाहो, तभी सुझ पड़ेगा जो वह अपार आनन्द कैसा है, वह आनन्द वचनके वर्णनीय नहीं, बिना उपभोग किये वह किस हो प्रकारसे अनुभवके योग्य न होता है।

मेरी कही हुई विवरणके गूढ़ अभिप्राय निश्चय करलो। ब्रह्मलोक ही को मेरे ज्योतिर्म्मय निकेतन करके जानना, औ मूला प्रकृति वा माया ही वह वृद्धा स्त्री हैं। जीवात्मा जब ब्रह्मसत्ता में विलीन रहता है, उस समय वह परम उज्ज्वल पूर्णज्योतिर्म्मय स्थानके सुखभोगता रहता, तदनन्तर मायासे देह धारण कर जीवोपाधि प्राप्त होने से उक्त माया उसको आच्छन्न करलेती है, औ कीट पतंगादि चौरासी लक्ष योनी (पांथशाला) भ्रमण कर उस उस देहके उपभोगयोग्य जल, स्थलादि में फल, मूल, पत्रादि भोजन करता हुआ जीवनधारण किया करता है, क्रमसे मानवदेह प्राप्त होने पर जीवको राजपद मिलता है। उस समय क्रमक्रम से राजविक्रम वा मनुष्यत्व पाये, जीव धर्म्मारण्य में देवोपभोग्य आनन्द लाभार्थ वा मृगयार्थ प्रवेश करता है। वहां ही यह प्रवृत्ति उपजती है कि सत्संगरूप पर्वतपर चढ़े, अविद्यारूप बनी हुई माया इस चेष्टासे निवृत्त करने पर भी समय समय में विवेक स्वप्नवत् जीवको चेता कर फिर उसको सत्संग करने की इच्छा बढ़ाया करता है। अविद्या पुनर्व्वार माना करने में तैयार होय तो सत्संगके प्रभावसे जीव के मनमें पश्चात्ताप का तरङ्ग उठा करता है, औ अनुतापके आंसु फुट निकल आता है। उस हो क्षण सद्गुरु की कृपारूप एक रमणी जीवको अभय वचन कहती रहती औ तद्दर्शनसे अविद्या छिप जाती है। उस सौम्य पुरुषको सद्गुरु करके जानो; काम, क्रोधादि औ इन्द्रिय सेवादिके अर्थ जीव की जो नाना भांति की व्याधि जन्मती है, सद्गुरुने उस सब दिखाय देते है और भगवत की उपासना रूप जो सरोवर है, वहां स्नान कराकर उस की आधि-व्याधि की शान्तिविधान औ सद्व्यवस्था कर देते हैं। स्वयं चेष्टा करके जीव बहुत देरतक भगवत-प्रेम नीर में डुबेहुय नहीं रहे सक्ता है। गुरु आत्ममन्त्र देने से जीव ब्रह्मसमाधि करके ब्रह्मानन्द उपभोग करते रहते हैं। उन की गति आनन्द धामके उस ही वृत्त (स्थानमण्डल) में होती, कि जहां भक्त, ज्ञानी, योगीगण विराज

দৃষ্টি হয়। তখন গুরুকে যে মনুষ্য বুদ্ধিতে দেখিয়াছিল ও "আমি দেহী" ইত্যাদি বোধ ছিল, তাহা বিনষ্ট হইয়া গুরু আদিতে ব্রহ্ম বুদ্ধি উদয় হয়। এই আনন্দ ধামই জীবের চির বিশ্রামের স্থান। এই খানেই জন্ম, মরণের প্রবাহ অবরুদ্ধ হয়, এই খানেই মুক্তি ও শান্তি জীবের পরিচর্য্যায় নিযুক্ত; এখানকার ভাবব্যাপারই অনির্ব্বচনীয়, এখানে বিকার, বিতর্কের প্রবেশাধিকার নাই; এস্থান কৈবল্যানন্দের এক মাত্র প্রস্রবণ। সাধক! সকলে সেই আনন্দধামে যাইবার জন্য সসজ্জ হও। পতিতপাবন ভগবানের প্রতি লক্ষ্য রাখিয়া শুভ দিনে যাত্রা কর। সংসারের প্রতারণাবাক্যে চিরনিবাসের পথ ভুলিও না। মনুষ্য দেহ বিনষ্ট হইলে, এরূপ শুভযোগ আর পাইবে না। আর্য্য ঋষিদিগের কথিতমতে বিশ্বাস কর, বেদোপদেশ শিরোধার্য্য কর, বেদানুকুল পৌরাণিকোক্তিকে পথপ্রদর্শিকা করিয়া লও, নিজ কলুষিত বুদ্ধি, সামান্য যুক্তি, মহাপুরুষগণের চরণে বলি প্রদান কর। সদ্‌গুরুর আশ্রয় লইয়া নিশ্চিন্ত চিত্তে নিজ নিকেতনে চলিয়া যাও। ভগবান আমাদের সকলের অভীষ্ট সাধনের সহায়ক হউন। আমরা সকলে তাঁহাকে নমস্কার করি। ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরি ওঁ।

অতঃপর হরিনাম সংকীর্ত্তন হইয়া, সভা ভঙ্গ হইল। মধ্যাহ্ন কালে দীন দরিদ্রকে যথাসাধ্য দান করা হয়।

অপরাহ্নে বেলা ২টা হইতে।

প্রথমতঃ সভার অন্যতর পণ্ডিত মান্যবর শ্রীযুক্ত ছট্টুলাল পাঁড়ে মহাশয় সরল ভাষায় শ্রীমদ্ভাগবত ব্যাখ্যা করিলেন। তাঁহার পর সভার প্রথম পণ্ডিত মান্যবর শ্রীযুক্ত অম্বিকাদত্ত মিশ্র মাহাশয় বিশেষ নিপুণতার সহিত মনুসংহিতার ব্যাখ্যা করিলেন। তদনন্তর সভার কার্য্যসম্পাদক পরম ধর্ম্মোৎসাহী উদ্যমশীল মান্যবর শ্রীযুক্ত পণ্ডিত ভাইরাম অগ্নিহোত্রী মহাশয় সভার বার্ষিক কার্য্য বিবরণ পাঠ করিলেন। তাহার স্থূল মর্ম্ম নিম্নে প্রকটিত হইল।

১। বঙ্গবাসী বালকদিগকে নীতি শিক্ষা দিবার জন্য যে "সুনীতি সঞ্চারিণী সভা" দুই বৎসর হইতে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, বেহারী বালবৃন্দের জন্যও তদ্রূপ গত বর্ষে আর একটী সভার প্রতিষ্ঠা

करते हैं। वहां जाने से दिव्य दृष्टि होती। पहले जो गुरुको मनुष्य बुद्धि करके देखा था, औ मैं देही हूं ऐसा जो बोध था, उस समय वे सब विनष्ट हुए गुरु आदि में ब्रह्मबुद्धि उदय होती है। इस आनन्द धाम ही को जीवके नित्य विश्रामके स्थान करके जानना। यहां ही जीवके जन्म, मरणका प्रवाह बन्ध हो जाता है; यहां हो मुक्ति वो शान्ति जीव की सेवा में सदा ही नियत हुए है; यहां विकार वितर्क का प्रवेशाधिकार नहीं; यह स्थान कैवल्यानन्दका एकमात्र निर्झर है। साधक! सबकोई उस आनन्द धामको जानेके लिये तैयार होओ। पतितपावन भगवानके ओर लक्ष्य रखकर शुभदिन में यात्रा करो। संसार को प्रतारणा वाक्यसे चिरनिवास को पथ मत भूलो। मनुष्यदेह नष्ट होनेसे इस भांति शुभयोग फिर न मिलेगा। आर्य्य ऋषियों के कहे हुए मतको विश्वास करो, वेदोपदेश शिरोधार्य्य करो, पौराणिकोक्ति को जो कि वेदानुकूल है, पथ प्रदर्शिका करके मान लो, निज कलुषित बुद्धि सामान्य युक्ति आदिको महापुरुषोंके चरणो पर बलिदान करो। सद्गुरुके आश्रय लिये निश्चिन्त चित्तसे निज निकेतन में चले जाओ। भगवान हम सब को अभीष्ट साधनका सहायक बनें। हम सब उनको नमस्कार करें।

ओं शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरिः ओं।

तदनन्तर हरिनाम संकीर्त्तन हुए, सभा विसर्जन हुई। मध्याह्नकाल दीन दरिद्रोंको यथासाध्य दान किया गयाथा।

अपराह्न बेला २ बजेसे।

पहले सभाके अन्यतर पण्डित मान्यवर श्रीयुक्त छट्टुलाल पांड़े महाशय सरल भाषा में श्रीमद्भागवत को व्याख्या किये। इसके अनन्तर सभाके प्रथम पण्डित मान्यवर श्रीयुक्त अम्बिकादत्त मिश्र महाशय विशेषरूप निपुणताके साथ मनुसंहिता की व्याख्या किये। तदनन्तर सभाके कार्य्यसम्पादक परम धर्म्मोत्साहि उद्यमशील मान्यवर श्रीयुक्त पण्डित भाईराम अग्निहोत्री महाशय ने सभाका वार्षिक कार्य्यविवरण पाठ किये। उसको स्थूल मर्म्म नीचे प्रगट किया गया।

१। बङ्गवासी बालकोंको नीति सिखानेके लिये जैसी एक "सुनीति सञ्चारिणी सभा" विगत दो वर्ष से प्रतिष्ठित हैं, वसा ही विहारी बालकवृन्दके निमित्त गत वर्षसे और भी एक सभा की

হইয়াছে। তাহাতে বালকগণ বিশেষরূপ উৎকর্ষ লাভ করিয়া উন্নতিমার্গে আরোহণ করিতেছে।

২। আমাদের সনাতনধর্ম্মপ্রচারোৎসাহী সহযোগী সম্পাদক মহাশয় গত বর্ষে দেশ দেশান্তরে যথাসাধ্য ধর্ম্ম প্রচার করিয়ছেন, বহুদিন হইতে তিনি ভগলপুরে ধর্ম্মালোচনার কোন সাধারণ স্থান না থাকায় দুঃখিত ছিলেন। এজন্য তিনি কয়েক বর্ষ হইতে নিজ ব্যয়ে মধ্যে মধ্যে তথায় গমন করিয়া কখন বঙ্গভাষায় ও কখন হিন্দীভাষায় ধর্ম্মার্থযুক্ত বক্তৃতা করিয়া আসিতেন। কত লোক তাঁহাকে নিরুৎসাহসূচক বাক্যে বলিতেন, ভগলপুরে আপনার উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইবে না; কিন্তু তাঁহার ধর্ম্মোৎসাহ এতাবৎ নিরুদ্যমকর বাক্যকে তুচ্ছ করিয়া, দ্বিগুণ প্রেমে কার্য্য করিতে লাগিল, অবশেষে ভগবানের কৃপায় গত বর্ষে তাঁহার মনস্কামনা পূর্ণ হইয়াছে। তাঁহার বক্তৃতামালা তথাকার সজ্জনগণের হৃদয়কে উত্তেজিত করিয়া দিয়াছে। তত্রস্থ সাধু হৃদয় মান্যবর পণ্ডিত শ্রীযুক্ত নিত্যানন্দ মিশ্র মহাশয়ের যথোচিত যত্নে ও পরিশ্রমে তথাকার ছটফটী নামক স্থানে অত্র সভার নামানুসারে "ভগলপুর আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভা" স্থাপিত হইয়াছে। উক্ত সভার চেষ্টায় নয়া বাজার আদি স্থানে আরও দুই একটী সভা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। রামপুরহাট, জামালপুর, ভগলপুর, মতিহারী প্রভৃতি স্থানে তিনি গত বর্ষে উৎসাহ পূর্ব্বক বক্তৃতা ও সদালোচনাদি দ্বারা ধর্ম্মোত্তেজনা করিয়াছেন। বেতিয়ার মহারাজভবনে সমাদর পূর্ব্বক গৃহীত হইয়া বক্তৃতাদি দ্বারা সভার বিশেষরূপ সম্বর্দ্ধনা করিয়াছেন। সনাতন আর্য্যধর্ম্মের পুনরুদ্দীপনার্থ তিনি গত বর্ষে কলিকাতা নগরীতেও গমন করিয়া, দুই দিন বক্তৃতা করিয়াছিলেন। তথাকার যোড়াসাঁকো হরিভক্তিপ্রদায়িনী সভা, তাঁহার যথোচিত সমাদর ও সৎকার করিয়াছিলেন। কলিকাতা, রামপুরহাট, ভগলপুর, জামালপুর, মতিহারী, সৈয়দপুর, লাহোর, দানাপুর, মেওয়ার রামপুর বোয়ালিয়া, বেগুসরাই আদি যে যে স্থানের সনাতন ধর্ম্মের পুনরুত্তেজনার্থ চেষ্টা ও তজ্জন্য, আমাদিগের কার্য্যের সহায়তা করিয়াছেন, সভা তন্নিবন্ধন কৃতজ্ঞতাপূর্ব্বক তাঁহাদিগকে ধন্যবাদ প্রদান করিলেন। পরমেশ্বর ভারতবর্ষীয় সমস্ত

प्रतिष्ठा हुई है। उससे बालकगण विशेषरूप उत्कर्ष लाभ कर उन्नति मार्गपर आरोहण कर रहे हैं।

२। हमारे सनातन धर्म्म प्रचारोत्साही सहयोगी सम्पादक महाशय ने गत वर्ष में देश देशान्तर यथारीति धर्म्म प्रचार करते आये! बहुत दिन से उन का यह दुःख बना रहा था कि हमारे भागलपुर में धर्म्मचर्च्चा करने केलिये, कोइ साधारण स्थान नहीं; एतदर्थ कैक वर्षसे उन्होंने बीच बीच में निज व्यय करके भागलपुर जाया करते थे औ कभी वंगभाषा में कभी हिन्दी भाषा में धर्म्मार्थयुक्त वक्तृता करते आये। कितने लोगों ने उनको यह निरुत्साह देखाते आये कि भागलपुर में कुछ नहीं हो सकेगा, किन्तु उनके धर्म्मोत्साह उतने निरुद्यम सूचक वचनोंको तुच्छ मान कर, दूना प्रेम से काम करने लगा, अन्त में ईश्वर की कृपासे उन की कामना पुरी हुइ। उन की वक्तृता वहांके सज्जनोंके हृदय में असर करी। पण्डित श्री नित्यानन्द मिश्र महाशयके यथोचित यत्न, परिश्रम औ चेष्टा करके छटफटी तलाव में इस सभाके नामानुसार भागलपुर आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी नाम सभा बनीं। नया बाजार आदि में भी उस सभा की चेष्टासे और दो एक सभा भी स्थापित हो चुकी हैं। रामपुरहाट, जामालपुर, मतिहारी आदि स्थान में वे गत वर्ष में उत्साह पूर्व्वक वक्तृता औ सदालोचनादि करके धर्म्म की उत्तेजना किये। महाराज बेतियाके भवन में समादर पूर्व्वक सत्कार लाभ करके सभा की विशेषरूप प्रतिष्ठा बढ़ाये। सनातन आर्य्यधर्म्म की प्रतिभा उस्कानेके लिये कलकत्ते में भी गये थे। वहां दो दिन उत्साह से वक्तृता कियेथे। वहां की जोड़ा सांको हरिभक्तिप्रदायिनी सभाने उनका यथोचित समादर वो सत्कार कियाथा। कलकत्ता, रामपुरहाट, भागलपुर, जामालपुर, मतिहारी, सैदपुर, लाहोर, दानापुर, श्रीनाथद्वारा मेवार, रामपुर, बोआलिया, वेगुसराइ, आदि स्थान की जितनी सभाने हमारे धर्म्मको बढ़ानेके अर्थ चेष्टा औ हमारे कार्य्य की सहायता करी है, यह सभा प्रेमपर्ण अन्तःकरणसे उन्होंकों तन्निमित्त धन्यवाद दे रही हैं। परमेश्वर ने भारतवर्षीय समस्त

ধর্ম্মসভা ও হিতৈষিণী সভার সহিত আমাদিগের প্রেম বৰ্দ্ধন করুন।

অতঃপর সভার উপস্থিত সভ্য ও সহায়কগণের নাম পঠিত ও যে সকল মহাত্মা গত বর্ষে সভায় বস্ত্র ও দ্রব্যাদি দ্বারা সাহায্য করিয়াছেন, তাঁহাদের নামোল্লেখ করিয়া ধন্যবাদ দেওয়া হইল। ইহাও প্রকাশিত হইল যে, গত বর্ষে সভার ৫১৮৵৹ ধনাগম ও ৪৪৭॥৶৹ ব্যয় হইয়াছে। অবশেষে সভা অতীব দুঃখ ও শোকের সহিত প্রকাশ করিলেন যে, গত বর্ষে আমাদের সুযোগ্য সভাধ্যক্ষ পরম ধর্ম্মাত্মা দানশীল রায় অন্নদাপ্রসাদ রায়বাহাদুর মহাশয়ের অকালমৃত্যু আমাদের নিতান্ত দুর্ঘটনা বলিয়া গণনীয়। তাঁহার ন্যায় বিনয়ী, ভগবদ্ভক্ত, দানশীল সচ্চরিত্র, ধর্ম্মোৎসাহী, সুহযোগী পুরুষ অল্পই দৃষ্ট হয়। ঈদৃশ মহাত্মাগণের তিরোভাব ভারতের ভাবী দুর্দ্দশার মূল বলিতে হইবে। ভগবান্ সেই মহাত্মাকে পরলোকে পরমানন্দধামে স্থান দান করেন, ইহাই সভার একান্ত প্রার্থনা।

অতঃপর একটী সুমধুর ধর্ম্মসংগীত হইল; তদবসানে সভার সহযোগী সম্পাদক প্রোৎসাহিত হৃদয়ে হিন্দীভাষায় একটী বক্তৃতা করিলেন। ধর্ম্মানুরাগী পাঠকগণের গোচরার্থে তাহার সারাংশ মাত্র নিম্নে প্রকাশ করিলাম।

"ধর্ম্মো বিশ্বস্য জগতঃ প্রতিষ্ঠা, ধর্ম্মেণ পাপমপনুদন্তি, ধর্ম্মিষ্ঠং প্রজা উপসর্পন্তি, ধর্ম্মেণ সর্ব্বং প্রতিষ্ঠং তস্মাৎ ধর্ম্মং পরমং বদন্তীতি শ্রুতিঃ।"

ধর্ম্মই জগতের একমাত্র আশ্রয়। ধর্ম্ম দ্বারাই অধর্ম্ম ও পাপের বিনাশ হইয়া থাকে, প্রজাপুঞ্জ ধর্ম্মাত্মা ব্যক্তিবর্গেরই শরণাগত হয়। ধর্ম্মই সমস্ত পদার্থে সত্ত্বার ন্যায় প্রতিষ্ঠিত, অতএব ধর্ম্মই পরম সুহৃদ, ইহাই শ্রুতিতে উক্ত হইয়াছে।

মনুষ্যমাত্রেই ঈশ্বরকে জানিতে চাহে, ঈশ্বরকে দর্শন করিতে চাহে এবং এই জন্যই জগতে কোন না কোন সাম্প্রদায়িক রীতির অনুসারে মনুষ্যগণ ধর্ম্মানুষ্ঠান করিয়া থাকে। যদ্যপি কোন খৃষ্ট উপাসককে জিজ্ঞাসা কর যে, কিরূপে ঈশ্বর দর্শন হইবে, তিনি আপনার সাম্প্রদায়িক ভাবে উপদেশ দিবেন যে, খৃষ্টকে বিশ্বাস কর, তাঁহার দর্শন পাইবে। যদি কোন মুসলমানকে জিজ্ঞাসা

धर्म्मसभा औ हितैषिणी सभाओंसे इस सभाका प्रेम बढ़ावें।

अनन्तर सभाके वर्त्तमान सभ्य वो सहायकोंके नाम पढ़े गये, औ जिन सब महात्माने गत वर्ष में वस्त्र वो द्रव्य आदिसे सभाको साहाय्य किये थे, उन्होंके नाम उल्लेख कर धन्यवाद दी गयी। यह भी साधारणको मालुम पड़ा कि, गत वर्ष में सभाके ५१८৵ धनागम वो ४४७॥৶ व्यय हुआ। अन्तमें सभा अत्यन्त दुःख वो शोकसे प्रकाश करी कि गत वर्ष में हमारे सुयोग्य सभाध्यक्ष परम धर्म्मात्मा दानशील राय अन्नदाप्रसाद राय बाहादूर महाशयके अकाल मरण हमारे लिये अत्यन्त क्षोभ वो शोकावह बुझ पड़ा। उनके समान विनयी, भगवद्भक्त, दानशील, सच्चरित्र, धर्म्मोत्साहि सहयोगी पुरुष अल्प ही देखे जाते हैं। ऐसे ऐसे महात्माका तिरोभाव होना भारतवर्ष की भावि दुर्द्दशा की सूचना कर रही है। भगवान् उन् महात्मा को परलोक में परमानन्द धाम पर बसावें, यही सभा की एकान्त प्रार्थना है।

तदनन्तर एक सुमधुर धर्म्मसंगीत हुआ; इसके अनन्तर सभाके सहयोगी सम्पादक प्रोत्साहित हृदयसे हिन्दी भाषा में एक वक्तृता किये। धर्म्मानुरागी पाठकोंके गोचरार्थ उसके सारांश मात्र नीचे प्रकाश किया जाता हैं।

"धर्म्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा धर्म्मेण पापमपनुदन्ति धर्म्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति धर्म्मेण सर्व्वं प्रतिष्ठं तस्मात् धर्म्मं परमं वदन्ति, इति श्रुतिः।"

धर्म्म ही जगतका एकमात्र आश्रय है। धर्म्महीके द्वारा अधर्म्म वा पापका विनाश होता है, प्रजापुञ्ज धर्म्मात्मागणहीके शरणागत होते है। धर्म्म ही समस्त पदार्थ में सत्ताके न्याई प्रतिष्ठित हैं, अतएव धर्म्म ही परम सुहृद करके जानाना, यही श्रुति में प्रगट हैं।

हरएक मनुष्य ईश्वरको जानने चाहता, ईश्वर को दर्शन करने चाहता है औ इसही लिये मनुष्यगण किसी न किसी सम्प्रदाय की रीति अनुसार धर्म्मानुष्ठान किये करते है। यद्यपि किसी ईसाईको जिज्ञासा करो जो किस रीतिसे ईश्वरका दर्शन मिलता है, वे अपने साम्प्रदायिक भावसे यह उपदेश देंगे, जो ईसा मसीको विश्वास करो,

কর, তিনি উত্তর দিবেন যে মহম্মদোক্ত উপাসনা-পদ্ধতি অবলম্বন করিলে, তাঁহার সাক্ষাৎ হইবে। যদি কোন বৌদ্ধকে জিজ্ঞাসা কর, তিনি কেবল বুদ্ধ দেবের উপাসনায় তাঁহার সাক্ষাৎকার, উপদেশ প্রদান করেন। এই রূপে সকলেই নিজ নিজ সাম্প্রদায়িক ভাবে উপদেশ প্রদান করেন। আমি মানব, সম্প্রদায় লইয়া কি করিব, ভগবদ্দর্শন করিয়া মুক্তিলাভ করিব, ইহাই আমার সংকল্প। আমার কাহারও সহিত বিরোধ বা কাহারও প্রতি বিদ্বেষ বা পক্ষপাত প্রয়োজন নাই। কি উপায় অবলম্বন করিলে, তাঁহাকে জানিতে পারা যায়, ইহাই আমার অন্বেষণ করা উদ্দেশ্য। ইদানিন্তন অনেকেই আপনাপন যুক্তি অনুসারে যাহা রুচিকর বোধ করেন, তদনুসারে কার্য্য করিয়া থাকেন, এই জন্যই বর্ত্তমান সময়ে এত ধর্ম্মবিপ্লব উপস্থিত হইয়াছে। মানব! যদি তাঁহার তত্ত্ব অবগত হওয়া তোমার জীবনের মুখ্য উদ্দেশ্য বিবেচনা কর, তবে আপনার অসমীচীন যুক্তি ও রুচি পরিত্যাগ কর, কেননা তোমার যুক্তিতে ভ্রম থাকিতে পারে। মনুষ্যের ভ্রমসংকুল চিত্ত কখন সত্য সিদ্ধান্তে উপস্থিত হইতে পারে না; এই জন্য আপ্ত বাক্য বেদোক্তিকেই পূর্ণ প্রত্যয় করিয়া ধর্ম্মপথে অগ্রসর হইতে হইবে। একবার আর্য্য ঋষি যোগীদিগের ধর্ম্মানুষ্ঠান গূঢ়রূপে অনুসন্ধান কর। যাঁহারা একমাত্র বেদ অথবা ঈশ্বরবাণী অবলম্বন করিয়া তাঁহাতেই আপনার দেহ মন প্রাণ অর্পণ করিয়াছিলেন এবং যে সত্যবাণীতে এ পর্য্যন্ত কেহই সন্দেহ করিতে সমর্থ নহেন; অর্থাৎ তিনি সর্ব্বব্যাপী, সর্ব্বদর্শী, সর্ব্বান্তর্যামী, "পূর্ণ", চৈতন্যস্বরূপ, সত্যস্বরূপ, তাঁহার সত্তাতেই জগতের অস্তিত্ব প্রভৃতি যে সকল অভ্রান্ত সিদ্ধান্ত তাঁহারা স্বীকার করিয়াছেন, এবং সকলেই মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করিয়া থাকেন, তাঁহাদিগের উপদেশ গ্রহণ কর। তাঁহাদিগের যুক্তি বা উপদেশ তোমার যুক্তির সহিত মিলিল না বলিয়া তুমি ক্ষুব্ধ হইও না, কারণ তোমার বিষয়বুদ্ধি সময়ে সময়ে ব্রহ্মবাণীর প্রকৃত মর্ম্ম বুঝিতে সমর্থ

उनको दर्शन मिलेगा। यदि किसी मुसलमानको पुछोगे तो वे यह उत्तर देंगे कि, महम्मद की कहीहुई उपासना की रीति अवलम्बन करने पर, उनसे साक्षात होगा। यदि किसी बौद्धको जिज्ञासा करो, तो वे केवल बुद्ध देवकी उपासना करके उनका साक्षात मिलता है, यही उपदेश देंगे। इस भान्ति सबकोइ निज निज सम्प्रदायके अनुसार उपदेश दिये करते हैं। मैं मानव हूं, सम्प्रदायसे मेरा कौन काम! भगवद्दर्शन करके मुक्तिलाभ करूङ्गा, इतना ही मेरा सङ्कल्प है। मैं न किसीसे विरोध करना, न किसी पर द्वेष करना, न किसीका पक्षपात करना चाहता, केवल इतना ही अन्वेषण करना मेरा प्रयोजन हैं, कि किस उपाय करके उनका जानाजा सक्ता। आज कल बहुतेरे लोग निज निज युक्ति अनुसार जिस किसी रीतिको रोचक समझे, तदनुसार कार्य्य किया करते हैं। इस ही लिये वर्त्तमान दशा में इतना धर्म्मका विप्लव आपड़ा। मानव! यदि तुम यह समझे रहो कि उनके तत्त्व विदित होना तुम्हारे जीवनका मुख्य उद्देश्य है, तो अपनी असमीचीन युक्ति वो रुचि परित्याग करो, क्योंकि तुम्हारी युक्ति भ्रमसे भरी हुइ हो सक्ति है। मनुष्यके भ्रमसङ्कुल चित्त कभी सत्य सिद्धान्त में नहीं पंहुच सक्ता है, इस लिये आप्तवाक्य वेदोक्ति ही को पूरा विश्वास कर धर्म्मपथ में अगुया होना चाहिये। एकवार आर्य्य ऋषि योगीयोंके धर्म्मानुष्टानके विषय गूढ़तर रीतिसे अनुसन्धान करो। जिन्होंने एकमात्र वेद अथवा भगवद्वाणी को अवलम्बन कर उन्होंके अर्थ अपने देह, मन, प्राणको समर्पण कियेथे औ जिन् सत्यवाणी पर सन्देह लगाने में अवतक कोइ समर्थ न हुए अर्थात् "वे सर्व्वव्यापी" सर्व्वदर्शी, "सर्व्वान्तर्य्यामि," पूर्ण "चैतन्यस्वरूप," सत्यस्वरूप हैं, उन्होंकी सत्वा करके जगत्की वर्त्तमानता हैं, आदि उन्होंने जितनी भ्रान्ति रहित सिद्धान्त माने गये औ सब कोइ मुक्तकराठसे मान रहे हैं, उन्होंके उपदेश ग्रहण करो! उन्होंकी युक्ति वा उपदेश तुम्हारी युक्ति के साथ न मिलनेके अर्थ तुम क्षुब्ध न हो, क्योंकि तुम्हारी बुद्धि, जो विषय भोगसे विकार प्राप्त हुइ है, समय समय ब्रह्मवाणीके प्रकृत मर्म्म

নহে। তাঁহাদিগের জীবন একমাত্র ধর্ম্মানুষ্ঠানে অতিবাহিত হইয়াছে। তাঁহাদিগের চিত্ত পরিশুদ্ধ, মালিন্যশূন্য এবং তাঁহাদিগের তুলনায় তোমাদিগের চিত্তবিকারযুক্ত, মায়ামোহে জড়িত, তাহার কোন সন্দেহ নাই। অতএব নিজ যুক্তি পরিত্যাগ কর; সেই আর্য্য ঋষিদিগের উপদেশ গ্রহণ কর; তদ্দত্ত আত্মমন্ত্রে দীক্ষিত হও। আর নিজ নিজ যুক্তি অবলম্বন করিয়া বৃথা কালক্ষেপ করিও না। যে দেশে যে সময়ে যে পরিমাণে স্বাভাবিক ও আধ্যাত্মিক আশ্চর্য্য আশ্চর্য্য শক্তিসমূহের আবিষ্কার হইতে থাকিবে, সেই দেশ সেই সময়ে সেই পরিমাণে আর্য্য ঋষিদিগের অলৌকিকী প্রতিভায় বিমোহিত হইয়া, তাঁহাদিগের পথানুসরণ করিবে। আমেরিকা ও জর্ম্মণী আদি তাহার দৃষ্টান্ত স্বরূপ। আর অজ্ঞানতা ও প্রাকৃতিক তত্ত্বের অনভিজ্ঞতা যেখানে যত বহুল বৃদ্ধি হইবে, সেখানে ততই আর্য্য ধর্ম্মের অনাদর হইতে থাকিবে। বর্ত্তমান ভারতবর্ষ তাহার প্রকৃত আদর্শভূমি।

"আর্য্য" এই শব্দটী "ঋ" ধাতু হইতে উৎপন্ন। ঋ অর্থে গতি। যে ধর্ম্মবলে মানব তমঃ হইতে জ্যোতিতে, মৃত্যু হইতে অমৃতত্বে, জড়ভাব হইতে চৈতন্যে গমন করে, তাহাকেই "আর্য্য ধর্ম্ম" কহে। ধর্ম্ম এক, ধর্ম্ম দুই প্রকার হইতে পারে না। পূর্ব্বকাল হইতে শ্রুতি, স্মৃতি, পুরাণাদি কোন গ্রন্থেই "ধর্ম্ম" ভিন্ন "আর্য্যধর্ম্ম" বা "হিন্দুধর্ম্ম" আদি কোন প্রকার বিশেষ নাম ছিল না, একমাত্র "ধর্ম্মং চর" এই কথাই দৃষ্ট হইয়া থাকিবে। এক্ষণে খৃষ্টীয়, বৌদ্ধ, মহম্মদীয় আদি বিবিধ ধর্ম্ম হইতে বিশেষ করিবার জন্য "আর্য্য ধর্ম্ম" ইত্যাকার নাম দিতে বাধ্য হইতেছি। যেমন কোন কার্য্যালয়ে একটী মাত্র কর্ম্মচারী থাকিলে, তাহাকে লোকে "বাবু" মাত্র সম্বোধন করিয়া থাকে, আর অনেক প্রকার কর্ম্মচারী থাকিলে, বড় বাবু, ছোট বাবু, খাজাঞ্চি বাবু, কেরাণী বাবু প্রভৃতি বলিয়া ডাকে; সেইরূপ বহু উপধর্ম্মের মধ্য হইতে বিশেষ রাখিবার জন্য "আর্য্য ধর্ম্ম" অর্থাৎ শ্রেষ্ঠধর্ম্ম বা "আর্য্যদিগের আচরিত

नही समझ सक्ती। एकमात्र धर्म्मके अनुष्टान होमे उन्होंका जीवन व्यतीत हुआ करता था। उन्होंके चित्तपरिशुद्ध, मालिन्यशून्य और उन्होंकी वरावरीमे तुम्हारे चित्त जो विकारयुक्त वो माया मोह करके जड़ित हैं, इसमें सन्देह नहीं। अतएव निज युक्तियोंको त्याग करो; वही आर्य्यऋषियोंके उपदेश मानों; उन्होंके दिये हुए आत्ममन्त्र करके दीक्षित हो। फिर निज निज युक्ति अवलम्बन किये वृथा कालक्षेप न करो। जिस देश में जिस समय जिस परिमाण स्वाभाविक वो आध्यात्मिक आश्चर्य्य आश्चर्य्य शक्ति समूहका आविष्कार होता रहेगा, वही देश उस ही समय उस ही परिमाण आर्य्य ऋषियोंकी अलौकिकी प्रतिभा करके विमोहित होते हुए उन्होंको पथको अनुसरण करेंङ्गे। अमरिका वो जारमन्यादि देश इसका दृष्टान्त हैं। और जहां जितना अधिक परिमाण अज्ञानता वो प्राकृतिक तत्त्वकी अनभिज्ञता वृद्धि होती रहेगी वंहा उतना ही आर्य्यधर्म्मका अनादर होता रहेगा। वर्त्तमान भारतवर्ष उसकी प्रकृत आदर्शभूमि हैं।

"आर्य्य" यह जो शब्द हैं, सो "ऋ" धातुसे उत्पन्न हुआ। "ऋ" धातु का अर्थ "गति"। जिस धर्म्मके बलसे मनुष्य तमःसे ज्योतिःके मध्य में, "मृत्यु"से अमृतत्त्व में, जड़भावसे चैतन्य में गमन करता, उस ही को आर्य्य धर्म्म कहा जाता है। धर्म्म एक है, धर्म्म दो प्रकारके नहीं बन सक्ता। पूर्व्वकालसे श्रुति, स्मृति वो पूराणादि किसी ग्रन्थही में "धर्म्म" छोड़के "आर्य्य धर्म्म" वा "हिन्दु धर्म्म" आदि कोई विशेष नाम नही है, एकमात्र "धर्म्मं चर" इतना ही देख पड़ेगा। अब इसाई, बौद्ध वो महम्मदी आदि नाना भान्तिके धर्म्मसे विशेष करनेके अर्थ हम "आर्य्य धर्म्म" इत्याकार नाम देने वाध्य होते हैं। जैसा किसही कार्य्यालयमें कोइ एकमात्र कर्म्मचारी रहने पर, उनको लोगोंने केवल "बाबू" करके पुकारते रहते है, और जंहा अनेक प्रकारके कर्म्मचारी रहें, वहां बड़े बाबु, छोटेबाबु, खाजाञ्ची बाबु, केरानी बाबु आदि करके पुकारे जाते हैं; तद्रूप बहुत उपधर्म्मके मध्य में से विशेष रखनेके लिये "आर्य्य धर्म्म" अर्थात् "श्रेष्ठ धर्म्म वा आर्य्य लोगोंके अनुष्ठान किये हुए धर्म्म"

ধর্ম্ম" বলিয়া অভিহিত হইতেছে। শ্রুতি প্রতিপাদ্য ধর্ম্মই জগতের আদিম ধর্ম্ম। অন্যান্য সকল ধর্ম্মই ইহা হইতে উৎপন্ন হইয়াছে। যেমন একটী দীপশিখা হইতে এক খানি টীকা ধরাইয়া লও, কিম্বা ঐ শিখা তৃণনির্ম্মিত গৃহাচ্ছাদনে স্পর্শ করাও, তবে টীকা সংলগ্ন অগ্নি ও গৃহদাহাগ্নি যেন দীপশিখা হইতে পৃথক বিধ বলিয়া বোধ হইবে। দীপবর্ত্তিকা হইতে টীকা ও গৃহাচ্ছাদনের আকৃতি প্রকৃতির বিভিন্নতাই এই তারতম্যের মূল হেতু। এতদ্রূপ ভিন্ন ভিন্ন দেশের ও লোকের ভিন্ন ভিন্ন জল বায়ু ও ভূম্যাদিগত অবস্থা ও প্রকৃতি অনুসারে মনুষ্যগণ এক ধর্ম্মাবলম্বী হইয়াও আচার ব্যবহারে স্বতন্ত্র হইয়া পড়িয়াছে। জগতে যে কোন ধর্ম্মই প্রচারিত হউক না কেন, ইহাতে আর্য্য ধর্ম্মেরই মহিমা প্রচার হইতেছে, বলিতে হইবে। আর্য্যধর্ম্মাবলম্বিগণ! আজ তোমাদেরই ঐশ্বর্য্যের কিঞ্চিৎ ফলভাগী হইয়া জগতের চতুর্দ্দিকে ধর্ম্মের ঘোর আন্দোলন হইতেছে।

"আর্য্যধর্ম্ম" আয়ুর্ব্বেদ, জ্যোতিষশাস্ত্র ও শ্রুতি এতত্ত্রয়ের সমন্তাৎ সম্মতিক্রমে সংস্থাপিত; ইহাতে শারীরতত্ত্ব, মনস্তত্ত্ব ও অধ্যাত্মতত্ত্ব বিজ্ঞানের একত্র সমাবেশ; ইহাতে স্থূল, সূক্ষ্ম ও কারণ এই তিনের সম্মিলন; ইহাতে ভৌতিক, দৈব ও ঈশ্বরীয় এই তিনের ঐক্যবিধান। অতএব যদি প্রকৃত ধর্ম্মাচরণ করিতে চাও, এই ধর্ম্মপদ্ধতি অবলম্বন কর"। অগ্রে শরীরশুদ্ধি, পরে চিত্তশুদ্ধি, পশ্চাৎ আত্মশুদ্ধি করিতে হইবে; তবে আত্মার আত্মারে দর্শন পাইবে, জীবন সার্থক হইবে। শাস্ত্রবিহিত ব্রত, উপবাস, আহার, বিহারাদি দ্বারা শরীর শুদ্ধ হয়। জপ, যাগ, যজ্ঞ এবং পিতৃকার্য্যাদি দ্বারা চিত্ত শুদ্ধি জন্মে, আর উপাসনা ও ধ্যান ধারণাদি দ্বারা আত্মাকে পরব্রহ্মে সমাধান করিতে পারিলে, আত্ম শুদ্ধি হয়। নতুবা বায়ু পিত্ত, কফাদির বিকার প্রাপ্ত পীড়িত শরীরে ঘৃত মিষ্টান্নাদি সেবন করিতে গেলে, প্লীহা যকৃতাদি রোগে আক্রান্ত হইয়া, অকালে কালকবলে পতিত হইবে। জানি সত্য

करके कहा जाता है। श्रुति प्रतिपाद्य धर्म्म हीको जगतका आदिम धर्म्म करके जानना। अन्यान्य समस्त धर्म्म ही इस्से उत्पन्न हुए हैं। जैसा कि एक दीपशिखासे एक टीकिया बार लो, किम्बा उस शिखाको तृणसे बनायी हुइ घरके छप्पर पर छुवाओ तो मालुम पड़ेगा कि टिकियाके आग वो जरती हुइ गृहपरके आग, दीप शिखासे कोइ पृथक वस्तु है। दीपवर्त्तिकासे टिकिया वा छप्पर की आकृति प्रकृति की जो तारतम्यता है, सो ही इस भिन्न दृष्टिका कारण है। एतद्रूप समस्त मनुष्य एक धर्म्मावलम्बी हुए भी भिन्न भिन्न देश के जल, वायु वो भूमि की अवस्था वो निज निज प्रकृतिके अनुसार आचार, व्यवहार करके स्वतन्त्र हो पड़े हैं। जगतके जिस किसी देश में जिस किस ही भान्ति धर्म्म न प्रचार होता हो, इस्से इतना ही कहने होगा कि सर्व्वत्र आर्य्य धर्म्म की महिमा प्रचार हो रहा है। हे आर्य्य धर्म्मावलम्बीयों! आज तुम्हारे ही ऐश्वर्य्य के किञ्चित फलभागी हुए जगतके चारो ओर धर्म्म का घोर आन्दोलन हो रहा है।

आयुर्व्वेद, ज्योतिषशास्त्र वो श्रुति इन तीनोंके समन्तात् सम्मतिसे आर्य्य धर्म्म संस्थापित हुआ है। इस धर्म्म में शरीरतत्त्व, मनस्तत्व वो अध्यात्मतत्त्व-विज्ञानका एकत्र समावेश है; इस में स्थूल, सूक्ष्म औ कारण इन तीनोंका सम्मिलन है; इस में भौतिक, दैव वो ईश्वरीय इन तिनोका ऐक्यविधान है। अतएव यदि प्रकृतरूप धर्म्मका आचरण करने चाहो, तो इस धर्म्मपद्धतिको अवलम्बन करो। पहले शरीर शुद्धि, तदनन्तर चित्तशुद्धि, तत्पश्चात् आत्मशुद्धि करनी होगी, तब आत्माके आत्माका दर्शन मिलेगा, जीवन सार्थक होगा। शास्त्र की विधि अनुसार व्रत, उपवास, आहार, विहारादि करके शरीर शुद्ध होती हैं; तप, याग, यज्ञ वो पितृकार्य्यादि करके चित्तशुद्धि होती है; और उपासना वो ध्यान धारणादि करके यदि आत्माको परब्रह्म में समाधान कर सके तो आत्मशुद्धि होती है। नहीं तो यदि वात, पित्त, कफ आदिके विकार प्राप्त हुआ बिमार शरीर में घृत मिष्टान्न आदि भोजन किया जाय तो तापतिल्ली आदि रोगसे आक्रान्त हुवे अकाल कालकवल में गिरेगा। हम

যে ঘৃতাদি বস্তুনিচয় শরীরের পক্ষে অতিশয় পুষ্টি ও বলকারক বটে, কিন্তু বিকারযুক্ত শরীরের নহে, উহা সুস্থ শরীরের পরম সুখকর। যদি কেহ এরূপ সন্দেহ করেন যে, যে ধর্ম্মের মূলশাস্ত্রে একমাত্র ব্রহ্মেরই উপাসনা উক্ত হইয়াছে, তবে প্রতিমাদি গঠন, পূজন আদি এ অভিনব পদ্ধতি কোথা হইতে আসিল? পুস্তকে যে বর্ণ ও শব্দগুলি থাকে, তাহা স্থূল হইয়াও পাঠকের হৃদয়ে লেখকের ভাবমাত্র বহন করিয়া দেয়। শব্দ যেমন স্থূল হইয়াও সূক্ষ্মের বাহক, রূপও তদ্রূপ স্থূল হইয়া সূক্ষ্ম তত্ত্বের পরিচায়ক। শাস্ত্র ও গুরূপদেশ যেমন শব্দাবগুণ্ঠনে সাধকের হৃদয়ে ব্রহ্মভাবের উদয় করিয়া দেয়, প্রতিমাও তদ্রূপ রূপাবগুণ্ঠনে তদ্ভাবের পূর্ণ বিকাশ করিয়া দেয়। কবি শব্দ দ্বারা, শিল্পী চিত্র ও মূর্ত্তি গঠন দ্বারা, তুল্য রূপ ভাবের প্রকাশ করিতে পারেন। স্থূল উপাসনাদি দ্বারা সূক্ষ্মের পরিচয় পাওয়া যায়, এই জন্য ভগবৎ প্রকৃতির প্রতিবিম্ব রূপ প্রতিমাদি পূজনবিধি স্মৃতি, পুরাণাদি প্রচারিত হইয়াছে; উহার মধ্যে বেদ প্রতিপাদ্য বিষয় ভিন্ন আর কিছুই নাই, সূক্ষ্ম রূপে বুঝিয়া লইতে হইবে। আরও দেখ, প্রতিমাদি পূজন কালে, ধ্যান করিবার বিধি আছে। উক্ত সময়ে চক্ষু মুদ্রিত করিয়া ধ্যানমন্ত্রের অভিপ্রায়ানুসারে তাঁহাকে ধারণা করিতে হয়। যদি কেবল স্থূলাকৃতিমাত্র পূজন করিলে অভিপ্রায় সিদ্ধ হইত, তবে কখনই সম্মুখস্থিত স্থূলরূপ পরিত্যাগ করিয়া চক্ষু মুদ্রিত করিবার পদ্ধতি উল্লেখও করিতেন না। স্থূল মূর্ত্তি পূজন কালে তাহাতে ঈশ্বরের আবির্ভাব প্রাণ প্রতিষ্ঠাদি এবং ধ্যান কালে চক্ষু মুদ্রিত করিবার অভিপ্রায় কি কেহ বিদিত নহেন? আমাদিগের ভারতবর্ষে যত দিন না সেই প্রাচীন আর্য্য-ধর্ম্ম অনুমোদিত যাগ, যজ্ঞ, পিতৃকার্য্য, ব্রত ও প্রতিমা পূজনাদির মর্ম্মার্থ বোধ না হইবে, তত দিন যথার্থ ধর্ম্ম বা প্রকৃত ধর্ম্ম লক্ষণ কেহই বুঝিতে পারিবেন না। স্বয়ং চেষ্টা করিয়া, যতই কেন গ্রন্থাদি পাঠ বা ধর্ম্ম আলোচনা কর না, ধার্ম্মিক হইতে বা ঈশ্বরের যথার্থ তত্ত্ব অবগত হইতে হইলে আত্মজ্ঞান অভ্যাস করিতে হইবে। বেদপ্রতিপাদ্য স্মৃতি পুরাণাদির গুঢ় মর্ম্মার্থ অনুসন্ধান করিয়া সদ্গুরুর নিকট দীক্ষিত হইতে হইবে। তাঁহাদি-

सत्य जानते हैं, जो घृत आदि वस्तु शरीरकी पुष्टि, औ बलकारक सही, किन्तु विकार शरीरके अर्थ नहीं, वह सुस्थ शरीरका परम सुखदायी हैं। यदि कोई इस भांति सन्देह करें, जो जिस धर्म्मके मलशास्त्र मे एकमात्र ब्रह्म ही की उपासनाका विषय उक्त है, तो प्रतिमादि बनाना, पूजना आदि यह नवीन पद्धति कहांसे आई। पुस्तकके मध्य में जितने वर्ण औ शब्द रहते हैं, वह सब स्थूल बने भी पाठकके हृदय में लेखकके भाव मात्र को पहुंचा देते हैं। शब्द जैसा स्थूल बने भी सूक्ष्मका वाहक है, रूप भी तद्रूप स्थूल बने सूक्ष्म तत्त्वका परिचायक है। शास्त्र औ गुरूपदेश जैसा शब्द के परदा में से साधकके हृदय में ब्रह्म भावका उदय कर देता है, प्रतिमा भी उस भांतिरूप की परदाके आडसे उस भावका पूर्ण विकाश कर देती हैं। कवीश्वरगण शब्दोंके द्वारा, शिल्पी वा कारीगर लोग चित्र औ मूर्त्ति बनाकर सुसदृश भावका प्रकाश कर सकते हैं। स्थूल उपासना करके सूक्ष्मका परिचय मिलता है, इस लिये प्रतिमादिके, जो की भगवत्प्रकृति का प्रतिबिम्ब रूप हैं, पूजन विधि पुराणादि में प्रचारित है; इन में वेदप्रतिपाद्य विषय छोड़के और कुछ हो नहीं, सूक्ष्म भावसे समझ लेने होगा। और भी देखो, प्रतिमादि पूजनके समय ध्यान करने की विधि है। उक्त समय आंखें मूंद कर ध्यान मन्त्रके अभिप्राय अनुसार उनको धारणा करनी पड़ती हैं। यदि केवल स्थूलरूप मात्रके पूजनसे अभिप्राय सिद्ध होता तो साम्हने की प्रतिमा को परित्याग करने की रीति कभी न लिखते। स्थूल मूर्त्ति की पूजाके समय उस में ईश्वरके आविर्भाव, प्राणप्रतिष्ठा और ध्यानके समय आंखें मूंदने को अभिप्राय क्या, कोई विदित नहीं! हमारे भारत वर्ष में यावत् काल उस प्राचीन आर्य्य धर्म्मके अनुमोदित याग, यज्ञ, पितृकार्य्य, व्रत औ प्रतिमा पूजन आदिका मर्म्मार्थ बोध न होगा, तावत्काल यथार्थ धर्म्म वा प्रकृत धर्म्मलक्षण कोई न समझ सकेंगे। स्वयं चेष्टा करके जितना क्यों न शास्त्र पाठ वा धर्म्म की आलोचना करो, यदि धार्म्मिक होना वा ईश्वरके यथार्थ तत्त्व जानना होतो आत्मज्ञानका अभ्यास करने पड़ेगा। वेद प्रतिपाद्य स्मृति पुराणादिके गूढ़ मर्म्मार्थ अनुसन्धान कर सद्गुरुके निकट दीक्षित होने पड़ेगा। उन्होंके उपदेशानुसार कार्य्य करने होगा। वैदिक अनु-

গের উপদেশানুসারে কার্য্য করিতে হইবে। বৈদিক অনুষ্ঠান না করিলে, বেদার্থ বুঝিবার শক্তি জন্মে না, এজন্য কর্ম্ম দ্বারা জ্ঞানলাভ করিতে হইবে। নিজ যুক্তি বা বুদ্ধি মাত্রকে অবলম্বন করিয়া সেই অমৃত লাভ করা অসম্ভব, কারণ প্রাচীন অবস্থার তুলনায় এক্ষণকার পরমায়ু অতি অল্প। অতএব সদ্‌গুরুর দীক্ষানুযায়ী কার্য্য করিতে পারিলে সহজেই সেই অমৃত লাভ হইবে। তখন নিজ জীবনে সেই দুর্জ্ঞেয় বস্তুর অভাব থাকিবে না। তাহা চক্ষুতে দর্শন করিবার অযোগ্য, বাক্যে প্রকাশ করিবার অযোগ্য, মনে ধারণা করিবার নিতান্ত অযোগ্য। তিনি ইন্দ্রিয়াদির অগোচর। ইন্দ্রিয়গণ নিগৃহীত হইলে, মন বিনষ্ট হইলে, স্বয়ম্ভু স্বয়ংই প্রকাশ হইবেন। এক্ষণে হে জীব! যদি জীবন সফল করিতে চাও, সাধকমণ্ডলীর সঙ্গ লাভ কর, তাহাদিগের উপদেশ কার্য্যে পরিণত কর, জীবন সার্থক হইবে, আর বৃথা সময় নষ্ট করিও না। ধর্ম্ম সাক্ষাৎ ঈশ্বরের স্বরূপ, ঈশ্বর অনির্ব্বচনীয়, সুতরাং ধর্ম্মের প্রকৃত তত্ত্ব পূর্ণভাবে কখনই ব্যাখ্যাত হইতে পারে না। ধর্ম্মানুষ্ঠান করিতে করিতে ধর্ম্মকে বিদিত হইতে হয়। আর্য্যধর্ম্ম বাহিরের অনুষ্ঠানেই পর্য্যবসিত নহে, আর্য্যদিগের ন্যায় প্রকৃতি লাভ করিতে হইবে। প্রকৃতিতেই ধর্ম্মের পরিচয়, এবং কার্য্য প্রকৃতির পরিচায়ক মাত্র। যে প্রকৃতি পরম পবিত্র, তাহাই আর্য্য ধর্ম্মের আধার; যে প্রকৃতিতে বিকার হয় না, তাহাই আর্য্যধর্ম্মের ক্রীড়াভূমি; যে প্রকৃতি ব্রহ্মযোগ সমাধির অনুগামিনী, তাহাই আর্য্যধর্ম্মের আশ্রয় স্থান; যে ধর্ম্ম সাধন দ্বারা স্থূলা প্রকৃতি অনাদ্যা প্রকৃতিতে বিলীন হইয়া সচ্চিদানন্দ সত্তায় পুরুষকে আকৃষ্ট ও প্রবিষ্ট করে তাহাই আর্য্য ধর্ম্ম, তাহাই মানবের ধর্ম্ম, তাহাই ঈশ্বরোক্ত বৈদিক ধর্ম্ম, তাহাই অবশ্য কর্ত্তব্য পরম ধর্ম্ম। জগতে সেই প্রকৃত ধর্ম্মই পুনঃ প্রচারিত হউক। ধর্ম্ম, জগৎকে আনন্দ নিকেতন করিয়া দিন।

বক্তৃতার শেষ হইলে, সভার কার্য্যসম্পাদক মহাশয় একটী অনতি দীর্ঘ বক্তৃতা করিয়া ভগবৎ স্তোত্র পাঠ করিলেন। ধূপ, ধুনার ধূমে ও সুগন্ধে সভাগৃহ আচ্ছন্ন ও আমোদিত এবং আলোকমালা প্রজ্বলিত হইল। বাদ্যোদ্যম ও আনন্দ সহ শ্রীশ্রী শ্রীমন্নারায়ণের আরতী ও নিবেদিত প্রসাদ সভ্য মণ্ডলীকে বণ্টন করা হইল। সর্ব্বশেষে নৃত্য কুন্দনাদি ভক্তি লক্ষণ সহযোগে সভ্যগণ কর্ত্তৃক হরিনাম সংকীর্ত্তন হইয়া রাত্রি ৮টার সময় সভা ভঙ্গ হইল।

ष्ठान किये विना वेदार्थ समझने की शक्ति नहीं उपजती है। एतदर्थ कर्म्म करके ज्ञानलाभ करने होगा। केवलमात्र निज युक्ति वा बुद्धिको अवलम्बन करके वह अमृतलाभ करना सम्भव नहीं। क्योंकि प्राचीन काल की बराबरी में आजकलके आयुः अत्यन्त अल्प है। अतएव यदि सद्गुरुकी दीक्षानुरूप कार्य्य किया जायगी सहज ही से अमृत लाभ होगा। उस समय निज जीवन में उस दुर्ज्ञेय वस्तुका अभाव नहीं रहेगा। वे चक्षुकी दृष्टिके अयोग्य हैं, वाक्य की वर्णनाके बाहर है, मनके धारणातीत हैं। वे इन्द्रियादिके अगोचर है। इन्द्रियगण निग्रहीत होनेसे, मन विनष्ट हो जानेसे, स्वयम्भू स्वयमेव प्रगट होंगे। अब हे जीव! यदि जीवन सफल करने चाहो, तो साधकोंकी सङ्ग करते रहो, उन्होंके उपदेश कार्य्य में परिणत करो, जीवन सार्थक होगा, फिर समय व्यर्थ व्यतीत न करो। धर्म्मको साक्षात ईश्वर का स्वरूप करके जानना, ईश्वर अनिर्व्वचनीय हैं, सुतरां धर्म्मके प्रकृत तत्त्व पूर्णभावसे कभी नहीं व्याख्यात हो सक्ता है। धर्म्म का अनुष्ठान करते करते धर्म्मको विदित होना है। बाहरके अनुष्ठान ही से आर्य्य धर्म्मका पर्य्यवसान नहीं, आर्य्योंलोगोंके सदृश प्रकृति लाभ करने होगा। प्रकृति ही से धर्म्मका परिचय मिलता, औ कार्य्य प्रकृतिका परिचायक मात्र हैं। जो प्रकृति परम पवित्र है, उस ही को आर्य्य धर्म्मका आधार करके जानना; जिस प्रकृति में विकारका दाग नहीं लगता, वही आर्य्य धर्म्म की क्रीडाभूमि है, जो प्रकृति ब्रह्मयोग समाधि की पश्चाद्गामिनी है वही आर्य्य धर्म्मका आश्रयस्थान है, जिस धर्म्म साधनसे स्थूला प्रकृति अनाद्या प्रकृति में विलीन होती हुई सच्चिदानन्द सत्ता में पुरुषको आकृष्ट औ प्रविष्टकर देता है वही आर्य्यधर्म्म, वही मानवधर्म्म वही ईश्वरोक्त वैदिकधर्म्म, वही अवश्यमेव करनेके योग्य परम धर्म्म है। संसार में वही प्रकृत धर्म्म ही पुनः प्रचारित हों। धर्म्म, जगतको आनन्द निकेतन बनावें।

वक्तृताके शेष होनेसे सभाके कार्य्यसम्पादक महाशय एक अनति दीर्घ व्याख्यानकर भगवतस्तोत्र पाठ किये। धूप, धूनाके धूँआ औ सुगन्धकरके सभागृह आच्छन्न औ प्रफुल्ल हुई औ रोशनी की शोभा करी गयी। वाद्योद्यम औ आनन्दके साथ श्रीश्री श्रीमन्नारायणकी आरती हुई औ निवेदित प्रसाद सभ्य मण्डलीके मध्य में बाँटे गये। अन्त में नृत्य कुन्दनादि भक्तिलक्षणके सहित सभ्यगण हरिनाम सङ्कीर्त्तन किये। रात्रि ८ बजेके समय सभा विसर्ज्जन हुई।

হে পরমাত্মন্! তুমি দয়াময়, এই জন্য অবনত মস্তকে প্রার্থনা করিতেছি যে আমাদিগের সভার সভাসদ, উৎসাহী সহায়ক, হিতসাধক, সহানুভাবক, ও যে মহাত্মাগণ যে কোন স্থানে যে কোন উপায়ে হউক না কেন, জগতের কল্যাণ বিধানার্থ চেষ্টা করিতেছেন, ও যাবৎ প্রাণী তোমার সত্তায় বিদ্যমান রহিয়াছে, সকলকেই তুমি তোমার মুনিমনোহর-সুচারু চরণাভিমুখে আকর্ষণ কর, তোমার প্রতি ঐকান্তিকী ভক্তি সকলের হৃদয়ে বিস্তার করিয়া দেও। হে হরে! তুমিই ধর্ম্মরক্ষক, ধর্ম্মকে রক্ষা কর। আমাদিগকে এরূপ সামর্থ দেও যেন আমরা তোমার প্রীতি ও প্রিয়কার্য্য সাধনপূর্ব্বক নিজ নিজ জন্ম জীবন সফল করি। এই উৎসব বাহিরে পরিসমাপ্ত হইল বটে, কিন্তু যেন ইহার উজ্জ্বল উৎসাহাগ্নি ও নির্ম্মল প্রেম শিখা নিরন্তর হৃদয়কে আলোকিত করিয়া রাখে। হে ভগবন্! তোমাকে বার বার নমস্কার করি।

ওঁ শান্তিঃ, শান্তিঃ, শান্তিঃ, হরি ওঁ।

আমরা আনন্দ ও কৃতজ্ঞতাপূর্ব্বক সহৃদয় মাত্রকেই জ্ঞাত করিতেছি যে এই বার্ষিকোৎসবকালে কলিকাতার মান্যবর শ্রীযুক্ত বাবু তারকনাথ প্রামাণিক মহাশয় ২৫৲ টাকা ও বেগুসরাই ধর্ম্মসভা ৫৲ টাকা ও পীত বস্ত্রাদি দ্বারা সভার প্রতি যথোচিত সহানুভাবকতা প্রকাশ করিয়াছেন। ভগবান ধর্ম্ম কার্য্যের সহায়কগণের ইহ-পারলৌকিক মঙ্গল বিধান করুন।

৩য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত রাজা তারেশচন্দ্র পাণ্ড	পাকুড়	১০৸৵০
শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শুকদেব	এলাহাবাদ	৩।৵০
,, বাবু তারাপ্রসন্ন ঘোষ	ঐ	৩।৵০
,, ,, তারকনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ	৩।৵০
,, ,, উমাচরণদাস	মুঙ্গের	২৲
,, ,, যোগেন্দ্রনাথ মৈত্র	ঐ	২৲
,, ,, হরিহর বসু	জামালপুর	২৲
,, ,, গণেশচন্দ্র শূর	ঐ	১৲
,, ,, ভূমিধর গঙ্গোপাধ্যায়	ঐ	১৲
,, ,, মহেন্দ্রনাথ ঘোষ	মুঙ্গের	১৲
,, ,, যাদবলাল রায়	শিববাটী	১৲
,, ,, গিরীশচন্দ্র ঘোষ	ভগলপুর	১৷৵০
,, ,, কালীকিশোর মুন্সী	শেরপুর	১৷৵০
,, ,, নীলমোহন মুখোপাধ্যায়,	বাঁকা	১৷৵০
,, ,, রমণীমোহন দে	চন্দ্রাগ্রধা	১৷৵০

हे परमात्मन्! आप दयाल हो, इसलिये शिर झुकाये मैं इतनी प्रार्थना करता हूं, कि हमारी सभाके सभासद उत्साही सहायक, हित साधक, सहानुभावक वो जहां तहां जितने महात्मा जिस किसी भांति उपायसे नहो जगतके कल्याणार्थ चेष्टा किये करते हैं, औ जितने जीव आप की सत्ता करके वर्त्तमान है, सबकि सहीको आप अपने मुनिमनोहर सुचारु चरणके ओर आकर्षण कीजिये, आप की ऐकान्तिकी भक्ति सबके हृदय में विस्तार कीजिये। हे हरे! आपही धर्म्म रक्षक हो आप अपने धर्म्मको रक्षा कीजीये। हम सबको इतनी सामर्थ दीजिये कि आपकी प्रीति औ प्रियकार्य्य साधनकर जन्म जीवन को सफल करें। बाहरे बाहर यह उत्सव समाप्त हुआ सही, किन्तु इसके उज्ज्वल उत्साहाग्नि वो निर्म्मल प्रेमशिखा हमारे हृदयको निरन्तर प्रकाशित रखे। हे भगवन्! आपको बार बार नमस्कार करते हैं।

ओं शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरि ओं।

हम सबके साम्हने आनन्द वो कृतज्ञतापूर्व्वक यह प्रगट करते हैं कि इस वार्षिकोत्सवके समय कलकत्ते के मान्यवर श्रीमान बाबू तारकनाथ प्रामाणिक महाशय २५) रुपये औ बेगुसराय की धर्म्म सभा ५) रुपये वो पीत वस्त्रादिके द्वारा सभाके ओर यथायोग्य सहानुभावकता प्रकाश किये भगवान् धर्म्म कार्य्यके सहायकोंका इसलोक वो परलोकका मङ्गल विधान करें।

३य वर्षका मूल्य प्राप्ति स्वीकार।

श्रीयुक्त राजा तारेशचन्द्र पांडे	पकोड़	१०)≈
,, पण्डित शुकदेव,	एलाहाबाद	३।≈
,, बाबु ताराप्रसन्न घोष	,,	३।≈
,, ,, तारकनाथ बद्योपाध्याय	,,	३।≈
,, ,, उमाचरण दास	मुङ्गेर	२)
,, ,, योगेन्द्रनाथ मैत्र	,,	२)
,, ,, हरिहर वसु	जामालपूर	२)
,, ,, गणेशचन्द्र शूर	,,	१)
,, ,, भूमिधर गङ्गोपाध्याव	,,	१)
,, ,, महेन्द्रनाथ घोष,	मुङ्गेर	१)
,, ,, यादवलाल राय	शिवघाटी	१)
,, ,, गिरीशचन्द्र घोष	भागलपूर	१।≈
,, ,, कालीकिशोर मुनशी,	शेरपूर	१।≈
,, ,, नीलमोहन मुखोपाध्याय,	बांका	१।≈
,, ,, रमणीमोहन दे,	चन्द्रापधा	१।≈

৪র্থ বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত রাজা তারেশচন্দ্র পাণ্ডে	পাকুড়	৩।৶০
,, বাবু গোপীমোহন রায়	কলিকাতা	৩।৵০

বিদেশীয় এজেণ্টগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	ভাগলপুর।
,, ,, যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী।
,, ,, জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর।
,, ,, পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট্।
,, ,, সাতকড়ী বন্দ্যোপাধ্যায়,	কলিকাতা।
,, ,, বিহারিলাল রায়,	জামালপুর।
,, ,, রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ
,, ,, উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	ঐ
,, ,, ভোলানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	বহরমপুর।
,, ,, রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম।

উপরোক্ত এজেণ্ট মহোদয়গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয়গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

ধর্ম্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্যধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহসহকারে ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশ করিব।

২। ধর্ম্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মুঙ্গের "আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভার," আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মণিঅর্ডারে, পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩ সংখ্যা হইতে ডাকমাশুল সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে।

উত্তম কাগজে,	বার্ষিক	৩।৶০,	প্রতিখণ্ড	।৶০
মধ্যম ঐ	,,	২।৶০	,,	।০
সাধারণ ঐ	,,	১।৶০	,,	৶০

মুঙ্গের, আর্য্যধর্ম্ম-প্রচারিণী সভা } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন সম্পাদক।

☞ এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

४र्थ वर्षिका मूल्य प्राप्तिका स्वीकार।

श्रीयुक्त राजा तारेशचन्द्र पांडे	पकौड़	३।=
,, बाबु गोपीमोहन राय	कलकत्ता	३।≠

विदेशके एजेण्ट सबका नाम।

श्रीयुक्त बाबू पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय.	भागलपुर।
,, ,, यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय.	मतिहारी।
,, ,, जगद्बन्धु सेन.	लाहोर।
,, ,, पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय.	रामपुरहाट।
,, ,, सातकड़ी बन्द्योपाध्याय,	कलकत्ता।
,, ,, बिहारीलाल राय,	जामालपुर।
,, ,, रमेशचन्द्र सेन,	जामालपुर।
,, ,, उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय,	जामालपुल।
,, ,, भोलानाथ बन्द्योपाध्याय.	बहरमपुर।
,, ,, राधिकानाथ गोस्वामी.	कलिग्राम।

उपरोल्लिखित एजेण्ट महोदयोंके पास तत्तत् स्थानके ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊङ्गा।

धर्म्मप्रचारकसम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करनेके निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओंमें कोई प्रस्ताव लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होनेसे आनन्द औ उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश करेंगे।

२। धर्म्मप्रचारक पत्रका मोल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मुङ्गेर "आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके" ठिकाने में मेरे पास भेजने होगा। पत्र वैरिं होतो नहीं लिया जायगा।

३। मौल्य सम्भवतः पोष्टाल मनि अर्डार करके भेजना। यदि डाक टिकिट में भेजें तो आध आनिया टिकिट करके भेज देवें।

४। धर्म्मप्रचारक १म भाग, १२ संख्यासे डाककर सहित अग्रिम वार्षिक मोल तीन प्रकार हुया।

उत्तम कागजपर,	वार्षिक	३।≠	प्रतिसंख्या	।≠
मध्यम ,,	,,	२।≠	,,	।०
साधारण ,,	,,	१।≠	,,	=

मुङ्गेर, आर्य्यधर्म्म-प्रचारिणी सभा। } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन सम्पादक।

☞ यह पत्र हर पूर्णिमा में मुङ्गेर आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके उत्साहसे प्रकाशित होता है।

☞ *Printed by B. P. Majumdara, At the B. P. M's Press, No. 22, Jhamapooker Lane, Calcutta.*
Published by Srikristo Prosunna Sen, at Monghyr Aryadharmaprocharinee Suva.

এক এব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমং নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥

৩য় ভাগ
৪১ শ সংখ্যা।

শকাব্দা ১৮০২।
ফাল্গুণ-পূর্ণিমা।

পরমার্থ সার।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।)

সত্যমিব জগদসত্যং মূল প্রকৃতেরিদং কৃতং যেন।
তং প্রণিপত্যোপেন্দ্রং বক্ষ্যাপরমার্থসারমিদম্ ॥৯॥

যাঁহার আশ্চর্য্য কৌশলে এই মায়াবিরচিত অসত্য সংসারকে সত্যবৎ প্রতীয়মান হইতেছে সেই উপেন্দ্র অর্থাৎ বিশ্বব্যাপী সনাতন সত্বাকে প্রণাম পূর্ব্বক সর্ব্বশাস্ত্রসারভুত এই পরমার্থ সার ব্যাখ্যা করিতেছি।

অব্যক্তদণ্ডমভূদণ্ডাদ্ব্রহ্মা ততঃ প্রজা সর্গঃ।
মায়াময়ী প্রকৃতিঃ সংক্ষীয়ত ইয়ং পুনঃ ক্রমশঃ ॥১০॥

অব্যক্ত হইতে অণ্ড (আবির্ভাব), অণ্ড হইতে ব্রহ্মা, (সৃষ্টির মূলক্রম বা ভাব) এবং ব্রহ্মা হইতে এই জগৎ উৎপন্ন হইয়াছে পুনর্ব্বার এই প্রাকৃতিক জগৎ মহামায়ায় ক্ষীণ ও তিরোহিত হইয়া যাইবে, ইহাই প্রকৃতি সিদ্ধ চিরন্তন পদ্ধতি।

"एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति ॥"

३य भाग
४१श संख्या

शकाब्दा १८०२।
फालगुण-पूर्णिमा।

परमार्थ सार।

[पूर्व्व प्रकाशितके आगे]

सत्यमिवजगदसत्यं मूल प्रकृतेरिदं कृतं येन।
तं प्रणिपत्योपेन्द्रं वक्ष्येपरमार्थसारमिदं ॥ ६ ॥

मायासे किया हुआ यह असत्य संसार जिनके आश्चर्य कौशलसे सत्य स्वरूप भासित होता है, उस उपेन्द्र अर्थात् विश्वव्यापी सनातन सत्वाको प्रणाम पूर्व्वक इस "परमार्थसार," जो कि सर्व्वशास्त्रसार भूत है, मैं व्याख्या करता हूं।

अव्यक्तादण्डमभूदण्डाद्ब्रह्माततः प्रजासर्गः।
मायामयी प्रकृतिः संक्षीयत इयं पुनः क्रमशः ॥१०

अव्यक्तसे अण्ड, (आविर्भाव), अण्डसे ब्रह्मा (सृष्टिका मूल क्रम वा भाव) और ब्रह्मासे यह जगत उत्पन्न हुआ। फिर यह प्राकृतिक जगत महामाया करके क्षीण वो अन्तर्हित हो जायगा, यही रीति चिरन्तन चलि आती है!

অনুলোম ও প্রতিলোম পদ্ধতিতে জগতের প্রকাশ ও বিনাশ হইয়া থাকে। যাবৎকাল প্রকৃতি পরমাত্মায় অন্তর্লীন থাকে, তাবৎ এই জগদাদি কিছুই থাকে না। পরমাত্মার স্বগত প্রকৃতি সিদ্ধগুণে পরমাত্মা হইতে প্রকৃতির আবির্ভাবের বহিষ্করণ ও ভাবের আকর্ষণ হইয়া থাকে। উক্ত মূলা প্রকৃতিকে অব্যক্ত এবং উক্ত আবির্ভাবকে অণ্ড কহে। এই আবির্ভাব হইতেই প্রথম ভাব (অহং ভাব) উদয় হইয়া থাকে। অতঃপর অহং ভাব হইতে অন্তর্ব্বাহ্য ইন্দ্রিয়গণ ও স্বক্ষ্ম ভূতের অভ্যুদয় হয়, এবং সূক্ষ্ম ভূত হইতে স্থূল ভূত বা জগৎ প্রকাশিত হইয়া থাকে। ভৌতিক জগতে যে গ্রহগণের কেন্দ্রাতিগ (Centrifugal) ও কেন্দ্রানুগ (Centripetal) দুইটী গতি দৃষ্ট হয় উহা পরমাত্মার বহিষ্করণ ও আকর্ষণ শক্তির ভৌতিক ছায়া মাত্র। মঙ্গলময় পরমাত্মা অনন্তপ্রেমের আধার এই জগৎ বহিষ্করণ শক্তি প্রভাবে প্রকাশিত হইয়া তাঁহার অনন্ত ও অনিবার্য্য প্রেমের আকর্ষণে তাহাতে পুনঃপ্রবিষ্ট হইয়া থাকে। ইহাকেই জগতের বিনাশ কহে।

মায়ামেয়োপ্যচেতোগুণ করণগণঃ করোতি কর্ম্মাণি।
তদধিষ্ঠাতাদেহো সচেতনো ন করোতি কিঞ্চিদপি ১১

ইন্দ্রিয়গণের অধিষ্ঠাতা চৈতন্যাত্মক জীব কোন কর্ম্ম করেন না; মায়াময় সত্ব, রজঃ, ও তমোগুণযুক্ত ইন্দ্রিয়গণ অচেতন হইয়াও কর্ম্ম করিয়া থাকে।

যদ্বদচেতনমপি সন্নিকটস্থে ভ্রামকে ভ্রমতিলোহং।
তদ্বৎকরণসমূহশ্চেষ্টতে চিদধিষ্ঠিতেদেহে ॥১২॥

যেমন চুম্বক লোহের নিকটবর্ত্তী হইলে অচেতন লৌহ সচেতন পদার্থের ন্যায় বিচলিত ও ক্রিয়াযুক্ত হয় তদ্রূপ ইন্দ্রিয়গণ জড় হইয়াও দেহাভ্যন্তরস্থ চৈতন্য সত্ত্বা প্রযুক্ত কার্য্য করিয়া থাকে।

যদ্বৎ সবিতুর্ব্য দিতে করোতি কর্ম্মাণি জীবলোকোঽয়ং
নচতানি করোতি রবির্নকারয়তি তদ্বদাত্মাপি ॥১৩॥

যেমন সূর্য্য উদয় হইলেই জীব সকল স্বতঃ প্রবৃত্ত হইয়া কার্য্য করিতে থাকে; বাস্তবিক সূর্য্য স্বয়ংও কোন কর্ম্ম করেন না ও কাহাকে কোন কর্ম্ম করিতে আদেশ বা প্রবৃত্তও করেন না, তদ্রূপ আত্মা স্বয়ং নিষ্ক্রিয়, তাঁহার সত্তামাত্রের প্রভাবেই ইন্দ্রিয়গণ কার্য্য করিতে থাকে।

अनुलोम वो प्रतिलोम विधिकरके जगतका प्रकाश वो विनाश होता रहता है। यावतकाल प्रकृति परमात्मामें विलीन रहती, तावत काल यह जगदादि कुछ भी नहीं रहता है। परमात्मा की स्वगत प्रकृति-सिद्ध गुण करके परमात्मासे प्रकृतिके "आविर्भाव" का "वहिष्करण" वो "भाव' का "आकर्षण" होता रहता है। उक्त मूला प्रकृतिको अव्यक्त वो उक्त "आविर्भाव' को अण्ड कहलाता है। इस आविर्भाव ही से पहले 'भाव' (अहं भाव) उदय हुआ करता है। इसके अनन्तर अहं भावसे "अन्तर्वाह्य इन्द्रियगण वो सूक्ष्म भूतों का अभ्युदय याने प्रकाश होता है, वो सूक्ष्म भूतोंसे स्थूल भूत वा जगत प्रकाशित होता है। भौतिक जगतमें जो ग्रहमण्डली की दो गति, जिनमें एकका नाम 'केन्द्रातिग" (Centrifugal) वो दुसरा का नाम "कुन्द्रानुग" (Centripetal) देखी जाती, वे परमात्मा की वहिष्करण वो आकर्षण इन दोनो शक्ति की भौतिक छायामात्र है। मङ्गलमय परमात्मा अनन्त प्रेमका आधार हैं। यह जगत वहिष्करण शक्तिका प्रभावसे प्रकाशित होकर उनके अनन्त वो अनिवार्य्य प्रेम का आकर्षण करके उनमें फिर प्रवेश कियां करता है। इस ही को जगतका विनाश कहलाता है।

मायामयोप्यचेतोगुण करणगण: करोति कर्म्माणि।
तदधिष्ठाता देहो सचेतनो न करोति किञ्चिदपि ॥११

चैतन्यात्मक जीव, जोकि इन्द्रियों के अधिष्ठाता है, कुछ भी नहीं करते हैं; मायामय सत्व रज: वो तमोगुणयुक्त इन्द्रियगण अचेतन हुए भी कर्म किये करते हैं।

यद्वदचेतनमपि सन्निकटस्थे भ्रामके भ्रमतिलोहं।
तद्वतकरण समूहश्चेष्टते चिदधिष्टते देहे ॥ १२ ॥

जैसा चुम्बक लोहाके समीप जानेसे, लोहा, जो जड़ है, सचेतन पदार्थकी रीति चलने लगता है, उसही भांति इन्द्रियगण जड़ हुए भी देहस्थ चैतन्य की सत्वा करके कार्य्य किये करते हैं।

यद्वत्सवितर्य्युदिते करोति कर्माणि जीवलोकोऽयं।
नचतानि करोति रविर्नकारयति तद्वदात्मापि ॥१३॥

जैसां सूर्य्य उदय होनेही से जीवगण स्वतः एव कार्य्य करने लगते; वास्तवमें न सूर्य्य स्वयं कुछ करते न किसही को कुछ करने कहते अथवा प्रवृत्ति देतें है, तद्रुप आत्मा स्वयं निष्क्रिय हैं, उनकी सत्वा ही के प्रभाव से इन्द्रियगण कार्य्य किये करते है।

মনসোহঙ্কারং বিমূর্চ্ছিতস্য চৈতন্যবিরোধিতস্যেহ।
পুরুসাভিমান সুখদুঃখভাবনা ভবতি মূঢ়স্য ॥১৪॥

মন অহঙ্কার কর্ত্তৃক বিমূর্চ্ছিত ও চৈতন্য কর্ত্তৃক প্রবুদ্ধ হয়। মূঢ়তা প্রযুক্তই মনোমধ্যে পুরুষাভিমান রূপ সুখ দুঃখানুভব হইয়া থাকে।

কর্ত্তাভোক্তাদ্রষ্টাস্মি কর্ম্মণামুত্তমাদীনাং।
ইতি তৎস্বভাব বিমলোহভিমন্যতে সর্ব্বগোপ্যাত্মা॥১৫

সর্ব্বত্র বর্ত্তমান নির্ম্মল স্বভাব আত্মা পুণ্য পাপাদি কর্ম্মকালে আমি কর্ত্তা, আমি ভোক্তা, আমি দ্রষ্টা ইত্যাদি অনুভব করেন, কিন্তু মূঢ়ের ন্যায় অভিমান করেন না।

ক্রমশঃ।

আর্য্য শব্দের উপপাদন।

(বৃন্দাবনস্থ শ্রদ্ধেয় বন্ধু শ্রীযুক্ত রাধাচরণ গোস্বামীর লিখিত।)

সরস্বতী দৃষদ্বর্ত্যোর্দ্দেব নদ্যোর্য্যদন্তরম্।
তন্দেব নির্ম্মিতং দেশ মার্য্যাবর্ত্তম্প্রচক্ষতে॥
এতদ্দেশ প্রসূতস্য সকাশাদগ্রজন্মনঃ।
স্বং স্বং চরিত্রং শিক্ষেরন্ পৃথিব্যাং সর্ব্বমানবঃ॥

(মনুসংহিতা ২ অং ১৭-২০ শ্লোক।)

আমরা পৃথিবীস্থ সমস্ত আর্য্য, অনার্য্য, পণ্ডিত, মূর্খ,রাজা,প্রজা,ধনী, দরিদ্র,গ্রন্থকার, পত্রিকা সম্পাদক প্রভৃতি সকল শ্রেণীস্থ লোকের নিকট বিনয় পূর্ব্বক নিবেদন করিতেছি যে, আপনারা ভারতবর্ষের প্রাচীন অধিবাসী ও বৈদিক ধর্ম্মাচারী আর্য্য সন্তানগণকে কদাচিৎ "হিন্দু" বলিয়া উল্লেখ ও কোন স্থানে ইদৃশ শব্দ লিপি বদ্ধ না করেন। কেননা মহম্মদীয় আরবী পারসী ইত্যাদি ভাষায় হিন্দু শব্দ "গুলাম" "কাফির" "কৃষ্ণবর্ণ" ইত্যাদি অসভ্য অর্থে গৃহীত হয়, এবং মুসলমানেরাই প্রথমত আমাদিগের প্রতি ঈর্ষা পরবশ হইয়া নিজ রাজ্য শাসন কালে এই সংজ্ঞা প্রচলিত করিয়াছিল নতুবা আমাদিগের ইদৃশী কুৎসিত সংজ্ঞা পুরাতন কোন ইতিহাসাদিতে দেখিতে পাওয়া যায় না আর কেহই "আর্য্য" শব্দের পরিবর্ত্তে "হিন্দু" শব্দ ব্যবহার করিতেন না। কিন্তু যখন মুসলমানগণ এইরূপ কহিতে লাগিল তখন তাহাদের দেখাদেখি ও তাহাদের ভয়ে অন্যান্য লোকও তদ্রূপ বলিতে আরম্ভ করিল। কিন্তু এক্ষণে আমাদিগের মধ্যে

मनसोहङ्कार विमूर्च्छितस्य चैतन्य विरोधितस्येह।
पुरुषाभिमान सुखदु:खभावना भवतिमूढ़स्य ॥१४॥

मन अहङ्कार करके मूर्च्छित होता औ चैतन्य करके जगता है। मूढ़ता करके मनमें पुरुषाभिमान रूप सुखदु:ख की भावना उठी करती है।

कर्त्ताभोक्ताद्रष्टास्मि कर्मणामुत्तमादीनां।
इतितत्स्वभाव विमलोऽभिमन्यते सर्वगोप्यात्मा ॥१५॥

आत्मा, जोकि सदा सर्वत्र वर्त्तमान वो निर्मल स्वभाव है, पुण्य पापादि क्रिया करनेके समयमें भोक्ता हूं, मैं द्रष्टा हूं, ऐसा अनुभव करते किन्तु मूढ़ोंके समान अभिमान नहीं करते हैं।

शेष आगे।

आर्य्य शब्दका उपपादन।

(वृन्दावनस्थ श्रद्धेयमित्र श्रीयुक्त राधाचरण गोस्वामी लिखित।)

सरस्वती दृषद्वत्योर्देव नद्योर्यदन्तरम्।
तन्देव निर्मितं देशमार्य्यावर्त्तम्प्रचक्षते ॥
एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा: ॥

(मनुस्मृति: २ अ० १७-२० श्लोक।)

हम जगत्के सब आर्य्य, अनार्य्य, पण्डित, मूर्ख, राजा,प्रजा, धनी दरिद्र,ग्रन्थकार, पत्रिका सम्पादक प्रभृति सकल श्रेणीस्थ लोगोंसे विनयपूर्वक निवेदन करते हैं, कि आपलोग हम आर्य्यलोगोंको जो भारत वर्षके प्राचीन निवासी, और वैदिकधर्मके अनुयायी हैं,कदाचित् "हिन्दू" न कहा करें। और लेखमें भी इस दुःशब्दका व्यवहार न किया करें। क्योंकि यह संज्ञा जिसका मुसलमानों की भाषा अरबी फ़ार्सी इत्यादिमें "गुलाम" "क़ाफिर" "काला" इत्यादि असभ्य अर्थ है, हमलोगोंकी प्रथम मुसलमानोंनेही अपने राज्यमें ईर्षासे प्रचलित की थी, क्योंकि इसके पूर्व कहीं हमलोगो की यह संज्ञा इतिहासोंमें नहीं पाई जाती, और न कोई "आर्य्य" शब्दके बदले "हिन्दू" शब्दसे व्यवहार करता था। परन्तु जब मुसलमान कहने लगे तो उनकी देखा देखो और भयसे और लोगोंने भी कहना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु अब यह व्यवहार आपुसमें भी बहुतही बुरा है,

ইদৃশ ব্যবহার থাকা নিতান্ত নিন্দিত কেন না একটী পবিত্র সমাজকে বল-পূর্ব্বক দূষিত বলা লোক ও শাস্ত্র বিরুদ্ধ।

যদি কেহ কেহ এরূপ আপত্তি করেন যে আমরা "হিন্দু" এই পারসী শব্দে "সিন্ধুতীর বাসী" এই রূপ অর্থ গ্রহণ করি তাহা হইলে তাঁহাদিগকে জিজ্ঞাস্য এই যে আমরা এক্ষণে সকলে সিন্ধুতীরে বাস করিতেছি কৈ? যদিও পূর্ব্বে থাকিতাম ও উক্ত নামে নির্দ্দেশ যোগ্যও ছিলাম তথাচ কি "আর্য্য" বলিয়া উক্ত হইতাম না? একটী মুখ্য নাম পরিত্যাগ পূর্ব্বক আর একটী অসঙ্গত ও অশুদ্ধ নাম ভদ্রসমাজে ব্যবহার করিবার প্রয়োজন কি।

হা! কি মোহ মহিমা! আমাদিগের প্রকৃত সংস্কৃত "আর্য্য" নাম বিস্মৃত হইয়া আমরা "হিন্দু" হইয়া গিয়াছি এবং এক্ষণ আমরা "হিন্দু" শব্দ পরিহার পূর্ব্বক আর্য্য শব্দ গ্রহণে কিং কর্ত্তব্য বিবেচনা করিতেছি। হা! হা! কি মোহ মদিরাই আমরা পান করিয়াছি, যে তাহার প্রভাবে অমৃত ময় "আর্য্য" শব্দ পরিত্যাগ পূর্ব্বক বিষময় "হিন্দু" শব্দকে প্রাধান্য দানে দৃঢ় প্রতিজ্ঞ হইয়াছি সংস্কৃত আর্য্যভাসাই আমাদিগের মাতৃভাষা, আরবী পার্সীর সহিত আমাদিগের কিছুই সংশ্রব নাই তবে কেন আমাদিগের ভাষার স্বতঃ সিদ্ধ বিশুদ্ধ "আর্য্য" শব্দ পরিত্যাগ করিয়া "হিন্দু" শব্দের সমাদর করিব? ছিঃ!!! আমাদিগের ভারতবর্ষীয় ভাষা সমূহের মধ্যে এমন কি একটীও শব্দ নাই যদ্দ্বারা সমাজের নাম বুঝিতে পারা যায়? অথবা এমন কি কোন রাজদণ্ডের ভয় আছে যদ্দ্বারা "হিন্দু" শব্দের পরিবর্ত্তে প্রাচীনতম "আর্য্য" শব্দ ব্যবহার করিবার উৎসাহ ভঙ্গ করে।

যদি কেহ সত্যের অনুরোধে এরূপ বলেন যে "আর্য্য" শব্দ শ্রেষ্ঠত্ব বাচক। আমাদিগের পূর্ব্ব পুরুষগণ যথার্থই শ্রেষ্ঠ ছিলেন কিন্তু সে শ্রেষ্ঠতা এক্ষণে আমাদিগের জাতীয় প্রকৃতিতে দৃষ্ট হয় না এই জন্য "আর্য্য" বলিতে আমাদিগের সঙ্কোচ বোধ হয় তাহাতে আমাদিগের নিবেদন এই যে, যদিচ আমরা কোন কোন গুণে তাঁহাদের হইতে ন্যূন তথাচ "আর্য্য" শব্দের সর্ব্বথা অনধিকারী নহি। কেন না আমরা অবশ্যই কিছু না কিছু পরিমাণে সভ্য, নিতান্ত নিউজিলণ্ডবাসীদিগের ন্যায় নহি। আমাদিগের ন্যায় অধ্যাত্মবিদ্যা, সঙ্গীতবিদ্যা

क्योंकि किसी निर्दोष समाज को बलात्कारसे सदोष कहना लोक और शास्त्र दोनोंके विरुद्ध है।

यदि कोई आपत्ति करते हों कि हम "हिन्दू" शब्दको फार्सी मान कर इसका "सिन्धु तीरवासी" अर्थ करते हैं, तो हम उन लोगोंसे पुंछते हैं कि हम अब सिन्धुतीर पर ही केवल कहां रहते हैं? यदि पहिले रहते थे, और इसी नामसे निर्दिष्ट होनेके योग्य थे, तो क्या तब आर्य्य नहीं कहलाते थे? फिर क्या आवश्यक है कि एक मुख्य नाम छोड़ कर एक असङ्गत और अशुद्ध नाम भद्रसमाजमें उच्चारण किया जाय।

हा! क्या मोह महिमा है कि हम लोगोंका प्रकृत नाम संस्कृत सिद्ध "आर्य्य" है, उसे भूल कर हम लोग "हिन्दू" बन गये, और अब हम लोग "हिन्दू" शब्दको छोड़ कर 'आर्य्य' शब्दके ग्रहण करनेमें सङ्कल्प विकल्प करते हैं। हा! हा! क्या मोहमदिरा हमलोगोंने पान की है जिसके प्रभावसे अमृतमय 'आर्य्य' शब्दको छोड़ कर विषमय "हिन्दू" शब्दको हम लोग मुख्यवास देनेमें दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। हमलोगो की भाषा, संस्कृत आर्य्यभाषा प्रभृति हैं कुछ अरबी, फार्सी इत्यादिक नहीं है तो फिर क्या प्रयोजन है कि इन भाषाओंके स्वतः सिद्ध शुद्ध आर्य्य शब्द को छोड़ कर उनका आदर करें? छि: !!! क्या हमारे भारतवर्ष की अनेकावधि भाषाओंमें एक भी ऐसा शब्द नहीं, जो हम लोगोंके समाजका बोधक हो? वा कोई राजदण्ड है, जिससे "हिन्दू" शब्दके बदले प्राचीनतम "आर्य्य" शब्द कहनेका उत्साह नहीं होता।

किन्तु यदि कोई सत्यका अभिमान कर यह कहते हों कि आर्य्य शब्दका अर्थ श्रेष्ठ है, आप लोगोंके पूर्वपुरुष ठीक श्रेष्ठ थे, पर अब वह श्रेष्ठता आप की जातिमें नहीं रही, इससे हमें कुछ आर्य्य शब्द के कहनेमें सङ्कोच होता है तो हमारा उनसे निवेदन है कि यदि हम किसी एक गुणमें उनसे न्यून भी हों, तो भी 'आर्य्य" शब्दके सर्वथा अनधिकारी नहीं हैं। क्योंकि अवश्य कुछ सभ्यता रखते हैं, निरे 'न्यूजीलेण्डीय" ही नहीं है। हमारी सी अध्यात्म विद्या, गानविद्या, योगविद्या, हमारी सी धार्म्मिकता, भगवद्भक्ति, आस्तिकता, दयाशीलता, हमारा सा स्त्रीपातिव्रत्य, हमारा सा धर्म, कर्म इत्यादि हमलोगोंमेंही है; सो और जगह कदापि नहीं, तो

যোগ বিদ্যা, আমাদিগের ন্যায় ধর্ম্মভাব, ভগবদ্ভক্তি আস্তিকতা, দয়াশীলতা, আমাদিগের ন্যায় রমণীগণের পাতিব্রত্য, আমাদিগের ন্যায় ধর্ম্ম, কর্ম্ম ইত্যাদি আমাদিগতেই বিদ্যমান আছে অন্যত্র কুত্রাপি নাই এতাবৎ গুণ সত্বেও কি আমরা আর্য্য হইতে পারি না ? আর যদি উক্ত নিয়মই প্রবল হয় তবে ষ্টার অব্ ইণ্ডিয়া " (ভারতনক্ষত্র) আর " বাহাদুর " (বীর পুঙ্গব) ইত্যাদি উপাধি রাশি ও গ্রন্থাদির প্রলম্বায়মান, নাম কিরূপে সর্ব্বথা সত্য হইতে পারে। কেবল এক দেশিক সত্যতাই সর্ব্বত্র প্রতীত হয় সর্ব্বতোভাবিক কিছুতেই দৃষ্ট হয় না আর যদি অসত্যই হয় তবে এতাবৎ ভদ্র সমাজে প্রচলিত রহিয়াছে কেন ?

" নহি বিকৃতমনন্যবদ্ ভবতি।
নহি ভিন্ন পুচ্ছোঽশ্বো গর্দ্দভো ভবতি " ॥

যদিচ বহুদিন প্রচলনে কথন লিখনের কারণ হয় তবে সহস্র প্রকার পূর্ব্ব প্রচলিত অসদ্বার্ত্তা যখন নূতন সভ্যতালোকে বিলুপ্ত হইয়াছে ও হইতেছে তবে এই দুঃশব্দের রক্ষা করিবার জন্য লোকের এত দুরাগ্রহ কেন ! আর যদি ইহাই প্রধান কারণ হয় তবে ব্যভিচার, জুয়াচুরী আদিও ত প্রচলিত আছে এতাবৎ কি সংসার মধ্যে অসৎ কর্ম্ম বলিয়া ঘৃণিত হয় না এবং এতাবৎ পরিত্যাগ করিবারই বিধান কেন ?

কাহার কাহার এরূপ আশঙ্কাও আছে যে ইতিহাসানুসারে ইংলণ্ড বাসীরাও আর্য্য বলিয়া পরিচয় দিতে পারেন, তবে দুইটী জাতি আর্য্য নামে লিখিত ও পরিচিত হইবে ইহাতে লোকের ভ্রান্তির সম্ভাবনা। ইহাও সমীচীন সিদ্ধান্ত নহে, তাঁহারা নিঃসন্দেহই নিজ নিজ ভাষাও রূপ ভেদে " ইংলিস " " ফ্রান্সিস " ইত্যাদি লিখিতে থাকিবেন। যদি তাঁহারাও আর্য্য বলিতে থাকেন তাহাতেই চিন্তা কি ? প্রকরণানুসারে সকলের ভিন্নতা প্রতিপন্ন হইতে পারে।

এ আশঙ্কা ভিন্ন অনেকে আরও এক আশঙ্কা করেন যে " হিন্দু " শব্দ ছাড়িয়া " আর্য্য " শব্দ ব্যবহার করিলে কর্ম্ম কার্য্য চলিবে না। ইহাও বিষম ভ্রম, কেন না আমরা দেখিতেছি যে, স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী ও তাঁহার অনুগামী বর্গ কয়েক বর্ষহইতে কথাবার্ত্তা ও লিখন পঠন কালে " হিন্দু "

फिर "सितारेहिंन्द" (भारत नक्षत्र) और "बहादुर" (वीरपुङ्गव) इत्यादि उपाधियें, और प्रलम्बायमान ग्रन्थादिकोंके नाम कब सर्वथा सत्य होसकते हैं ? केवल एक देशिक सत्यताही सर्वत्र प्रतीत होती है, सार्वदेशिक सत्यता किसीमें नहीं पाई जाती ! और यदि असत्यही है तो फिर क्यों भद्र समाजमें प्रचलित है ? किञ्च। "न हि विकृत मनन्यवद् भवति।

न हि भिन्न पुच्छोऽश्वो गर्द्दभोभवति ॥ "

यदि च प्रचारही इसके बोलने और लिखनेका कारण हो तो सहस्रश: असद्वार्त्ता जो प्रचलित थीं, नूतन सभ्यतासे मिट गईं, और मिटती जाती हैं, तो फिर क्या निमित्त है कि इसी दु:शब्द पर लोगोंको इतनी रुचा है ? और यदि यही प्रधान कारण है, तो क्या व्यभिचार, जुआ, चोरी इत्यादिक प्रचलित नहीं हैं, फिर क्यों संसारमें असत् कर्म समझे जाते हैं ? और इनके छोड़नेका विधान है ?

कई जनोंको इसमें यह भी आशङ्का है कि इतिहासानुसार इंगलैण्डीयादिक भी "आर्य्य" ठहर सकते हैं, तो फिर जब दोनो "आर्य्य" नामसे लिखे पढ़े जायंगे, तो लोगोंको भ्रांति होगी, सो यह भी कुछ ठीक नहीं ; उन्हें निस्सन्देह लोग तत्तद्भाषा और देशके भेदसे "इंग्लिश" 'फ्रेंसिस्" इत्यादि लिखें, और हमलोगोंको हमारी भाषानुसार "आर्य्य" लिखें, और यदि उन्हें भी "आर्य्य' पुकारें तो क्या चिन्ता है ? प्रकरणानुसार सबका भेद प्रकट हो सकता है।

इन आशङ्काओंसे अधिक एक आशङ्का और भी बहुधा किया करते हैं कि "हिंदू" शब्दको छोड़कर "आर्य्य' के व्यवहार करनेसे प्राय: काम नहीं चलैगा, सो यह भी महान् भूल है, क्योंकि हम देखते हैं कि स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके अनुयायी लोग आज वर्षोंसे बोल चाल और लिखा पढ़ीमें "हिंदू" शब्दका व्यवहार नहीं करते तब क्या उनका कार्य्य निर्वाह नहीं होता ?

निदान कोइ प्रकारसे "आर्य्य' शब्दके कहनेमें कुछ चिन्ता, भ्रम, वा प्रमाद नहीं है, अतएव हमारी सर्वसाधारण और विशेषत: अपने सभ्य आर्य्यलोगोंसे आशा है कि जहांतक हो "हिंदू"

শব্দের ব্যবহার ত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহাদের কার্য্য কি নির্ব্বাহ হইতেছে না?

উপসংহার কালে ইহাই বলিতেছি যে আর্য্য শব্দ ব্যবহার করিলে কোন, চিন্তা, ভ্রম, বা প্রমাদ নাই। অতএব আমাদিগের সর্ব্বসাধারণ ও বন্ধু আর্য্য গণের নিকট প্রত্যাশা করি যে তাঁহারা যত দূর পারেন " হিন্দু " শব্দের পরিবর্ত্তে " আর্য্য " শব্দ ব্যবহার করিবেন, যেন আজকাল কার কোন কোন গোবর গণেশ পণ্ডিতের ন্যায় সংস্কৃত মধ্যেও " হিন্দু " শব্দ না লিখিয়াবসেন। অতএব নিজ-দেশকে আর্য্যাবর্ত্ত বা " ভারতবর্ষ " এবং নিজ ভাষাকে " মাতৃ ভাষা " বা আর্য্য ভাষা বলিবেন হিন্দুস্থান বা " হিন্দী " না বলেন, কেননা " বচনেষু দরিদ্রতা " ইহা কাপুরুষের কার্য্য।

শ্রুতি স্মৃতি মিতাচারঃ শুদ্ধাহারস্থনীতিমান
প্রীতিমান্ যো ভবেদ্দেবে স আর্য্যঃ পরিকীর্ত্তিতঃ॥
বৈদিক মতানুযায়ী ন্যায়ী সচ্ছাস্ত্রবিৎকশ্চিৎ'
সদ্দ্ বিণ ব্যবসায়ী দায়ীমুক্তোভবেদার্য্যঃ॥

ওঁ শান্তিঃ।

গোস্বামী মহাশয়ের অনুরোধে আমরা আনান্দিত চিত্তে তাঁহার প্রেরিত মুদ্রিত পত্রখানি আদর পূর্ব্বক উপরে প্রকটন করিলাম। " হিন্দু " শব্দের দূষণীয়তা ও তৎপরিবর্ত্তে " আর্য্য " শব্দ ব্যবহার করিবার আবশ্যকতাআমরা বহুদিন হইতে স্বীকার করিয়া উহার সম্যক রূপে প্রচারেচ্ছা করিয়া আসিতেছি। ধর্ম্ম প্রচারকের প্রথম সংখ্যাতেই এই বিষয়ের বিশেষ রূপ উত্তেজনাও করা হইয়াছে। আমাদিগের সেই ভাব সাধারণ্যে প্রচার জন্য গোস্বামী মহাশয়কেও প্রবৃত্ত দেখিতেছি, এজন্য তিনি আমাদিগের একান্ত সহানুভূতির পাত্র। " হিন্দু ধর্ম্মের " পরিবর্ত্তে " আর্য্য ধর্ম্ম " নাম প্রসিদ্ধ হয়, " হিন্দু স্থানের " পরিবর্ত্তে " ভারতবর্ষ প্রচলিত হয়, ইহা আমাদের একান্ত ইচ্ছা। হিন্দু স্থানের " পরিবর্ত্তে গোস্বামী মহাশয়ের প্রস্তাবিত " আর্য্যাবর্ত্ত " নাম প্রচলিত হইতে পারে না, কেন না " হিন্দুস্থান " বলিলে হিমালয় হইতে কুমারিকা অন্তরীপ ও হিন্দু কুশ হইতে ব্রহ্মদেশ পর্য্যন্ত স্থানকে বুঝায় কিন্তু " আর্য্যাবর্ত্ত " বলিলে কেবলমাত্র হিমালয় ও বিন্ধ্যাচলের মধ্য দেশকে বুঝাইয়া থাকে; যথা " আর্য্যাবর্ত্তঃ

शब्दके परिवर्त्तमें "आर्य्य" शब्दका व्यवहार करेंगे न कि आज कलके कई गोबर गणेश पण्डितों के भांति संस्कृत पर्य्यन्तम "हिंदू" शब्द लिखेंगे। अत एव अपने देशको भी "आर्य्यावर्त्त" वा "भारतवर्ष" और अपनी भाषाको भी "मातृभाषा" वा "आर्य्य-भाषा" कहेंगे। न कि "हिन्दोस्तान" वा "हिन्दी" क्योंकि "वचनेषु दरिद्रता" यह काम कापुरुषोंका है।

श्रुतिस्मृतिमिताचारः शुद्धाचारः सुनीतिवान्।
प्रीतिमान् यो भवेद्देवे स आर्य्यः परिकीर्त्तितः॥
वैदिक मतानुयायी न्यायी सच्छास्त्रवित् कश्चित्
सद्द्रविण व्यवसायी दायी मुक्तो भवेदार्य्यः॥

ओं शान्तिः।

महात्मा गोस्वामीजी का अनुरोधके अनुसार हम आनन्दित चित्तसे उनकी कृपाई हुई प्रेरित पत्री आदर पूर्वक ऊपरमें प्रगट किये। "हिंदू" शब्दकी दुषणीयता वो उसके बदले आर्य्य शब्दका व्यवहार करनेकी आवश्यकता समझकर अनेक दिनोंसे हमने उसका प्रचारकी पूरी इच्छाकरी आती है। धर्म्मप्रचारक की १म संख्यामें इस आशयपर विशेष रूप उत्तेजना भी की गयी है। हमारे इस भाव को सर्वत्र प्रचारार्थ गोस्वामीजी को प्रवृत्त देखते हैं, इस लिये उनने हमारे सहानुभूति के पात्र ठहरें। "हिंदूधर्म्म" के बदले "आर्य्यधर्म्म" यह नाम प्रसिद्ध होय, "हिंदूस्थान" के बदले "भारतवर्ष" नाम चले, यह हमारी एकान्त इच्छा है। गोस्वामीजी ने जो प्रस्ताव कहा है कि "हिंदूस्थान" के बदले "आर्य्यावर्त्त" नाम चले, सो नहीं हो सका। क्योंकि "हिंदूस्थान" कहनेसे हिमालयसे लेकर कुमारीका अन्तरीप तक वो हिंदूकुशसे लेकर ब्रह्म देश पर्य्यन्त भूमि समझी जाती है किन्तु "आर्य्यावर्त्त" कहनेसे केवल मात्र हिमालय वो विन्ध्याचल की मध्यदेश को समझ पड़ता है, यथा "आर्य्यावर्त्तः

পুণ্যভূমি মধ্যবিন্ধ হিমাচলো " অতএব সমগ্র হিন্দুস্থানকে " আর্য্যাবর্ত্ত " না বলিয়া " ভারতবর্ষ " বা আর্য্যদেশ বলাই যুক্তি যুক্ত। গোস্বামী মহাশয় হিন্দী ভাষাকে "মাতৃ ভাষা " বা আর্য্য ভাষা" আখ্যা—দিতে প্রস্তাব করিয়াছেন ; আমরা তাহাতেও সম্মত হইতে পারিতেছি না। কেন না "আর্য্যভাষা" বলিলে " সংস্কৃত " বুঝায় ; হিন্দী ভাষা " বাঙ্গালা " উড়িয়া " তেলেগু " আদির ন্যায় প্রাদেশিক ভাষা মাত্র। হিন্দীকে আর্য্যভাষা বলিলে " বাঙ্গালা" তলেগু আদি কি দোষে উক্ত সংজ্ঞা লাভে বঞ্চিত হইবে ? " মাতৃভাষাও " বলা যাইতে পারে না। উহাকে পশ্চিমোত্তর দেশ নিবাসীবৃন্দ "মাতৃভাষা" বলিতে পারেন, কিন্তু সমগ্র ভারতবর্ষবাসী উহাকে মাতৃভাষা বলিয়া স্বীকার করিবেন না। "হিন্দু" শব্দের পরিবর্ত্তে অপর একটী বিশুদ্ধ শব্দ প্রচলিত হয়, ইহা শ্রদ্ধেয় গোস্বামী মহাশয়ের ন্যায় আমাদেরও একান্ত বাসনা। "হিন্দীভাষা" প্রাদেশিক ভাষা হইলেও উহা ভারতবর্ষের প্রায় সর্ব্বত্রই কিয়ৎ পরিমাণে প্রচলিত আছে ও ভারতের সর্ব্ববিভাগ বাসীই উক্ত ভাষায় যথারীতি কথোপকথন করিতে পারেন ও করিয়া থাকেন। এজন্য আমাদের প্রস্তাব যে "হিন্দী" ভাষার পরিবর্ত্তে আর্য্য ভাষা বা মাতৃভাষা না বলিয়া সকলই উহাকে "আর্য্য সাধারণ ভাষা বলিয়া উল্লেখ করিতে পারেন, অথবা অন্য কেহ যদি অপেক্ষাকৃত কোন সদ্ভাবানুকূল সংজ্ঞা দান করিতে পারেন তবে আমাদিগকে অনুগ্রহ পূর্ব্বক লিখিলে আমরা আনন্দ পূর্ব্বক তাহা স্বীকার ও গ্রহণ করিব। "হিন্দুজাতি" বা হিন্দুধর্ম্মের পরিবর্ত্তে আর্য্যজাতি বা আর্য্যধর্ম্ম, হিন্দুস্থানের স্থানে " ভারতবর্ষ " ও হিন্দীভাষার পরিবর্ত্তে "আর্য্য সাধারণ ভাষা" প্রত্যেকের মুখ হইতে উচ্চারিত ও প্রত্যেক লেখকের লেখনী হইতে বিনিঃসৃত হইলে শব্দ বিজ্ঞানের প্রতিভায় ভারত ক্রমশঃ আর্য্য ভাবাপন্ন হইবেই হইবে।

ধঃ প্রঃ সঃ

মদ।

(সৈয়দপুর উঃ, বিঃ, সভা হইতে প্রাপ্ত।)

(পূর্ব্বপ্রকাশিতের পর)

ঐশ্বর্য্য-মদও সামান্য অনিষ্টজনক নহে।

पुण्यभूमिः मध्य विन्ध्य हिमाचलौ।" अतएव हिंदुस्थान का नाम "आर्य्यावर्त्त" कहना छोड़ कर "भारतवर्ष" वा "आर्य्यदेश" बोलना ही युक्ति युक्त है। गोस्वामीजी "हिंदी" भाषा को "मातृभाषा" वा आर्य्य भाषा" कहलाने चाहते है, उसमें भी हम एकमत नहीं हो सक्ते है। क्योंकि "आर्य्यभाषा" कहने ही से संस्कृत समझी जाती है। "बंगाला" "उड़िया" "तेलेगु" आदिके न्याई "हिंदी" एक प्रादेशिक भाषा मात्र है। यदि "हिंदी" को "आर्य्य भाषा" कहीजाय तो बंगाला, उड़िया, तेलेगु आदि कौन अपराधसे उक्त संज्ञा से वंचित होंगी ? "मातृभाषा" भी कही न जा सक्ती हैं। पश्चिमोत्तरदेश निवासियों चाहें तो "मातृभाषा" कह सके, किन्तु समग्र भारतवासियोंने उसको मातृभाषा करके नहीं मानेगी। "हिंदी" शब्दके बदले दुसरा कोई एक विशुद्ध शब्द चल जाय, श्रद्धेय गोस्वामीजी के न्याई हमारी भी एकांत बासना है। "हिंदीभाषा" यद्यपि प्रादेशिक भाषा है, तथापि वह भाषा भारतवर्षके प्राय सर्वत्रही यथा कियत परिमाणसे चली हुई है और भारतवर्षके हर विभागके निवासीयोंने उसभाषामें यथारीति कथोपकथन कर सक्ते है वो कहा करते हैं। इस लिये हमारी प्रस्ताव यह है कि "हिंदीभाषा" को "आर्य्य भाषा" वा "मातृभाषा" कहना छोड़कर सब कोई उसको "आर्य्य साधारण भाषा" कहा वो लिखा करें, अथवा और यदि कोई इससे सद्भावानुकुल् संज्ञा देसकें तो कृपा करके हमको लिख भेंजे, हम आनन्द पूर्वक उसको स्वीकार वो ग्रहण करेंगे। "हिंदू" जाति वो "हिन्दुधर्मका परिवर्त्तमें "आर्य्य जाति" वा आर्य्य धर्म" हिंदुस्थान के बदलमें "भारतवर्ष" वो "हिंदीभाषा" का स्थानमें "आर्य्य साधारण भाषा" हर किसही के मूंहस उच्चारित वो हरेक लिखनेहारे की लेखनीसे विनिसृत होनेपर शब्दविज्ञान की प्रतिभा करके भारतवर्ष क्रमशः आर्य्य भावापन्न अवश्यही होगा, इसमें संदेह नहीं।

ध: प्र: सं:।

मद।

(सदपुर उ:, बि:, सभासे प्राप्त)

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

ऐश्वर्य्य-मद भी कुछ सामान्य हानि कारक

ইহার প্রভাবে ধনাধীপ ও ভূপতিগণ অহঙ্কারে স্ফীত হইয়া ধরাকে শরার সদৃশ জ্ঞান করিয়া থাকেন। তাঁহারা দুর্ব্বলকে যন্ত্রণা দিতে ক্রটি করেন না। ভূপতি অন্যায় করিয়া অপরের ক্ষুদ্র রাজ্য গ্রহণ করিতে সমুৎসুক হয়েন এবং ধনী ব্যক্তি অপরের সামান্য সম্পত্তি স্বীয় করতলে আনিতে ক্রটি করেন না। অপর অপেক্ষা আমি কোন অংশে ন্যূন হইব না ইত্যাকার অহঙ্কার সূচক বাক্য প্রয়োগ করত, সুরম্য হর্ম্ম্য নির্ম্মাণ করিয়া বিবিধ প্রকার কারু কার্য্যে তাহাকে সজ্জীভূত ও নানাপ্রকার বর্ণের আলোক মালায় প্রজ্জ্বলিত করেন। নানাবর্ণে চিত্র বিচিত্র করিয়া তাহার শোভা সম্পাদন করেন এবং উত্তমোত্তম চুনি, পান্না ও হীরক দ্বারা খচিত করিয়া তাহাকে সর্ব্বাঙ্গ সুন্দর করিয়া তোলেন। নিত্য নিত্য নর্ত্তকী আনিয়া আমোদ প্রমোদ, গায়ক আনিয়া অশ্লীল গীত শ্রবণ এবং প্রতিদিন সমবয়স্কগণকে লইয়া কুৎসিত আমোদে কালক্ষেপণ তাহার জীবনের মুখ্য উদ্দেশ্য বলিয়া প্রতীয়মান হয়। অবশেষে তাঁহার ধর্ম্মভাব এরূপ শিথিল হইয়া উঠে যে পরমপিতা পরমেশ্বর, যাঁহার কৃপায় সমগ্র সুখ সম্ভোগ করিতেছেন, তাঁহাকে একেবারে বিস্মৃত হয়েন। ঐশ্বর্য্যমদের পরিণাম অতি ভয়ঙ্কর হইয়া উঠে। পর কালেরত কথাই নাই, ইহকালেই তাহার বিষময় ফল লক্ষিত হইয়া থাকে। কথিত আছে যে কোন ভূপতি বয়স্যগণের তোষামোদ বাক্যে এরূপ স্ফীত হইয়াছিলেন যে আপনাতে পরমেশ্বরের ক্ষমতা আরোপিত করিতে সঙ্কুচিত হয়েন নাই। একদা বয়স্যগণে পরিবৃত হইয়া কোন জলাশয়ের তীরে উপবিষ্ট হইয়া আছেন, এমন সময়ে পবন সঞ্চালিত হওয়াতে, তরঙ্গ মালা বেগে ধাবিত হইয়া তাঁহার আসন স্পর্শ করিবার উপক্রম করিল। বয়স্যগণ ইহা অবলোকন করিয়া তাঁহাকে সম্বোধন করিয়া কহিল, হে রাজন্! আপনি প্রভূত ক্ষমতাশালী, কিন্তু কি আশ্চর্য্য এই জলাশয় অবমাননা করিবার উপক্রম করিতেছে। ইহা শ্রবণ করতঃ রাজা ক্রোধে অধীর চিত্ত ও অহঙ্কারে উন্মত্ত হইয়া তরঙ্গ মালাকে প্রতিনিবৃত্ত হইতে আজ্ঞা দিলেন। ক্রমে বাত্যা বেগে বহিতে লাগিল। তরঙ্গ মালাও অগ্রসর হইতে

नहीं। इसका प्रभावसे धनाढ्य औ भुपतिगण अहंकारसे फुलेहुए धरिणी को तुच्छ मानतेहैं। उन्होंने दुर्ब्बलोंकों पीड़ा देनेमें कुछभी त्रुटी नहीं करते। भुपतिने अन्याय करके दुसरे के क्षुद्र राज्य छिन लेनेमें उत्सुक रहते, वा धनीक गण दुसरेके सामान्य धन सम्पत्ति अपने हाथ लाने चाहते हैं। दुसरे किसही से मैंकिसही रीति छोटा न होगा, ऐसा अहंकार सुचक वचन कह कर, सुरम्य भवन बना करके नानाभांति के कारिगरिसे उसको सजाते वो नानारंगकी रोसनी से उसको उज्ज्वल करते हैं। नानावर्णके चित्रकी विचित्रता करके उसकी शोभा बढ़ाते हैं औ उत्तमोत्तम चुन्नी, पान्ना, मोतीयोंसे सजाकर उसको सर्व्वांग सुन्दर बनालेतेहैं। प्रतिदिन नाचनेवालीको मंगाकर सुखुचैन करना, गायकोंको बोलाकर निन्दित गान श्रवण करना, और सर्व्वदा इयारोंको साथ लिये मजे तमासे में काल बीतावना उनके जीवनका मुख्य उद्देश्य मालुम पड़ताहै। अन्तमें उसका धर्म्मभाव ऐसा ढीला हो जाताहै कि परमपिता परमेश्वरको, जिनकी कृपासे वे समग्र सुख भीग कर रहेहैं, एकदम निपट भुल जातेहैं। ऐश्वर्य्य मदका परिणाम अति भयङ्कर होउठता हैं। परकालकीतो बातही छोड़दो, इह कालहीमें उसका विषमय फल लक्षित होता रहता है। कहवत है कि कोई राजा इयारोंकी खुशामुदी से ऐसा फूले हुए थे कि वे अपनेको परमेश्वर करके मानने लगेथे। एकदा हमजूलियोंके संग किसी जलाशयके किनारे बैठे रहे इस समय पवन देव चलनेपर तरङ्गमाला ने बड़ा विक्रम करके उनका आसन स्पर्शकरणार्थ धावा मारा। इतना देखकर साथीयों ने उनको सम्बोधन कर बोला महाराज! बड़ी आश्चर्य्यकी बात है कि आप ऐसे प्रतापी राजा को जलाशयने अपमान करनेका उद्यम कर रहा है। इतना सुनतेही राजा क्रोधसे अधीर चित्त वो अहङ्कारसे उन्मत्त हो कर तरङ्ग मालाको हटने की आज्ञा किये। क्रम क्रम से वायु और भी अधिक जोरसे चलने लगा। तरङ्ग माला भी अगुयाने लगी। तब राजाका दर्प चुर्ण हुआ औ साथही साथ उनको ज्ञान भी उदय हुया। उसही समय उनने साथीयोंको तिरस्कार करबोले रे पामरो! राज प्रसाद केलिये तुमकहां तक—न खुशामोद कियाकरते हो। तत्पश्चात परमेश्वरको पुकार के बोले, हे भगवन!

লাগিল। তখন রাজার দর্পচূর্ণ হইল, এবং সেই সঙ্গে তাঁহার জ্ঞানোদয় হইল। তখন তিনি বয়স্যগণকে ভর্ৎসনা করিয়া কহিলেন রে পামরগণ। রাজপ্রসাদ লাভের জন্য তোমরা কি পর্য্যন্তই না তোষামোদ করিয়া থাক। তাহার পর, পরমেশ্বরকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন হে ভগবন। তোমার আজ্ঞাতেই বায়ু সঞ্চালিত হইয়া থাকে এবং জলাশয় তোমারই অনুজ্ঞা শ্রবণ করে। আমি যেমন অহঙ্কার করিয়াছিলাম তেমনি তাহার ফল পাইলাম। এখন কৃপা করিয়া আমার অপরাধ ক্ষমা কর।

"বিদ্যামদেও" অনেকে উন্মত্ত হইয়া থাকেন। আপনাকে সদ্বিদ্যান বিবেচনা করিয়া অনেকে অহঙ্কারে স্ফীত হয়েন। অপরকে মূর্খ জ্ঞান করিয়া হেয়জ্ঞান করেন। এবং বলিতে কি তাহাদের সহিত একত্রে বসিতে তাঁহার মনের মধ্যে ঘৃণার উদ্রেক হয়। আপনি যাহা রচনা করেন তাহাই উৎকৃষ্ট, আপনি যে উপদেশ প্রদান করেন তাহাই গ্রহণ যোগ্য, এবং আপনি যাহা সিদ্ধান্ত করেন তাহাই যুক্তি সঙ্গত। ইত্যাকার অহঙ্কার পূর্ণভাব তাঁহার অন্তঃকরণ মধ্যে সমুদিত হয়। এই নিমিত্তই দুই জন ব্যক্তি বিদ্যামদে উন্মত্ত হইয়া বাকযুদ্ধে প্রবৃত্ত হয়েন। কেহ কোন মতে ন্যূনতা স্বীকার করেন না বলিতে কি, তাঁহার যুক্তি অসার তিনি তাহা বুঝিতে পারিয়াও পরাজয় স্বীকার করিতে লজ্জা বোধ করেন। বিদ্যামদ একটী বিশেষ অনিষ্ট উৎপাদন করে। ইহার প্রভাবে কেহ২ ধর্ম্মের প্রতি শিথিল ভাব প্রদর্শন করেন। কোন ভক্তি-ভাজন ধর্ম্মপরায়ণ ব্যক্তি বিদ্যাতে তাঁহার সমকক্ষ না হইলে তাঁহারা তাঁহার জ্ঞান গর্ভ বাক্য সকল শ্রবণ বা গ্রহণ করিতে লজ্জা বোধ করেন। তাঁহারা কহিয়া থাকেন ঈশ্বরের অস্তিত্ব, তাঁহার বিভূতি সকল নিরূপণ এবং পরকালের ভাব ত বহুকাল হইল জ্ঞাত হইয়াছি। এখন আর এ সকল বিষয়ের আন্দোলন করিয়া কি ফল হইবে? যে বিদ্যা অন্তঃকরণকে উজ্জ্বল করিবে, যাহার প্রভাবে, মন বিনম্র ভাব ধারণ করিবে এবং যাহার অনুশীলনে পরমেশ্বরের প্রতি ভক্তির উদ্রেক হইবে, সেই বিদ্যার দ্বারা যদি বিপরীত ফল উৎপাদন হইল, তাহাকে অকৃতবিদ্য ব্যতীত আর কোন্ আখ্যা প্রদান করা যাইতে পারে।

বর্ত্তমান সময়ে পদ গৌরব সামান্য পরাক্রম প্রকাশ করিতেছে না, যে মনুষ্য পল্লী মধ্যে অথবা গৃহাভ্যন্তরে মিষ্টভাষী ও বিনয়ী বলিয়া পরিচিত, তিনি কার্য্যালয়ে প্রবেশমাত্র ভীষণমূর্ত্তি ধারণ ও

आपही की आज्ञा करके वायुचलती है औ जलाशय आपहीकी आज्ञामान किया करता है। मैं ज्यों अहङ्कार कियाथा त्योंही उसका फल पाया। अब कृपा करके मेरा अपराध क्षमा कीजिये।

"विद्यामद" से भी कितने लोग उन्मत्त हो जाते हैं। अपनेको बड़ा विद्यावान समझे बहुतेरे लोग फुले न समातेहै। दुसरेको मूर्खजानकर तुच्छ मानते ऐसा कि उनके साथ एकट्ठे बैठने मे भी उनको घृणा बुझ पड़ती। वेस्वयं जो कुछ रचनाकरते सोही उत्तम है, स्वयं जोकुछ उपदेश देते सोही ग्रहण योग्यहैं, स्वयं जौकुछ सिद्धान्त करते सोही युक्ति युक्त हैं, इसभांति अहंकार पूर्णभाव उनका अन्तः-करण में समाता हैं। इसही लिये दोपुरुष विद्यामद से उन्मत्त होकर वाग्युद्धमें प्रवृत्त होतेहैं। कोइ किसही तरहसे घट नहीमानते। ऐसाकि जिनकी युक्ति निपट असारहैं वे इतना जानेभी पराजय माननेको लज्जाबोध करतेहैं, विद्यामदसे और एक विशेष हानिभी पहुंचती है। इसके प्रभाव से किसहि किसहीका धर्म्मभाव भी शिथिल होजाता है कोइ भक्ति-भाजन धर्म्म-परायण पुरुषभी यदि विद्यामें उनके समकक्ष नहु तो वे उन महात्माकी ज्ञानगर्भ वचन सुननेवा मानलेनेमें लज्जाबोध करतेहैं। उनने इसतरह कहाकरते हैं, कि ईश्वरके अस्तित्व, उनकी विभूतियोंका निरूपण और लोकका तत्त्वतो बहुत दिन से जानते हैं, तोफिर इन विषयोंकी चर्चासे क्याहोगा। जिसविद्याने अन्तःकरणको उज्ज्वल करनेवालीहैं, जिसके प्रभावसे मन विनम्रभाव धारण किया करता हैं, जिसकी चर्चासे ईश्वरके और भक्ति उपजनेवालीहैं, उसही विद्यासे यदि विपरीत फल हुयातो उसको "अकृतविद्य" छोड़के और कौन आख्या दीजा सकी हैं।

वर्तमान कालमें "पद गौरव" भी कुछ सामान्य पराक्रम प्रकाश नही कर रहाहै। जिस पुरुषने मं[illegible] ल्लेमें या घरमें मधुर भाषी वो विनयी करके प्रसि[illegible] हैं, वही पुरुष फिर जब कार्य्यालय (अफिस) के

নিম্নস্থ কর্ম্মচারীগণকে অবজ্ঞা করেন। অনেক সময়ে তাঁহাদের উপর অকারণে অত্যাচার করিয়া থাকেন। এবং বলিতে কি, তিনি সহকারীগণ অপেক্ষা শ্রেষ্ঠজীব, এবম্প্রকার ভাব প্রকাশ করেন দুঃখের কথা কি কহিব, অপরের প্রতি অত্যাচারকে ভিত্তিস্বরূপ করিয়া তাহার উপর নিজ প্রভুত্ব সংস্থাপন ও উন্নতি করিতে যত্নবান হয়েন। আমাদের বিজাতীয় প্রভুগণের ভাব দেখিয়াত কেহ কেহ অত্যাচারকে তাঁহাদের উন্নতির সোপান বিবেচনা করেন। প্রভুগণ আড়ম্বর প্রিয়, ধুমধাম দেখিলেই তাঁহারা সন্তুষ্ট হয়েন, সুতরাং যে প্রধান কর্ম্মচারী তাঁহার অধীনস্থ কর্ম্মচারীগণকে তিরস্কার করেন, তিনিই কর্ম্মে দক্ষ ও পুরস্কারের যোগ্য বলিয়া বিবেচিত হয়েন। সকলের ইহা স্মরণ রাখা উচিত যে, মিষ্ট বচনেও শিষ্ট ব্যবহারে যে প্রকার সিদ্ধ কাম হওয়া যায়, অযথা আচরণে তাহার দশ অংশের একাংশ সংসাধন হয় না। কি সমযোগ্য কি নিম্ন শ্রেণীস্থ সকলকে প্রীতি শৃঙ্খলে বদ্ধ রাখা উচিত। নতুবা কোন প্রকারেই সুচারু ফল উৎপাদন হইতে পারে না। কিছু দিন উত্তম রূপে কার্য্য নির্ব্বাহ হইতে পারে, কিন্তু গোপন ভাবে যে বিদ্বেষরূপ তরু নিম্নস্থ কর্ম্মচারীগণের অন্তঃকরণে রোপিত হয় তাহা হইতে পরিণামে বিষময় ফল উৎপন্ন হইয়া থাকে। কেহ বিবেচনা করেন যে, তিনি প্রভুর প্রিয়পাত্র। তিনি যাহা করিবেন তাহাই হইবে। কাহার সাধ্য তাঁহার আজ্ঞা অবহেলা করেন? দুঃখের কথা কি কহিব, কেহই পরিণাম দৃষ্টি করিয়া কার্য্য করেন না যে প্রভুর বলে বলীয়ান হইয়া এত আস্ফালন করি, তিনি কি চিরকাল এক স্থানে থাকিবেন? এবং যে পদের এত গৌরব করি সে পদ কি চিরস্থায়ী? পদচ্যুত হইলে লোকের নিকট কি ভাবে প্রতীয়মান হইব, তাহা সর্ব্বাগ্রে আলোচনা করা উচিত। আমার এ স্থানে একটী বহুকালের কথা স্মরণ হইল। কোন কর্ম্মচারী তাঁহার আসনের সমক্ষে নিম্ন লিখিত কবিতাটী লিখিয়া রাখিয়াছিলেন।——

"পদহীন হলে পরে বিষম বিপদ।
তাই বলি পদ পেয়ে করনাকো মদ ॥

सुशोभित होते हैं तो भयंकर मूर्त्ति धारणभी अधीन कर्म्मचारीयों को अवज्ञा करतेरहते हैं। कितने समय, हेतु विनाभी उनहोंपर अत्याचार किये करते हैं। ऐसा कि वे अपनेको सहकारीयोंसे कोइ प्रधान जीव करके मानते। दुःखकी बात क्या कहूं, उन्हों पर अत्याचार करके प्रभु बन ने औ निज उन्नति कर नेको चाहते हैं। हमारे विजातीय प्रभुओं के भाव देखकर भी कोई २ यह सोचते हैं कि दुसरे पर अत्याचार करने ही से उन्नति होती है। प्रभुगण आडम्बरका प्रेमी है, धुमधाम मचाने ही से वे संतुष्ट होते हैं, सुतरां उनके जिस प्रधान कर्म्मचारी ने अपने अधीन कर्म्मचारी यों को तिरस्कार करते है, उन्हीं को कार्य्यनिपुण औ पुरस्कार के योग्य करके समझे जाते हैं। सवकिसही को इसका स्मरण करना उचित है, जो मिठी वचन औ सद्व्यवहारसे जिस भांति काम मिलता है वलप्रकाश करने से उसका दशां शभी होना कठिन होता है। निज अथवा नीच जिस किसही श्रेणीका पुरुष नहो सवको प्रेमकी डोरीसे वन्धन कर रखना चाहिये। नहीं तो किसही उपाय मे सुचारु फल मिलनेवाला नहीं है। कुछ दिन उत्तम भांति काम चल सका सही, किन्तु अधीन कर्म्मचारी योंके अन्तःकरण में गुप चुप विद्वेष रूप तरु रोपाजाता है, उसमे अंतमें विषमय फल उत्पन्न हुआ करता हैं। कोइ ऐसाभी विचारते हैं कि वे प्रभूके प्यारे हैं, वेजो कुछ करेंगे, सोही होगा। किसका सामर्थ्य है कि उनकी आज्ञा को टारे! दुःखकोवात क्याकहं, कोइ अन्त विचारके काम नहीं करते हैं। जिस प्रभूके वल से वलवान हुए इतना तड़प रहाहुं, वे क्या बरावर एक जगह में रहेंगा ऽ औ जिस पद पाकर इतना गर्व्व कर राहुं वह पदभी क्या चिरस्थायी हैं ऽ पदच्यूत होनेसेलोगने मुझे कैसा समझेगा, यह विचार पहलेही करना चाहिये। इसस्थानमें मेरे वहुत दिन की एकवात स्मरण पड़ी। किसही कर्म्मचारीने अपने वैटने काजगहके सम्मुख इस कविताको लिख राख छोड़ाथा।

न करो वड़ाइ कहुं. दोदिन विचारिये
छोड़दो समदमद पद काज नेहारिये ॥

সম্পদের সহ সদা বিপদ বিধান।
করোনা করোনা কভু শ্রেষ্ঠতার ভান॥

এই কবিতাটী সকলের অন্তর মধ্যে অঙ্কিত করিয়া রাখা উচিত।

"ধর্ম্মমদ" সর্ব্বাপেক্ষা অধিক অনিষ্ঠজনক। ইহাতে উন্মত্ত হইয়া এক সম্প্রদায়কে নিন্দাবাদ করিয়া থাকেন। গ্লানি সুচক বাক্য সকল কখন, কখন প্রকাশ পায়, কখন অপ্রকাশ্য বক্তৃতায় এবং কখন বা পুস্তকেও প্রকটিত হইয়া থাকে। এক সম্প্রদায় ভুক্ত ব্যক্তি অপর সম্প্রদায়ের ব্যক্তির সহিত বাক্ যুদ্ধ করিয়া থাকেন এবং উভয়ের মধ্যে কটু বচন সকল প্রয়োগ হইয়া থাকে। আমি যে ধর্ম্ম অবলম্বন করিয়াছি ইহাই শ্রেষ্ঠ ধর্ম্ম, ইত্যাকার অহঙ্কার পূর্ণবাক্য প্রয়োগ করিয়া অপরকে স্বদলভুক্ত করিবার জন্য অন্যায় উপায় পর্য্যন্ত অবলম্বন করেন। এবং অন্যের অবলম্বিত ধর্ম্ম যে নিকৃষ্ট ইহা সপ্রমাণ করিতে গিয়া তাঁহার উপাসিত দেবতার কত নিন্দা করিয়া থাকেন। আমি অতি ধার্ম্মিক, এই ভাবে স্ফীত হইয়া অপর ধর্ম্মাবলম্বীদিগকে অতিশয় ঘৃণা করেন, এবং তাঁহারা সচ্চরিত্র ও মহামনা হইলেও এক ধর্ম্মাক্রান্ত না হন বলিয়া তাঁহাদের সহিত বাক্যালাপ করিতে ইচ্ছা করেন না। এমন কি পিতা মাতা ও আত্মীয়গণ যাঁহাদের দ্বারা বাল্যকাল অবধি বিশেষরূপে উপকৃত হইয়াছেন, তাঁহারা ভিন্ন ধর্ম্মাবলম্বী হইলে তাঁহাদের প্রতি কর্ত্তব্য কর্ম্ম বিস্মৃত হয়েন। অধিক কি বলিব, ঈশ্বর লাভে উন্মত্ত হওয়াও দোষের বিষয়। অবিহিত বা স্বেচ্ছা প্রবৃত্ত সন্ন্যাস ধর্ম্মাবলম্বীগণই তাহার দৃষ্টান্ত স্থল * তাঁহারাও তাঁহাদের কর্ত্তব্য কর্ম্ম উপেক্ষা করিয়া পরম পিতার প্রীতি লাভ করিবার অভিলাষ করেন। কিন্তু ইহা তাঁহাদের বিষম ভ্রম। পিতা মাতার প্রতি, পরিবারের প্রতি, আত্মীয় বন্ধুগণের প্রতি এবং সমাজের প্রতি যাহা যাহা কর্ত্তব্য তাহা উপেক্ষা করিয়া ঈশ্বরকে লাভ করিবার আশা করা দুরাশামাত্র। অনেকে সংসারে থাকিয়া ধর্ম্ম ধর্ম্ম করিয়া এরূপ উন্মত্ত হয়েন যে, কেবল বক্তৃতার দ্বারা ধর্ম্মপ্রচার

*হৃদয়ে প্রকৃত বৈরাগ্যের উদয় হইলে সন্ন্যাসী বিধি নিষেধ পরিত্যাগ করিয়া ব্রহ্মে চিত্ত সমাধান করিতে পারেন, ইহাতে শাস্ত্রানুসারে তিনি নিন্দিত নহেন। ধঃ প্রঃ সং

भूट यह सम्पद् तेरा आपतका खमरे
सुझ बुझ देख तुको भांति भांति जानरे॥

हर किसही को चाहिये कि इस कविताको खुब स्मरण रखे।

"धर्म्म-मद" सबसे अधिक हानी कारक है। इससे उन्मत्त होकर एक सम्प्रदाय दुसरा सम्प्रदायकी निन्दा किये करतेहैं। कभी प्रकाश्य संवाद पत्रमें, कभी प्रकाश्य वक्तृता में, कभी पुस्तक में भी गाली बकते रहतेहैं। एक सम्प्रदायके लोग दुसरे सम्प्रदायोंसे विचारते है औ दोनों परस्पर कुवचन भी बोला करतेहैं। मैंजो धर्म्मको अवलम्बन कियाहुं, सोही श्रेष्ठहै, इतना अहंकार पूर्न वचन से दुसरेको अपने सम्प्रदाय में लानेके निमित्त अन्याय उपाय अवलम्बन करना कबूल करते हैं। औ दुसरेके अवलम्बन किये हुए धर्म्मकी निकृष्टता प्रमाणार्थे उनके उपास्य देवता कोभी कितनी निन्दा करते रहते हैं। अपनी धार्म्मिकताकी फुला न समाये दूसरे धर्म्मावलम्बीयों के अत्यन्त घृणा करते हैं औ यदिवे सच्चरित्र औ महामना भीहों तब भी समधर्म्म होने बिना उनसे वाक्यालाप भी करनेको इच्छा नहीं करतेहैं ऐसा कि पितामाता औ आत्म सम्बन्धी गण, जिन्होने लड़कपनसे बहुत उपकार करतेआये, उन्होंके ओर भी निज कर्तव्य भूलजातेहैं। अधिक कहां तक कहा जाय, ईश्वर लाभार्थे उन्मत्त होनाभी बड़ादोष करके प्रसिद्ध होताहै। अविहित औ स्वेच्छा प्रवृत्त सन्यासीयोंही इसका दृष्टांत का (१) स्थलहै उन्होने निज २ कर्त्तव्य धर्म्मोंको उपेक्षा करके परमपिताके प्रेम चाहा करतेहैं किन्तु यह उन्होंके विषम भ्रमहै। पितामाताके ओर, पुत्र परिवारादिके ओर, मित्र स्वजनोंके ओर और समाजके ओर जिस २ भांति कार्य्य करना चाहिये, वे सब उपेक्षाकर ईश्वर लाभार्थे आशाकरना दुराशा मात्र है। बहुतेरेलोग गृहाश्रममें रहकर "धर्म्म" धर्म्म" करके ऐसा उन्मत्त होते है कि उनहोंको केवल वक्तृताही से धर्म्म प्रचार करनेको देखाजाता है। किन्तु उन्हींको जो और भी गुरुतर कार्य्य करना है, सो भूल

(१) हृदयमें प्रकृत वैराग्य उदय होनेपर सन्न्यासी विधि निषेधको छोड़कर ब्रह्ममें चित्त समाधान कर सक्ते हैं, इसमें शास्त्रानुसार वे निन्दित नहीं।

করিতে তাঁহাদিগকে সমুৎসুক দেখা যায়। কিন্তু তাঁহাদের যে অন্যান্য গুরুতর কার্য্য আছে তাহা বিস্মৃত হয়েন। অনেকে ধর্ম্মের উন্মত্ততায় সার কার্য্য বিস্মৃত হইয়া মুখে ধর্ম্মের আড়ম্বর করিয়া থাকেন। মনের পৌত্তলিকতা দূর করা দূরে থাক্ বাহ্যিক পৌত্তলিকতার জন্য অধিক ব্যগ্রতা প্রকাশ করেন। কোন কোন ব্রাহ্ম ইহার দৃষ্টান্ত স্থল। পিতা মাতা কোন পৌত্তলিক কার্য্য করিবার জন্য সাহায্য প্রার্থনা করিলে তাহা গ্রাহ্য করা হয় না। এদিকে অন্তঃকরণ পাপচিন্তায় পরিপূর্ণ এবং মনোমধ্যে অহঙ্কার সম্পূর্ণ। কিন্তু এভাব কার্য্যেতেও প্রকাশ পাইয়া থাকে। ধর্ম্মের উন্মত্ততা হইলে অধিক আড়ম্বর লক্ষিত হয়। ইহাও দোষের কারণ, এবং এই আড়ম্বরের বেগ অবরোধ করিতে না পারিয়া অনেকে উপধর্ম্মের আশ্রয় পাইয়া থাকেন। উপরে যাহা বিবৃত হইল, তদ্ভিন্ন অনেক বিষয়েই মদের কার্য্য দেদীপ্যমান আছে। কেহ রূপের মদ, কেহ গুণের মদ এবং কেহ কেহ কোন সৎকার্য্য করিয়াও মনোমধ্যে অহঙ্কার করিয়া থাকেন। যিনি সচ্চরিত্র, তিনি অপরের সহিত আপনার তুলনা করিয়া মনে মনে অহঙ্কার করিয়া থাকেন। এভাব অন্তঃকরণে উদয় হইয়া পরক্ষণেই জ্ঞান প্রভাবে বিলয় প্রাপ্ত হইয়া যায়। কিন্তু যে মদমত্ততা উৎপাদন করে, সেই মদই বিষম ভয়াবহ। এমন কি, সদ্গুণের মত্ততাও অনিষ্ট জনক। যিনি দয়াগুণে মত্ত হয়েন তিনি দান করিয়া এ প্রকার সর্ব্বস্বান্ত হয়েন যে, পরিণামে পরিবার প্রতিপালন ও তাঁহার পক্ষে ভারবোধ হইয়া উঠে। যিনি ক্ষমতাগুণে মত্ত হয়েন, তিনি অতি জঘন্য ব্যক্তির প্রতি ক্ষমা প্রকাশ করিয়া, প্রকৃত পক্ষে নির্দ্দোষী ব্যক্তির উপর অন্যথা ব্যবহার করেন, এবং সত্যেরও অপলাপ করেন।

কোন বিষয়েই মত্ততা শ্রেয়স্কর নহে। মদে উন্মত্ত হইলে আমাদের স্মরণ রাখা কর্ত্তব্য, আমরা কোন প্রকারেই অহঙ্কার করিতে পারি না। যেহেতু আমরা অতি নিকৃষ্ট জীব এবং যাহা কিছু প্রাপ্ত হইয়াছি তাহা ঈশ্বর প্রসাদাৎ। এবং ইহাও আমাদের স্মরণ রাখা উচিত যে, কালের করাল কবলে পতিত হইলে আমাদের সমুদয় অহঙ্কার চূর্ণ হইবে

जाते है। बहुतेरे लोग ऐसेभी हैं कि धर्म्मोन्मत्तता करके सार कार्य्य भूलकर वाचनिक धुम धाम मचा रहे हैं। मनकी रची जड़ स्थूल मूर्त्तिकी सेवा छोड़ना तो किनारे रहगयी, बाहरकी मूर्त्ति पूजा उठावनेके अर्थ अधिक व्यग्रता देखाते हैं कोइ २ ब्राह्म इसके दृष्टांत हैं। पितामाता मूर्त्ति पूजा सम्बंधी कोइ कार्य्यके अर्थ यदि कुछ सहायता चाहें तो ग्राह्य नहीं कियाजाता है, फिर देखो तो उनके अन्तःकरण ऐसा हैं जो पाप चिन्तासे परिपूर्ण औ चित्त अहंकारसे फुलाहुआ है, कार्य्य कालमेंभी ऐसा देख पड़ता हैं। धर्म्मकी उन्मत्तता करके बहुत आड़म्बरका प्रकाश होना भी दोषावह हैं और बहुतेरे लोग इस आड़म्बर की गति रोकनेमें असमर्थ होकर किसही उप धर्म्मका आश्रय लेलेते हैं। ऊपरमें जितना लिखा गया है उतना छोड़के और भी बहुतेरे विषयमें मदका कार्य्य देख पड़ता हैं। कोईतो रूपलावण्यका मद, कोईतो गुणादिका मद औ कोई २ किसी उत्तम कार्य्य करके भी अहंकार न समाता है। जो सुचरित्र हैं, वे दूसरे की बराबरीसे अपनी बड़ाई करतेहैं, इतनी बातें अन्तःकरण में उठकर क्षणभरमें ज्ञानका प्रभावसे विलीन हो जाती है; किन्तु जिसभांति मदने उन्मत्तताको उत्पादन करता है, वही मदही बड़ा भयंकर है। ऐसाकि, माना सद्गुण की उन्मत्तता हानि जनक है। जोने दया गुणमें उन्मत्त होता, वे दान करके ऐसा निःस्व होजाते कि अन्तमें उनके स्त्री पुत्रादिको पालन करना भी भार बुझ पड़ता है। जोने क्षमागुण से उन्मत्त हुवा, वे अत्यन्त घृणित पुरुष को ओर क्षमा प्रकाश करके यथार्थतः निरपराधी व्यक्तिके ऊपर अनुचित व्यवहार करते औ सत्यमेंभी बुराइ डानते है।

किसही विषय में उन्मत्त होनाश्रेयस्कर नहीं मदसे उन्मत्त होनेपर हमको स्मरण रखना चाहिये जो हम किसही प्रकार से अहंकार नही कर सक्ते हैं, क्योंकि हम सब अति निकृष्ट जीव है, और जोकुछ मिलाहै सबही ईश्वरकी कृपा करके जानबा और भी स्मरण करना चाहिये जो कालके कराल कवल में गिरनेसे हमारे समस्त अहंकार चूर्ण हो जागा।

কি ভয়ানক অত্যাচার ! ! !

গত বর্ষ হইতে আর্য্যধর্ম্মাবলম্বীগণ যাবনিক অত্যাচারে নিরতিশয় নির্যাতনগ্রস্ত হইতেছেন। কোমলহৃদয় আর্য্য-সন্তানগণের একমাত্র আশাস্থল দুর্ব্বলের বল বৃটিশসিংহ যদি রাজভক্ত প্রজাবৃন্দের দুঃখ দূরীকরণার্থ দুষ্টদলন সমর্থ বাহু প্রসারণ না করেন, তাহা হইলে আর্য্যবংশীয়বর্গের গত্যন্তর নাই এবং ব্রিটিশ কেশরীও বীরকুল কলঙ্ক বলিয়া সাগরাম্বরা ধরা মণ্ডলে নিন্দিত হইবেন। মুন্সী ইন্দ্রমণির বিরুদ্ধে যবনদিগের অযথা অভিযোগের বিষাদ বিষাগ্নিময় বিচারফল স্মরণ করিলে এখনও হৃদ্বেদনা উপস্থিত হয়। ভাগলপুর, কাশী, মির্জা-পুর, জুয়ানপুর, আদি আর্য্যপ্রধান স্থানে গোহত্যা জন্য যবনার্য্য বিগ্রহে সর্ব্বত্রই যবন পক্ষপাতিত্ব দর্শনে দুর্ব্বল আর্য্য প্রজাগণের মনঃপীড়া জন্মিয়াছে। সম্প্রতি আবার সংবাদপত্র পাঠে শরীর রোমাঞ্চিত, হৃদয় বিকম্পিত ও মস্তিষ্ক বিঘূর্ণিত হইয়া উঠিল। ভাউলপুরে আর্য্য মুসলমানদিগের মধ্যে একটী ক্ষুদ্র বিদ্রোহ উপস্থিত হইয়াছে। তথাকার অনুদার প্রকৃতি ক্ষুদ্রবুদ্ধি নবাব স্বধর্ম্ম পক্ষ রক্ষার্থ আদেশ করিয়াছেন যে, আর্য্যদিগের দেবমন্দিরমালা ভূমিশায়ী ও মূর্ত্তিগুলি ভগ্ন করিতে হইবে তদুপরে মুসলমানগণ প্রস্রাব করিয়া দিবে। অহো! এতাবৎ লিখিতেও আমাদিগের লেখনী অপবিত্র হইল। হা কালাপাহাড়! তোমার চির কলঙ্কিনীশক্তি কি এখনও এ পবিত্রধাম পরিত্যাগ করে নাই! অহো বৃটিশসিংহ আজ তোমার সম্মুখে তোমার শান্তিময় রাজ্যে তোমারই লালিত একটী ক্ষুদ্র মৃগ শিশুর এত বিক্রম! এত দর্প! এত স্পর্দ্ধা! যে তোমার নিরীহ প্রজাপুঞ্জের ধর্ম্মহানির সঙ্গে সঙ্গে তাহাদের মর্ম্মশোণিত পান করিতে লাগিল। তুমি কি শরণাগতগণের সহায়ক নও! হা ভারতেশ্বরি! তোমার সম্রাজ্ঞী উপাধি কি কেবল আমাদিগেরই জন্য! ঈদৃশ অত্যাচারকারীবর্গের দর্প দলনার্থ নহে!! ভারত! তোমার বৈধশ্রদ্ধা, ভক্তি ও সেবার ত্রুটি জন্যই ধর্ম্মের এই দুর্দ্দশা ঘটিতেছে, সাবধান,সাবধান!! হে পরমাত্মন্! এই ঘোর বিপ্লব কালে ভারতকে সর্ব্বথা নিরুপদ্রব করিয়া দেও।

क्या भयङ्कर अत्याचार ! ! !

विगत वर्षसे आर्य्य धर्म्मावलम्बिगण यवनोंकी अत्याचार से अत्यन्त क्लेशित हो रहे हैं। कोमल हृदय आर्य्य सन्तानोंकी एकमात्र आशाकी स्थल दुर्ब्बलोंकेवल ब्रिटिशसिंह यदि राजभक्त प्रजाओंके दुःख दूरीकरनार्थ दुष्टदलन समर्थ अपने बाहु न पसारेंतो आर्य्यवंशीयोंकी और कुछ भी गति नहीं देख पड़ती है, औ सागराम्बरा वसुन्धरा ब्रिटिशसिंह को भी "वीर-कुल-कलङ्क" इस भान्ति पुकारती हुई निन्दा करती रहेगी। मुनसी इन्द्रमणिके विरुद्ध में यवनोंने जो अन्याय अभियोग उठायेथे उसका विषाद-विषाग्निमय विचार सिद्धान्त स्मरण करके अबतक भी खेद नहीं समायाजता है। भागलपूर, काशी, मिर्जापूर, जौनपूर आदि आर्य्य प्रधान स्थानोंके जहां जहां गोवधके निमित्त यवनार्य्य विग्रह मचाथा, उन सर्व्वत्रही यवनोंके ओर पक्षपात देख देख कर दुर्ब्बल आर्य्यप्रजाओंके मन में बड़ाही खेद का उदय हुआ। फिर सम्बादपत्र पढ़कर हमारे शरीर तो रोमाञ्चित, हृदय विकम्पित औ मस्तिष्क मण्डल विघूर्णित हो उठें हैं। बहावलपूरके आर्य्य औ मूसलमानोंके मध्य में बड़ी लड़ाई मच गयी। वहांके अनुदार प्रकृति क्षुद्रमति नव्वाबने स्वधर्म्मपक्षरक्षार्थ यह आज्ञादी हैं, कि आर्य्योंके देव मन्दिरें गिरायेजावें, मूर्त्तियेंतोड़ीजाय औ मुशलमान उनपर प्रस्राव कर दें!!! अहो! इतना लिखते भी हमारी लेखनी अपवित्र हो गयी। हा कालापाहाड़! तेरी चिरकलङ्किनी शक्ति क्या अबतक भी इस पवित्र धामको न छोड़ी? अहो ब्रिटिशसिंह! तेरे सम्मुख, तेरी शान्तिपूर्ण राज्य में, तेरा पाला हुआ एक क्षुद्र मृग-शिशु का इतना विक्रम, इतना दर्प औ इतना स्पर्द्धा है, जो तेरे निर्द्दोष प्रजा पुञ्जकी धर्म्महानि के साथही साथ उन्होंके मर्म्म शोणित पीने लगा! तु क्या शरणागतोंके सहायक नहीं है। हा भारतेश्वरि! तेरी "सम्राज्ञी" यह उपाधि क्या केवल हमारे ही लिये बनी है! इन दुराचारियोंके दर्प दलनार्थनहीं!! हे भारत! तेरी वैधश्रद्धभक्ति औ सेवा घट गयी, अस्मात धर्म्मकी यह दुर्द्दशा होरही है, सावधान!! सावधान! हे परमात्मन्! इस घोर विप्लवके समय भारतको सर्व्वथा उपद्रव शून्य कीजिये।

রাজকীয় ঘোষণা।

ক। আমি প্রত্যেককে (উর্দ্ধহস্তে উচ্চৈঃস্বরে) সম্বোধন করিয়া বলিতেছি যে রাজদ্রোহীদলের দমন জন্য আমি নিযুক্ত হইয়াছি। রাজ রাজেশ্বর শ্রীমন্মহারাজের আদেশ রাজলিপিতে (১) প্রকাশিত আছে; শীঘ্র রাজনীতিজ্ঞ অধ্যাপকগণের (২) নিকট রাজবিধি বিদিত হও ও তদনুসারে কার্য্য করিতে থাক। যে সকল পাষণ্ড দোর্দ্দণ্ড-প্রতাপ রাজাকে অবজ্ঞা পূর্ব্বক তাঁহার বিরুদ্ধবাদী বা বিদ্রোহী হইবে, আমি তাহাদিগকে ঘোর অন্ধকারময় কারাগারে (৩) অবরুদ্ধ রাখিব ও প্রচণ্ড প্রহার দণ্ডে তাহাদিগের উন্নত মুণ্ড চূর্ণ করিয়া দিব।

খ। যাহারা রাজসিংহাসনে বলপূর্ব্বক স্বয়ং অধিরোহণ করিতে চেষ্টা করিবে (৪) অথবা রাজসম্পত্তিতে নিজ অধিকার বিস্তার করিতে যাইবে, (৫) আমি রাজাজ্ঞায় প্রবল পদাঘাতে তাহাদিগকে হতচেতন করিয়া ফেলিব।

গ। যাহারা নিয়মিত সময়ে রাজস্ব-সচীবের (৬) নির্দ্ধারিত নিজ নিজোচিত কর (৭) প্রদান না করিবে, আমি তাহাদিগকে প্রজ্জলিত হুতাশন কুণ্ডে নিক্ষেপ করিব।

ঘ। যাহারা রাজার বা রাজস্ব-সচীবের বা রাজভক্ত প্রজার (৮) বিরুদ্ধে কোন কথার জল্পনাও করিবে, আমি তাহাদিগকে কীটাকীর্ণ পুরিষকুণ্ডে অধোমুণ্ডে প্রোথিত করিয়া রাখিব।

সাবধান! সাবধান!! সাবধান!!!

যমলোক। } রাজানুজ্ঞাকারী
কাল রাত্রি } দুর্জ্জন-দর্প দলন দণ্ডধর যম।

প্রাপ্ত পুস্তক সমালোচনা।

১। উপনিষচ্চতুষ্টয় (শ্রীগোপীচন্দনোপনিষৎ, শ্রীতুলসীমালোপনিষৎ, শ্রীহরিনামোপনিষৎ, শ্রীরাধিকোপনিষৎ)। আমাদিগের বৃন্দাবনস্থ পরম বন্ধু শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত রাধাচরণ গোস্বামী মহাশয় কর্ত্তৃক

(১) শ্রুতি। (২) বেদবেত্তা ব্রহ্মজ্ঞপুরুষ।
(৩) গর্ভবাস ও তমোময় নরক।
(৪) "অহংকর্ত্তা, অহংভোক্তা" ইত্যাকার অভিমান।
(৫) "স্ত্রীপুত্রাদি আমার" ইত্যাকার বোধ।
(৬) সদ্গুরু। (৭) ভগবদুপাসনা। (৮) সাধু মহাত্মাগণ।

सरकारी टिण्टोरा।

क। मैं हरकिसही को (हाथ उठाये ऊंची स्वरसे) पुकार कर कहताहूं जो राजद्रोही दलका दमनार्थ मैं, नियत हुआ ने। राज राजेश्वर श्रीमन्महाराज के आदेश राजलिपि में (१) प्रकाशित है। शीघ्रही राजनीति के अध्यापकों- (२) के निकट राजविधि विदित होलो औ तदनुसार कार्यकरते रहो। जितने पाषण्ड ने दोर्द्दण्ड प्रताप राजाको अवज्ञा पूर्व्वक उनका विरूद्धवादी वा विद्रोही होगा, मैं उन्हों को घोर अन्धकारमय कारागार में (३) बन्धकर रखुंगा औ प्रचण्ड प्रहार दण्ड से उन्होंके उन्नत मस्तकोंको विचूर्णकर दुंगा।

ख। जो लोग बलपूर्व्वक राजसिंहासन पर स्वयं अधिरोहण करनेकी चेष्टा करेंगे (४) अथवा राजसम्पत्ति में निजअधिकार विस्तार करने चाहेंगे (५) राजाकी आज्ञानुसार मैं प्रबल पदाघात से उन्होंको हतचेतन कर डालुंगा।

ग। जोलोग नियमित समय राजस्व-सचीव (६) के निद्धारित निज निजोचित कर (७) नहीं देंगे, मैं उन्होंको लहरता हुआ हुताशन कुण्ड में फेंक दूंगा।

घ। जो लोग राजा वा राजस्व-सचीव वा राजभक्त प्रजा (८) के विरूद्ध में कोइ एक बातभी कहेंगे मैं उन्होंको कीड़ाओंसे भरा हुआ विष्टाकुण्ड में अधोमुख गाड़ रखुंगा।

सावधान! सावधान!! सावधान!!!

यमलोक। } राजानुज्ञाकारी
कालरात्रि } दुर्ज्जन-दर्प-दलन दण्डधर यम।

प्राप्त पुस्तकों की समालोचना।

१। उपनिषच्चतुष्टय (श्रीगोपीचन्दनोनिषत्, श्रीतुलसीमालोपनिषत्, श्रीहरिनामोपनिषत्; श्रीराधिकोपनिषत्.)—हमारे वृन्दावनस्थ परम मित्र श्रद्धास्पद श्रीयुक्त राधाचरण गोस्वामी

(१) श्रुति। (२) वेदवेत्ताब्रह्मज्ञ पुरुष।
(३) गर्भवास वा तमोमय नरक।
(४) "मैं कर्त्ता हुं" "मैं भोक्ता हुं", इत्याकार अभिमान।
(५) "स्त्री पुत्रादि सबमेरे" हैं, इत्याकार बोध।
(६) सद्गुरु। (७) भगवदुपासना। (८) साधु महात्मागण।

সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত। মূল্য ১০ মাত্র। ইহাতে বেদার্থানুসারে 'গোপীশব্দে' সংরক্ষিণী শক্তি অর্থাৎ যিনি জীবদিগকে নরক ও মৃত্যুভয় হইতে রক্ষা করেন,'চন্দন শব্দে' ব্রহ্মানন্দ,অনাদ্যা নিত্যা-প্রকৃতির 'আহ্লাদিনী' নাম্নী প্রধানা শক্তির নাম 'রাধা' ইত্যাদি এইরূপ অর্থ প্রকাশিত হইয়াছে। এতদুপনিষৎ পাঠে অধ্যাত্ম বৃন্দাবন লীলারই পরিচয় পাওয়া যায়। বাহ্য পূজা ও বাহ্য অনুষ্ঠান অপেক্ষা যে আধ্যাত্মিক ক্রিয়া স্ফূর্ত্তি অতীব মনোহর, তাহা গোস্বামী মহাশয়ের যত্নে অনেকেরই বোধগম্য হইবে, এজন্য প্রকাশক আমাদের একান্ত ধন্যবাদার্হ। আর্য্যধর্ম্মাবলম্বীগণ যদি এইরূপ উপনিষদাদি সর্ব্বদা পাঠ করেন, তাহা হইলে শ্রীমদ্ভাগবৎ ও পুরাণগুলির প্রকৃত মর্ম্মাবগত হইয়া আর্য্য প্রতিভা লাভ করিতে পারেন।

২। ফুলবালা (গীতিকাব্য)—গাজীপুরস্থ শ্রীযুক্ত বাবু দেবেন্দ্রনাথ সেন মহাশয় প্রণীত। মূল্য ।০ মাত্র। রচয়িতা গোলাপ, কদম্ব আদি ১৮টী পুষ্পকে সম্বোধন করিয়া তাহাদের ভাবের সহিত অনেক স্থলে সামাজিক রীতির তুলনা করিয়াছেন কিন্তু প্রকৃতির আদরের সামগ্রী ফুলগুলি বিধাতার বিশ্বমনোহারী শিল্প চাতুরির গুণ কীর্ত্তন করিলে আমরা অপেক্ষাকৃত সুখী হইতাম। কবিতাগুলি সুললিত হইয়াছে।

৩। পার্থিব শিবলিঙ্গ পূজনবিধি—মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার অন্যতর মুখ্য সভাসদ শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত কালীপ্রসাদ চৌধুরী মহাশয় কর্ত্তৃক প্রকাশিত। যোগ্যপাত্রে বিনামূল্যে বিতরিত হইতেছে। ইহাতে শিবপূজার প্রণালী ও মন্ত্রাদির বিধান, বোধ সুগমার্থ সংস্কৃত প্রমাণসহ বঙ্গভাষায় লিখিত হইয়াছে। এই পুস্তকখানি দ্বারা অনেক নিত্য-পূজনপরায়ণ আর্য্য-সন্তান বিশেষ উপকৃত হইবেন। পরোপকারার্থ যত্ন, পরিশ্রম ও অর্থ-ব্যয়াদি জন্য প্রকাশক সাধারণ সমাজে ধন্যবাদার্হ হইয়াছেন।

महशय से संस्कृत भाषामें प्रकाश किया हुआ। मूल्य ১)॥ मात्र है। इस में वेदार्थ के अनुसार "गोपी" शब्दका अर्थ संरक्षणी शक्ति, अर्थात् जो ने जीवोकों नरक औ मृत्युका भयसे रक्षा की करती हैं; "चन्दन" शब्दका अर्थ ब्रह्मानन्द, अनाद्या नित्या प्रकृति की "आह्लादिनी" नाम्नी प्रधानाशक्तिका नाम "राधा" लिखी गयी हैं। इन उपनिषद्ोंके पटनसे अध्यात्म वृन्दावन की लीलाही का परिचय मिलता है। गोस्वामी जीके यत्नसे इतना हर किमही को बुझ पड़ेगा कि वाह्य पूजा औ वाह्यअनुष्टान की अपेक्षा आध्यात्मिक क्रियाकी स्फूर्त्ति अतीव मनोहारिणी है। इस लिये प्रकाशक मेरा धन्यवादके योग्य हैं। आर्य्य धर्म्मावलम्बियो यदि सर्व्वदा इसभान्ति उपनिषदादि पाठ करते रहें तो श्रीमद्भागवत औ पूराणोंके प्रकृत अभिप्राय समझकर आर्य्य प्रतिभा लाभ कर सकेंगे।

२। फल-बाला (गीतिकाव्य) गाजीपूरस्थ श्रीयुक्त बाबु देवेन्द्रनाथ सेन महाशयनेबनया। मूल्य ।) मात्र है। रचनेहारे गुलाब, कदम्ब आदि कोई १८ पुष्प को सम्बोधन कर उन्होंकी शोभा औ भावके साथ अनेक स्थान में सामाजिक रीतिका दृष्टान्त देखाये हैं, किन्तु फूलों, जो कि प्रकृतिके अति आदरके सामग्री हैं, यदि विधाताकी विश्वमनोहारिणी शिल्प-चातुरीकागुण-कीर्त्तन करती, तो हम औरभी अधिक सुखी होतें। कविताओंकी रचना सुललित हुई है।

३। "पार्थिव शिवलिङ्ग पूजन विधिः"—मुङ्गेर आर्य्य धर्म्मप्रचारिणी सभाके अन्यतर मुख्य सभासद श्रद्धाके योग्य श्रीयुक्त कालीप्रसाद चौधुरी महाशय ने प्रकाश किये हैं। योग्य पात्रोंको मूल्य लियेबिना बांटी जाती है। साधारण के बोधसुगमार्थ इस में शिवपूजाकी प्रणाली औ मन्त्र आदिके विधान प्रमाण के साथ बङ्गभाषा में लिखी गयी। इस पुस्तक करके बहुतेरे आर्य्य-सन्तान, जो कि नित्य शिवपूजा करते हैं, भली भान्ति उपकृत होंगे। परोपकार के लिये इतना यत्न, परिश्रम औ व्यय करनेके अर्थ सर्व्वसाधारण के निकट प्रकाशक महाशय अवश्यही धन्यवादके योग्य हैं।

৩য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত বাবু প্যারীমোহন বন্দোপাধ্যায়	কলিকাতা	৩।৵০
,, ,, কাশীনাথ চট্টোপাধ্যায়	লক্ষৌ	৩।৵০
,, ,, গৌরচন্দ্র রায়	ভগলপুর	৩।৵০
,, ,, ক্ষেত্রমোহন ভড়	কলিকাতা	১।৵০
,, ,, কৃষ্ণধন মিশ্র	পাকড়	১।৵০
,, ,, তারণবন্ধু ভট্টাচার্য্য	ভট্টপল্লী	১।৵০
,, ,, রামচন্দ্র সরকার	ইবোন স্কুল	১।৵০
,, ,, কৃষ্ণকিশোর দত্ত	কেশবপুর (শ্রীহট্ট)	১।৵০
,, ,, রাসবিহারি ভট্টাচার্য্য	জামালপুর	১।৵০

বিদেশীয় এজেন্টগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	ভাগলপুর
,, ,, যাদবচন্দ্র বন্দোপাধ্যায়,	মতিহারী।
,, ,, জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর।
,, ,, পূর্ণচন্দ্র বন্দোপাধ্যায়,	রামপুরহাট।
,, ,, সাতকড়ী বন্দোপাধ্যায়,	কলিকাতা।
,, ,, বিহারিলাল রায়,	জামালপুর।
,, ,, রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ
,, ,, উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	ঐ
,, ,, ভোলানাথ বন্দোপাধ্যায়,	বহরমপুর।
,, ,, রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম।

উপরোক্ত এজেন্ট মহোদয়গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয়গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

ধর্ম্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্যধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহসহকারে ধর্ম্মপ্রচারকে প্রকাশ করিব।

২। ধর্ম্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মুঙ্গের "আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভায়," আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মনিঅর্ডারে, পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩ সংখ্যা হইতে ডাকব্যয়-সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে।

উত্তম কাগজ,	বার্ষিক	৩।৵০,	প্রতিখণ্ড ।৵০
মধ্যম ঐ	,,	২।৵০	,, ।০
সাধারণ ঐ	,,	১।৵০	,, ৵০

মুঙ্গের, আর্য্যধর্ম্ম-প্রচারিণী সভা } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন। সম্পাদক।

☞ এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

३य वर्षका मूल्यप्राप्तिस्वीकार।

श्रीयुक्त बाबु प्यारीमोहन बन्द्योपाध्याय,	कलकत्ता	३।≠
,, ,, काशीनाथ चट्टोपाध्याय,	लखनौ	३।≠
,, ,, गौरचन्द्र राय,	भागलपुर	३।≠
,, ,, क्षेत्रमोहन भड़,	कलकत्ता	१।≠
,, ,, कृष्णधन मिश्र,	पकौड़	१।≠
,, ,, तारणबन्धु भट्टाचार्य्य,	भट्टपल्ली	१।≠
,, ,, रामचन्द्र सरकार,	इरौनस्कुल	१।≠
,, ,, कृष्णकिशोर दत्त,	केशवपुर (श्रीहट्ट)	१।≠
,, ,, रासविहारि भट्टाचार्य्य,	जामालपुर	१।≠

विदेशके एजेण्ट सबका नाम।

श्रीयुक्त बाबु पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय,	भागलपुर।
,, ,, यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	मतिहारी।
,, ,, जगद्बन्धु सेन,	लाहोर।
,, ,, पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट।
,, ,, सातकड़ी बन्द्योपाध्याय,	कलकत्ता।
,, ,, बिहारीलाल राय,	जामालपुर।
,, ,, रमेशचन्द्र सेन,	जामालपुर।
,, ,, उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय,	जामालपुर।
,, ,, भोलानाथ बन्द्योपाध्याय,	बहरमपुर।
,, ,, राधिकानाथ गोस्वामी,	कलियाम।

उपरोल्लिखित एजेण्ट महोदयोंके पास तत्तत् स्थानके ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊंगा।

धर्म्मप्रचारकसम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करनेके निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओंमें कोई प्रस्ताव लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होनेसे आनन्द औ उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश कियाजायगा।

२। धर्म्मप्रचारक पत्रका मोल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मुङ्गेर "आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके" पतेसे मेरे पास भेजने होगा। पत्र बैरिं होतो नहीं लिया जायगा।

३। मौल्य सम्भवतः पोष्टाल मनि अर्डार करके भेजना। यदि डाक टिकिट में भेजें तो आध आनिया टिकिट करके भेज देवें।

४। धर्म्मप्रचारक १म भाग, १३ संख्यासे डाककर सहित अग्रिम वार्षिक मौल तीन प्रकार हुआ।

उत्तम कागजपर,	वार्षिक	३।≠	प्रतिसंख्या ।≠
मध्यम ,,	,,	२।≠	,, ।०
साधारण ,,		१।≠	

मुङ्गेर, आर्य्यधर्म्म-प्रचारिणी सभा। श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन सम्पादक।

☞ यह पत्र हर पूर्णिमा में मुङ्गेर आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके उत्साहसे प्रकाशित होता है।

☞ *Printed by B. P. Majumdara, At the B. P. M's Press, No. 22, Jhamapooker Lane, & S. C. Dutta, Dutta Press Calcutta, Published by Srikrishna Prosanna Sen, at Monghyr Aryadharmaprocharinee Sava.*

"একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেহপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

"एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति य:।
शरीरेण समन्नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥"

৩য় ভাগ। } শকাব্দাঃ ১৮০২।
৪২ সংখ্যা। } চৈত্র—পূর্ণিমা।

३य भाग। } शकाब्दा १८०२।
४२ संख्या। } चैत्र—पूर्णिमा।

পরমার্থ সার।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর।)

নানাবিধবস্তুনাং বর্ণান্ধত্তেং যথামলঃ।
স্ফটিকঃ তদ্বদুপাধেগুর্ণভাবিতস্য ভাবংবিভুর্ধত্তে ॥ ১৬॥

যেমন নির্ম্মল স্বচ্ছ স্ফটিকে নীল, পীত, লোহিতাদি বর্ণের প্রতিবিম্ব পড়িলে স্ফটিককে তত্তদ্বর্ণযুক্ত বোধ হয়, তদ্রূপ গুণোপহিত দেহের ভাব বিশুদ্ধ আত্মাতে প্রতিবিম্বিত হয় মাত্র। বাস্তবিক আত্মা নির্ম্মল, নির্গুণ ও ভাবাতীত।

গচ্ছতি গচ্ছতি সলিলে
দিনকরবিম্ব স্থিতেস্থিতিংযাতি।
অন্তঃকরণে গচ্ছতি
গচ্ছত্যাত্মা পিতদ্বদিহ ॥ ১৭ ॥

যেমন প্রবাহিত সলিলে সূর্য্যবিম্ব প্রবাহিতবৎ ও স্থির জলে সূর্য্য বিম্বও স্থির বোধ হয়, তদ্রূপ জীবের মনশ্চাঞ্চল্য জন্য আত্মাকে বিচলিত ও মনঃ স্থির হইলেই আত্মা স্থির বলিয়া অনুভূত হইয়া থাকে। বস্তুতঃ আত্মা অতীব স্থির।

परमार्थ सार।

(पूर्व्व प्रकाशितके आगे)

नानाविधवस्तुनां वर्णान्धत्ते यथा मन:।
स्फटिक: तद्वदुपाधेर्गुणाभावितस्य भावं विभुर्धत्ते ॥१६॥

जैसा निर्म्मल स्वच्छ स्फटिक पर नील, पीत, लोहितादि वर्णोंका प्रतिबिम्ब गिरनेसे स्फटिक को उसही वर्णयुक्त बोध होता है, तद्रुप सत्व, रज:, आदि गुणयुक्त शरीरहीके भाव समूह विशुद्ध आत्मा में प्रतिबिम्बित होते हैं, वास्तविक आत्मा सदा ही तिर्म्मल निर्गुण औ भावातीत हैं।

गच्छति गच्छति सलिले
दिनकरविम्बस्थिते स्थितिं याति।
अन्त:करणे गच्छति गच्छत्यात्मा
पितद्वदिह ॥ १७ ॥

जैसा वहता हुआ जलमें सूर्य्य बिम्ब भी वहता हुआ औ स्थिर जल में सूर्य्य बिम्बको भी स्थिर बोध होता है, तद्रुप जीवका मनकी चञ्चलता के हेतु आत्माको भी चञ्चल औ मन:स्थिर होने ही से आत्माको स्थिर बुझ पड़ता है। वस्तुत: आत्मा सदैव स्थिर हैं।

রাহুরদৃশ্যোঽপি যথা শশিবিম্বস্থঃ প্রকাশতে জগতি।
সর্ব্বগতোঽপি তথাত্মাবুদ্ধিস্থোঽপি দৃশ্যতামেতি ॥১৮॥

রাহু সহসা কাহারও দৃষ্টিগোচর হয় না, কিন্তু যেমন উহা চন্দ্রমাকে সংস্পর্শ করিলে জগৎ উহার পরিচয় পায় তদ্রূপ আত্মা সর্ব্বগত হইয়াও সকলের অগম্য; কিন্তু যখন নির্ম্মলা বুদ্ধি দ্বারা বিচারিত ও প্রতীত হয়েন, তখনই মনুষ্য তাঁহাকে ধারণা করিতে পারে।

সর্ব্বগতং তন্নিরূপমদ্বৈতং তচ্চচেতসা গম্যং।
যদ্বুদ্ধিগতং ব্রহ্মোপলক্ষ্যতে শিষ্যবোধ্যং তৎ ॥১৯॥

বুদ্ধি যখন তাঁহাকে অনুপম ও অদ্বিতীয় বলিয়া বুঝিতে পারিবে, তখনই সেই সর্ব্বগতাত্মা চিত্তমধ্যে উজ্জ্বলরূপে প্রকাশিত হইবেন।

মন কখনই তাঁহাকে প্রকাশ করিতে পারে না, কিন্তু বুদ্ধি নির্ম্মল ও সূক্ষ্মতত্ত্ব বিচারশীল হইলে, তিনি নিজ মহিমায় মনোমধ্যে স্বয়ং প্রকাশিত হইয়া থাকেন।

আদর্শমলরহিতে যদ্বদ্রূপম্বিচিম্বতে লোকঃ।
আলোকয়তি তথাত্মা বিশুদ্ধবুদ্ধৌ স্বমাত্মানম্ ॥২০॥

যেমন নির্ম্মল দর্পণে জীব নিজ প্রকৃত প্রতিবিম্ব দেখিতে পায়, তদ্রূপ বিশুদ্ধ বুদ্ধি দ্বারা আত্মা স্বরূপোপলব্ধি করিতে পারে।

বুদ্ধিমনোঽহঙ্কারাস্তন্মাত্রেন্দ্রিয়গণা মহাভূতগণাঃ।
সংসারসর্গপরিরক্ষণক্ষয়ঃ প্রাকৃতা হেয়াঃ ॥ ২১ ॥

বুদ্ধি, মন, অহঙ্কার, শব্দাদি বিষয়, ইন্দ্রিয় ও মহাভূতগণপূর্ণ সংসারের উৎপত্তি, রক্ষা ও প্রলয়াদি সমস্তই মায়া রচিত, এজন্য উহা সর্ব্বতোভাবে পরিত্যজ্য।

উৎপত্তি হ্রাস, বৃদ্ধি, পরিবর্ত্তন, ক্ষয়াদি যুক্ত বস্তু মাত্রেই অসৎ। যাহা নিরন্তর একভাবে বর্ত্তমান থাকে না তাহা সুখদ ও পরমোপকার জনক হইলেও পরিণাম ভয়ঙ্কর। এজন্য ধীমানগণ নাশশীল সংসারে মমতা প্রকাশ করিবেন না।

ধর্ম্মাধর্ম্মৌ সুখদুঃখকল্পনা স্বর্গনরক বাসশ্চ।
উৎপত্তিনিধনবর্ণাশ্রমাঃ ন সন্তীহ পরমার্থে ॥ ২২ ॥

ধর্ম্ম বা অধর্ম্ম, সুখ বা দুঃখ কল্পনা, স্বর্গ নরকাদি বাস, জন্ম, মরণ, বর্ণাশ্রম বিভাগাদি কোন দ্বৈত বস্তু পরমাত্মাতে অবস্থিতি করে না। তিনি ভাবাতীত, অবস্থা রহিত, অখণ্ড, এক স্বরূপ নিত্য বর্ত্তমান রহিয়াছেন।

राहुरदृश्योऽपि यथा शशिबिम्बस्थः प्रकाशते जगति।
सर्व्वगतोऽपि तथात्मा बुद्धिस्थोऽपि दृश्यतामेति ॥१८॥

राहुने जैसा कभी किसही की दृष्टि पर न आती किन्तु जब वह चन्द्रमाको स्पर्श करता तबही सारी संसार उसको पहचान लेते तद्रूप आत्मा सब किसही स्थानमें रहते भी किसही के गम्य नहीं हैं, किन्तु जब निर्म्मल बुद्धि करके विचारे जांगे औ भाषित होंगे, उसही समय मनुष्य उनको धारण कर सक्ता है।

सर्व्वगतं तन्निरूपमद्वैतं तच्च चेतसागम्यम्।
यद्बुद्धिगतं ब्रह्मोपलक्ष्यते शिष्यबोध्यं तत् ॥ १६ ॥

जबही बुद्धि उनको उपमासे रहित औ अद्वितीय करके समझ सकेगी तबही उन् सर्व्वत्र टहरे हुए आत्मा चित्तके मध्य में उज्ज्वल रूपसे प्रकाशित होंगे।

मन उनको कभी प्रकाश नहीं कर सक्ता है, किन्तु यदि बुद्धि निर्म्मल औ सूक्ष्म तत्वको विचारने वाली होतो वे स्वयं निज महिमा करके मनके मध्यमें देखाइ देते हैं।

आदर्शमलरहिते यद्वद्रूपम्बिम्बिम्बते लोकः।
आलोकयति तथात्मा विशुद्धबुद्धौ स्वमात्मानम्॥२०॥

जैसा निर्म्मल दर्पण में लोगोंने अपना अपना प्रतिबिम्ब को देखता है, तद्रूप विशुद्ध बुद्धि करके जीव अपना स्वरूपको अनुभव करसक्ता है।

बुद्धिमनोऽहंकारास्तन्मात्रेन्द्रियगणा महाभूतगणाः।
संसारसर्गपरिरक्षणक्षयः प्राकृता हेयाः ॥ २१ ॥

बुद्धि, मन, अहंकार, शब्दादि विषय, इन्द्रिय औ महाभूतगणसे पूर्ण संसार की उत्पत्ति, रक्षा, औ प्रलयआदि सबही कुछ माया की रचना हैं, अस्मात् ये सब सर्व्वथा परित्यज्य हैं।

उत्पत्ति, ह्रास, परिवर्द्धन, परिवर्त्तन, क्षय आदि युक्त वस्तुमात्र ही असत् है। जो पदार्थ निरन्तर एकरस वर्त्तमान नहीं रहता, वह सुखदायी औ परमोपकारी क्यों नहो परन्तु वह अन्त में भयजनक है। इसलिये बुद्धिमान लोगोंको इस नाशशील संसारमें ममता नहीं फैलाना चाहिये।

धर्म्माधर्म्मौ सुखदुःखकल्पना स्वर्गनरकवासश्च।
उत्पत्तिनिधनवर्णाश्रमाः न सन्तीह परमार्थे ॥२२॥

धर्म्म वा अधर्म्म, सुख वा दुःखकी कल्पना, स्वर्ग नरकादिमें वास, जन्म,मरण,वर्णाश्रमविभाग आदि कोइ द्वैतवस्तु परमात्मामें नहीं हैं। वे भावातीत, अवस्था रहित, अखण्ड एकरस वर्त्तमान हैं।

মৃগতৃষ্ণা যামুদকং শুক্তৌ রজতং ভুজগোরজ্জ্বাং।
তৈমিরিকচন্দ্রযুগবদ্ভ্রান্তমখিলং জগদ্রূপং ॥২৩॥

যেমন মৃগতৃষ্ণায় জলভ্রম, শুক্তিকায় রজতভ্রম, রজ্জুতে সর্পভ্রম ও তৈমিরিকে দ্বিচন্দ্র ভ্রম হইয়া থাকে তদ্রূপ এই জগদ্দৃষ্টি ভ্রম-বিজৃম্ভিত মাত্র।

(ক্রমশঃ।)

চারু চিন্তাবলী।

৪। শাস্ত্রে কথিত আছে যে দান করিবার সময় "আমি দান করিতেছি" এরূপ অহংকার করিবে না, এবং যাহা কিছু দান করিবে, তাহা যেন আর কেহ জানিতে না পারে। শাস্ত্রের এই গূঢ় কথার গুরু উদ্দেশ্য চিন্তা করিলাম। সিদ্ধান্ত এই হইল যে যে বস্তুতে যাহার স্বত্ব নাই, সে তাহাকে আমার বলিতে অথবা কাহাকেও দান করিতে পারে না। সংসারে আসিয়া আমি যাহা কিছু ভোগ করি, তত্তাবৎই ঈশ্বরের। এখানে আসিবার সময় বা এখান হইতে যাইবার সময় কিঞ্চিন্মাত্রও আনিতে বা লইয়া যাইতে পারি না। তাঁহার বস্তু তাঁহাকে সমর্পণ (ধর্ম্মার্থ দান) করিব মাত্র। যখন আমার দ্রব্য কিছুই দিলাম না তখন "আমি দান করিতেছি" এভাব অতীব অন্যায়। তিনি আমাকে দেহ, প্রাণ, মন, বিদ্যা, বুদ্ধি, ধন আদি কত শত দ্রব্য ভোগ করিতে দিয়াছেন, কিন্তু আমি তাঁহাকে আমার ভোগ্যবস্তুর সামান্যাংশ মাত্র সমর্পন করিয়া থাকি। তাঁহার সমস্ত দ্রব্য যখন সম্পূর্ণরূপে দিতে পারিলাম না, তখন অনন্যোপায় হইয়া লজ্জাবনত চিত্তে নিজ ক্রটী স্বীকার পূর্ব্বক করযোড়ে তাঁহার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিয়া গোপনে দান করাই শ্রেয়ঃ, কেন না অন্যে জানিতে পারিলে আমাকে চৌর, কৃতঘ্ন ও বিশ্বাসঘাতক বলিয়া ঘৃণা করিবে।

৫। ইক্ষুকে নিষ্পেষণ করায় মধুর রস নির্গত হইল, রসও অত্যুষ্ণ সন্তাপ সহ্য করিল বলিয়া গুড় হইয়া অপেক্ষাকৃত সুমিষ্ট হইয়া উঠিল, গুড় দুঃসহ নিপীড়নে অপেক্ষাকৃত মূল্যবান্ খাঁড় হইয়া দাঁড়াইল তৎপরে বিহিত বিধানে সংশোধিত হইয়া শুভ্র, নির্ম্মল ও অতি মধুর চিনি প্রস্তুত হইল।

সাধক! তুমি ইক্ষুর ন্যায় যদি ধর্ম্মের জন্য

मृगतृष्णायामुदकं शुक्तौ रजतं भुजगो रज्ज्वाम्।
तैमिरिकचन्द्रयुगवद्भ्रान्तमखिलं जगद्रूपम् ॥ २३ ॥

जैसे मृगतृष्णामें जल का भ्रम होता, जैसे सूतिमें चांदी का भ्रम होता है, जैसे रज्जु में सर्पबुद्धि होती है, तिमिरीके जैसे दो चन्द्रमा बोध होना वैसे ही आत्म सत्ता में जगत् सबको एक भ्रमरूप करके जानना। (शेष आगे।)

चारुचिन्तावली।

४। शास्त्रकी कहनी है, कि दान करने के समय "मैं दान करता हूं" ऐसा अभिमान न करना, औ जो कुछ दोगे सो भी जैसा और कोई न जान सके। शास्त्रकी इस गूढ़बात का गुरु अभिप्रायको चिन्ता किया। सिद्धान्त यही हुआ कि जिस वस्तुपर जिस किसीका कुछ अधिकार नहीं है, वह उस वस्तुको अपना बोलने अथवा किसहीको दे नहीं सक्ता है। संसार में आकर मैं जो कुछ भोग करता हूं, वे सबही ईश्वर के हैं। यहां आने वा यहां से जाने के समय न कुछ साथ लाने वा लेजाने सक्ता हूं। उन्होंके द्रव्य उन्होंको समर्पण (धर्म्मार्थ दान) करना मात्र है। जब मेरा द्रव्य कुछहो नहीं दिया, तब "मैं दान करता हूं" ऐसा कहना अतीव अन्याय है। वे मुझको देह, प्राण, मन, विद्या, बुद्धि, धन आदि कितनेसे द्रव्य भोगने को दे दिये हैं, किन्तु मैं अपने भोग्य वस्तुओंमें से सामान्यांशमात्र उनको समर्पण किया करता हूं। उनके सारे द्रव्य जब मैं पूरा नहीं दे सका, तौ दुसरा उपाय क्या, लाचारी से लजाया हुआ चित्तमें अपना दोष मानकर करजोड़ उनके निकट क्षमा प्रार्थना करके गोपन में दान करना ही श्रेय: है, क्योंकि दुसरा कोई जानगा तो मुझे चोर, कृतघ्न औ विश्वासघातक करके घृणा करते रहेंगे।

५। ऊखको पिस निगाड़ानेसे मधुररस निकल आया, रस फिर अत्युष्ण अग्निका तापको सहने पर उससे सुमिष्ट गुड़ बन गया है, दु:सह निपीड़न सह्य करके गुड़ और भी अधिक मूल्यका योग्य खांड़ हो जाता है, तदनन्तर विहित विधिसे संशोधित हुए शुभ्र, निर्म्मल औ अति मधुर चिनि बन गया।

साधक! आप यदि धर्म्म साधनके अर्थ ऊखके

নির্যাতনগ্রস্ত হও, তাহা হইলে রসস্বরূপ নারায়ণের কৃপালাভ করিতে পারিবে, অতঃপর তপস্তাপে তাঁহাকে চিদ্ঘনানন্দ স্বরূপ অনুভব করিবে, তদনন্তর সমাধি সাধনা দ্বারা তোমার প্রাকৃতিক ভাব বিশ্লিষ্ট হইয়া গেলে আত্ম সত্বার উপলব্ধি হইবে, অবশেষে তুর্য্যাবস্থায় নির্ম্মল ব্রহ্ম স্বরূপত্ব লাভ করিবে।

ধর্ম্মপ্রচারকের গম্ভীরোক্তি।

সতেজে অগ্রসর হইতে হইলে পশ্চাদাবর্ত্তন করাই স্বাভাবিক রীতি। উন্নতিই ভগবানের নিজ হস্তাক্ষরিত আদেশ। "উর্দ্ধদিকে আইস" ভগবানের স্নেহপূর্ণ এই সুমধুর সম্ভাষণ ব্রহ্মাণ্ডের প্রত্যেক হৃদয়ে আঘাত করিতেছে। প্রকৃতি সর্ব্বথা উন্নতির দিকে পরিচালিত হইতেছে। যে জগতীয় বস্তুনিচয় ব্যবহারবশাৎ কালক্রমে ক্ষয় প্রাপ্ত হইয়া যায় অথবা ক্ষয় হইবার সম্ভাবনা আছে এবং প্রত্যক্ষ প্রমাণ সমূহ যাহার বিস্তৃত বর্ণনাকালে নিঃশেষিত হইয়া যায় অথবা যাহার উত্তেজনায় মনুষ্যহৃদয়ে একটী আভ্যন্তরিক বিপ্লব ঘটাইয়া তাহাকে ক্রমশঃ উর্দ্ধদিকে আকর্ষণ করিতে না পারে, মনুষ্যের অধিষ্ঠান ভূমি এই গম্ভীর প্রকৃতি-রাজ্য কখন তাদৃশ সামান্য উপকরণে বিনির্ম্মিত হইতে পারে না। ভগবানের বিশ্বব্যাপিত্ব প্রকৃতির অসীমত্ব প্রতিপাদন করিতেছে। আমাদিগের বহিশ্চক্ষুঃ অপ্রকৃতদর্শী বলিয়া আমরা অতি ক্ষুদ্র ও মলিন হইয়া রহিয়াছি। অন্তশ্চক্ষুর নিকট সকলই বৃহৎ, সকলই মহান্, সকলই অপরিসীম, এবং এই বিশাল জড়জগন্মণ্ডল একমাত্র অদ্বিতীয় চৈতন্য সত্বার পরিপাটী পরিচয় দিতেছে ও বিশ্বের প্রত্যেক পরমাণুই সেই মহতী শক্তির অস্তিত্বের ইঙ্গীত করিতেছে। যেমন পুত্র পিতার পরিচায়ক সেই রূপ চৈতন্যসত্বা জড় জগতের প্রসবিতা হইয়া জীবের নিকট পরিচিত হইয়াছেন। জড় জগৎ একটী প্রকাণ্ড ছায়া বিশেষ হইয়া মহান্ ভাস্বর জ্যোতির ইঙ্গীত করিয়া দিতেছে।

জড় জগৎ ধ্যানাবলম্বী ঋষির ন্যায় সৌম্য, যেন প্রাচীন তাপসের ন্যায় মস্তক অবনত করিয়া বক্ষঃস্থলে হস্তদ্বয় আবদ্ধ করত দণ্ডায়মান রহিয়াছেন। সেই ব্যক্তিই সুখী ও ধন্য যিনি জড়জগতের এই

समान निर्यातन सहिये, तो रसस्वरूप नारायण की कृपालाभ कर सकियेगा, अनन्तर तपस्यारूप तावसे उनका चिद्घनानन्द स्वरूप अनुभव कीजियेगा, तत्पश्चात् समाधि साधन से आपके प्राकृतिकभाव मिटजाने से आत्मसत्वाकी उपलब्धि होगी, अन्तमें तुर्य्यावस्था प्राप्त होनेसे निर्म्मल ब्रह्म स्वरूपको लाभ की जीयेगा।

धर्म्मप्रचारककी गम्भीरोक्ति।

तेजसे अग्रसर होना हो तो पीछे हटना चाहिये। "उन्नति" ही भगवान का निज हस्ताक्षरित आदेश है। "ऊपर उठ आओ" भगवान का स्नेहपूर्ण यह सरस सम्भाषण वाक्य ब्रह्माण्ड के हर एक हृदयमें चोट मार रहा है। प्रकृति सर्व्वथा उन्नतिके ओर चलाई जाती है। जगतका जितना द्रव्य व्यवहार वश होकर नष्ट हो जाता है, अथवा नष्ट होनेकी सम्भावना रखता हैं, जिसका विस्तार वर्णन के समय प्रत्यक्ष प्रमाण समूहकी अवधि लग जाती है अथवा जिसकी उत्तेजनासे मनुष्यके हृदय में एक कोई आभ्यन्तरिक विप्लव मचाकर उसको शनैः शनैः ऊपर नहीं उटावने सक्ता है, यह गम्भीर प्रकृतिराज्य, जो मनुष्यकी अधिष्ठान भूमि है, उस भान्ति सामान्य उपकरणों से कभी नहीं वन सक्ता है। भगवानके सारो विश्वव्यापी हुइ शक्ति प्रकृति का असीमत्व को प्रतिपादन कर रही है। हमारे बाहर के दो आखें अप्रकृत विषय को देखने हारे हैं, इसलिये हम सब अति क्षुद्र औ मलिन हो गये हैं। ज्ञाननेत्रके निकट सब ही कुछ महान्, सब ही कुछ अपरिसीम औ इस विशाल जड़ जगन्मण्डल एक मात्र अद्वितीय चैतन्य सत्वाका सुन्दर परिचय दे रहा है औ विश्वके हर एक परमाणुने उस महती शक्तिका अस्तित्वकी इसारा कर रही है। जैसा पुत्र करके पिताका परिचय मिलता है, उस ही रीति चैतन्य सत्वा भी जड़जगत को प्रसव करनेवाली करके जीवोंके निकट परिचित हुई है। जड़-जगत कोई एक प्रकाण्ड छायामात्र होके महान् भास्वर ज्योतिको इसारा से देखाय देता है।

ध्यानावलम्वी ऋषिके समान यह जड़-जगत वड़ा सौम्य औ गम्भीर है। जैसाकि प्राचीन तापसके न्याई शिर झुकायें वक्षस्थलपर दोनों हाथ जोड़ कर खाड़े हैं। वही पुरुष सुखी औ धन्य

গম্ভীর ভাবে বিমুগ্ধ হইয়া পরম দেবতার পূজা করিতে শিক্ষা করেন। যিনি সেই অনির্ব্বচনীয় মহান্ চৈতন্যের বিষয় যত অধিক চিন্তাশীলতার সহিত ধারণ করেন, তিনি ততই অবাক্ হইয়া জড় জগতের প্রকৃতি ধারণ করিতে থাকেন। জড়ের অভ্যন্তরে দৃষ্টি সঞ্চালন করিলে ভগবানকে আমরা অতি দূরস্থ কারণ বলিয়া মনে করি কিন্তু যখন বুদ্ধি ও বিজ্ঞান কৌশলে তাঁহাকে প্রকাশ করিতে প্রবৃত্ত হই, তখনই আমাদিগের ভাষা ও চিন্তা পরাস্ত হইয়া যায় এবং তখনই "যতো বাচা নিবর্ত্তন্তে অপ্রাপ্য মনসা সহ" এই শ্রুতিসার বাক্যের গম্ভীর ইঙ্গীত প্রমাণীকৃত হয়। যখন আমরা চিন্তার অলক্ষিত শক্তি কর্ত্তৃক পরিচালিত হই, তখন আমাদিগের অন্তঃকরণে স্বভাবতঃ এই দুইটী প্রশ্নের উদয় হইয়া থাকে, যে এই প্রকাণ্ড জড়-জগৎ কোথা হইতে সমুদ্ভূত হইল এবং কোথায়ই বা ইহার চরমাবসান হইবে। পরক্ষণেই আবার হৃদয় মধ্যে নানাবিধ চিন্তার উচ্ছাস উঠিয়া এই প্রশ্নদ্বয়ের গূঢ় রহস্য বুঝাইয়া দিবার চেষ্টা করে এবং ইহাই শিক্ষা দেয় যে ভগবান্ প্রত্যেক বস্তু সত্বার এক মাত্র অধিষ্ঠাতা এবং তিনি কেবল জ্ঞান, প্রেম বা শক্তি মাত্র নহেন, তিনিই ব্যষ্টি ও তিনিই সমষ্টি।

যে লোকাতীগ সত্বা অব্যক্ত ভাবে বিশ্ব ব্যাপিয়া আছে, যাঁহাকে অবলম্বন করিয়া বিশাল ব্রহ্মাণ্ড অবস্থিতি করিতেছে ও যাঁহার জীবন্ত সত্বার প্রভাবে সমস্ত প্রাণী জীবিত রহিয়াছে, সেই মহান্ পরম পুরুষ প্রকৃতির অন্তরালে থাকিয়া, সমস্ত কার্য্যের সন্বিধান করিতেছেন। তিনি একস্বরূপ, তাঁহার নির্ম্মাতা কেহ নাই। তিনি বাহিরে থাকিয়া আমাদিগকে পরিচালনা করেন না, তিনি আধ্যাত্মিক প্রভাবে আমাদিগের মধ্যে ওতঃ প্রোতঃভাবে বর্ত্তমান থাকিয়া তাঁহার অপূর্ব্ব কৌশলময় কার্য্য সাধন করিতেছেন। জগতে জীব প্রসূত না হইলে, প্রকৃতির সদাব্রতের অধিকারী কে হইত? যদি জীবের সৃষ্টি না হইত তবে জড়-জগতের অস্তিত্বের প্রয়োজন থাকিত কি না সন্দেহ স্থান। তিনি এরূপ কৌশলে আমাদিগকে প্রকৃতিরাজ্যের অধীন করিয়া দিয়াছেন যে বহির্জ্জড়জগৎ ছায়া মাত্র হইলেও উহা আমাদিগের নিকট সত্য বলিয়া প্রতীয়মান হইতেছে এবং উপভোগের সামগ্রী হইয়া রহি-

हैं, जो महात्मा जड़-जगत का इस गम्भीर भाव से मोहित हुए परम देवताकी पूजा करनेको शिक्षा करते हैं। उन अनिर्व्वचनीय महान् चैतन्यके तत्त्व जो जंहातक अधिक चिन्ताशीलता से धारण करते हैं, वे उतनेही वाक्‌शून्य हुए जड़-जगतकी प्रकृति प्राप्त होते हैं। जड़का अभ्यन्तरमें दृष्टिचलने से हमलोग भगवानको अति दूरस्थ कारण करके समझते है, किन्तु जब वुद्धि औ विज्ञान का कौशल से उनके तत्त्व प्रकाश करने में प्रवृत्त होते हैं तब ही हमारी भाषा औ चिन्ता-हार मानती है औ तवही श्रुति में लिखी हुइ "यतो वाचा निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह" इस गम्भीर इसारास प्रमाण होजाती है। जब हमलोग चिन्ताकी अतीत शक्तिसे चलाये जाते हैं, तब हमारे अन्तःकरण में दो प्रश्न आपही आप उठा करते हैं। वे यह हैं कि यह प्रकाण्ड जड़ जगत कहांसे उत्पन्न हुआ औ कहां इसकी समाप्ति होगी। फिर झट हृदयके मध्य में नाना भान्ति चिन्ताका तरङ्ग उट उठ कर इन प्रश्नका गूढ़ अभिप्राय समझाने की चेष्टा की करती औ यही शिक्षा देती है, कि भगवान प्रत्येक वस्तु की सत्त्वा में विराज करने हारे हैं, औ वे केवल ज्ञान, प्रेम वा कोई एक शक्ति मात्र नहीं किन्तु वेही व्यष्टि औ वेही समष्टी हैं।

जिस अलौकिक सत्त्वा अव्यक्त भावसे विश्वको व्यापीहुइ विराज करती है, जिनको आश्रय करके यह विशालब्रह्माण्ड ठहरा हुआ है, औ जिनकी जीवनरूप सत्वाका प्रभावसे समस्त प्राणी जीवित रहे हैं, वही महान् परमपुरुष प्रकृतिके आड़ में रहकर समस्त कार्य्यका सन्निधान कर रहे हैं। वे एक स्वरूप हैं, उनके स्रष्टा कोइ नहीं। वे वाहर में कहीं विराज कर हम सबको नहीं चलाते है। वे आध्यात्मिक प्रभावसे हमसबके मध्यमें ओतःप्रोत करके विद्यमान रहकर उनका अपूर्व्व कौशल से पूर्ण कार्य्यसाधन कर रहे हैं। संसार में यदि जीवोंकी सृष्टि न होती, तो प्रकृति का सदाव्रत का द्रव्य कौन भोग करते? यदि जीवोंकी सृष्टि नहीं होति, तो इस जड़-जगतका अस्तित्वका कुछ प्रयोजन रहता कि नहीं सो भी सन्देह का स्थल है। वे इस भान्ति कौशल से हम सबको अपनी प्रकृति राज्यके अधीन कर रखे हैं, जो वाहरका यह जड़-जगत छाया रूप मिथ्या होने पर भी हमारे सामने वह सत्य वुझा पड़ता है, औ उपभोग की सामग्री हुआ रहा है। उनकी अनन्त

য়াছে। তাঁহার অনন্ত মহিমা প্রভাবে আত্মাতে অনেকানেক আশ্চর্য্য শক্তিসমূহ নিহীত করিয়া রাখিয়াছেন। সময়ে সময়ে তত্তাবতেরই অবস্থা কৌশলে জড়-জগৎ কখন সত্যবৎ কখন বা মিথ্যা প্রতীত হয়। অহো বিভো! আশ্চর্য্য তোমার কীর্ত্তি! আশ্চর্য্য তোমার মহিমা!! আমি ক্ষুদ্র ধূলিকণা হইয়া তোমার বিষয় কি চিন্তা করিব।

যেমন ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র নবীন তরুরাজি অবনীবক্ষে সুশোভিত থাকে, সেইরূপ জীব তাঁহারই সত্বাতে অধিষ্ঠান করিয়া পরিবর্দ্ধিত হইতেছে। কোন্ ব্যক্তি আত্মার শক্তির সীমা নির্ণয় করিতে পারে? কে বলিতে পারে, যে তাঁহার সীমা এই পর্য্যন্ত, ইহার পরে স্বতন্ত্র রাজ্য, সেখানে তাঁহার প্রবেশাধিকার নাই? হে জীব! তোমার অমর আত্মাকে একবার উত্তেজিত করিয়া সত্যের পূর্ণ ভাণ্ডারে প্রবেশ করিতে দেও, দেখিবে তাহার জানিবার কিছুই অবশিষ্ট থাকিবে না এবং সৃষ্টিকর্ত্তার শক্তি সকল লাভ করিতে থাকিবে। এই সময়ে মানবাত্মার অপরিসীম ক্ষমতার ইয়ত্তা করা যায় না। বিশ্বসংসারে ইহার প্রচুর দৃষ্টান্ত দেখিতে পাওয়া যায়। পরমাত্মার সহিত গূঢ় যোগই কেবল মনুষ্যকে দেবতা করিতে পারে এবং সুবর্ণোন্মচনী (চাবি) স্বরূপ হইয়া স্বর্গের দ্বার উন্মোচন করিয়া দেয়। যে চৈতন্য শক্তির প্রভাবে জড়জগৎ প্রকাশিত সেই শক্তির প্রভাবেই মনুষ্য শরীর সূচিত হইয়াছে। এই অচৈতন্য জড়-জগতে সেই চৈতন্য স্বরূপ পরমাত্মা ওতঃপ্রোত রূপে বর্ত্তমান থাকিয়া তাহার চেতনা সম্পাদন করিয়াছেন। সেই মহান্ চৈতন্য সহ আত্মার যোগ সিদ্ধ হইলে মনুষ্য জড়-জগৎকে বশীভূত করিতে পারে। জড়-জগৎ যোগীর দাসত্ব শৃঙ্খলে আবদ্ধ থাকে। জড়জগতের শক্তি সমূহ যোগীর শরীরকে অভীভূত করিতে পারে না। সূর্য্য হইতে সামান্য অগ্নিকণা পর্য্যন্ত জড়জগতের সমস্ত তেজ যোগীর তেজের ছায়াবৎ প্রতীতি হইয়া থাকে। জগজ্জগতের সুখ দুঃখরাশি যোগীর অব্যাহত প্রশান্ত হৃদয়ে কিছুমাত্র আঘাত করিতে পারে না। তিনি তাঁহার অন্তর্ভূত মহতী শক্তি হইতে আবশ্যকীয় সমস্ত সামগ্রী প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। যে ব্যক্তি বিধিবিহিত প্রসিদ্ধ পথ পরিত্যাগ করিয়া নীচ ভাবে নিজকল্পিত পন্থাবলম্বন

महिमा का प्रभावसे आत्मामें बहुतेरे आश्चर्य शक्ति समूह निहीत कर रखे हैं। समय समय में उन सबही की अवस्था का कौशल करके जगत को कभी सत्य, कभी मित्या प्रतीत होता है। अहो विभो! आश्चर्य्य है तेरी कीर्त्ति! आश्चर्य्य है तेरी महिमा!! मैं तो एक सामान्य धूलिकी कणिका मात्र हूं, तेरा तत्व की चिन्ता मैं क्या करूंगा!

जैसे छोटे छोटे हरे हरे तरुराजि धरित्रीपर शोभायमान देख पड़ते हैं, उस भान्ति जीव समूह उनकी सत्ता में बिराज कर वृद्धिको प्राप्त होते हैं। कौन सा पुरुष हैं, जो आत्माकी शक्तिकी सीमा निरूपण कर सक्ता? कौन कह सक्ता सीमा यहां ही तक हैं इसका अनन्तर स्वतन्त्र राज्य है, जहां उनका प्रवेशाधिकार नहीं? हे जीव! तेरे अमर आत्माको एकवार उत्साकर सत्यताका पूर्णभाण्डार में प्रवेश करने दो, देखोगे उनके जाननेके योग्य कुछ भी बांकी नहीं रहेगी औ सृष्टि करने हारेकी शक्तियें वह लाभ करते रहेंगे। इसही समय में मानवात्मा की अपरिसीम सामर्थ्यकी इयत्ता नहीं की जाती है। संसार में इसका दृष्टान्त बहुत मिलते हैं। परमात्माके साथ निगूढ़ योग ही केवल मनुष्यको देवता बनाइ सक्ता है औ सुवर्णोन्मोचनी (सोनेकी कुंजी) रूप हुए स्वर्गकी दरवाजे खुल देता है। जिस चैतन्य शक्तिका प्रभावसे जड़-जगत प्रकाशित हैं, उस ही शक्तिका प्रभावसे मनुष्य शरीर सूचित हुआ। इस अचैतन्य जड़जगत में वही चैतन्य स्वरूप परमात्मा ओत: प्रोतरूप विद्यमान रहकर इसकोस चेतन कर दिये है। उन महान चैतन्यके सहित आत्माका संयोग होनेसे मनुष्य इस जड़जगत को वशीभूत कर सक्ता है। जड़जगत योगीका दासत्वरूप जिञ्जिरसे बन्धा रहता है। जड़जगत की शक्ति समूह योगीका शरीर में असर नहीं कर सक्तीं हैं। सूर्य्यसे लेकर अग्निकी सामान्य फुनगी तक जड़जगत का समस्त तेज योगीका तेजके निकट छायाके समान बुझ पड़ता है। जड़जगत के सुख दु:ख राशि योगीके अव्याहत प्रशान्त हृदय में कुछ भी चोट नहीं मार सक्ता है। वे आपनी अन्तर्भुत महती शक्ति से निज प्रयोजन योग्य समस्त ही लाभ करते हैं। जिस पुरुषने विधिविहित प्रसिद्ध पथ छोड़ करके नीच रीतिसे

পূর্ব্বক ব্রহ্ম নিকেতনে অগ্রসর হইতে যায়, সে ব্যক্তি ঈশ্বরের নিকট পরিচিত হইতে পারে না। জড়জগতের কোন বস্তুই তাহার অনুজ্ঞাধীন না হওয়াতে সে ব্যক্তি সকলেরই নিকট অপরিচিত থাকে। তাহার নিকটে জীব জন্তুর ভাষা কলরব পূর্ণ বলিয়া বোধ হয় এবং অতি নিরীহ মৃগ ও মেষ শিশুও তাহাকে দেখিয়া দূরে পলায়ন করে এবং সে কোন হিংস্র জন্তুর সমক্ষে উপস্থিত হইলে, তাহার শরীর খণ্ড বিখণ্ড করিয়া ভক্ষণ করিয়া ফেলে। আমাদিগের এইরূপ শোচনীয় অবস্থা পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলে, হৃদয় ব্যাকুল হইয়া উঠে। বিশুদ্ধ আত্মার সহিত অপরিচিত থাকাই এই দুর্দ্দশার মূল। দিন দিন আমাদের অবস্থা আরও মলিন হইয়া পড়িতেছে।

হা মনুষ্য! তুমি সংসারের একমাত্র সার বস্তুকে উপেক্ষা করিয়া ক্ষয়শীল সুখ সম্পত্তি লাভ করত চতুর বলিয়া প্রতিপত্তি লাভ করিতে চাও! তুমি কি জান না যে অবশেষে সমস্তই পরিত্যাগ পূর্ব্বক মৃত্যুর করাল কবলে প্রবেশ করিতে হইবে। মানব! তুমি পবিত্রাত্মা হইয়া নিজ সত্ত্বায় অভিরমণ করিতে শিক্ষা কর। জন্মজরা, মৃত্যু আদি তোমাকে ভয় প্রদর্শন করিতে পারিবে না। আনন্দ সহ পূর্ণানন্দ সত্ত্বায় বিলীন হইয়া যাইবে। একার্ণব সলিলে অনন্ত শয্যা তোমার চিরবিশ্রাম স্থান হইবে।

ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরি ওঁ।

निज कल्पित पथसे ब्रह्म निकेतन में गमनार्थ आगुया होता है, वे ईश्वर के निकट नहीं परिचित हो सक्ता है। जड़जगत का किसही वस्तुने जो उनकी आज्ञा न मानी, इससे वह सब किसहीके निकट अपरिचित रहा। जानवारो का इतरह की भाषा उसके निकट कलरव पूर्ण बुझ पडती हैं, और अत्यन्त निर्द्दोष मृग औ मेष शावक भी मारे डरके उनके निकटसे दूर भागता है, औ वह यदि कोई हिंस्र जानवार के निकट जाय तो उसका शरीर को खण्ड विखण्ड करके भोजन कर डालता है। हम सबको इस भान्ति दुर्द्दशा विशेषरूप विचारने से चित्त विकल हो उठता है। विशुद्ध आत्मासे विन पहचान रहना जानाही इस दुर्द्दशाका मूल है। दिन पर दिन हम सबकी अवस्था और भी मलीन होती जाती है।

हा मनुष्य! तु संसारके एक मात्रसार पदार्थ को उपेक्षा कर नाशमान सुख सम्पद पाकरके आपनी चतुराई की प्रतिष्टा चाता है। तु क्या नहीं जानता है जो अन्त में सभीको छोड़ कर मृत्युका कराल कवलमे पैठने पड़ेगा? मानव तु पवित्रात्मा वने अपनि सत्त्वामें अभिरमण करने शिखले; जन्मजरा मरणादि तुझको फिर डरवाने नही सकेंगे। आनन्दके साथ पूर्णानन्द सत्त्वामें विलीन हो जागा। एकार्णव सलिलमें अनन्तशय्या तेरा नित्य आराम की स्थान वनेगी।

ओं शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः! हरि ओं।

ক্ষতিহারী আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভায় বরহরোয়াস্থিত ধর্ম্মোৎসাহি শ্রীমান্ আখোরী কাঁদজী প্রসাদের বক্তৃতা।

ধর্ম্ম কাহাকে কহে! যে সমস্ত কায়িক বাচনিক, ও মানসিক ক্রিয়া জীবনযাত্রা নির্ব্বাহার্থ অনুষ্ঠিত হয় তত্তাবতই ধর্ম্ম মধ্যে পরিগণিত। তৎ সমস্ত আবার সৎ ও অসৎ ভেদে ধর্ম্ম ও অধর্ম্ম এই দুই সংজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়াছে, পরহিংসা পরধন হরণ, রাগ দ্বেষাদির বশীভূত হইয়া অপরের অনিষ্ট চেষ্টা আদি বেদবোধিত শাস্ত্র বিরুদ্ধ কার্য্য কলাপ

मतिहारी आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभा में वड़हरवाके धर्म्मोत्साहि श्रीमान् आखोरी कान्दजी प्रसाद की वक्तृता।

धर्म्म किसको कहते हैं? कायिक वाचिक मानसिक क्रियाको जो धारण किया जाय वह धर्म्म है। वह धर्म्माधर्म्म व्यवस्था करके दो प्रकार का है। अधर्म्म उसे कहते हैं जो वेदशास्त्रादिसे वहिर्म्मुख कर्म्म है। यथा हिंसा, परधन परदारादिमें लोलुपता रागद्वेषादि करके परहानि का यत्नादि। धर्म्म परापर भेदोंसे दो प्रकार का है। तथा अपर धर्म्म

অধর্ম্ম বলিয়া অভিহিত হইয়া থাকে। ধর্ম্মও আবার পর ও অপর এতদ্বিভাগযুক্ত। ঈশানীশ ভেদে অপর ধর্ম্মও দুই প্রকার। যে দেশাচার সনাতন কাল হইতে কোন দেশে প্রচলিত থাকিয়া তত্রস্থ জনগণের সুখ বৃদ্ধি ও দুঃখ দূর করিয়া আসিতেছে, তাহা অনীশ বা জীবধর্ম্ম বলিয়া প্রসিদ্ধ এবং দম, দয়া, দানাদি যাবৎ কার্য্য সর্ব্বত্র সমভাবে চিরদিন প্রশংসনীয় বলিয়া পরিগণিত তাহাই "ঈশধর্ম্ম" বলিয়া উক্ত হইয়া থাকে। বহিরিন্দ্রিয়াদি সংযমের নাম "দম"। প্রাণী মাত্রেরই দুঃখ দুরীকরণেচ্ছার নামই "দয়া"। "দান' দুই ভাগে বিভক্ত। প্রথম "তাৎকালিক" অর্থাৎ সাময়িক দুঃখ নিবারণ, যথা ক্ষুধার্ত্তকে অন্নদান, উলঙ্গকে বস্ত্রদান, অসমর্থ ব্যক্তিকে কন্যাদায়, যজ্ঞোপবীতাদিতে সাহায্য দান ইত্যাদি দ্বিতীয়, জন্মাবধি বিদ্যাদান, যথা— শ্রীকমলনয়নাচারী শাস্ত্রী বলিয়াছেন "বিদ্যা দানান্নাস্তি দানং দ্বিতীয়ম্" তৎ সংসিদ্ধিঃ পুস্তকাদি প্রদানাৎ ইত্যাদি। যাচককে প্রার্থনা মত ধন দান করিলেও তাহা নিঃশেষের সঙ্গে সঙ্গে দুঃখের আশঙ্কা আছে, কিন্তু বিদ্যাদান করিলে তদ্দ্বারা অর্থোপার্জ্জনের শক্তি ও শুভকর্ম্মে প্রবৃত্তি ও পাপাচারে নিবৃত্তি জন্মে এবং সদসদ্বিবেকের উদয় হয়, অতএব বিদ্যাদানই সর্ব্বপ্রধান দান বলিয়া গণ্য।

এক্ষণে "পরধর্ম্ম" সম্বন্ধে প্রণিধান করা যাউক। "স বৈ পুমান্ পরোধর্ম্মঃ যত্র ভক্তিরধোক্ষজে" অর্থাৎ ভগবচ্চরণারবিন্দে একান্ত ভক্তি করাকে পরধর্ম্ম কহে। উত্তম সেবা দ্বারা প্রীতি উৎপাদনের নামই ভক্তি। যাঁহার যে বস্তু নাই, তাঁহাকে তাহা প্রেম পূর্ব্বক উপহার দেওয়ার নাম সেবা। অতএব ঈশ্বরের এমন কি পদার্থ নাই, যাহা দান করিলে, তিনি প্রসন্ন হইবেন। যাঁহার কটাক্ষমাত্রেই কুবের ধনাধিকারী হইল, সেই কমলাই স্বয়ং যাহার চরণ কমল সেবায় নিরত, তাঁহার তুল্য ধনী আর কে আছে। তিনি ধনাদি লাভে সন্তুষ্ট হয়েন না। সৌন্দর্য্যও তাঁহাকে আকর্ষণ করিতে পারে না, কেন না তাঁহার অপূর্ব্ব শোভায় বিমোহিত হইয়া "কান্তি" তাঁহার চরণাশ্রয় করিয়া রহিয়াছে। বিদ্যা দ্বারাও তাঁহাকে সন্তুষ্ট করা যায় না কেন না, বেদ তাঁহার সহজ শ্বাস স্বরূপ ও স্বয়ং সরস্বতী যাঁহার পূর্ণজ্ঞান বর্ণনায় পরাভব স্বীকার

ईशानीश भेद करके दो रीति रखता है। अनीश नाम जीव धर्म्म देशाचार को कहते जो जिस देश में सनातन से उत्तम रीति चली आती हो, जिससे लोग सुख मानें, किसीको दुःख न होय। ईश धर्म्म उसे कहते हैं जो सब देश सबकाल में एक रस है, यथा दमन, दया, दान यह तीन बात सर्व्वत्र उत्तम गिनी जाती है। दमन इन्द्रियोंको निग्रह करना जो पर धन परदारादि की आकांक्षा न करें। दया, जिससे किसी प्राणीको दुःख न होय। दान दो प्रकार प्रथम तात्कालिक, जो तत्काल दुःख निवारण करना जैसे भूखे को अन्न देना, नङ्गेको वस्त्र देना, किसी अशक्तको आवश्यक शुभकर्म्म में सहाय करना यथा कन्यादान वर्णसंस्कारादि करा देना। द्वितीय जन्मावधि वह विद्यादान है, यथा श्रीकमलनयनाचारी शास्त्रीजीका वचन है, "विद्या दानान्नास्ति दानं द्वितीयम्" तं संसिद्धिः पुस्तकादि प्रदानात्। तात्पर्य्य यह है, कि धन कितना ही दिया जाय उसके निश्शेष होने ही तक सुख है और विद्या जन्मपर्य्यन्त अयाची कर देती है, उपार्ज्जन की शक्ति देती है, शुभकर्म्म में प्रवृत्त अधर्म्मसे निवृत्त कराती है, कर्त्ता भर्त्ता भले बुरेको पहचानेकी बुद्धि देती है, अतएव यह दानसर्व्वोपर है।

अवरहा परोधर्म्म! सवै पुंसानपरो धर्म्मः यत्र भक्तिरधोक्षजे अर्थात् परं धर्म्म वही है, जो भगवच्चरणारविन्द में भक्ति होय। भक्ति क्या पदार्थ? उत्तम सेवा करके प्रसन्न करना, वह सेवा क्या वस्तु है? जो वस्तु उस को न होय सो देना। अब विचार करना चाहिये कि परमेश्वरके क्या नहीं, है जिसके देनेसे वह प्रसन्न होगा, धन १? नहीं क्योंकि जिसकी प्रथमा शक्ति श्रीदेवी हैं जिसको कोर कटाक्षसे कुवेरने धनाधिकार पाया है, वही चरण कमलकी सेवा में लीन रहती है, फिर उससे धनवान और कौन हो सकता है! सौन्दर्य्य २? नहीं क्योंकि वही श्री-जो-कान्ति स्वरूप सबमें व्याप्त है मुखारविन्द को देखती भूला रहगी है, तो उससे सुन्दर दूसरा कौन होगा! विद्या ३? यह भी नहीं। क्योंकि वेद जिसके सहज श्वास हैं, जो द्वितीया शक्ति भूदेवी सरस्वती विद्या दायिनी विद्यारूप सब में व्याप्त हैं, सो सदा चामर धारिणी सामवेद करके स्तुति को करती/ हैं तब

পূর্ব্বক সদা চামর হস্তে সামবেদ দ্বারা তাঁহার স্তুতি গান করিয়া থাকেন। বলবিক্রমও তাঁহাকে প্রসন্ন করিতে পারে না, কেন না তাঁহার তৃতীয়া শক্তি ভগবতী দুর্গা দুর্জয় দৈত্য দল দলন করিয়া তাঁহারই অপরিসীম শক্তির গুণগান করিয়া থাকেন। অস্ত্র শস্ত্র দ্বারাই বা কি হইবে, সমস্ত অস্ত্র যাহার তেজের অংশ মাত্র পাইয়াই তীক্ষ্ণ ধার হইয়াছে, সেই সুদর্শন তাঁহার হস্তে সুশোভিত, অতএব তদপেক্ষা শস্ত্রধারী আর কে হইবে। সৈন্য সামন্ত দ্বারাও তাঁহার প্রীতি উৎপাদনের আশা নাই, কেন না বিশ্বক্সেন যাঁহার সেনাপতি, যাঁহার বেত্র শিখর স্পন্দনে ত্রিলোক স্থির রহিয়াছে, নতুবা হয়তো পরস্পর আঘাত প্রতিঘাতে সমস্ত বিচূর্ণ হইয়া যাইত। অনন্ত যাঁহার শয্যা, যাঁহার ফুৎকারে প্রলয়ানল প্রজ্বলিত হয়, অতএব তদপেক্ষা শ্রেষ্ঠ সেনানী কে? এক্ষণে দেখা যাউক তাঁহার নাই কি। বুঝিলাম তাঁহার মন নাই। তাঁহার মন সদৈব ভক্ত সঙ্গে বিহার করিয়া থাকে। তাঁহাকে মন অর্পণ করিলেই তিনি প্রসন্ন হইতে পারেন। কিন্তু আমাদিগের মন যেরূপ মলিন, তাহাওতো তাঁহাকে অর্পণ করিতে সাহস হয় না। বেদোক্ত ক্রিয়া অনুষ্ঠান করিলে, এই মলিন মন নির্ম্মল হইতে পারে, অতএব হে আর্য্য বন্ধুগণ! এক্ষণে আসুন, আমরা সনাতন সদ্ধর্ম্মে প্রবৃত্ত থাকিয়া, চিত্তের পবিত্রতা বিধান পূর্ব্বক উহা ভগবচ্চরণারবিন্দে সমর্পণ করি।

এতন্মতিহারী আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণীসভাকে পর ও অপর উভয়বিধ ধর্ম্মের প্রচারার্থ যত্নশীল ও বিদ্যার্থীগণকে সহায়তা পূর্ব্বক বিদ্যা দান করিতে প্রবৃত্ত দেখিয়া এবং সর্ব্বসাধারণকে ভক্তির উদ্দীপক সদ্ধর্ম্ম কর্ম্মের উপদেশ দান করিতে বদ্ধপরিকর অবগত হইয়া, শত শত ধন্যবাদ দিতেছি।

হে ধর্ম্মসেতুরক্ষক ভগবন্! এতৎ সভার সভ্যগণ যেন তোমার অভয় পদকমলে প্রগাঢ় ভক্তি পূর্ব্বক নিজ নিজ উন্নতি ও নির্ম্মল মতি লাভ করিতে পারেন।

उससे विद्यावान कौन! बल, पराक्रम ४? यह भी नहीं, क्योंकि उसकी त्रितीया शक्ति नीला देवी दुर्ग्गा, भगवती हैं? जिन्होंने कैसे कैसे वीरोंको बध करनेमें पल मारने का विलम्ब न किया, सो नीला शिंहाने बैठी वीणा लिए यश गाया करती हैं फिर उससे महाबली कौन कहा जा सकता है? अस्त्र शस्त्र ५? यह भी नहीं, क्योंकि एक सुदर्शन जी में सबही शस्त्रास्त्र निर्गत और उनके अंश कला हैं तहां उससे अधिक और कौन शस्त्रधर होगा? सेना ६? यह भी नहीं क्योंकि विष्व क्सेन जिसके सेना पति हैं, जिसके बेत्रशिखरस्पन्द से लोक सब वर्त्तमान हैं नहीं तो आपुस में ठोंकर खाके फुट जावें। शेष जिसकी शय्या है, जिसका फुंकार महाप्रलयकी अग्नि है, फिर उससे बड़ा सेनेश दूसरा कौन है। तब क्या उसको नहीं है? केवल मन उसको नहीं है। क्योंकि उसका मन सदा भक्तोंके साथ रहता है, अतएव मन ही के देनेसे वह प्रसन्न हो सकता है. तब यह मैलामन उसको देनेके योग्य है? नहीं, क्योंकि मलीन वस्तु भेंट नहीं होता औ न कोई ग्रहण करता तब यह मन स्वच्छनिर्म्मल कैसे होय? वेद शास्त्रोक्त कर्म्म धर्म्म करने से। तस्मात् हे आर्य्यबन्धुगण! अपने सनातन सद्धर्म्ममें प्रवृत्त होके सत्क्रिया से अन्तःकरण की शुद्धि करके मनको भगवच्चरणारविन्द में लगावो।

अब मैं इस मोतिहारी आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभासदोंको बहुत २ धन्यवाद देता हूं, जहां परापर दोनों धर्म्मका प्रचार अच्छी प्रकारसे हो रहा है, विद्यादान भी होता है, जो विद्यार्थी लोग आप लोगकी सहायतासे विद्याध्ययन करते है और शुभकर्म्म धर्म्मोपदेश भी होता है। जो भक्तिका पहिला साधन श्रवण ही है। हे धर्म्मसेतु संरक्षक भगवान नारायण! इन सभासदोंकी उन्नति सद्धर्म्म में मति निज पदपद्म में रति भली भान्ति से दें।

শুক-গীতাভাষ্য।

(কাণপুরস্থ শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত মহেন্দ্রনাথ ঘোষাল মহাশয়ের নিকট হইতে প্রাপ্ত।)

ভগবদ্ভক্ত প্রহ্লাদ ভাগবৎ শ্রেষ্ঠ কৃষ্ণদ্বৈপায়নপুত্র শুকদেবকে নমস্কার পূর্ব্বক জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন যে, হে প্রভো! নিতান্ত নির্জন নিকুঞ্জস্থ সুখাসনে সমাসীন হরপার্ব্বতীর তত্ত্বসংবাদ আপনি বিদিত আছেন, অতএব সেই গুহ্য রহস্য ব্যাখ্যা করিয়া আমার শ্রবণ, মন পবিত্র ও পরিতৃপ্ত করুন।

শুক কহিলেন, হে মহাতপ! সে সকল অদ্ভুত অসাধারণ কথা আকর্ণন করিলে মনুষ্যের অন্তঃকরণে প্রথমতঃ বিস্ময় (তদনন্তর নিশ্চয়) বুদ্ধির উদয় হয়। এজন্য অতীব সাবহিত ও সুসমাহিত চিত্তে তত্তাবৎ শ্রবণ করা উচিত।

প্রহ্লাদ। মুনে! ভবাদৃশ আপ্ত বক্তার উপদেশাস্ত্রধারে কার চিত্ত ক্ষেত্রে সংশয় কণ্টক অবশিষ্ট থাকিতে পারে? অতএব হে গুরো! আপনি বর্ণনা করুন, আমি একান্ত চিত্তে মর্ম্মাবধারণ করিব।

শুক। হে প্রহ্লাদ! তত্তাবৎ বাগ্-রহস্য কাম ক্রোধাদিযুক্ত অথচ কাম ক্রোধাদি বিহীন, আনন্দপূর্ণ, অথচ নিরানন্দদায়ক, নির্ম্মল অথচ মলগৃহীত। বৎস! নির্ম্মল দর্পণে যেমন মলিন মুখ প্রতিবিম্বিত হয়, সেইরূপ সমল (রক্ত মাংস নির্ম্মিত শোক মোহাদি পূর্ণ) অন্তঃকরণ বিনা জ্ঞানিগণও নির্ম্মল বস্তু দর্শনে সমর্থ হয়েন না। অতএব নির্ম্মল বস্তু মলাশক্ত এবং মলিন বস্তু নির্ম্মলতাযুক্ত, ইহাই সিদ্ধান্ত বাক্য। হে শান্ত! এইক্ষণে সেই "শিবশঙ্করী-সম্বাদ" কহিতেছি, অবধান কর।

পার্ব্বতী কহিলেন, হে নাথ! যখন চন্দ্র, সূর্য্য, জল ও স্থল, গঙ্গাদি তীর্থ, বিপ্রাদি জাতিভেদ, পশু শৈব, বীর, দিব্য আদি আচার, সিদ্ধান্ত, কৌল প্রভৃতি ভাবের অভাব ছিল, তখন কাহা হইতে,

शुक-गीताका भाष्य।

(कानपूरस्थ श्रद्धास्पद श्रीयुक्त महेन्द्रनाथ घोषाल महाशय के निकट से पाया।)

भगवानके परमभक्त प्रह्लाद जीने भागवतोंके श्रेष्ट कृष्णद्वैपायनके पुत्र श्रीशुकदेव जी को नमस्कार पूर्व्वक पूछे कि हे प्रभो! नितान्त निर्ज्जन निकुञ्ज में सुखासन पर समासीन हरपार्व्वतीके तत्त्व आपको भाली भान्ति विदित हैं, अतएव वही गुह्य रहस्य वर्णन कर मेरे श्रवण मनको पवित्र औ परितृप्त कीजिये।

शुकदेव बोलें, हे महापत! वे सब अद्भूत असाधारण वातोंके सुनने से मनुष्यके अन्तःकरण में पहले विस्मय (तदनन्तर निश्चय) बुद्धि उदय होती है। इसलिये अत्यन्त सावधानता पूर्वक औध्यायन लगाये उन सबकों सुनना चाहिये।

प्रह्लाद। हे मुने! आपके सदृश आप्तवक्ताके उपदेश रूप अस्त्रकी किनारेके साम्हने किसके चित्तक्षेत्र में संशयरूपी काण्टा बच सक्ता है। अतएव हे गुरो! आप वर्णन करते रहिये, मैं एकान्त चित्तता से उनका अभिप्राय समझता रहूंगा।

शुक। हे प्रह्लाद! उन वचनोंके तत्व काम क्रोधादिसे युक्त अथच कामक्रोधादिसे रहित, आनन्दसे पूर्ण अथच निरानन्ददायक, निर्म्मल अथच मलयुक्त है। हे वत्स! निर्म्मल दर्पण में जिस रीतिपरछाइ गिरती है, उसही तरह समल (रक्त मांसादिसे बना हुआ, शोक मोहादिसे पूर्ण) अन्तःकरण विना ज्ञानी भी निर्म्मल वस्तुको दर्शन करने में समर्थ नहीं होते हैं। अतएव निर्म्मल वस्तु मलसे युक्त औ मलिन वस्तु निर्म्मलतासे पूर्ण यही सिद्धान्त करके जानना। हे शान्त! अब वह "शिव शङ्करीका संवाद" मैं कहता हूं, दत्तचित्त रहो।

पार्व्वती बोली, हे नाथ! मुझे यह बताइये कि जब चन्द्र, सूर्य्य, जल औ स्थल, गङ्गा आदि तीर्थ, विप्र आदि जातिभेद, पशु, शैव, वीर, दिव्य आदि आचार, सिद्धान्त कौल आदि भाव नहीं थे,

কোথায়, কি চিহ্ন দ্বারা সৃষ্টিকার্য্য আরব্ধ হয়, এতাবৎ আমাকে বল। তুমিই বিশ্বের আদি এবং পরিণামে তাবৎ তোমাতেই প্রবেশ করিবে, অতএব তুমি ভিন্ন এতৎপ্রশ্নের সমীচীন সমাধান আর কে করিবে।

এতদুত্তরে শঙ্কর বলিলেন, হে পরমেশ্বরি! দর্শনাদি ক্রিয়া বিশিষ্ট চক্ষুরাদি পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্রিয় ও বচনাদি ক্রিয়াবিশিষ্ট বাগাদি পঞ্চ কর্ম্মেন্দ্রিয় যুক্ত এই শরীরই "উৎপত্তিমান" শব্দে সর্ব্বত্র গৃহীত হইয়াছে। ইহাই বিশ্ব, ইহাই জগৎ, ইহাই ব্রহ্মাণ্ড এবং ইহাই ভবসংসার, অতএব ইহাই একাদশেন্দ্রিয় মনের বন্ধন ও মুক্তির কারণ স্বরূপ। এই দেহের উৎপত্তি, স্থিতি, লয়, দ্বারা সৃজন, পালন, সংহার, ব্যবহারসিদ্ধ হইতেছে। এই মন যখন সংযত হয়েন, তখন ইন্দ্রিয়াদিরও লয় হইয়া থাকে। হে শঙ্করি! যেমন জলের অভাব হইলে, বৃক্ষাদির ছায়া বৃক্ষাদিতেই লয় পাইয়া যায়, তদ্রূপ ক্রিয়া অভাবে ইন্দ্রিয়গণও মনে বিলীন হইয়া থাকে। মনোবিলয়ের নামই অব্যক্ত ভাব। মন হইতেই ভাব উৎপন্ন হয়, মনেতেই আবার লীন হইয়া নাশ প্রাপ্ত হয়। ইন্দ্রিয়যুক্ত মনের ভাবে-আচার, আচারে ক্রিয়া এবং ক্রিয়া হইতে তাবৎ স্থূল অবয়ব জগৎকার্য্য দৃষ্ট হইয়া থাকে। যেমন আকাশে শব্দ ও শব্দে আকাশ, বৃক্ষে বীজ ও বীজে বৃক্ষ প্রত্যক্ষ হয় তদ্রূপ ক্রিয়াজন্য জগৎ এবং জগৎই সমস্ত ক্রিয়ার বীজ স্বরূপ। অতএব হে ভামিনি! মনজাত ইন্দ্রিয় মধ্যে মনের অধিষ্ঠান নিমিত্ত দ্বৈতভাবোৎপত্তি হয়, আত্মপ্রতিবিম্বস্বরূপ মনই দ্বিধাকারে প্রজাপতি হয়েন, তদ্ভিন্ন বিশ্বোৎপত্তির অন্য কোন কারণ নাই। অদ্বৈতে দ্বৈতভান কেবল মনের কল্পনা ব্যতীত আর কিছুই নহে।

শুক। হে প্রহ্লাদ! শিব বাক্যের তাৎপর্য্য এই যে একাদশ স্থানীয় মনই পরমাসঙ্গ, স্থূল অথচ সূক্ষ্ম, ভাবযুক্ত হইয়াও ভাবমুক্ত মহেশ স্বরূপ।

उस समय किनसे, कौन स्थान में, कौन चिह्न करके सृष्टिका प्रारम्भ हुआ। आप ही विश्व के मूल हैं औ अन्त में सब कुछ आप ही में प्रवेश करेंगे अतएव आपके विना इस प्रश्न का समीचीन समाधान फिर और किससे बनेगा।

इसका उत्तर में शङ्कर बोले, कि, हे परमेश्वरि! यह शरीर, जो कि दर्शनादि क्रियाविशिष्ट चक्षुः आदि पञ्चज्ञानेन्द्रिय औ वचनादि क्रियाविशिष्ट वाक् आदिपञ्च कर्म्मेन्द्रियसे युक्त है, सर्व्वत्र "उत्पत्तिमान" शब्द करके लिया गया है। इसहीको विश्व करके, इसहीको जगत् करके, इसहीको ब्रह्माण्ड वो इसही को भवसंसार करके मानना अतएव यही मनका, जो कि एकादश इन्द्रिय करके प्रसिद्ध हैं, बन्धन औ मोक्षका कारण स्वरूप है। इस देह की उत्पत्ति, स्थिति औ लय करके सृजन, पालन, औ संहार का व्यापार सिद्ध होता है। यह मन जब संयत होता है, उस समय इन्द्रियसमूह भी लय हो जाते हैं। हे शङ्करि! जैसा जलका अभाव होनेसे वृक्ष आदिका प्रतिबिम्ब वृक्ष आदि में लीन हो जाता है, उसही तरह क्रिया का अभाव होने इन्द्रियगण भी मन में विलीन हो जाते हैं। "मनका जो विलय" होना, उस ही को "अव्यक्त भाव" करके मानो। "भाव" मनहीसे उत्पन्न होता, फिर मनही में लीन होकर नाशको प्राप्त होता है। इन्द्रियोंसे युक्त मनका "भाव" करके आचार, आचार करके क्रिया, औ क्रिया करके समस्त स्थूल अवयव-जगत् कार्य्य देख पड़ता है। क्रिया करके जगत औ जगतही समस्त क्रियाका बीज रूप है, जैसा कि मानो आकाश में शब्द औ शब्द में आकाश, वृक्ष करके बीज औ बीज करके वृक्ष प्रत्यक्ष होता है। अतएव हे भामिनि! मनसे उत्पन्न इन्द्रियोंके मध्य में मनका अधिष्ठान करके द्वैत भावकी उत्पत्ति होती है, आत्म प्रतिबिम्ब स्वरूप जो मन है, सो ही द्विधा हुए प्रजापति बनते, इतना छोड़के विश्वोत्पत्तिका दुसरा कोइ कारण नहीं है। अद्वैत में द्वैत बुद्धि होना जो है, सो केवल मनकी कल्पना छोड़के और कुछ ही नहीं है।

शुक। हे प्रह्लाद! शिवजी की वचनोंके तात्पर्य्य यह है, कि, एकदश स्थानीय मनही परम असङ्ग, स्थूल अथच सूक्ष्म, भावयुक्त हुए भी भाव-

মনই বিশ্বের আধার, স্রষ্টা ও পুরুষপদবাচ্য (পুরের অধিকারী) সন্দেহ নাই। যেমন নদীর তটভেদে জলের ভেদ তদ্রূপ জ্ঞান ও কর্ম্মেন্দ্রিয়ের ভেদ দ্বারা মনোময় পরমাত্মা সদসদ্গুণে বিভক্তবৎ অনুভূত হয়েন মাত্র। যেমন দেহে দেহী ও দেহীতে দেহ সংযুক্ত হইলে সৃষ্টি অনুভব হয়, তদ্রূপ মনে সর্ব্বভূত ও সর্ব্বভূতে মন সংযুক্ত হইলে, জগৎ প্রতীতি হইয়া থাকে। অতএব মন ইন্দ্রিয় অথবা দেহ দেহীর পরস্পর সহায়তা বিনা একের বিদ্যমানতার সম্ভাবনা বা প্রমাণ নাই, সুতরাং অবক্তব্য।

শঙ্করী বলিলেন, হে পরমেশ! তুমি কহিলে, সংযোগকেই কারণ বলিয়া নিশ্চয় কর, সংযোগই ভাবাতীত বস্তু; কিন্তু সেই সংযুক্ত ভাবাতীত ভাব হইতে এই সমস্ত ভিন্ন ভিন্ন ভাব বৈচিত্র কি প্রকার হইল। অঙ্কুরোৎপন্ন প্রফুল্ল বৃক্ষজাত ফল হইতে বীজোৎপত্তি হয় ইহাই প্রসিদ্ধ আছে কিন্তু বিনা অঙ্কুরে বীজের সদ্ভাব কি প্রকারে সম্ভব। হে দেব! নিষ্কামকে কামনাযুক্ত বলার ন্যায় ইহা নিতান্ত অসঙ্গত, এ কথায় আমি কি প্রকারে বিশ্বাস স্থাপন করিতে পারি। এক একাকার মাত্র নিত্য হইলে, বিবিধাকার কেন হইবে? একত্ব নিত্য হইলে, দ্বিতীয়ত্ব কোথায়? পুনঃ, দ্বিতীয়ত্বের নিত্যতা সত্বে একত্ব কিরূপে প্রতিপন্ন হইবে? সংখ্যেয় না থাকিলে, সংখ্যাবাচক শব্দও হইত না, অতএব যখন সংখ্যাবাচক শব্দ আছে, তখন সংখ্যেয় বস্তুও আছে। যখন সংখ্যাবাচক শব্দ অনেক, তখন সংখ্যেয় বস্তুও অনেক স্বীকার করিতে হইবে, সুতরাং একত্বের সর্ব্বথা অভাব বোধ হইতেছে, অতএব বৃক্ষ পরতন্ত্র বীজের ন্যায় দ্বৈত তত্ত্বের নিত্যতা প্রযুক্ত ভাবাতীত অদ্বৈত তত্ত্ব কেবল শূন্য গর্ভ শব্দমাত্র বলিয়া, আশঙ্কা হইতেছে তদর্থ হে মহেশ! "আমি" "তুমি" কে কোথা হইতে ও কেন এখানে জন্ম হইল, এতাবৎ বিশেষ করিয়া বর্ণনা কর।

युक्त महेशके स्वरूप हैं। मनही जो विश्वका आधार, स्रष्टा औ पुरुष पदवाच्य (पुर का अधिकारी) हैं, इस में सन्देह नहीं। जैसी नदी की किनारा का भेद करके जलका भेद माना जाता है, तद्रूप ज्ञान औ कर्म्मेन्द्रियोंके भेद करके मनोमय परमात्माने कभी सत कभी असत गुण युक्त करके मालुम पड़ते है। जैसा देहसे देही औ देहीसे देहका संयोग होनेसे, सृष्टि देख पड़ती है, उसही भान्ति मनसे समस्त भूत औ समस्त भूतोंसे मनका संयोग होनेसे जगत प्रतीति होती रहती है। अतएव मन, इन्द्रिय अथवा देहसे देही की परस्पर सहायता विना केवल मात्र एक पदार्थकी विद्यमानता की सम्भावना वा प्रमाण नहीं, सुतरां अवक्तव्य है।

शङ्करी बोली, हे परमेश! आपने बतायोंकि संयोगही को कारण करके निश्चय मानो, संयोगही भावातीत वस्तु है; किन्तु उस संयुक्त भावातीत भावसे इतनी भिन्न भिन्न भाव-विचित्रता कहांसे उत्पन्न हुइ है! अङ्कुर करके उत्पन्न प्रफुल्ल वृक्षका फल से बीजकी उत्पत्ति होती, यही प्रसिद्ध किन्तु विना अङ्कुरके बीज का सद्भाव कैसे होगा? हे देव! निष्काम को कामनायुक्त कहना जैसा न्याय-विरुद्ध है, यह भी वैसाही है। इस बातको मैं कैसे विश्वास कर सकुं। यदि केवल एकाकार ही नित्य हो तो नाना भान्तिके रूपक्यों कर सम्भव होगा? यदि एकत्व ही सत्य हुआ तो द्वितीयत्व फिर कहां रहा! पुनः देखाजाय तो द्वितीयत्व कि नित्यता रहने से एकत्व का कुछ प्रमाण ही नहीं। संख्याके योग्य पदार्थ रहे बिना संख्यावाचक शब्द भी नहीं रहता, अतएव जब संख्यावाचक शब्द रहा तो अवश्यही संख्या का वस्तु भी है। जब संख्यावाचक शब्द भी बहुत से हैं, तो संख्याके वस्तु भी अनेक मानना चाहिये, सुतरां एकत्व का अभाव बोध होता है, अतएव वृक्ष परतन्त्र बीजके समान द्वैत तत्वकी नित्यता का कारण अब यह आशङ्का होती है, जो भावातीत अद्वैत तत्व केवल शून्य-गर्भ एक शब्दमात्र है, तस्मात् हे महेश! "मैं" "तुम" आदि कहांसे वो क्यों यहां जन्म लिये इसका विशेष विवरण बर्णन कीजिये।

শুকদেব বলিলেন, হে ভক্তশ্রেষ্ঠ প্রহ্লাদ! শঙ্করী এই সকল প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিয়া, সুষুপ্তা হইলে. আমি বিহঙ্গরূপে বিল্ব বৃক্ষে বসিয়া. বৃষভ-বাহনের তাঁবদ্বার্ত্তাই শ্রবণ করিয়াছিলাম। এতদ্বিবরণ শ্রবণে প্রহ্লাদ আশ্চর্য্য হইয়া বলিলেন হে মহামতে! অঙ্কস্থা সর্ব্বাণিকে প্রসুপ্তা জানিয়াও মহাদেব বিশ্রাম করেন নাই, ইহার কারণ কি! শুকদেব আনন্দাশ্রু-পূর্ণনেত্রে গদ্গদ স্বরে কহিলেন. হে প্রহ্লাদ! এই জন্যই আমি পুর্ব্বে তোমায় বলিয়াছিলাম যে, এই গুহ্যতম আশ্চর্য্যরহস্য অতীব বিস্ময়কর, অকস্মাৎ বোধগম্য হয় না। হে ধীর! পূর্ণানন্দ-স্বরূপ নিষ্ক্রিয় সদাশিব সর্ব্বদাই এই ভাবাভাব দ্বন্দ্বময় সংসারজালকে আকাশের ন্যায় শূন্য দর্শন করেন, অতএব যন্ত্রারূঢ় শব্দের ন্যায় বিনা আয়াসেও পূর্ব্বারব্ধ তত্ত্ব প্রসঙ্গ সাঙ্গ করিতে নিরস্ত হয়েন নাই। তিনি যে অনাহত নিত্য-ধ্বন্যাত্মিকা শব্দে অবস্থিতি করেন, সেই শব্দই প্রাণতন্ত্র যোগে ইন্দ্রিয়-কলিত হইয়া বিশ্বমণ্ডলে, বর্ণাত্মিকা ও বাহ্য বিষয়াত্মিকা হইয়া থাকে। সেই শব্দময় প্রশ্নোত্তর এক্ষণে শ্রবণ কর।

(ক্রমশঃ।)

প্রাপ্ত পুস্তক সমালোচনা।

১। সামবেদ-সংহিতা।—শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত পণ্ডিত সত্যব্রত সামশ্রমী মহাশয় কর্ত্তৃক প্রতি মাসে ১২৮ পৃষ্ঠায় এক এক খণ্ড প্রকাশিত হইতেছে। কলিকাতা মাণিকতলা ষ্ট্রিট, ঘোষের লেন, ১৬ নং সত্য যন্ত্রালয়ে প্রাপ্য। মূল্য প্রতি দ্বাদশ খণ্ডের অগ্রিম প্রেরণ ব্যয় সহ ১০্ দশ টাকা। আমরা ইহার প্রথম খণ্ড প্রাপ্ত হইয়াছি। প্রথম খণ্ড স্বর চিহ্নাদি সহিত ছন্দ আর্চ্চিক, মন্ত্র বিবরণ গেয় গান, বাঙ্গালা টীকা, সায়ণাচার্য্য কৃত "বেদার্থ প্রকাশ" নামক সংস্কৃত ভাষ্য, ভাষ্যের বঙ্গানুবাদ

शुकदेव बोलें हे भक्तोंके श्रेष्ट प्रह्लाद! शङ्करी इतनी बातें पुछकर अब सो गयी, उस समय मैं विहङ्गका रूप लिये हुए बेलके वृक्षपर बैट कर महादेव की सब कुछ वार्त्ता श्रवण किया था। इतनां सुनकर प्रह्लाद आश्चर्य्य मान कर बोलें कि, हे महामते! क्रोड़ स्थित पार्व्वती को सोती हुई देखकर भी महादेव जी जो चुप नहीं रहें, इसका कारण क्या? आनन्दकी आंसुओंसे भरे हुए आंखे शुकदेव गद्गद वचन से बोले, हे प्रह्लाद! तुमको इसही लिये मैंने पहलेही कह रखा कि यह गुह्यतम आश्चर्य्य रहस्य अतीव विस्मयजनक है, अकस्मात् बुझ नहीं पड़ता है। हे धीर! पूर्णानन्द स्वरूप समस्त क्रियावर्जित सदाशिव इस भाव औ अभाव रूप द्वन्द्व से युक्त संसार समूह को सदा ही आकाश के समान शून्य देखते हैं, अतएव वे पहले का आरम्भ किया हुआ तत्त्व प्रसङ्ग समाप्त किये बिना नहीं ठहरे, जैसा कि यंत्रसे निकलाता हुआ शब्द श्रोताका अभावसे बन्ध नहीं होता है। जो अनाहत नित्यध्वनि से मिले हुए शब्द में वे विराजते हैं, वही शब्द प्रान तन्त्रके लगसे इन्द्रिय से बजता हुआ, विश्वमण्डल में वर्णात्मिका वो वाह्य विषयात्मिका होती रहती है। उस शब्दमय प्रश्न औा उत्तर अब श्रवण करो।

(शेष आगे।)

प्राप्तपुस्तकोंकी समालोचना।

१। सामवेद संहिता।—श्रद्धाके योग्य श्रीयुक्त पण्डित सत्यव्रत सामश्रमी महाशयके द्वारा प्रतिमास १२८ पृष्ठामे एक एक खण्ड छपकर निकल रहा है। कलकत्ता मानिकतला ष्ट्रीट घोसेज लेन, १६ नम्बर, सत्ययन्त्रालय में मिलता है। बारह बारह खण्डका डाककर सहित मूल्य दश रूपये है। हम इसके प्रथम खण्ड पा चुके। सुर स्वरके चिह्न आदि दिया हुआ छन्द आर्च्चिक, (मन्त्रका विवरण, गेय गान, बङ्गभाषा में टीका, सायणाचार्य्य कृत "वेदार्थ प्रकाश" नाम संस्कृत

গোভিল গৃহ্যসূত্র ও বৈদিক সমালোচনা এইরূপ প্রণালীতে লিখিত হইয়াছে। সামশ্রমী মহাশয় ইতিপূর্ব্বেই যজুর্ব্বেদ সংহিতাদি অনুবাদ ও প্রকাশ দ্বারা পণ্ডিত ও সাধারণ জনসমাজে বিপুল প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছেন। তাদৃশ বেদজ্ঞ পণ্ডিত আজ কাল বঙ্গদেশে দেখিতে পাওয়া যায় না। তাঁহার ধর্ম্মোৎসাহ, সদুদ্যম ও সানুবাদ বেদার্থ প্রচার বঙ্গদেশের সৌভাগ্য লক্ষণ সূচিত করিয়াছে। তাঁহার যুক্তি ও বিচার পূর্ণ অনুবাদ পাঠে আমরা তাঁহাকে অন্তরের সহিত সাধুবাদ না দিয়া থাকিতে পারিলাম না। বর্ত্তমান ভারতবর্ষে বেদার্থের প্রচুর চর্চ্চাভাব প্রযুক্ত যে ভয়ঙ্কর ধর্ম্মবিপ্লব উপস্থিত হইয়াছে, আশা করি ঈদৃশ পুস্তকাদি প্রচারে তাহা অনেকাংশে অপনীত হইবে। পরিশ্রান্ত পান্থ যখন তৃষ্ণাকুল হয়, তখন পথপার্শ্ববর্ত্তী খাতস্থ পূতিগন্ধপূর্ণ জলপানেও পরাঙ্মুখ হয় না, কিন্তু ইহার ফল অতি বিষম ও বিষময়। তদ্রূপ বর্ত্তমান ধর্ম্মবিপ্লব কালে অনেক বেদার্থানুসন্ধিৎসু মহাত্মা বেদজ্ঞান লাভে উপায়ান্তর বিহীন হইয়া ইউরোপীয় বৈদিক মোক্ষমূলর আদি পণ্ডিতমণ্ডলীর অপ্রকৃতার্থবাদ পূর্ণ বৈদিক সমালোচনাকে অভ্রান্ত স্থির করত, তদর্থানুগামী হইয়া, বেদে বিপরীত ভাবের আরোপ করিতেছেন এবং তদনুসারে গ্রন্থ প্রকাশ ও বক্তৃতাদি দ্বারা জনসমাজে বেদার্থের ব্যাভিচার প্রচার পূর্ব্বক আর্য্যদিগের শাস্ত্রশিরোমণি বেদের অমর্য্যাদা করিতেছেন, সামশ্রমী মহাশয় বৈদিক সমালোচনা দ্বারা বেদকে এই ঘোর বিপদ হইতে রক্ষা করিতে সযত্ন হইয়াছেন "সুতরাং উক্ত প্রস্তাবে ৩ বেদ কি চারি বেদ? কোন্ বেদ প্রথম? আর্য্যদিগের আদি বাস স্থান নির্ণয়, আদিকালে ঈশ্বর ভাব ও বিজ্ঞানের চর্চ্চা কিরূপ ছিল, পৃথিবীর কতদূর পর্য্যন্ত তাঁহারা অবগত ছিলেন, মন্ত্র, সূক্ত, মণ্ডলাদির উৎপত্তি কাল, ঋষি, দেবতা, আর্য্য, অসুর, দস্যু, দাস, শূদ্র, প্রভৃতির পরিচয় এবং ম্লেচ্ছ, ম্লেচ্ছবসতি ও তাহাদের সহিত আর্য্যদিগের

भाष्य, भाष्यकी बङ्गभाषा में उल्था) गोभिल गृह्य सूत्र औ वैदिक समालोचना आदि प्रथम खण्ड में लिखा हुआ है। यजुर्वेद संहिता आदिका अनुवाद औ प्रकाश करके सामश्रमी जी इसके आगे ही पण्डित औ साधारण जन समाज में विपुल यश को लाभ किये। वे से वेदज्ञ पण्डित आज कल बङ्ग[illegible]खने में नहीं आते हैं। उनके धर्म्मोत्साह, सदुद्यम औ अनुवाद सहित वेदार्थका प्रचार से बङ्ग देशका शुभ लक्षण सूचित होता है। उनकी युक्ति औ विचारसे पूर्ण अनुवाद पढ़कर हम उनको अन्तःकरण से साधुवाद दिये विना नहीं रह सके हैं। वर्त्तमान भारतवर्ष में वेदार्थकी प्रचुर चर्च्चा का अभाव से जो भयङ्कर धर्म्म-विप्लव मच गया, अब आशा कीजाती है, कि इस भान्ति पुस्तकादि का प्रचार से बहुत सा गोल माल मिट जाऐंगे परिश्रम से थका हुआ राही जब मारे पियास के व्याकुल होता उस समय पथके किनारे की खाद का दुर्गन्धिमयजल पीने में भी विमुख नहीं होता है, किन्तु इसका अन्तफल अत्यन्त बुरा औ दुखदायी है। उस भान्ति वर्त्तमान धर्म्मविप्लव के समय बहुत से वेदार्थके खोजानेहार महात्मा वेदसम्बन्धी ज्ञानप्राप्तिके लिये दुसरा कुछ उपाय देखे विना युरोपके वैदिक मोक्ष मूलार आदि पण्डितोंकी वैदिक समालोचनके जो की अप्रकृत अर्थवादसे पूर्ण है, निर्मूल समझके तदर्थके अनुसार वेदोंपर विपरीत भाव लगा रहे हैं, औ उस रीतिसे पुस्तक का प्रकाश औ वक्तृतादि करके जनसमाज में वेदार्थ का व्यभिचार प्रचार पूर्व्वक आर्य्यजनोंके शास्त्र-शिरोमणि-स्वरूप वेदकी अमर्य्यादा कर रहे हैं। हमारे सामश्रमी जी वैदिक समालोचनाके द्वारा वेदको इस घोर विपदसे रक्षा करने के अर्थ सयत्न हुये हैं। सुतरां उस प्रस्ताव में बहुतेरे सारगर्भ आशय लिखे जायेंगे, जैसा कि वेद तीन है, या चार? उनमें कौन वेद प्रथम हैं? आर्य्यलोगोंके आदि निवासस्थान कहां था? आदिकाल में उन सबके ईश्वर सम्बन्धी भाव औ विज्ञानकी चर्च्चा किस भान्ति थी: पृथ्वीका कितना दूरतक उन लोगोंका मालुम था, मन्त्र, सूक्त, मण्डलादि की उत्पत्तिका काल, ऋषि,

বিক্রম প্রকাশ প্রভৃতি বহুতর সারগর্ভ বিষয় ক্রমে আলোচিত হইবে।” আমরা আশা করি, ভারত হিতৈষী মহাত্মা মাত্রেই বেদ-সংহিতার গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হইয়া ও যথাসাধ্য সহায়তা করিয়া বেদমর্য্যা[illegible] করিবেন।

২। কল্যাণকল্পতরু।—শ্রীযুক্ত বাবু কেদারনাথ দত্ত প্রণীত ও তৎকর্ত্তৃক কলিকাতা (যোড়াসাঁকো) হরিভক্তি প্রদায়িণী সভা হইতে প্রকাশিত। পুস্তক খানি আদ্যোপান্ত পদ্যে লিখিত। ইহার বর্ণে বর্ণে কবির বিনয়, ভক্তি, ভাব-গম্ভীরতা আদির সৌগন্ধ প্রাপ্ত হওয়া যায়। যদি এই পুস্তক খানি আর্য্য-ধর্ম্ম-মত-মস্তক-মণি যোগ ও অভেদ বাদাদিকে তিরস্কার না করিয়া, সরল ধর্ম্মভাবে বিরচিত হইত, তাহা হইলে এতৎপাঠে বর্ত্তমান আর্য্যমণ্ডলী নিশ্চয়ই অতি উপাদেয় ভক্তি-ভাব লাভ পূর্ব্বক বিগলিত হৃদয় হইতেন। অন্যমতকে তিরস্কার কালে যদি কবি তীব্র যুক্তিজাল বিস্তার করিয়া, নিজ মতের প্রাধান্য রক্ষা করিতে পারিতেন, তাহা হইলেও, আমরা ক্ষুব্ধ হইতাম না। রাধাকৃষ্ণানুরাগের উচ্ছাস ও “বৈষ্ণব-চরণ-পরায়ণতাই” াহার তিরস্কার্য্যের প্রবর্ত্তক। তাঁহার লিপিনৈপুণ্যে শাস্ত্রজ্ঞতা, বহুদর্শীতা ও প্রবীণতারও পরিচয় পাওয়া যায়। পুস্তকখানি আদ্যোপান্ত পাঠ করিয়া আমরা তাঁহার ভগবৎ-পরায়ণতার জন্য আনন্দিত, এমন কি স্থানে স্থানে কবিহৃদয়ের কোমল ভাবগুলির পবিত্রগন্ধে বিমোহিতও হইয়াছি। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা সাম্প্রদায়িক ভাববর্জ্জিত হইয়া, পুস্তকখানি অধ্যয়ন করেন, তবে তিনি নিঃসন্দেহই “কল্যাণকল্প-তরুর” সুশীতল ছায়া ও উপাদেয় ফললাভ করিবেন। বৈষ্ণব মাত্রেই পুস্তক খানিকে অমূল্য কণ্ঠাভরণ বোধে সমাদরে গ্রহণ করিবেন।

देवता, आर्य्य, असुर, दस्यु, दास, शूद्र आदिका परिचयें, औ म्लेच्छ, म्लेच्छोंका वास, उन्होंपर आर्य्यलोग किस भान्ति पराक्रम देखाये थे। हम आशा करते हैं, कि भारतहितैषि, हरेक महात्माही वेद-संहिता के ग्राहक बने औ यथासामर्थ्य सहायता कर वेदकी मर्य्यादा रखेङ्गे।

२। कल्याणकल्पतरु।—श्रीयुक्त बाबु केदारनाथ दत्त का बनाया हुआ, औ उन्होंका व्यय करके कलकत्ता (जोड़ासाँको) हरिभक्ति प्रदायिनी सभासे प्रकाश किया गया। पुस्तक की रचना आदि से लेकर अन्त पर्य्यन्त बङ्गभाषा पद्य में हैं। इसका हरएक वर्णसे कविकी विनति, भक्ति औ भावकी गम्भीरता का सुगन्ध पाया जाता है। यदि यह पुस्तक आर्य्य-धर्म्म-मतके शिरसाग्रमणि योग औ अभेद बाद आदि को तिरस्कार किये विना केवल सरल धर्म्म भावसे लिखी जाती, तो निश्चय ही इसका पठन से वर्त्तमान आर्य्य मण्डली अतीव रसाल औ मधुर भक्ति भावको लाभ करते औ हृदय द्रवीभूत होता। दुसरा मतको तिरस्कार करने का समय यदि कविने सुतीक्ष्ण, युक्तिजाल पसारकर निज मतके श्रेष्ठत्व रखाकर सक्तें, तौ भी हम दुःखी न होते। “राधाकृष्णानुराग का उच्छास” औ वैष्णव-चरण-परायणता ही उनको इस भान्ति तिरस्कार करने की प्रवृत्ति दी हैं। उनकी लिखने की निपुणता से शास्त्रज्ञता, बहु-दर्शीता, औ प्रवीणता का भी विशेष परिचय मिलता है। इस पुस्तक को आदि से लेकर अन्त तक पढ़कर हम उनकी भगवत्-परायणता के लिये आनन्दित, औ स्थान स्थान में कविके हृदयका कोमल भावोंके पवित्र गन्धसे विमोहित भी हुए। यदि कोइ महात्मा साम्प्रदायिक भाव छोड़ कर इस पुस्तकको पढ़ें, तो वे निःसन्देह ही “कल्याण कल्पतरु” की सुशीतल छाया औ उपादेय फल पावेंगे। वैष्णव मातही इस पुस्तको अनमूल कण्ठाभरण समझे आदर पूर्वक ग्रहण करेङ्गे।

বিদেশীয় এজেণ্টগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	ভাগলপুর
,, ,, যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী।
,, ,, জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর।
,, ,, পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট্।
,, ,, সাতকড়ী বন্দ্যোপাধ্যায়,	কলিকাতা।
,, ,, বিহারিলাল রায়,	জামালপুর।
,, ,, রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ
,, ,, উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	ঐ
,, ,, ভোলানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	বহরমপুর।
,, ,, রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম।

উপরোক্ত এজেণ্ট মহোদয়গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয়গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

ধর্ম্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্যধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহসহকারে ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশ করিব।

২। ধর্ম্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মুঙ্গের "আর্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভার," আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মণিঅর্ডারে, পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩ সংখ্যা হইতে ডাকমাশুলী সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে।

উত্তম কাগজে,	বার্ষিক	৩।৵০,	প্রতিখণ্ড	।৵০
মধ্যম ঐ	,,	২।৵০	,,	।০
সাধারণ ঐ	,,	১।৵০	,,	৵০

মুঙ্গের, আর্য্যধর্ম্ম-প্রচারিণী সভা } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন। সম্পাদক।

☞ এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুঙ্গের আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণ সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

विदेशके एजेण्ट सबका नाम।

श्रीयुक्त बाबू पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय	भागलपुर
,, ,, यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	मतिहारी।
,, ,, जगद्बन्धु सेन,	लाहोर।
,, ,, पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट।
,, ,, सातकड़ी बन्द्योपाध्याय,	कलकत्ता।
,, ,, बिहारीलाल राय,	जामालपुर।
,, ,, रमेशचन्द्र सेन,	जामालपुर।
,, ,, उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय,	जामालपुर।
,, ,, भोलानाथ बन्द्योपाध्याय,	बहरमपुर।
,, ,, राधिकानाथ गोस्वामी,	कलिग्राम।

उपरोल्लिखित एजेण्ठ महोदयोंके पास तत्तत् स्थाके ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊङ्गा।

धर्म्मप्रचारकसम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा रक्षा औ प्रचार करनेके निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओंमें कोई प्रस्ताव लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होनेसे आनन्द औ उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश कियाजायगा।

२। धर्म्मप्रचारक पत्रका मोल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मुङ्गेर "आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके" पत्तेमें मेरे पास भेजने होगा। पत्र वैरिं होतो नहीं लिया जायगा।

३। मौल्य सम्भवतः पोष्टाल मनि आर्डार करके भेजना। यदि डाक टिकिट में भेजें तो आध आनिया टिकिट करके भेज देवें।

४। धर्म्मप्रचारक १म भाग, १३ संख्यासे डाककर सहित अग्रिम वार्षिक मौल तीन प्रकार हुया।

उत्तम कागजपर,	वार्षिक	३।৵	प्रतिसंख्या ।৵
मध्यम ,,	,,	२।৵	,,
साधारण ,,	,,	१।৵	,,

मुङ्गेर, आर्य्यधर्म्म-प्रचारिणी सभा। } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन सम्पादक।

☞ यह पत्र हर पूर्णिमा में मुङ्गेर आर्य्यधर्म्मप्रचारिणी सभाके उत्साहसे प्रकाशित होता है।

☞ *Printed by B. P. Majumdara, At the B. P. M's Press, No. 22, Jhamap[illegible] Lane, Calcutta.*
Published by Srikrishna Prosanna Sen, at Monghyr Aryadharmaprocha[illegible] Sava.